

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

823 ✓

क्रम संख्या

213 हस्तकाम

काल नं०

खण्ड

ढदुवली डुवन्ध संग्रह

ऐन इतिहास निर्माण समिति, जयपुर

जैन इतिहास निर्माण समिति प्रकाशन—१

पट्टावली प्रबन्ध संग्रह

संकलिपता व संशोधक
आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज

सम्पादक
डॉ. नरेन्द्र मानावत
एम० ए०, पी-एच० डी०

प्रकाशक
जैन इतिहास निर्माण समिति, जयपुर

प्रकाशक :

जैन इतिहास निम्नलिखित समिति,
भाचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार,
लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

प्रथम संस्करण : १९६८

मूल्य : १०.००

मुद्रक :

राज प्रिंटिंग वर्कस;

किसनपोल बाजार, जयपुर ।

प्रकाशकीय

किसी भी देश का इतिहास, यदि उसका अतीत गौरवमय रहा है वर्तमान के लिए प्रेरणादायी होता है। जैन परम्परा का इतिहास अपने में कई सार्वभौम तथ्यों और सार्वकालिक जीवनादर्शों को समेटे है जिनसे प्रेरणा लेकर हम वर्तमान जीवन की अपनी कई समस्याओं को सुलझा सकते हैं। पर उसका क्रमबद्ध प्रामाणिक इतिहास अब तक अपने सर्वांग सम्पूर्ण रूप में सामने नहीं आया। जो स्फुट प्रयत्न हुए हैं वे उपयोगी होते हुए भी प्रतिनिधि ग्रन्थ का रूप नहीं ले सके हैं। ऐसे इतिहास ग्रंथ की वर्षों से आवश्यकता अनुभव की जा रही है जो जैन परम्परा को प्रामाणिकता के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपने सही ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर सके। सं० २०२२ के बालोतरा चातुर्मास में उपाध्याय श्री हृत्तीमल म० सा० ने ऐसे प्रतिनिधि इतिहास ग्रन्थ के निर्माण कार्य को उठाने का प्रेरक उद्बोधन दिया और एक विस्तृत रूपरेखा भी बनाई जो विद्वानों के सामने रखी गई।

इतिहास-निर्माण के इस संकल्प का व इसकी लेखन-पद्धति का सभी ओर से स्वागत हुआ। परिणाम स्वरूप एक जैन इतिहास-निर्माण-समिति गठित की गई जिसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री इन्द्रनाथजी सा० मोदी, मंत्री श्री सोहनमल कोठारी व कोषाध्यक्ष श्री पूनमचन्दजी सा० बडेर मनोनीत किये गये।

इतिहास-लेखन का यह कार्य श्रमसाध्य है। लोकाशाह ने निर्भीक होकर तत्कालीन संदर्भ में जो क्रांति की उसका दूरगामी प्रभाव पड़ा और आचार में अधिक दृढता आई। लोकाशाह के बाद की परम्परा के स्रोत अन्वकार में हैं। उनकी अध्यावधि न तो स्पष्ट जानकारी हमें प्राप्त है और न उसे जानने के विशेष प्रयत्न हुए हैं। अब यह आवश्यक समझा गया है कि इन लुप्त कड़ियों को मुश्रूद्धलित कर एक प्रामाणिक इतिहास समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाय।

प्रामाणिक इतिहास तब तक नहीं लिखा जा सकता जब तक कि विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक साधनों द्वारा पूरी विषय-सामग्री संकलित न की जाय। विषय-सामग्री का यह संकलन किसी एक व्यक्ति के वश की बात नहीं है विशेषकर उस स्थिति में जबकि एक सम्प्रदाय विशेष कई शाखा-उप शाखाओं में विभक्त होऔर सबकी पृथक्-पृथक् परम्पराएँ चली हो। आज के इस संगठन और एकता के युग में यह आवश्यक है कि एक ही स्रोत से चलने वाली भिन्न प्रतीत होती हुई सभी परम्पराओं को समुचित सम्मान और महत्त्व देते हुए उसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाय। प्रस्तावित इतिहास ग्रन्थ की यही मूल दृष्टि है।

इतिहास-लेखन का यह कार्य व्ययसाध्य तो है ही श्रमसाध्य और समयसाध्य भी है। परम श्रद्धेय आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म० सा० के निर्देशन में इस कार्य का सभारंभ हो गया है। इसी सिलसिले में आचार्य श्री ने राजस्थान का ग्रामानुग्राम विहार करते हुए गुजरात प्रदेश की ओर प्रस्थान किया और वहाँ के पाटन, खभात, बड़ोदा, अहमदाबाद आदि नगरों के ज्ञान-भंडारों का निरीक्षण कर हजारों हस्तलिखित प्रतियों का अवलोकन किया। इस यात्रा में जो महत्वपूर्ण पट्टावलियाँ सामने आईं, उन्हीं का प्रकाशन इस ग्रंथ के द्वारा किया जा रहा है। आशा की जाती है, पट्टावलियों के मूल पाठों का यह प्रकाशन प्रामाणिक इतिहास-लेखन में आधारभूत सामग्री का काम देगा।

ग्रंथ के निर्माण में आचार्य प्रवर हस्तीमलजी म० सा० की ही मूल प्रेरणा और शक्ति रही है। यह उन्हीं के श्रम का प्रसाद है। पं० रत्न मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० का भी ग्रंथ निर्माण में पूरा सहयोग रहा है। उनके प्रति हमहादिक आभार प्रकट करते हैं। राजस्थान विद्वद्विद्यालय के प्राध्यापक डॉ० नरेन्द्र भानावत ने हमारे निवेदन को स्वीकार कर इसके सम्पादन में जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। परम श्रद्धेय देवेन्द्र मुनिजी और प्राचीन भाषा तथा साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री अमरचन्दजी नाहटा ने भूमिका लिखकर ग्रंथ का जो गौरव और महत्व बढ़ाया है, ममिति उसके लिए आभार मानती है। प्रतिलेखन, प्रूफ-संशोधन आदि में प० शशिकान्तजी भा, मोतीलालजी गाधी व पूनमचन्दजी मुण्णोत का सहयोग विस्मृत नहीं किया जा सकता।

समिति के अध्यक्ष श्री इन्द्रनाथजी मोदी, कोपाध्यक्ष श्री पूनमचंदजी बडेर, श्री श्रीचन्दजी गोलेछा, श्री सोहननाथजी मोदी, श्री नथमलजी हीरावत, श्री केशरीमलजी मुराणा, श्री इन्द्रचन्दजी हीरावत, श्री धनराजजी चोपड़ा तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने वाले अन्य सभी सदस्यों ने समय-समय पर शक्ति लेकर इस अभियान को सफल बनाने में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उसके लिए इस अवसर पर आभार प्रकट करना, मैं अपना पुनीत कर्तव्य मानता हूँ।

जैन इतिहास निर्माण समिति का यह प्रथम प्रकाशन प्रस्तुत करते हुए मुझे हादिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आशा है, समाज की सेवा में दूसरा प्रकाश भी शीघ्र ही प्रस्तुत होगा।

—सोहनमल कोठारी

मंत्री

जैन इतिहास निर्माण समिति, जयपुर

सम्पादकीय

इतिहास अतीत की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और चीजों आती हुई परम्परागत धारणाओं का यथार्थ चित्रण है। भारतीय धर्म, दर्शन और समाज की ऐतिहासिक परम्परा बड़ी समृद्ध रही है। यह सही है कि व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि को अधिक महत्त्व प्रदान करने के कारण भारतीय परम्परा में इतिहास-लेखन जैसी सजग प्रवृत्ति नहीं रही, पर इतिहास-लेखन के विविध स्रोत—शिलालेख, ताम्रपत्र, मुर्जपत्र, गुर्दावली, पट्टावली, नशावली, पीड़ियावली, ख्यात, बात विगत, हाल-हगीगत, पट्टा-परवाना, उत्पत्ति ग्रन्थ, हक्का, रोजनामचा, दफ्तर-बही, प्रशस्ति आदि—विदेशियों के लगातार आक्रमण होने पर भी, किसी न किसी रूप में सुरक्षित अवश्य रहे। इतिहास-लेखन के इन विविध उपकरणों की सहायता के बिना प्रामाणिक इतिहास-लेखन का कार्य पूर्ण विश्वसनीयता के साथ सम्पन्न नहीं हो सकता।

हमारे यहाँ की इतिहास-लेखन परम्परा मध्ययुग में आकर लुप्त सी हो गई। सत्रहवीं शती के प्रारंभ में इतिहास-लेखन का व्यवस्थित कार्य मुगलों ने पुनः प्रारंभ किया। स्वयं बादशाह अकबर ने अपने राज्य में इतिहास-लेखन का एक अलग ही विभाग खोला। तभी से अन्य रियासतों एवं स्वतंत्र राज्यों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना से इतिहास-लेखन के स्फुट प्रयत्न होते रहे। मुगल शासक इतिहास-प्रेमी थे। वे स्वयं 'नामा' संज्ञक ग्रंथों के रूप में अपना आत्म-चरित लिखा करते थे।

इस दृष्टि से जो इतिहास लिखे जाते थे, उनमें राजनीतिक परिवर्तनों और घटनाओं को ही प्रमुखता दी जाती थी। सामाजिक परिवर्तनों और धार्मिक आन्दोलनों को दृष्टि में रखकर सांस्कृतिक इतिहास लेखन का कार्य प्रायः उपेक्षित ही रहा। किसी भी राष्ट्र का सच्चा इतिहास वहाँ के शासकों की कार्य-प्रणालियों तक ही सीमित नहीं है। उसमें वहाँ के सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों एवं जन सामान्य जनता की मनोवृत्तियों का चित्रण भी अपेक्षित है। विभिन्न स्रोतों से पढ़ने वाले प्रभावों और उनको आत्मसात् करने की धारणा-शक्ति का विवेचन भी अभीष्ट है। क्योंकि इतिहास केवल मात्र गढ़े हुए मुद्दों को उखाड़ने का कार्य नहीं है। उसके अन्तर्ग में भावी समाज-रचना की कई निर्माणकारी प्रवृत्तियाँ भी काम करती हैं।

संस्कृति के निर्माण एवं विकास में धर्म का बहुत बड़ा हाथ रहा है। श्रमण परम्परा और वैदिक परम्परा की समानान्तर रूप से प्रवाहित होने वाली धाराओं ने भारतीय संस्कृति को गतिशील बनाये रखा है। प्रथम तीर्थंकर युगादिदेव भगवान् ऋषभदेव मानवीय संस्कृति के प्रथम आस्थाता थे। उनके पूर्व भोगमूलक संस्कृति थी। पुरुषार्थ का मानवीय जीवन के विकास में कोई स्थान नहीं था। ऋषभदेव ने ही कर्ममूलक पुरुषार्थप्रधान संस्कृति की प्रतिष्ठा की। उनके क्रम में चौथीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर हुए। ये चरम तीर्थंकर कहे गये हैं। भगवान् महावीर के बाद विभिन्न जैनाचार्यों ने सांस्कृतिक देय के इस प्रवाह को आज तक गतिशील रखा है।

दुर्दैव से भारतीय जन-जीवन शताब्दियों तक पराधीनता के नीचे पलता रहा। विजातीय शासकों ने राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी हमें पद-दलित किया। ऐसे नैराश्यपूर्ण असहाय वातावरण में जन-जीवन की नैतिक-शक्ति और मनोबल को थामे रखना अत्यन्त आवश्यक था। जैनाचार्यों ने सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों स्तरों पर इस दायित्व को निभाया।

सैद्धान्तिक स्तर पर ईश्वर की एकाधिकार भावना के स्थान पर उसके विकेन्द्री कुल रूप की दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठा कर यह प्रतिपादित किया कि व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का, सुख-दुख का निर्माता है। ईश्वर की ओर से उसे सुख-दुख नहीं मिलते। अपने ही शुभाशुभ कर्मों का वह भोक्ता है। अपने ही पुरुषार्थ के बल पर वह आत्मा के सर्वोत्तम विकास-ईश्वरत्व-तक पहुँच सकता है। इस भावना ने व्यक्ति को स्वावलम्बी और आत्म-निर्भर बनाया। आत्मस्वातंत्र्य की यह सबसे बड़ी सांस्कृतिक उपलब्धि जैन दर्शन की देन है।

व्यावहारिक स्तर पर जैन श्रमण इस भावना को जन-जीवन में उतारने के लिए राजसत्ता से दूर रहकर जनता को कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य न खोने और धर्म पर दृढ़ रहने की देशना स्वयं साधनापरक जीवन व्यतीत करते हुए देते रहे। उसी का परिणाम है कि इतने विजातीय एवं विधर्मीय आक्रमणों के बीच भी हम भारतीयता की रक्षा कर सके।

संस्कृति के रक्षक, आत्मोपदेष्टा इन जैन आचार्यों, संतो, आचर्यों आदि की परम्परा को जानने के लिए पट्टावलिदाँ महत्त्वपूर्ण साधन हैं। विगत कुछ वर्षों में पट्टावली-संग्रह के ऐसे कई प्रयत्न हुए हैं पर लोका गच्छ व स्थानकबासी परम्परा पर प्रकाश डालने वाली पट्टावलियाँ यत्र-तत्र बिखरे रूप में ही मिलती रही हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा संबंधित प्रमुख पट्टावलियों को एक स्थान पर संकलित करने का प्रयत्न किया गया है।

संकलित पट्टावलियों का प्रकाशन करते समय उनके मूल पाठ को सुरक्षित रखने की दृष्टि से कई नाम और स्थान अस्पष्ट, अशुद्ध व त्रुटिपूर्ण प्रतीत होने पर भी उसी रूप में रखे गये हैं। परम्परागत मान्यता एवं लेखन व उच्चारण भेद के कारण भी पाठ-परम्परा में प्रसंगानुसार भिन्नत्व दिखायी देता है। विवादन्तियों और मान्य विद्वांसों को उसी रूप में लिखा गया है जिस रूप में परम्परा विशेष में लेखन-काल में वे माने जाते थे। किसी भी परम्परा में बिना परिवर्तन के उसके मूल रूप को प्रस्तुत करना ही हमारा लक्ष्य रहा है। अपनी ओर से कोई काट-छाट नहीं की गई है।

ग्रंथ को अधिकाधिक उपयोगी और बोधगम्य बनाने की दृष्टि से प्रत्येक पट्टावली के पूर्व संक्षेप में उसका सार तत्व दे दिया गया है। लोकागच्छ परम्परा को प्रतिनिधि रचना सस्कृत पट्टावली 'पट्टावली प्रबन्ध' का हिन्दी अनुवाद तथा स्थानकवासी परम्परा की प्रतिनिधि रचना पद्य पट्टावली 'विनयचन्द्रजी कृत पट्टावली' का सरलार्थ भी दिया गया है। हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने में हमें प० शशिकान्त भा. शास्त्री और सरलार्थ प्रस्तुत करने में प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० का सहयोग प्राप्त हुआ है। इन दोनों के प्रति आभार प्रकट करना हम अपना पुनीत कर्तव्य समझते हैं।

विद्वानों और शोधार्थियों की सुविधा के लिए ग्रंथ के अन्त में ८ परिशिष्ट दिये गये हैं जिनसे ग्रंथ में आये हुए विशिष्ट व्यक्ति, स्थान, गच्छ, ग्रंथ आदि के संबंध में सुगमता व सौविधा से ज्ञातव्य प्राप्त किया जा सके। 'प्रति-परिचय' परिशिष्ट में पट्टावलियों का बहिरंग परिचय प्रस्तुत किया गया है। 'भगवान महावीर के बाद की प्रमुख घटनाएँ' परिशिष्ट से विभिन्न ऐतिहासिक मोड़ों को आसानी से समझा जा सकता है। अन्त में शुद्धि-पत्र भी दे दिया गया है ताकि पाठक अशुद्धियों को सुधार कर पढ़ें।

ग्रंथ के निर्माण में पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की मूल प्रेरणा रही है। उन्हीं की गवेष्क दृष्टि, सुदूरवर्ती ग्रामानुग्राम विहार-यात्रा, निरन्तर अध्ययनशीलता और अध्यवसाय का ही यह प्रतिफलन है। बड़े परिश्रम से उन्होंने इन पट्टावलियों का संकलन व संशोधन किया है। प्राक्खन के रूप में संकलित पट्टावलियों का अन्तरंग-दर्शन करा कर सामान्य पाठकों के लिए भी उन्होंने इस ग्रंथ को विशेष उपयोगी बना दिया है। श्रद्धेय श्री देवेन्द्र मुनि और प्रसिद्ध गवेष्क विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा ने ग्रंथ की भूमिका लिखने के हमारे निवेदन को स्वीकार किया, एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। प० शशिकान्त भा., श्री मोतीलाल गांधी व श्री पूनमचन्द मुणोत ने प्रूफ संशोधन, प्रतिलेखन आदि में जो सहयोग दिया, वह उनका धर्म के प्रति सहज अनुराग है। अनुक्रमणिका तैयार करने में श्रीमती शान्ता भानावत, एम. ए. के सहयोग को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। ग्रंथ को इस रूप में प्रकाशित करने का श्रेय

समिति के मंत्री श्री सोहनमल कोठारी की निस्वार्थ सेवा-भावता, सतत जागरूकता और लगन को है। राज प्रिन्टिंग वर्क्स के अधिकारी सेठ श्री द्वारकादास और प्रबन्धक श्री देवकीनन्दन शर्मा के विशेष रुचि लेने के कारण ही यह ग्रंथ इतना शीघ्र पाठकों के समक्ष आ सका।

आशा है, यह ग्रंथ धर्म प्रेमियों, विद्वानों और इतिहासज्ञों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

—डॉ० नरेन्द्र मानावत

मानद निर्देशक

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर

— — — — —

अनुक्रम

प्राक्कथन	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म०	६
प्रस्तावना	: श्री देवेन्द्र मुनि	२६
भूमिका	: श्री अग्ररचन्द नाहुटा	३३

लोकामच्छ परम्परा ३-१०६

१.	पट्टावली प्रबन्ध	३
२.	गणित नेजसी कृत पद्य-पट्टावली	७६
३.	सक्षिप्त पट्टावली	८१
४.	बालापुर पट्टावली	८४
५.	बडौदा पट्टावली	९०
६.	मोटा पक्ष की पट्टावली	९५
७.	लोकामच्छीय पट्टावली	१००

स्थानकवासी परम्परा १०७-३१३

१.	विनयचन्द्रजी कृत पट्टावली	१०७
२.	प्राचीन पट्टावली	१७४
३.	पूज्य जीवराजजी की पट्टावली	१६६
४.	खभात पट्टावली	१६६
५.	गुजरात पट्टावली	२०८
६.	भूधरजी की पट्टावली	२१३
७.	महेश्वर पट्टावली	२१६
८.	मेवाड पट्टावली	२८१
९.	दरियापुरी सम्प्रदाय पट्टावली	२६५
१०.	कोटा परम्परा की पट्टावली	२६८
	परिशिष्ट—१ —पट्टवृक्ष	३१४
	परिशिष्ट—२ भगवान महावीर के बाद की प्रमुख घटनाएँ	३२०
	परिशिष्ट—३ प्रति-परिचय	३२२

(८)

परिशिष्ट—४	आचार्य, मुनि, राजा, श्रावकादि	३२६
परिशिष्ट—५	ग्राम, नगरादि	३५२
परिशिष्ट—६	गण, गच्छ, शाखादि	३५८
परिशिष्ट—७	सूत्र ग्रन्थादि	३६२
परिशिष्ट—८	शुद्धिपत्र	३६४

प्राक्कथन

इतिहास-लेखन में अन्यान्य साधनों की तरह प्राचीन पट्टावलियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

श्वेताम्बर जैन मुनियों ने पट्टावली के माध्यम से इतिहास की अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है। शिनालेख एवं प्रशस्तियों से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि किस काल में किस मुनि ने क्या कार्य किया, अधिक हुआ तो उस समय के राज्य-शासन एवं गुरु-शिष्य-परम्परा का भी परिचय मिल सकता है, किन्तु रास, गीत और पट्टावली आदि उनके स्मरणीय गुण, तप, सयम एवं प्रचार का भी ज्ञान कराते हैं। पट्टावली में अपनी परम्परा से सम्बन्धित पट्ट-परम्परा का पूर्ण परिचय दिया जाता है। कभी किसी आचार्य के परिचय में अतिरजना भी हो सकती है, फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से पट्टावली का महत्त्व कम नहीं है। पट्टावलियों का निर्माण किंवदन्तियों और अनुश्रुतियों से ही नहीं किया गया है, इनके निर्माण में तत्कालीन रास, गीत, मञ्चाय और प्रशस्तियों का भी उपयोग होता है। फिर भी श्रुति-परम्परा के भेद से कुछ नाम एवं घटना-चक्र में भिन्नता होना सहज है।

पट्टावलियों को हम मुख्य रूप में दो भागों में बाँट सकते हैं। प्रथम शास्त्रीय पट्टावली और दूसरी विविष्ट पट्टावली। पहली सुघर्मा स्वामी से लेकर देवधिगणी तक, जो प्रायः समान ही है। कल्प सूत्र एवं नन्दी सूत्र की पट्टावली मुख्यतः शास्त्रीय कही जाती है। गच्छ-भेद के पश्चाद्वर्ती विविध पट्टावलियाँ विशिष्ट पट्टावली के नाम से बही जा सकती हैं, जिनमें अपनी अलग विशेषता होती है।

पट्टावली के द्वारा ही आचार्य-परम्परा का क्रमबद्ध पूर्ण इतिहास प्राप्त हो सकता है, जो इतिहास-लेखन में अत्यावश्यक है। हमारी दृष्टि से इतना विस्तृत परिचय देने वाला कोई दूसरा साधन नहीं हो सकता। श्वेताम्बर परम्परा में जो विभिन्न गच्छों की पट्ट-परम्परा उपलब्ध होती है, उसका श्रेय इन पट्टावलियों को ही है।

श्वेताम्बरों की तरह दिगम्बर मुनियों की व्यवस्थित परम्परा उपलब्ध नहीं

होती। सोलापुर से “भट्टारक सम्प्रदाय” पुस्तक प्रकाशित हुई है, पर उसमें मुनियो की परम्परा प्राप्त नहीं होती। काष्ठा संघ, भूलसंघ, माधुर संघ और गोप्य संघ की परम्परा में कितने गण, शाखा और आचार्य हुए, इसका प्रामाणिक परिचय प्रस्तुत करना दुष्कर है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय की ओर से पट्टावली के दो-तीन संकलन प्रकाशित हुए हैं, पर उनमें लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा की पट्टावलियाँ का व्यवस्थित संकलन नहीं हो पाया, अतः उनको मूलरूप में जनता के सामने प्रस्तुत करना आवश्यक था। स्थानकवासी समाज की ओर से इस तरह का यह पहला ही प्रयास है। लोकागच्छ और स्थानकवासी सम्प्रदाय की सभी पट्टावलियों का संग्रह न करके हमने उनकी मुख्य-मुख्य शाखाओं को ही प्रमुख स्थान दिया है। जैसे विजयगच्छ, सागरगच्छ आदि शाखाओं का तपागच्छ में समावेश हो जाता है। चौरासी गच्छ में जैसे खरतर, तपा, आंचलिया, पूनमिया, ओकेश और पायचन्द गच्छ प्रमुख हैं, वैसे ही लोकागच्छ में गुजराती लोका, नागोरी लोका, उत्तराध लोका ये प्रमुख हैं और स्थानकवासी परम्परा की जीवराजजी, लवजी, धर्मसिंहजी, धर्मदासजी, हरजी, और पंजाब एवं मारवाड़-भूधरजी की शाखा में अन्य पट्टावलियों का भी समावेश हो जाता है। उनमें आगे की नामावलि को छोड़ शेष ध्यान एकसा है।

प्रस्तुत संग्रह लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा की अमुद्रित पट्टावलियों का संकलन है। इनमें उपयुक्त पट्टावलियों को ही स्थान दिया गया है, फिर भी कुछ सामग्री इसमें नहीं दे सके, पाठको ने चाहा तो अगले भाग में अवशिष्ट सामग्री प्रस्तुत की जा सकेगी।

पट्टावलियों का अन्तरंग दर्शन

लोकागच्छ परम्परा :

लौकाशाह द्वारा जिनमार्ग के शुद्ध आचार को समझ कर जिन्होंने संयम ग्रहण किया, उन भाणुजी, नूनजी आदि संयमियों के समुदाय को लोकागच्छ कहा जाता है। लोका गच्छ में मुख्य रूप से २ भेद हैं, गुजराती और नागोरी लोका। सात पाट के बाद रुपा ऋषि के विशिष्ट त्याग, तप के प्रभाव से लोका गच्छीय साधुओं का दूसरा नाम गुजराती लोका पड़ा।

गुजराती लोका गच्छ में पूज्य जीवराजजी के पश्चात् दो पक्ष हो गये, मोटी पक्ष और नानी पक्ष। मोटी पक्ष की गादी बड़ोदा में और नानी पक्ष की बालापुर में कायम हुई। इनके अतिरिक्त उत्तराध लोका जो लाहोरी लोका गच्छ के नाम से कहे

जाते हैं। इन तीनों की पट्टाबलियां मूल गुजराती लोंका की परम्परा से मिलती हुई हैं। पर नागौरी लोंका गच्छ जो सं० १५८० के समय हीरावर और ऋषि रूपचन्दजी से प्रकट हुआ, उसका संबन्ध गुजराती लोंका की पट्टाबली से नहीं मिलता। यहां पर मुख्य रूप से नागौरी लोंका और गुजराती लोंका के मोटी पक्ष और नानी पक्ष की पट्टाबलियां प्रस्तुत की गई हैं। अन्य भी गद्य एवं पद्य में लोकागच्छ की पट्टाबलियां प्राप्त होती हैं, पर उनका समावेश इनमें हो जाना है। सकलित ७ पट्टाबलियों का अन्तरंग दर्शन इस प्रकार है:—

(१) पहली पट्टाबली 'पट्टाबली प्रबन्ध' में ऋषि रघुनाथ ने नागौरी लोंका गच्छ की उत्पत्ति से १६ वीं सदी तक का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया है। रचनाकाल के ६ वर्ष बाद ही मुनि संतोषचन्द्र ने इसको प्रतिलिपि तैयार की। भाषा अक्षि-काश शुद्ध एवं सरल है। पट्टाबलीकार ने २७ वें पट्टावर देवधिगणी तक का परिचय देकर २८ वें चन्द्रसूरि, २९ वें विद्याधर शाखा के परम निर्ग्रन्थ संमतभद्र सूरि और ३० वें धर्मघोष सूरि माने हैं। धर्मघोष सूरि ने धारा नगरी में पवारवंशीय महाराज जगदेव और सूरदेव को प्रतिबोध देकर जैन बनाया। अतः इनसे धर्मघोष गच्छ प्रगट हुआ। धर्मघोष सूरि के बाद ३१ वें जयदेव सूरि, ३२ वें श्री विक्रम सूरि, आदि अनेक आचार्य हुए। संवत् ११२३ में ३८ वें परमानन्द सूरि हुए। इनके समय सं० ११३२ में सूरवंश की पारिवारिक स्थिति क्षीण हो चुकी थी। गुरु ने उनको नागौर जाकर बसने की सलाह दी और कहा कि नागौर में तुम्हारा बड़ा भाग्योदय होगा। गुरु के वचन से सूरवंशीय वामदेव ने सं० १२१० की साल नागौर में आकर वास किया। वहां उनकी बड़ी वृद्धि हुई। सं० १२२१ के वर्ष सञ्जाति सतीदास के यहां ससाणी कुल देवी का जन्म हुआ और सं० १२२६ में वह मोरव्याणा नाम के गांव में अर्तघान हो गई। सं० ११३० में सूरवंशीय मोल्हा को स्वप्न में दर्शन देकर देवी पुतली रूप से प्रकट हुई। मोला ने कुल देवी का देवालय बना दिया। यही सुराणा को कुलमाता मानी जाती है।

४० वें पट्टावर उचितवाल सूरि से सं० ११७१ में धर्मघोष उचितवाल गच्छ हुआ। इनके प्रतिबोध पाये हुए आज ओस्तवाल कहे जाते हैं। ४१ वें प्रोढ सूरि से सं० १२३५ में धर्मघोष पूढवाल शाखा हुई जो अमी पोरवाड नाम से कही जाती है। ४३ वें नागदत्त सूरि से धर्मघोष नागौरी गच्छ प्रगट हुआ। सं० १२७८ में विसल चन्द्र सूरि से दीक्षा लेकर इन्होंने क्रिया उद्धार किया, शिबिलाचार का निवारण किया। सं० १२८५ के वैशाख शुद्ध ३ को इन्होंने आचार्य पद प्राप्त किया। इन्हीं से नागौरी गच्छ की स्थापना होती है। ५६ वें पट्टा पर शिवचंद्र सूरि हुए। सं० १५९६

में ये नियतवासी और शिथिलाचारी हो गये। इनके देवचंद और माणकचंद दो शिष्य थे। ५६ वें पट्ट पर नागौरी लोंका गच्छ की नीव डालने वाले हीरागरजी और रूपचंदजी हुए, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया है :—

पिरोज खा के राज्य काल में नागौर बड़ी समृद्ध स्थिति में था। गांधी सरदारगंजी और सीचोजी वहाँ के बड़े सिद्धान्त प्रेमी माने जाते थे। रूपचंद जी सदा उनके पास बैठते और धर्म-गोष्ठी किया करते।

लेखक के अनुसार लोका का शास्त्र-लेखन के लिए नागौर आना और रूपचंद के साथ साक्षात्कार का उल्लेख मिलता है। लोकाशाह से प्राप्त सिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़कर और सीच.जी के साथ मनन कर रूपचंदजी विरक्त हो गये। उनके मन में धर्म दीपाने की भावना जगी।

सं० १५८० में जब वे दीक्षा को निकले तो हीरागरजी और पंचायणजी भी तैयार हो, चले आये। बड़े ठाट बाट से तीनों ने सं० १५८० के ज्येष्ठ शु० १ को दीक्षा ग्रहण की। बादशाह पिरोजखा ने भी अपने मंत्री किशन को समारोह में भेजा। परस्पर के वचन और उपकार की स्मृति हेतु ये नागौरी लू का कहलाये।

इनके उपदेश से हजारों लोगो ने व्रत-नियम ग्रहण किये। साथ ही रूपचंद जी की पत्नी ने भी १२ व्रत ग्रहण किये। इन्होंने धर्म के नाम पर होने वाले धारम-समारम का निषेध किया। इनके वनवास और कठोर साधना बल से लोका गच्छ की अल्प समय में ही वृथाति फेंग गयी।

सं० १५८५ में रयगुजी ने दीक्षा ग्रहण की और ५० दिन का संघारा ग्रहण कर नागौर में ही स्वर्गवासी हुए। कहा जाता है कि श्री रूपचंद जी के तपः प्रभाव से पूर्णभद्र देव उनकी सेवा किया करता था। उदाहरण स्वरूप एक घटना प्रस्तुत की गई है। मालव देश के महिमपुर में चातुर्भास करने को जब इन्होंने स्थानीय सेठ गोवर्धन से उपाश्रय की याचना की तो उन्होंने रथके चक्र पर बैठने को कहा, उस समय ग्रन्थ साधुओं को स्थानान्तरित करके उन्होंने देवागरजी के साथ रथ के चक्कों पर ही मासखमण पचख के रहना स्वीकार कर लिया। सेठ ने गुप्तचरों के माध्यम से इनके कठोर तप का हाल सुना तो बड़ा प्रभावित हुआ। दूसरे दिन क्षमायाचना करते हुए कोठी में विराजने की प्रार्थना की, परन्तु श्री रूपचंदजी ने कहा—मासखमण की तपस्या तो यही पूर्ण करेंगे। इस प्रकार इनके त्याग-तप के प्रभाव से ६ लाख ८० हजार घर नागौरी लोका गच्छ की परंपरा में हो गये। मेवाड़-भूषण आम्नासह और ताराचंद काबड़िया लोकामत के ही उपासक बताये गये हैं।

बादशाह आलमगीर के समय आचार्य सदारंगजी हुए, जिनको बीकानेर नरेश अनोपसिंह और मुजानसिंह जी गुरुभाष से मानते थे। शनैः २ लोंकागच्छ में भी नगर-प्रवेश और गमगडे आदि झाडम्बरों का प्रवेश हो गया। ऋषि रघुनाथ ने पूज्य लक्ष्मीचंद्र जी के शासन-काल तक का इतिहास प्रस्तुत किया है। आगे २० वीं सदी का इतिहास अनुपलब्ध है।

(२) दूसरी गयी तेजसिंह कृत हिन्दी पद्य पट्टावली है। इसमें पूज्य बेशवजी तक ६ पट्टधरों का वर्णन है। (३) तीसरी 'संक्षिप्त पट्टावली' में ऋषि भार्गव से पूज्य भागचंद्र जी तक केशव जी पक्ष के १६ पट्टधरों का परिचय, जन्म-शिक्षा-आचार्यपद और स्वर्गवास काल के साथ दिया गया है। (४) चौथी पट्टावली में भगवान् महावीर से लेकर ३५ पाट तक का उल्लेख कर लूँकागच्छ की उत्पत्ति बतलाई गई है। पूज्य भागचंद्रजी द्वारा बालाचंद्र जी के आचार्य पद प्रदान से पट्टावली को पूर्ण किया है। (५-६) पांचवीं और छठी-गुजराती लोका मोटा पक्ष की पट्टावलियाँ हैं। भगवान् महावीर से २७ पाट का उल्लेख कर विविध गच्छों की उत्पत्ति का काल लिखा है। नागौरी लूँका की उत्पत्ति सं० १६८१ में लिखी है जो संस्कृत पट्टावली से वांछित है। वहाँ स० १५८० में नागौरी लूँका की उत्पत्ति लिखी है। साधारण अंतर को छोड़ शेष में दोनों पट्टावलियाँ समान हैं। (७) सातवीं पट्टावली में देवाधि को २६ वें पट्टधर माना है। नामोल्लेखन भी अस्त-व्यस्त है। तीसवें विबुधसूरि हुए।^१

पट्टावली के अनुसार सं० १४२८ में १५२ साध यात्रा को जाते हुए पाटण आये। उस समय वर्षा ऋतु से नीलण-फूलण हो गई, अतः देरासर की सहुलियत देखकर सब वही रुक गये। खाली दिन कैसे बिताये जाय तो मालूम हुआ कि लोकशाह नये मत का प्रचार कर रहे हैं। सांघवी भी सुनने को आने लगे, सिद्धान्त सुन कर बोले कि महाराज! भगवान् महावीर के १ लाख ५६ हजार आचको में आनन्द जैसे एक भव करके मोक्ष जाने वाले भी हैं, परन्तु शास्त्र में कही भी उनके द्वारा साध निकालने, देवल बनाने और प्रतिमा-पूजन का उल्लेख नहीं है। प्रतिबोध पाकर सब १५२ साधवियों ने विशाल सापदा का परित्याग किया और दीक्षित हो गये। फिर १५३ ठाणा से बिहार कर वे वन में तपस्या करने लगे। महापन्नवरणा के अनुसार भस्मग्रह उतरने पर जीवा और रूपा नाम के दो जीव होंगे, उनसे जिन धर्म की फिर उदय-उदय पूजा होगी, ऐसा लिखा है।

लूँका ने ३ दिन के अनशन की आराधना कर स्वर्गगति प्राप्त की और मध्य रात्रि में आकर १५२ साधुओं को सूरि मंत्र दिया तथा लोका मत को

१. यहाँ से कुछ नामों की पायबन्द गच्छीय पट्टावली से तुलना कीजिये।

सत्य मानने की सलाह दी । पट्टावली में लोकाशाह को भोसवाल बंधीय लूकड़ लिखा है । उनकी ५७ वर्ष की आयु और ३ मास की दीक्षा बताई गई है ।

आनन्द-विमलसूरि का ईडर की गुफा में सं० १५८२ के वर्ष मासखमण करना लिखा है । इसलिये १४२८ का लेख भ्रान्त प्रतीत होता है ।

शेष वर्णन छट्टी पट्टावली के समान है । केवल पू० कल्याणचंद्रजी के पश्चात् पूज्य खूबचंदजी का स्वर्णवास सं० १६८२ तक का वर्णन विशेष है ।

स्थानकवासी परम्परा :

प्रस्तुत संग्रह में स्थानकवासी परम्परा से सम्बन्धित दस पट्टावलियाँ हैं जिनसे मुख्य रूप से पूज्य जीवराजजी, पूज्य धर्मसिंहजी, पूज्य लवजी, पूज्य धर्मदासजी और पूज्य हरजी की मूल परम्परा का पता चलता है । विभिन्न गच्छों की पट्टावलियाँ न्यूनाधिक अन्तर से प्राप्त होती हैं परन्तु उनमें कोई खास भेद नहीं मिलता, अतः संग्रह में प्रस्तुत १० पट्टावलियाँ इन मूल परम्पराओं से सम्बन्धित ही ली गई हैं । पूज्य धर्मदासजी की, पूज्य मनोहरदासजी की, पञ्जाब की, गोडल सम्प्रदाय की तथा अन्य पट्टावलियाँ जो तत्सम या कुछ विशेषता वाली हैं, आवश्यक समझा गया तो उनको अगले भाग में दे सकेंगे । संगृहीत पट्टावलियों का अन्तरंग दर्शन इस प्रकार है —

(१) पहली पद्य पट्टावली में कवि विनयचन्द्रजी ने भगवान महावीर से देवधि गयी तक २७ पाठ और ७ निह्तावो का परिचय देकर दुर्भिक्ष का चित्र खींचते हुए बताया है कि उस समय श्रमणवर्ग की क्या स्थिति रही, संयम-पालन की कठिनाई से शिथिलाचार का कैसे प्रवेश हुआ ? तत्पश्चात् विविध गच्छों की उत्पत्ति, लोकाशाह के सिद्धान्त-लेखन, लोकाशाह का धर्म प्रचार, सद्यो-प्रतिबोध, ४५ जन के साथ भाणजी, नूनजी, सरवाजी आदि की दीक्षा का वर्णन है । पट्टावली के अनुसार ऋषि भाणजी से ऋषि जीवाजी तक ८ पाठ मर्यादा में रहे और फिर शिथिलता का प्रवेश हो गया । भिक्षावृत्ति को छोड़ कर मुनि निमज्जित भोजन को जाने लगे । आवाकर्म खाने लगे । सं० १७०६ में लवजी ऋषि ने दीक्षा ली, सं० ७१४ की साल क्रिया उद्धार क्रिया, ढूँढ़े में ठहरने से लोग उन्हें ढूँढ़िया कहने लगे, महापुरुष गांधी को भी बरमाला समझ धारण करते हैं, ये भी वैसे शांत रहे । इनके प्रमुख शिष्य सोमजी हुए । बरजंगजी के गच्छ से निकल कर

हरिदासजी, प्रेमजी, कानजी व गिरधरजी ने सोमजी को गुरु स्वीकार किया। फिर भमीपाल, भीपाल, धर्मसिंह, हरिदास, जीवो, शंकरजी, केशुजी, लघु हरिदासजी, समर्थजी, सोहनजी, तोडोजी, गोधाजी, सदानन्दजी आदि भी सोमजी के शिष्य रहे गये हैं।

धर्मदास जी ने पोतियाचंच की श्रद्धा छोड़ कर कानजी म० के प्रतिबोध से मुनि दीक्षा ग्रहण की। इनके त्याग पूर्ण उपदेश के प्रभाव से ६६ शिष्य हुए, जिनमें सांचोर के धन्नाजी म० मुख्य थे। धन्नाजी के शिष्य सोजत के—मुणोत गोत्री भूधर जी हुए। ये बड़े त्यागी, बैरागी, उग्र तपस्वी और क्षमाशील थे। इन्होंने सोट मारने वाले अपकारी पर भी उपकार किया। भूधरजी म० के अनेक शिष्य हुए जिनमें श्री नारायणजी, रघुनाथजी, जयमल्लजी और कुशलाजी मुख्य थे। मेढता के अन्तिम चानुर्मास में पाँच की तपस्या के पारण्ये इनका स्वर्गवास हुआ।

मेढता चानुर्मास को पधारते समय इनके प्रिय शिष्य नारायणजी ने पानी के परिहृ से मार्ग में ही शरीर छोड़ दिया। पानी के लिये गाँव में गये हुए सन्त जब पोछे लौटे तब तक तो इन्होंने स्वर्ग की ओर प्रयाण कर दिया था। धन्य है इनकी सहिष्णुता को।

कुशलाजी म० सेठो की रीया के चंगेरिया गोत्री थे। माता, पुत्र और हजारो की सम्पदा छोड़ इन्होंने दीक्षा ली और पूज्य जयमल्लजी म० के साथ बड़े प्रेम से अप्रमाद-भाव पूर्वक संयम की साधना की। पूज्य कुशलाजी म० के प्रशिष्य श्री रतनचन्दजी म० के क्रिया उद्धार और शिष्य-परिवार का ससिप्त परिचय देते हुए पट्टावली पूर्ण की है।

(२) दूसरी प्राचीन पट्टावली में भगवान महावीर से देवघिगली तक २७ पट्टधर आचार्य और सिद्धान्त-लेखन का परिचय देते हुए निह्णवोत्सति एवं दुष्काल की परिस्थिति का वर्णन किया है।

लोकाशाह द्वारा सिद्धान्त-लेखन, संभवो आदि का प्रतिबोध और भाणजी आदि ४५ के दीक्षा ग्रहण के पश्चात् लहुजी उपनाम लवजी के क्रिया उद्धार का विस्तृत वर्णन किया गया है। सूरत के बीरजी बोहरा के विचारानुसार लोका-गच्छीय बजरगजी के पास सीमित होकर लवजी ने कुछ समय बाद बजरगजी से साधु आचार के बाबत विचार करते हुए निवेदन किया कि भगवन् गच्छ का मोह छोड़ कर क्रिया-उद्धार करो तो मैं आपका शिष्य और आप मेरे गुरु हूँ।

बजरगजी द्वारा स्वीकृत नहीं करने पर ऋषि भीमराजी और सखियाजी के

साथ ये गच्छ त्याग कर अलग हो गये और विहार कर सूरत से लम्भात पहुँचे । सूरत में कपासी सेठ का सहयोग पाकर इन्होंने अरिहन्त-सिद्ध की साखी से पंच महाव्रत धारण कर, शुद्ध समय स्वीकार किया ।

वीरजी ने इनकी महिमा सुनकर सूरत के नवाब को पत्र दिया कि लवजी सेवड़े को लम्भात से निकाल दो । नवाब ने लवजी को बुलाकर अपने यहाँ बिठा लिया । लवजी ने भी शान्त भाव से उपवास कर, भजन-स्मरण में ध्यान जमा लिया । जब बेगम की दासी ने इनको २-३ दिन बिना खाये-पीये भजन करते देखा तब बेगम से जाकर अर्ज की । बेगम ने नवाब को कहा कि फकीर को क्यों रोक रखा है ? इनकी बददुआ से तुम्हारा राज्य बिगड़ जायगा । इस पर नवाब ने लवजी ऋषि को छोड़ दिया । ये वहाँ से कालोदरा गाँव पधारे, लोगो को उपदेश दिया और विहार करते हुए अहमदाबाद चले आये । इतने समय की साधना से लोगो में इनके त्याग, तप का प्रभाव बढ़ चुका था । इसलिए वीरजी बोहरा के विरोध का किसी पर असर नहीं हो सका ।

अहमदाबाद में धर्मसी ऋषि भी प्रचार कर रहे थे । अतः दोनों के अलग-अलग प्रचार से लोगो में समझ भेद न हो इसलिये लवजी ऋषि ने धर्मसी मुनि के यहाँ पधार कर एक होने की विचारणा की । मुनि अमीपाल जी आदि की इच्छा होने हुए भी लसमे सफलता नहीं मिली । दोनों ओर लोग आते-जाते और पूछने, आप दोनों में क्या फर्क है ? धर्मसी ऋषि भी उत्तर में फरमाते कि हम एक हैं, फिर भी दोनों का प्रचार अलग-अलग होता रहा । पट्टावलीकार के लेखन से प्रतीत होता है कि लवजी ऋषि धर्मसी से दीक्षा में बड़े थे, फिर भी लवजी ऋषि का मन जिन मार्ग के हित की दृष्टि से धर्मसी जी के प्रति विनय भाव का ही रहा ।

मुनि धर्मसी शास्त्र के पन्नों को भी परिग्रह समझकर साधुओं के लिये उनके रखने और शास्त्र लिखने का निषेध करते रहे पर कुछ समय बाद उनकी मौजूदगी में ही यह विचार बदल देना पड़ा ।

फिर बुरहानपुर में किसी रंगारिन के यहाँ विष-मिश्रित भोजन करने से लवजी ऋषि को वेदना हुई । उन्होंने सागरी संचारा कर समाधि मरण प्राप्त किया ।

पौछे सोमजी आदि मुनि ने रंगारिन के प्रति बढ़ती हुई प्रतिक्रिया की भावना को शान्तभाव में सहन किया । लवजी ऋषि के बाद श्री सोमजी अण्णगर ने भी मुनि धर्मसिंह जी के साथ वात्सल्य व्यवहार चालू रखा ।

कहा जाता है धर्मसिंह जी के कई मुनि अमीपालजी, श्रीपाल जी आदि सोम जी ऋषि के पास चले आये ।

कोटा सम्प्रदाय के परसरामजी आदि का भी सोमजी भ्रमगार की सेवा में माना जाता है ।

लवजी ऋषि का विस्तृत परिचय होने से इसे लवजी की पट्टावली भी कह सकते हैं ।

(३) तीसरी पूज्य जीवराज जी म० की पट्टावली में भगवान महावीर से नाथूराम जी तक ७० पट्टघरों के नाम और सं० १५६६ में पीपाड नगर में किया उद्धार के लिए निकलने का उल्लेख है ।

(४) चौथी खंभात पट्टावली में भगवान महावीर के बाद २७ पाट के नाम, सूत्र-लेखन और दुर्मिष की स्थिति का संक्षिप्त वर्णन है । तत्पश्चात् लोकाशाह के शास्त्र-लेखन एवं १५३१ में किया उद्धार, पूज्य जीव ऋषि के बाद आई हुई विधिलता में लवजी का किया उद्धार, सोमजी, कानजी, रणछोड़जी और सोमजी के परिवार में ऋषि हरिदासजी, ऋषि प्रेमजी का उल्लेख है । केशवजी और कुंवरजी के गच्छ से निकले हुए साधुओं के नामों में लहूजी के ८ नाम दिये हैं । ॐ से फिर दूसरा भाग चालू होता है । प्रभु महावीर के बाद स्थूल भद्र तक ७ नाम और निहूवों की घटना, चार शाखा एवं शास्त्र-लेखन काल बताया है । तीसरे भाग में इन्द्र की भस्मग्रह बाबत पृच्छा, जम्बू के मोक्ष गमनान्तर १० बोल का विच्छेद लिख कर फिर २७ पाट का परिचय दिया है । विशेष घटनाओं का उल्लेख कर कडवामत की स्थापना, और माननीय साधुओं में १३ नाम लिखे गये हैं । इनको बंदना करना, आहारादि देना प्रमाण माना है ।

(५) ५ वीं गुजरात पट्टावली में पूज्य धर्मदासजी महाराज के शिष्य मूल-चन्दजी महाराज की पट्ट-परम्परा में पूज्य धर्मदासजी से पूज्य हीरोजी तक ४२ आचार्यों का परिचय दिया गया है । इसमें पूर्व पीठिका नहीं है । केवल पूज्य धर्मदास-जी महाराज के सौराष्ट्र वंश का एक परिचय है ।

(६) छठी भूधरजी की पट्टावली में पूज्य भूधरजी महाराज का ऐतिहासिक परिचय और पूज्य रघुनाथजी के संयम-ग्रहण तक का उल्लेख है । पीठिका में २७ पाट और किया उद्धार आदि की घटनाओं का वर्णन है । पूज्य धर्मदासजी से पूर्व भूधरजी तक का परिचय विशेष है । धन्नाजी मालवाड़ा साचोर के कामदार बाबा के पुत्र थे । सगाई और सम्पदा छोड़ कर इन्होंने दीक्षा ली । छत पुढी के सिवाय इन्होंने सब विषय का त्याग किया । ये बड़े तपस्वी थे । उनके पट्टघर पूज्य भूधरजी हुए । सं० १७१७ में दीक्षा, (विचारणीय है) ली और सं० १८०४ में मथारा किया । इनके पाट पर पूज्य रघुनाथजी महाराज बैठे, जिन्होंने सं० १७८७ में अपनी माता के साथ दीक्षा ली ।

(७) सातवीं मरुघर पट्टावली में भगवान महावीर के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, इन्द्रभूति का प्रबोध और सुधर्मा से २७ पाठ का संक्षिप्त इतिहास है। निम्नहूँ की उत्पत्ति के प्रसंग से सं० ६०६ में दिगम्बर मत का उद्भव बताया गया है कल्पस्थिति और दिगम्बर परम्परा के कुछ आचार्य, चार संघ-काष्ठा संघ, मूलसंघ, माधुरसंघ, गोप्यसंघ, २० पंथी, १३ पंथी एवं गुमान पंथी का उल्लेख है।

इस पट्टावली में वतलाया है कि वज्रसेन आचार्य के समय चन्द्र, नागेन्द्र आदि ४ शाखाएँ निकली। उनमें से २ शाखाएँ दिगंबर सम्प्रदाय में मिली और दो श्वेताम्बर सम्प्रदाय में रही। शाखाओं से पहले दो बार दुष्काल पड़े। एक १२ वर्ष का और दूसरा ७ वर्ष का। दुष्काल में भिक्षा की दुर्लभता से बहुत से साधु आचार में डीले पड़ गये। बुद्ध आचार मार्ग पर चलने में जो असमर्थ थे उन्होंने नया मत चलाया। वे श्रावक जनों को कहने लगे कि भगवान् मोक्ष पधारें हैं, इसलिए भगवान् की प्रतिमा स्थापना करो तो भगवान् याद आयेंगे। लोगों के मन में यह कल्पना जैचाई गई। तत्संबंधी कई लाभ बताये और विविध महिमा दर्शक ग्रन्थ भी बनाये।

वीर निर्वाण ६२८ (८८२) में और विक्रम संवत् ४१२ के वैशाख शुक्ल ३ के दिन प्रतिमा की स्थापना हुई। ३६ वर्ष तक अर्थात् ४४८ की साल तक कागज पर भगवान् की तस्वीर बनाकर पूजन करते और उस पर केशर के छीटे डालते। इससे तस्वीर का आकार छिपने लगा। तब लिंगधारी रतन गुरु ने विचार कर काष्ठ की प्रतिमा कराई। संवत् ४४८ के माघ शुक्ल ७ से काष्ठ की प्रतिमा पूजी जाने लगी। ४६ वर्ष तक यह प्रथा चलती रही। फिर गुरुओं ने विचार किया कि काष्ठ की प्रतिमा नित्य प्रक्षाल करने से गीली रहती है, उसमें फूलण आजाती है, इसलिए यह ठीक नहीं है।

तब सं० ४६७ चार सौ सत्ताएँ की साल चैत्र शुक्ल १० को मंदिर में पाषाण की प्रतिमा स्थापन की। धातु की मूर्तियाँ बनने लगी। लोगों के लिए आकर्षण बढ़ाने को प्रभावना, नाटक, और स्वामी वात्सल्य आदि चालू किये। इस प्रकार सं० ८८२ में हिसाबमें प्रकट हुआ, उसका जोर बढ़ा।^१

वीर निर्वाण २२८५ वर्ष के बाद सं० १८१५ की साल भीषण नाम का निम्नहूँ हुआ। पू० श्री रणनाथजी म० सा० के २३ शिष्य हुए, उनमें ७ वें शिष्य भीषण हुए। जिस समय वे पू० महाराज के पास दीक्षा लेने आये तो अपलक्षण देख कर पू० महाराज ने स्वीकार नहीं किया। पू० महाहाज के दूसरे शिष्य नगजी स्वामी थे। भीषण ने उनके पास सं० १८०७ की साल कालू में दीक्षा ग्रहण की। जब पू०

खानाब जी म० ने यह खबर सुनी तो बिचार किया कि पंचम काल में भीषण ऐसे प्राणी से जिन धर्म का हानि होती दिखती है, परन्तु मावी-भाव टाला नहीं जाता, यह समझ कर संतोष किया। स० १८१२ की साल में भीषणजी ने 'जिनरख जिन पाल' का चौकालिया बताया। उसमें दम्बाक्षर देख कर पू० महाराज ने फरमाया कि यह प्रक्षर निकाल दो। पर भीषणजी ने ग्रहंकार बन्ध यह स्वीकार नहीं किया। स० १८१३ की साल में पू० महाराज की इच्छा नहीं होते हुए भी मेवाड़ राजनगर में उन्होंने चातुर्मास किया। चातुर्मास में एक दिन गर्म पानी लाए। उसमें ग्रवानक विच्छून्दरी गिर पड़ी। तब नगराज जी स्वामी ने कहा—इसे जतना से निकाल दो परन्तु पानी अधिक गर्म होने से विच्छून्दरी मर गई। नगजी स्वामी ने कहा—पंचेन्द्रिय की घात हुई है, इसका प्रायश्चित्त लो। उस पर भीषणजी बोले—मैंने उसे मारा नहीं है, उसकी आयु पूरी होने से मर गई है। ऐसे बिकल जाति जीव जो १८ पाप सेवन करते वाले हैं, उन्हें बचाने में क्या लाभ है, इस प्रकार खोटी परुषणा की। चौमासा उतरने पर जब पू० महाराज के पास आए तब पू० महाराज ने दो बार प्रायश्चित्त दिया पर उनके मन के भाव नहीं बदले। इससे पू० खानाबजी महाराज ने स० १८१५ चैत्र सुद ९ शुक्रवार को १३ साधुओं से भीषण जी को बगडी में झलग कर दिया। उनमें से दस साधु भीषणजी को छोड़कर पीछे चले गये। छः तो पूज्य महाराज के पास प्रायश्चित्त लेकर सम्मिलित हो गये और चार श्री रूपचन्द जी स्वामी, श्री जेठमल जी स्वामी आदि ने गुजरात में विहार किया और जूने भण्डारों को देखकर एवं शास्त्र-पढ़कर वस्तु तत्त्व का निर्णय किया, और स० १८३६ की साल में भीषण जी की श्रद्धा छोड़ कर पू० खानाब जी म० की श्रद्धा कायम की। भीषण जी के पास तीन ही साधु रहे थे। वही से तेरह पंथ संप्रदाय निकली।^१

द्वितीय कालकाचार्य द्वारा पचमी से चौथ की सवत्सरी और राजा विक्रम द्वारा वर्णा-वर्णी कैसे हुई इसका ऐतिहासिक परिचय दिया है। फिर बीरभद्र से लेकर आचार्य रूपचन्द्र जी और ७३ वें पट्टधर खेमकरणजी तक का इतिहास प्रस्तुत करते हुए मध्य-वर्ती घटनाओं का उल्लेख किया है। लोकाशाह के क्रियाउद्धार का परिचय देते लिखा है—लूँका अहमदाबाद के दफ्तरी थे। सरकारी काम से मन हट जाने से नाणावटी का काम करने लगे। एक दिन किसी मुसलमान ने मुंहम्मदी के पैसे बंटायें और उन पैसें से बिड़ी मारने को ली। इससे शाह को नाणावटी के धन्ने से भी विरक्ति हो गई।

एकदा रत्नसूरि घूमते हुए अहमदाबाद आये तथा किसी बड़े उपाश्रय में पुराने शास्त्र भण्डार की देखा और श्रावको को बुलाकर भंडार खुलवाया तो मालूम हुआ कि उदई ने पन्ने खारखे हैं। उस समय शाह लखमसिंह आदि सेठियों ने भंडार

को खराब होते देख दिलीपरी से कहा—शास्त्रों का उद्धार होता चाहिये । पुराने पन्नों को नये रूप से लिखाकर सुरक्षित किये जाय, इससे जैन धर्म कायम रहेगा । उस समय अहमदाबाद में सेठिया रतनचन्द भाई थे । उन्होंने कहा कि लूकाशाह जैन धर्म के जानकार हैं तो उनके पास सूत्र लिखाए जायें । तब दूसरे लोगो ने कहा कि लूका सेठ बड़ा धन वाला है, वे पुस्तक नहीं लिखेंगे ।

इस पर सेठ अमीपाल, लखमसी भाई तथा रतन भाई आदि समस्त श्रावकों ने विचार कर लूकाशाह को बुलाया और शास्त्र लिखने के लिये आग्रह पूर्वक निवेदन किया । लोकाशाह ने भी सच का आग्रह और धर्म का काम समझकर लिखना स्वीकार किया । जब सब शास्त्रों का लिखना पूर्ण हो गया, तब लोकाशाह अपने घर पर सूत्र सिद्धान्त का वाचन करने लगे । सेठ लखमसी और रतनसिंहजी आदि अनेक भग्य जीव सुनने को आते । आगे जाकर सिरौही के सेठ श्री नागजी, मोती चन्द जी आदि एवं भरठवाडा के सच जो यात्रा के लिये जा रहे थे, उनके आने और सिद्धान्त-श्रवण का भी उल्लेख है । स. १५३१ में सेठ सरवाजी, दयालजी, भाणजी, नून जी, जगमालजी आदि ४५ को वैराग्य उत्पन्न हुआ और दीक्षा लेने की भावना प्रगट की । उस समय लोकाशाह गृहस्थ थे । उन्होंने कहा—दीक्षा तो मुनि देते हैं । फिर पचम काल के अन्त समय तक शासन चलने का विचार कर लोका शाह ने लखम सी आदि धर्म प्रेमी सेठो को बुलाया और कहा कि भरत क्षेत्र में कहीं भी सिद्धान्त के अनुसार शुद्ध सयमी मुनिराज होने चाहिये । उनको किसी तरह बुलाया जाय तो बड़ा उपकार का कारण है । श्रावको ने भी देश-देशान्तर में पता चलाया तो मालूम हुआ कि हैदराबाद जिले में जानकृषिजी २१ ठाणो से विराजमान हैं । उनकी सेवा में प्रार्थना की गई और मुनिराज भी परीपहो को सहनै हुए अहमदाबाद पधारे ।

सरवाजी, दयालजी, भाणजी, नूनजी आदि ४५ भग्य जीवों ने उनकी सेवा में सं० १५३१ बंसाख सुबला १३ को मुनि-धर्म ग्रहण किया । ज्ञान ऋषि ६१ वें पट्टधर कहे गये । १५३२ की साल में नानजी और जगमाल जी ने भी उनकी सेवा में दीक्षा ग्रहण की । सं० १५३८ के वर्ष मीगसर सुद ५ को लूका जी ने दीक्षा लेकर ज्ञान ऋषिजी का शिष्यपन स्वीकार किया । उनको सुमतिसेन के शिष्य के रूप में घोषित किया ।

लोकाशाह की दीक्षा के लिए सूरत के कल्याणजी भंशाली के भन्डार में संस्कृत-पट्टावजी बताई जाती है । फिर यति ज्ञानसागर जी द्वारा लिखित नाटक में भी लोकाशाह के दीक्षा का वर्णन बताया गया है ।

लौकागच्छ के अश्रुदय और शिथिलाचार के प्रति लोगों का तिरस्कार देख कर १५३२ में आनन्दविमल सूरि ने क्रिया उद्धार किया (कहीं २ इनके क्रिया उद्धार का काल १५८२ माना गया है) लोकागच्छ के आठ पाठ शुद्धाचारी रहे. नवमे पाठ पर फिर शिथिलाचार का प्रसार होने लगा । इसके बाद पोतिया बंध की उत्पत्ति बताई गई है । सं० १६७५ की साल धराजजी स्वामी के बेटे जसाजी से पोतिया बंध की शुरुआत बताई जाती है । पंचमकाल में महाव्रत का पालन नहीं होता । श्रावक धर्म का ही पालन संभव है । इस प्रकार की मान्यता रखकर जसाजी ने श्रावक के वेश में खुली ढण्डी रखकर गोबरी करनी चालू की । सं० १६२५ तक यह परम्परा चलती रही ।

इसके पश्चात् बोहरा बीरजी के दोहित्र लवजी की वैराग्योत्पत्ति और बजरग जी के पास दीक्षा-ग्रहण की बात लिखी गई है । सं० १७१२ में लवजी का होना लिखा गया है । लवजी मुनि के पड़े हुए मकान में ठहरने से लोग उन्हें ढूँढिया कहने लगे । सं० १७१४ के वर्ष पोष बदी ३ को ढूँढिया कहालाये ।

लवजी ऋषि के शिष्य सोमजी स्वामी हुए । उनके शिष्य हरिदासजी, प्रेमजी, कानजी, गिरधरजी, अमीपालजी, श्रीपालजी, हरिदासजी, जीवाजी, सहेर करणीमलजी, केसुजी, हरिदासजी, समरधजी, गोदाजी, मोहनजी आदि हुए । यह कानजी ऋषि की परम्परा है ।

फिर क्षेमकरण आचार्य के पाठ धर्मसिंहजी ७३ वें बनलाये गये हैं । इनके परिचय में लिखा गया है कि १३ वर्ष गृहस्थपन में रहकर ५५ वर्ष की सामान्य दीक्षा पालन की और ४ वर्ष आचार्य पद पर रहे । कुल ७२ वर्ष का आयु पालकर सं० १७०२ के साल में देवलोक हुए ।

धर्मसिंहजी के बाद ७४ वें नगराजजी स्वामी हुए । ७५ वें जीवराजजी स्वामी १२ वर्ष संसार में रहकर २५ वर्ष^१ सामान्य दीक्षा पाली, फिर १३ वर्ष आचार्य रहे । कुल ६३ वर्ष संयम पालकर सं० १७२१ के वर्ष इनका स्वर्गवास लिखा गया है ।

सं० १७१५ की साल में गुजरात के गोल गांव में यति लोगो ने पीले वस्त्र धारण किये, तब से पीताम्बर सम्बेगी कहालाये ।

आ० जीवनराजजी के पद पर ७६ वें धर्मदासजी स्वामी बतलाये जाते हैं । पट्टाबली लेखक के अनुसार धर्मदासजी ने १५ वर्ष संसार में रहकर फिर ५ वर्ष

व्रतधारी रूप से बिताये और १५ दिन की सामान्य प्रव्रज्या पालकर ५२ वर्ष आचार्य पद का भोग किया। ७२ वर्ष का कुल आयु पूर्ण कर सं० १७७३ के समय धारा नगरी में इनका स्वर्गवास बतलाया जाता है।

श्री धर्मदासजी म० का परिचय देते हुए लेखक ने प्रथम २१ साधियों के साथ लवजी महाराज के पास आकर धर्म चर्चा करने का उल्लेख किया है। लवजी म० के साथ ७ बोल का अन्तर पड़ा, इसलिये धर्मदासजी ने मुनि धर्मसिंहजी के पास आकर चर्चा की और २१ बोल का फर्क होने से उनके पास भी दीक्षित नहीं हुए और जीवराजजी स्वामी से प्रश्नोत्तर किये। जीवराजजी महाराज के द्वारा समाधानकारक उत्तर पाकर धर्मदासजी को सतोष हुआ और घन्नाजी आदि २१ साधियों के साथ स्वयं ग्रहमदाबाद की बादशाही बाड़ी में सं० १७२१ कात्ति सुद ५ को दीक्षित हुए।

धर्मदासजी के स्वयं दीक्षा लेने की प्रसिद्धी लेखक के अनुसार इसलिये हुई कि १५ दिनों के बाद ही जीवराजजी स्वामी का स्वर्गवास हुआ। अतः लोग धर्मदासजी को स्वयं दीक्षित कहने लगे।

इसके बाद धर्मदासजी के ६६ शिष्यों के नाम देकर समुदाय स्थापन करने वाले २१ प्रमुख शिष्यों के नाम दिये गये हैं।

घन्नाजी को सौचोर के मालवाडा कामदार मुषा बाधाजी के पुत्र बतलाया है। सं० १७१३ में ये प्रेमचन्दजी के पास पोतियाबंध की श्रद्धा से ८ वर्ष करीब रहे और १७२१ में दीक्षा ग्रहण की। लम्बे समय तक एकान्तर तप करते हुए कितने ही वर्ष मेढ़ता स्थिरवास विराजमान रहे और सवत् १७८४ के आश्विन शुक्ल दशमी को समाधि मरण प्राप्त किया। इनकी पूर्ण आयु ८३ वर्ष की थी।

पूज्य घन्नाजी म० के बाद ७८ वे पाट पर भूधरजी म० विराजमान हुए। भूधरजी म० ५० वर्ष घर में रहे। ७ वर्ष सामान्य प्रव्रज्या पाल कर २० वर्ष आचार्य पद पर सुचोभित रहे। सं० १८०४ में मेढ़ता चातुर्मास के समय देवलोक पधारे। इनके ६ शिष्य बतलाए गये हैं, फिर भूधरजी म० के पट्टघर ७६ वें श्री रघुनाथजी म० का परिचय देते हुए उनको परम्परा का उल्लेख किया है। सं० १८४० में पूज्य रघुनाथजी से श्री जयमल्लजी म० पृथक् हुए पर जब तक पू० रघुनाथजी म० विराजे रहे तब तक श्री जयमल्लजी म० ने पूज्य पदवी की चादर नहीं धारण की। पू० रघुनाथजी सं० १८४६ माघ शुक्ल ११ को मेढ़ता में देवलोक हुए।

तत्पश्चात् सं० १८५४ में श्री भुमानमलजी म० अलग हुए। सं० १८७१ में श्री चौधमलजी म० अलग हुए। सं० १८८४ में श्री महाचंदजी म० अलग हुए। सं० १८८५ में श्री माणकचंदजी म० अलग हुए (पृ० २६८) श्री रघुनाथजी म० के पट्टधर पूज्य जीवणचंदजी म० हुए इनके १३ शिष्य थे, उनमें से चौधमलजी स्वामी का अलग संघाडा चालू हुआ। पूज्य जीवणचंदजी म० के बाद पूज्य त्रिलोकचंदजी म० और तिलोकचंदजी म० के पाट पूज्य पन्नालालजी और पूज्य पन्नालालजी म० के पाट दौलतरामजी म० और दौलतरामजी म० के पाट पूज्य क्षोभाश्वमलजी म० बतलाये गये हैं। सबका संक्षिप्त परिचय देते हुए लेखक मुनि अमरचंदजी ने अपनी गुरु परम्परा काव्य में प्रस्तुत की है। इसके बाद पूज्य रघुनाथजी म० की परम्परा में आज तक दीक्षित सन्तों की नामावली प्रस्तुत की गई है।

उपसंहार में वर्तमान सम्प्रदायो का उल्लेख करते हुए बतलाया है कि (१) पू० रघुनाथजी म० की सम्प्रदाय (२) पूज्य जयमलजी म० की सम्प्रदाय (३) पूज्य रतनचंदजी म० की सम्प्रदाय (४) पूज्य चौधमलजी म० की सम्प्रदाय और (५) पूज्य माहाचंदजी म० की सम्प्रदाय धन्नाजी म० से सम्बन्धित हैं। पूज्य हरिदासजी म० के साधु पंजाब में विचरते हैं जो पूज्य अमरसिंहजी म० का संघाडा नाम से प्रसिद्ध हैं। और पूज्य जीवराजजी म० के टोले में पूज्य अमरसिंहजी, पूज्य नानकरामजी, पूज्य स्वामीदासजी म० की सम्प्रदाय मारवाड़ में विद्यमान है।

(८) आठवीं—'मेवाड पट्टावली' में भगवान महावीर के निर्वाण बाद भस्मग्रह के फल की पृच्छा करते हुए चतुर्विधसंघ के उदय की पृच्छा की गई है। सुधर्मस्वामी आदि पट्टधर आचार्य और मध्यवर्ती घटनाओं का वर्णन करते हुए लोकाशाह द्वारा दयाधर्म के प्रचार का वर्णन किया गया है, फिर लवजी ऋषि के संक्षिप्त क्रिया उद्धार का वर्णन कर धर्मदासजी म० के दीक्षा एवं शिष्य-वर्ग का परिचय दिया है। पूज्य रोहीदासजी म० के अमिग्रह पूर्वक तपोयय जीवन का वर्णन करते हुए स्वर्गीय पूज्य मोतीलालजी म० तक का उल्लेख किया है। तपोधनी बालकृष्णजी म० के चमत्कारपूर्ण जीवन की घटना के साथ तपस्वी गुलाबसिंहजी म० का भी परिचय दिया गया है। प्रमुक्तता से मेवाड परम्परा के सन्तो का परिचय होने से इसको मेवाड पट्टावली कहा गया है।

(९) नवमी दरियापुरी सम्प्रदाय की पट्टावली में सुधर्मस्वामी के बाद २७ वें पट्टधर देवधिगणी से आर्य ऋषि आदि आचार्यों का परिचय देते हुए ४९ वें पट्टधर लोकाशाह को आचार्य माना है। ६३ वें क्रिया-उद्धारक धर्मसिंहजी म० से इस परम्परा का आरम्भ माना गया है।

इस परम्परा में पूज्य सोमजी आदि २५-२६ पट्टधर हो चुके हैं। वर्तमान में पू० चुन्नीलालजी म० विद्यमान हैं।

सामायिक में दो करण तीन योग से पापों का त्याग किया जाता है। इसे छः कोटि पञ्चक्खाण कहते हैं। दरियापुरी परम्परा के अनुसार श्रावक के ८ कोटि पञ्चक्खाण माना गया है। मनसे सावध-प्रवृत्ति को करने व कराने का त्याग कर केवल अनुमोदन ही खुला रखा जाता है। इसको ८ कोटि पञ्चक्खाण कहते हैं। मूल मान्यताओं में समानता होने पर भी कुछ बोलो के अन्तर से दरियापुरी-सम्प्रदाय अलग मानी गई है।

(१०) दसमी कोटा परम्परा की पट्टावली में प्रारम्भिक पीठिका के रूप से मध्यवर्ती घटनाएँ, दुष्काल की परिस्थिति से बढ़ता हुआ शिथिलाचार और उसके निवारण हेतु लोकाशाह द्वारा किये गये प्रयत्न का वर्णन अग्न्य पट्टावलियों के समान ही है।

विशेष मे-लवजी ऋषि के पास अमीपालजी आदि जो गच्छ त्याग कर क्रिया उद्धार में सम्मिलित हुए, उन महापुरुषों का निर्देश किया गया है। परम्परा के आठ्य पुरुष स्वरूप श्री हरजी, श्री गोधोजी, श्री परसरामजी, श्री लोकमणजी, श्री माहारामजी, श्री दीलतरामजी, श्री लालचन्दजी, श्री गणेशरामजी, श्री गोविंदरामजी, तपसी हुकमीचन्दजी आदि का उल्लेख किया गया है। यह संक्षिप्त परिचय हुण्डी रूप से लिखा है। फिर बार्हस सम्प्रदाय के प्रवर्तक सन्तों के नाम पूर्वक बार्हस-टोला की गणना की गई है। लेखक दयामपुरा के तनसुखजी पटवारी ने पूज्य गजानन्दजी म० के पत्र के आधार पर स० १९२३ में प्रतिलिपि की है। उसका उतारा स० १९५४ में उनके वंशज हजारीलालजी द्वारा किया गया है।

पूरक पत्र में पू० दीलतरामजी म० से क्रमबद्ध परिचय दिया गया है। दीलतरामजी म० के शिष्य लालचंदजी और उनके शिष्य तपस्वी हुकमीचन्दजी म० बतलाये गये हैं। उनको शिष्य करने का त्याग होने से पू० गोविन्दरामजी के शिष्य श्री दयालजी म० के पास रतलाम में शाह शिवलालजी ने दीक्षा ली। ये पू० हुकमीचन्दजी म० के बाद उनके पट्टधर हुए। स० १९०७ में शिवलालजी म० के ५ शिष्य हुए और चतुर्विध संघ की साक्षी से उनको आचार्य पद प्रदान किया गया। स० १९१७ में तपस्वी हुकमीचन्दजी म० जावद में स्वर्गधाम पधारे।

स० १९२५ में उदयचन्दजी म० को जावद में पूज्य पदवी दी गई। स० १९३२ में पूज्य शिवलालजी म० देबलोक पधारे। यह कोटा परम्परा की एक शाखा है जो पूज्य हुकमीचन्दजी म० के नाम से कही जाती है।

पूज्य दीनतरामजी म० के शिष्य गोविंदराम जी से श्री फतहचन्दजी म०, श्री ज्ञानचन्दजी म०, श्री छगनलालजी म०, श्री बस्तावरमलजी म०, श्री कजोडीमलजी म०, श्री शंकरलालजी म०, श्री प्रेमराजजी म०, श्री खादीवाले गणेशलालजी म० हुए। इनके सन्त महाराष्ट्र में विचरते हैं।

पूज्य अनूपचन्दजी म० के परिवार में भी श्री बलदेवरामजी म०, श्री हरकचन्दजी म० आदि हुए। अभी रामकुमारजी म० के शिष्य श्री रामनिवासजी कोटा परम्परा के सन्तों में से विराजमान हैं। परसरामजी म० से चलने वाली एक शाखा जिसमें मुनि गोडीदासजी म० हुए, उनके शिष्य मोहन मुनि वर्तमान में मौजूद हैं।

संशोधन और प्रतिलिपि-विधान में सवधानी रखते हुए भी लिपि-दोष, भक्तिदोष और भाषा-भेद से स्वलना संभव है।

प्रस्तुत संग्रह के संशोधन में अजमेर के मुनि हगामीलालजी म० का संग्रह, बड़ीदा के लोंकागच्छीय यति हेमचन्द्रजी का संग्रह, आचार्य विनयचंद्र ज्ञान भंडार, जयपुर और जैन रत्न पुस्तकालय, जोधपुर के अतिरिक्त अमर जैन ग्रंथालय, बीकानेर की लोंकागच्छ की बड़ी पट्टावली तथा तपागच्छ पट्टावली व दिव्य ज्योति आदि ग्रंथ एवं प्रतियों का भी उपयोग किया गया है।

पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी का भी विनयचन्द्र कृत पद्य पट्टावली के अनुवाद और अन्य संशोधन-कार्य में यथासमय सहयोग मिलता रहा है। विभिन्न संग्रहालयों के अधिकारियों एवं ग्रंथकारों का सहयोग भुलाया नहीं जा सकता।

आशा है, इतिहास प्रेमी आगे भी इतिहास के छिपे तथ्यों को प्रस्तुत करने में सहयोग करते रहेंगे।

—आचार्य श्री हस्तीमलजी म०

प्रस्तावना



हमारा सुनहला अतीत कितना उज्ज्वल है । उस गंभीर रहस्य को जानने की जिज्ञासा मानव-मन में सदा ही अठखेलियां करती रही है । उसी जिज्ञासा से उत्प्रेरित होकर उसने उसे द्योतित करने के लिए समय-समय पर प्रयास किया है । उसी लड़ी की कड़ी में प्रस्तुत ग्रंथ भी है । इस ग्रंथ में विभिन्न भण्डारों की तरह मे दबी हुई, इधर-उधर बिलरी हुई, अस्त-व्यस्त पट्टावलियों को समुचित रूप से संकलित व सम्पादित कर प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष रखा गया है । ये पट्टावलियाँ अपने युग का प्रतिनिधित्व करती हैं, अतीत की सुमधुर स्मृतियों को वर्तमान में साकार करती हैं, पूर्वजों की गौरव-गाथाओं को प्रकट करती हैं और यथार्थ का चित्रण कर भावी गति-प्रगति के हिमगिरियों के गगनचुम्बी शिखरावलियों को छूने की प्रबल प्रेरणा देती हैं ।

जैन साहित्य में पट्टावली-लेखन का युग चतुर्विंश पूर्वधर स्वविर भायं भद्रबाहु स्वामी^१ से प्रारंभ होता है । उन्होंने दशाश्रुत स्कंध के आठवें अध्याय—कल्प सूत्र में स्वविरावली का अंकन कर^२ गौरवमयी परम्परा का श्री गणेश किया । उसके

१—(क) वंदामि भद्रबाहुं

पाईणं चरिमसगलसुयनारिणं

सुत्तस्स कारगमिसिं

वसामु कप्पे य ववहारै ॥ १ ॥

—दशाश्रुत स्कंध नियुक्ति. गा० १

(ख) पंचकल्प महाभाष्य गाथा—१ से ११ तक ।

(ग) तेण भगवता आघारपकप्प-दस्त-कप्प-ववहाराय नवमपुज्वनी संद-भूता निज्जुद्धा

—पंचकल्प पूर्णो पत्र १ लिखित

२—लेखक ने अहमदाबाद के लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्या मन्दिर में दशाश्रुत स्कंध की प्राचीन एक हस्तलिखित प्रति देखी है जिसमें आठवें

पश्चात् देवद्विगणी क्षमाश्रमणने अनुयोगघरों की पट्टावली (स्वविरावली) अंकित की^१। स्पष्ट है आगम साहित्य में इन्ही आगमों में स्वविरावलिवां आई हैं। कल्प सूत्र में स्वविरावली पट्टानुक्रम से है तो नन्दी सूत्र में अनुयोगघरों की दृष्टि से है। पट्टानुक्रम (गुरु-शिष्य क्रम) से देवद्विगणी का क्रम चौत्तीसवां और युग प्रधान (अनुयोगघर) के रूप में सत्ताइसवां है।^२

यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कल्पसूत्र की स्वविरावली भी एक समय में और एक साथ नहीं लिखी गई है अपितु उसका संकलन भी आगम-वाचना की तरह तीन बार हुआ है। प्रथम आर्य यशोभद्र तक स्वविरो की एक परम्परा निरूपित है जो पाटलीपुत्र की प्रथम वाचना के पूर्व की है। इस वाचना में पूर्ववर्ती स्वविरो की नामावली सूत्र के साथ संकलित की गई है। उसके पश्चात् उसमें दो धाराएं प्रकट हुई हैं। एक सक्षिप्त और दूसरी विस्तृत, जिनकी क्रमशः परिसमाप्ति आर्य तापस और आर्य फल्गुमित्र (फल्गु मित्र) तक होती है, वे द्वितीय वाचना के समय सलग्न की गई हैं और उसके पश्चात् की स्वविरावली देवद्विगणी क्षमाश्रमण ने अन्तिम वाचना में गुम्फित की है। सक्षिप्त स्वविरावली में मुख्यतः प्रमुख स्वविरो का निर्देश है तो वितृत स्वविरावली में मुख्य स्वविरो के अतिरिक्त उनके गुरु भ्राता और उनसे विस्तृत गण-कुल प्रभुति शाखाओं का भी उल्लेख है।^३ जहाँ सक्षिप्त स्वविरावली में आर्यवज्र के चार शिष्य निरूपित किये गये हैं।^४ वहाँ विस्तृत स्वविरावली में तीन शिष्य बताये हैं। उनके नामों में

अध्ययन में सम्पूर्ण कल्प सूत्र है। इस प्रति का उल्लेख श्री पुण्यविजयजी ने कल्पसूत्र की भूमिका में किया है।

१—जे अन्ते भगवन्ते,
कालिभ सुय आणु ओगिए धीरे
ते परामिज्जए सिरसा,
नारणस्स परूवण बोण्णं

—नन्दी स्वविरावली, गा० ४३

२—देखिए—पट्टावली पराग संग्रह, कल्याणविजय गणी, पृ० ५३

३—देखिए—लेखक द्वारा सम्पादित कल्पसूत्र-स्वविरावली-वर्णन

४—धेरस्स गुं अज्जवड्ढस्स गोयमगोत्तस्स अंतेवासी चत्तारी धेरा-धेरे अज्ज-
नाइले धेरे अज्ज पोमिले, धेरे अज्जपोमिले, धेरे अज्ज जयंते, धेरे अज्जतावसे

—कल्प सूत्र, सू० २०६

भी अन्तर है। प्रथम में आर्य नागिल, आर्य पदिमल, आर्य जयन्त और आर्य तापस हैं तो द्वितीय में आर्य वज्रसेन आर्य पद्म और आर्य रथ^१।

इस अन्तर का मूल कारण यह है कि अमरु भगवन् महावीर के पश्चात् अनेक बार भारत भूमि में दुष्काल पड़े, जिससे उत्तर भारत में जो अमरु संघ विचरण कर रहा था उसे विवश होकर समुद्र तटवर्ती प्रदेश की ओर बढ़ना पड़ा, पर जो बुद्ध थे तथा सांरीरिक दृष्टि से चलने में असमर्थ थे वहीं पर विचरते रहे, जिससे अमरु संघ दो भागों में विभक्त हुआ। प्रथम दुष्काल की परिसमाप्ति पर वे सभी पुनः सम्मिलित हुए किन्तु सम्प्रति मौर्य के समय और आर्य वज्र के समय दुर्भिक्ष के कारण जो अमरु संघ दक्षिण, मध्य भारत व पश्चिम भारत में आया था वह दीर्घ-काल तक उत्तर भारत में विचरने वाले अमरु संघ से न मिल सका, जिसके फलस्वरूप उत्तर में विचरण करने वालों का पृथक संघ स्थिर हुआ और दक्षिण तथा पश्चिम प्रांत में विचरण करने वालों का दूसरा स्थिर हुआ। इस कारण स्थविरावली के नामों में पृथक्ता आई है। दक्षिणात्य अमरु संघ १७० वर्ष तक अपनी स्वतन्त्र शासन पद्धति चलाता रहा, उसके पश्चात् विक्रम की द्वितीय शताब्दी के मध्य में पुनः वह उत्तरीय अमरु संघ में सम्मिलित हो गया।

यह पहले लिखा जा चुका है कि आगमों की तीन वाचनाएं हुईं।

प्रथम वाचना आर्य स्कन्दिल की अध्यक्षता में माथुरा में हुई थी और इस वाचना में उत्तर प्रदेश और मध्य भारत में विचरण करने वाले अमरु ही एकत्र हुए थे। यह वाचना माथुरी वाचना के रूप में विभूत हुई।

दूसरी वाचना आर्य नागार्जुन के नेतृत्व में दक्षिणात्य प्रदेश में विचरण करने वाले अमरुओं की वल्लभी में हुई थी। पर दोनों वाचना में एक दूसरे से, एक दूसरे नहीं मिले।

तीसरी वाचना में दोनों ही वाचना के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। माथुरी वाचना के प्रतिनिधि देवद्विगणी थे और वालभी वाचना के प्रतिनिधि कालकाचार्य थे। जिन पाठों के सम्बन्ध में दोनों शंका रहित थे वे पाठ एक मत से स्वीकार

१—चेरस्स णं अज्जवइरस्स गोतमसमोत्तस्स इमे तिग्गि चेरा अन्तेवासी अहा-
वच्चा अभिन्नाया होत्था, तंजहा—येरे अज्जवइरसेरो येरे अज्ज पउमे,
येरे अज्जरेहे—

कर लिये गये और जिनमें मतभेद था, उन्हें उस रूप में स्वीकार कर लिया गया ।
 भाषुरी वाचना के अनुसार स्थविर-क्रम इस प्रकार है—

१—सुधर्मा	२—जम्बू
३—प्रभव	४—सत्यम्भव
५—यशोभद्र	६—सम्भूतविजय
७—भद्रबाहु	८—स्थूलभद्र
९—महागिरि	१०—सुहस्ती
११—बलिस्सह	१२—स्वाति
१३—दयामार्य	१४—शाण्डिल्य
१५—समुद्र	१६—मग्न
१७—नन्दिल	१८—नागहस्ती
१९—रेवति नक्षत्र	२०—ब्रह्मदीपिकसिंह
२१—स्कन्दिनाचार्य	२२—हिमवन्त
२३—नागाकुल वाचक	२४—भूतदिप्त
२५—लोहित्य	२६—दुष्यगणी
२७—देवद्विगणी	

बालमी वाचना के अनुसार स्थविर-क्रम इस प्रकार है :—

१—सुधर्मा	२—जम्बू
३—प्रभव	४—सत्यम्भव
५—यशोभद्र	६—सम्भूतविजय
७—भद्रबाहु	८—स्थूलभद्र
९—महागिरि	१०—सुहस्ती
११—कालकाचार्य	१२—रेवतिमित्र
१३—भार्य समुद्र	१४—भार्य मग्न
१५—भार्य धर्म	१६—भद्र गुप्त
१७—श्री गुप्त	१८—भार्य वज्र
१९—भार्य रक्षित	२०—पुष्य मित्र
२१—वज्रसेन,	२२—नागहस्ती
२३—रेवतिमित्र	२४—ब्रह्मदीपिकसिंह सूरि
२५—नागाकुल	२६—भूतदिप्त
२७—कालकाचार्य	

देवद्विगणी क्षमाश्रमण की गुरु-परम्परा

१—बुधर्मा	२—जम्बू
३—प्रभव	४—शार्ङ्गभक्ष
५—यशोभद्र	६—संभूतविजय-भद्रबाहु
७—स्थूल भद्र	८—महागिरि-सुहस्ती
९—सुस्थित सुप्रतिबुद्ध	१०—आर्य इन्द्रदिप्त
११—आर्य दिप्त	१२—आर्य सिंहगिरि
१३—आर्य वज्र	१४—आर्य रथ
१५—आर्य पुष्पगिरि	१६—आर्य फल्गुमित्र
१७—आर्य धागिरि	१८—आर्य शिवभूति
१९—आर्य भद्र	२०—आर्य नक्षत्र
२१—आर्य रक्ष	२२—आर्य नाग
२३—जेष्ठिल	२४—आर्य बिष्णु
२५—आर्य कालक	२६—सपलित तथा आर्यभद्र
२७—आर्य वृद्ध	२८—आर्य संघालित
२९—आर्य हस्ती	३०—आर्य धर्म
३१—आर्य सिंह	३२—आर्य धर्म
३३—आर्य चांडिल्य	३४—देवद्विगणी

तात्पर्य यह है कि स्वविरावलियों में पृथक्ता रही है इसलिए प्रबुद्ध पाठक 'पट्टावली प्रबन्ध संग्रह' का पारायण करते समय एक ही विषय में और एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध में विभिन्न पट्टावलियों में विभिन्न मत देख कर चबराएँ नहीं किन्तु समन्वय की दृष्टि से, तटस्थ बुद्धि से सत्य-तथ्य को समझने का प्रयास करें।

यह पूर्ण सत्य है कि श्रमण भगवान् महावीर से देवद्विगणी क्षमाश्रमण तक एक विद्युद् परम्परा रही है। उसके पश्चात् चैत्यवासियों का प्रभुत्व जैन परम्परा पर छा जाने से परम्परा का गौरव अक्षुण्ण न रह सका। आचार्य अमरदेव ने उस स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है^१—

१—देवद्विगणी क्षमाश्रमणजा

परंपरं भावमो वियाणेमि ।

सिद्धिमायारे ठविया

दब्बेण परंपरा बहुहा ॥

देवद्विगुणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव परम्परा मानता हूँ। इसके पश्चात् छिथिलाचारियों ने अनेक द्रव्य परम्पराओं का प्रवर्तन किया और वे द्रव्य परम्पराएँ दीपदी के दुकूल की तरह निरन्तर बढ़ती रहीं। धर्म के मौलिक तत्त्वों के नाम पर विकार, असंगतियाँ और साम्प्रदायिक कलहमूलक धारणाएँ पनपती रही।

मोलहवीं शती वैचारिक क्रान्तिकारियों का स्वर्ण युग है। इस काल में भारत की प्रत्येक परम्परा में अनेक नातिकारी नररत्न पैदा हुए जिन्होंने क्रांति की शंख-ध्वनि से जन-जीवन को नवजागरण का दिव्य संदेश दिया। कबीर, धर्मदास, नानक, सत रविदाम, तरणतारण स्वामी और दीर लोकाशाह ऐसे ही क्रांतिकारी थे। यह स्वाभाविक था कि अप्रत्याशित और आकस्मिक क्रांतिकारी विचारों से स्थितिपालक समाज में हलचल पैदा हुई और परिणाम स्वरूप प्रतिक्रियावादी भावनाएँ उभरी, किन्तु वे उसे समाप्त नहीं कर सकी पर पूरी क्षति के साथ पाल-विकता से लड़ती रही। उसका आदर्श व्यक्त न होकर गुण था, समाष्ट न होकर सम्यग् दृष्टि थी। समीचीन तत्त्वों पर आधुन होने के कारण वह एक सुदृढ़ और सौन्दर्य सम्पन्न परम्परा निमित्त कर सकी जिस पर शताब्दियों से मानवता गर्व कर रही है।

श्री लोकाशाह तथा स्थानकवासी समाज के महापुरुष क्रियोद्वारक (१) श्री जीबराजजी महाराज, (२) श्री लवजी ऋषिजी म० (३) श्री धर्मसिंहजी महाराज (४) श्री धर्मदासजी म० और (५) श्री हरजी ऋषिजी म० किन-किन परिस्थितियों में उठे, उभरे, उन्होंने मानव-चेतना के किन निगूढ़ गह्वरों में क्रांति के स्वरो को मुखरित किया? उनका कहां और कब, कितना और कैसा प्रभाव पड़ा? क्या-क्या कार्य हुआ? आदि की संक्षिप्त जानकारी संकलित पट्टावलियों की पंक्तियों में समुपलब्ध होगी। पाठक उन्हीं के शब्दों में रसास्वादन करें।

पट्टावलियों के अब तक अनेक संग्रह विविध स्थलों से प्रकाशित हुए हैं उनमें से कितने ही संग्रह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। किन्तु उन संग्रहों में लोकागच्छ की और स्थानकवासी परम्परा की विषयस्त पट्टावलियाँ, सामान्यतः नहीं दी गई हैं। यदि कहीं पर दी भी गई हैं तो इतने विकृत रूप से दी गई हैं कि उनके असली रूप का पता लगाना ही कठिन है। इतिहासकार को इतिहास लिखते समय तटस्थ दृष्टि रखनी चाहिए, जो इतिहासकार इस नियम का उत्संघन करता है उसका इतिहास सत्य से परे हो जाता है। अभी कुछ समय पहले ऐसा एक ग्रंथ 'पट्टावली पराग संग्रह' नाम से देखने में आया। इसके सम्पादक मुनि श्री कल्याणविजयजी

अच्छे विद्वान् और इतिहासवेत्ता हैं। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि 'पट्टावली पराग संग्रह' (पट्टावलियों का पराग) में पट्टावली पराग के बदले निम्नस्तरीय आलोचना हैं। स्था० सम्प्रदाय के दो-तीन मुनियों के लिए तो नाम निर्देशपूर्वक आलोचन किये हैं जो इतिहास-लेखन में अबाधनीय हैं। इतिहास-लेखक इस प्रकार व्यक्तिगत आलोचन से बचकर तुलनात्मक समीक्षा तो कर सकता है, ऐसी आलोचना नहीं।

मुझे परम आह्लाद है कि प्रस्तुत ग्रंथ के संकल्पिता व सम्पादक ने इतिहासकार के मूल भाव की रक्षा की है। उन्होंने जो पट्टावलियां जहां से जिस रूप में उपलब्ध हुईं, उन्हें उसी रूप में प्रकाशित की हैं, कही पर भी किसी सम्प्रदाय विशेष को श्रेष्ठ या कनिष्ठ बताने का प्रयास नहीं किया है।

इस प्रकार के पट्टावलियों के संग्रह की चिरकाल से प्रतीक्षा की जा रही थी, वह इस ग्रंथ के द्वारा पूरी हो रही है। यों इसमें भी अभी तक सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज की पट्टावलियां नहीं आ पाई हैं। ज्ञात से भी अज्ञात अधिक हैं। मुझे आशा ही नहीं, अपितु दृढ़ विश्वास है कि जैन इतिहास निर्माण समिति का सतत प्रयास इस दिशा में चालू रहेगा और जहां से भी पट्टावलियां तथा प्रसस्तियां उपलब्ध होगी, उनका प्रकाशन होता रहेगा।

मैं ग्रन्थ का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं कि उन्होंने मां भारती के भव्य भण्डार में ऐसी अनमोल कृति समर्पित की है। जैन इतिहास निर्माण समिति पण्डित प्रवर श्रद्धेय मुनि श्री हस्तीमलजी म० सा० से दिशा-निर्देश प्राप्त कर ऐसी और भी महत्त्वपूर्ण अन्वेषणा प्रधान कृतियां समर्पित करेंगी, ऐसी आशा है।

—श्री देवेन्द्र मुनि, शास्त्री, साहित्यरत्न

भूमिका

जैन धर्म भारत का एक प्राचीनतम धर्म है। जैन परम्परा के अनुसार इस अवसर्पणीकाल में भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर हुए जिन्होंने मानव को विद्यायें, कलायें सिखाने के बाद धर्म की स्वयं प्राराधना करके कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया। वे वीतरागी एवं जिन बने। उनका उपदिष्ट धर्म मार्ग, जैन धर्म का प्रादि स्रोत है। उसके बाद अन्य २२ तीर्थंकरों ने उसी शाश्वत धर्म का प्रचार किया। अन्तिम २४ वें तीर्थंकर का धर्म-शासन, वर्तमान में चल रहा है। भगवान महावीर के ११ गणधरों में से सुधर्मा स्वामी की परम्परा अभी चल रही है। वैसे उपदेश गच्छ वाले अपनी परम्परा भगवान पार्श्वनाथ से भी जोड़ते हैं, पर पार्श्वनाथ के बहुत से मुनि भगवान महावीर के शासन में समाविष्ट हो चुके थे। पार्श्वनाथ परम्परा का स्वतन्त्र अस्तित्व जैन आगमादि प्राचीन साहित्य से समर्थित नहीं है।

भगवान महावीर के बाद की आचार्य पट्ट-परम्परा बन्दीसूत्र और कल्पसूत्र स्वविरावली से ज्ञात होती है। देवर्द्धिगण समाश्रमण तक की युग प्रधानक आचार्य परम्परा की उसमें नामावली है। इसके बाद की नामावली में मतभेद है।

वज्रस्वामी से पहले भी बहुत से गण, कुल व शाखा आदि समय-समय पर प्रसिद्ध हुईं, उनका उल्लेख कल्पसूत्र की स्वविरावली में प्राप्त होता है, पर उनकी परम्परा अधिक समय तक नहीं चली जबकि वज्रस्वामी के शिष्य वज्रसेन के बाद जो चार कुल प्रसिद्ध हुए उनकी परम्परा में से 'चन्द्र कुल' की परम्परा तो आज भी विद्यमान है। इन कुलों में से समय-समय पर बहुत से गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ जिनकी संख्या ८४ मानी जाती है, यद्यपि है इससे भी अधिक। इस संबंध में श्री यतीन्द्र सूरि अभिनन्दन ग्रन्थ, में प्रकाशित मेरा लेख दृष्टव्य है।

१६ वीं शताब्दी में लोंकाशाह ने जो विचार प्रकट एवं प्रचारित किये उसे सखमसी, भाणा आदि ने विशेष बल दिया व आगे बढ़ाया। लोंकाशाह स्वयं दीक्षित नहीं हुए थे पर भाणा, रूपजी आदि ने दीक्षा ली और अपने गच्छ का नाम लोंकाशाह के नाम से 'लोंका गच्छ' रखा। उसकी परम्परा कई शाखाओं में विभक्त होने पर भी आज विद्यमान है। १८ वीं शताब्दी में लोंकागच्छ की परम्परा में से

हूँदिया साधुमार्गी, बाईसटोला या स्थानकवासी सम्प्रदाय निकला और उसमें से भीखणजी से तेरहपंची-सम्प्रदाय निकला ।

लौकाशाह कहां के निवासी थे ? किस व्यक्ति के थे ? इत्यादि बातों के संबंध में काफी मतभेद पाया जाता है । इस संबंध में मेरा लेख 'जिनवाणी' में प्रकाशित हो चुका है और मेरे भ्रातृपुत्र भंवरलाल का एक लेख 'विजय' राजेन्द्र सूरि स्मृति ग्रन्थ' में प्रकाशित हो चुका है । लौकाशाह के सम्बन्ध में श्री मुनि ज्ञानमुन्दरजी का 'श्रीमान लोकाशाह' नामक ग्रन्थ भी पठनीय है ।

जैसे ती लौकाशाह के अनुयायी थोड़े ही वर्षों में कई शाखाओं में विभक्त हो गये जिनमें से १३ के नाम हमारे संग्रह के हस्तलिखित पत्र में मिले हैं । लोकाशाहकी ४ प्रथम शाखायें मानो जाती हैं जिनमें से ऋषि बीजा के विजय गच्छ, जो पहले बीजा मत के नाम से प्रसिद्ध था, ने तो भूतिपूजा को स्वीकार कर विजयगच्छ के नाम से अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बना लिया और यहां तक कि अपनी पट्टावली में भी लोकाशाह का उल्लेख तक नहीं किया है । पंजाब—उत्तर दिशा में जिस लोकाशाह की परम्परा का प्रचार हुआ उसे उत्तराधी गच्छ की संज्ञा प्राप्त हुई । उत्तराध-गच्छ की ऋषि परम्परा के संबंध में 'जेनाधार्य' श्री आत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रन्थ' के हिन्दी विभाग पृष्ठ १६६ और मेरे प्रकाशित 'उत्तराध गच्छ परम्परा गीत' दृष्टव्य हैं ।

नागोरी लोकागच्छ का नामकरण 'नागोर' नगर से हुआ और इसकी २ गहियों के उपाश्रय बीकानेर में हैं । इस गच्छ की पट्टावली विद्वान् यति श्री रघुनाथजी ने संस्कृत में बनाई है जो हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित है । इस 'पट्टावली-प्रबन्ध' की मेने प्रतिलिपि करवाकर बहुत वर्ष पहले मुनि जिनविजयजी को भेजी थी और उनके सम्पादित 'पट्टावली संग्रह' में छप भी चुकी है पर वह ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ । राजस्थानी भाषा में लिखी हुई नागोरी लोकागच्छ की एक अन्य पट्टावली की नकल हमारे संग्रह में है । इस गच्छ के आचार्य रूपचन्द, हीरागर, वयरागर आदि के संबंध में कई ऐतिहासिक रास, गीत आदि रचनायें प्राप्त हैं जिनका ऐतिहासिक सार हमने 'जिनवाणी' में प्रकाशित कर दिया है । प्रस्तुत पट्टावली संग्रह में भी नागोरी लोकागच्छ की कई पट्टावलियाँ प्रकाशित हुई हैं ।

लोकागच्छ की दूसरी प्रधान शाखा 'गुजराती लोकागच्छ' के नाम से प्रसिद्ध है । इसकी परम्परा और साहित्य के संबंध में मुनि कांतिसागरजी का एक विस्तृत लेख 'मुनि श्री हजारीमल स्मृति ग्रन्थ' के पृ० २१४ से २५३ तक में प्रकाशित हुआ है ।

श्रीर लोकागच्छ की साहित्य सेवा के संग्रंघ में भी एक लेख उक्त ग्रन्थ के पृ० २०३ से २१३ में प्रकाशित है।

गुजराती लोकागच्छ की गुजरात और राजस्थान में कई गद्दियां थी। उनकी परम्पराओं की कई पट्टावलियां इस ग्रन्थ में छपी हैं। १७ वीं शती के अन्त और १८ वीं शती के प्रारम्भ में लोकागच्छ की इस परम्परा में से लवजी^१, धर्मदास, धर्मसिंह, आदि ने शिथिलाचार को छोड़कर स्वतन्त्र समुदाय कायम किये जिसे ढूँढ़िया, साधुभार्गी या स्थानकवासी परम्परा के नाम से प्रसिद्धि मिली। स्थानकवासी परम्परा की भी कई पट्टावलियां इस ग्रन्थ में संगृहीत हैं।

लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा संबंधी खोज सर्व प्रथम श्री बाडीलाल मोतीलाल शाह ने अब से ६० वर्ष पूर्व प्रारम्भ की। उन्हें जो कुछ जानकारी व सामग्री मिली उसे उन्होंने 'ऐतिहासिक नोध' के नाम से गुजराती भाषा में लिखकर प्रकाशित किया। उनके द्वारा किया गया वह प्रयत्न अवश्य ही सराहनीय है। इसी कार्य के लिये वे सन् १९०७ के दिसम्बर में पंजाब तक भी पहुँचे। उनके इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की भी २-३ आवृत्तियां निकल चुकी हैं जिनमें से प्रथमावृत्ति की प्रति बोकानेर के सेठिया लामबेरी में और द्वितीयावृत्ति की (सन् १९८२ में प्रकाशित) प्रति हमारे अभय जैन ग्रन्थालय में है।

स्व० बाडीलाल शाह के बाद लोकागच्छ और स्थानकवासी पट्टावली के संबंध में उल्लेखनीय प्रयत्न जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दसोचन्द देसाई का है। इनके सन् १९४४ में प्रकाशित 'जैन गुर्जर कवियों' भाग ३ के पृ० २२०५ से २२२२ तक में प्राप्त पट्टावलियों का सारांश दिया गया है। उन्होंने गुजराती लोकागच्छ की बड़ोदा गद्दी की पट्टावली देने के बाद कुंवरजी पक्ष की बालापुर की पट्टावली दी है। तदनन्तर धर्मसिंहजी, लवजी, और धर्मदासजी की परम्परा का परिचय देने के बाद गोडल, लोबडी, संघडा, हुकमीचन्दजी सम्प्रदाय के आचार्यों का छोड़ा परिचय देकर बरखाला, छूडा, धामदा और बीराद संघाड़े का संक्षिप्त विवरण दिया है।

सन् १९४२ में राजकोट से प्रकाशित 'लवजी स्वामी स्मारक स्वरण ग्रन्थ' में स्थानकवासी सम्प्रदाय की गुर्वावली दी गई है। उसके अनुसार धर्मदासजी के ६६ शिष्यों में से मूलचन्वजी गुजरात में रहे। गुजरात, सोराष्ट्र कच्छ के ७ संघाड़ों का

१. इनके और इनकी परम्परा के संबंध में मुनि मोती ऋषिजी लिखित 'ऋषि सम्प्रदाय का इतिहास' नामक ग्रन्थ दृष्टव्य है।

इसमें उल्लेख किया गया है। वे हैं—(१) लीबडी, (२) गोंडल (३) बरवाला (४) भ्राठकोटिकच्छी, (५) चूड़ा, (६) घांगंधा और (७) सायला। इनमें से घांगंधा और चूड़ा के समुदाय को निरवश गया, लिखा है। धर्मसिंहजी से भ्राठकोटि दरियापुरी सम्प्रदासिद्ध हुआ। धर्मदासजी की दो सम्प्रदायों की नामावली इस ग्रन्थ में दी है। धर्मदासजी के शिष्य मूलचन्दजी के शिष्य पंवारणजी के शिष्य रत्नसी गोंडल गये और उनके शिष्य डूंगरसी से गोंडल सम्प्रदाय प्रसिद्ध हुआ। मूलचन्दजी के शिष्य गुलाबचन्दजी के शिष्य बालाजी और उनके शिष्य हीराजी लोंबडी आये। इनकी परम्परा लीबडी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। लीबडी से कानजी बरवाला गये, वसरामजी घांगंधा गये, जसाजी बोरद, और नागजी सायला गये। उनसे इन स्थानों के नाम से अलग-अलग सम्प्रदाय प्रसिद्ध हुए। कृष्णजी स्वामी कच्छ में गये वहाँ भ्राठकोटि सम्प्रदाय स्थापित हुआ जिसमें से मोटी पक्ष और नानी पक्ष, दो शाखाएँ निकलीं।

श्रीवाढीलाल शाह ने अपने 'ऐतिहासिक नोथ' ग्रन्थ में लिखा है कि धर्मदासजी के ६६ शिष्यों में ६८ मारवाड़, मेवाड़, पंजाब की ओर विहार कर गये और बाईस-टोला के नाम से विख्यात हुये। बाईस टोलों की नामावली कई प्रकार की पाई जाती है। इसके संबंध में 'जिनवाणी' में मेरा लेख अभी प्रकाशित हुआ है।

स्थानकवासी मुनि मणिलालजी के द्वारा लिखित पट्टावली ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है और भी इस तरह के लोंकागच्छ और स्थानकवासी सम्प्रदाय की पट्टावलियों संबंधी ग्रन्थ, लेख प्रकाशित हुये होंगे पर वे अभी मेरे सामने नहीं हैं। अब तक विभिन्न गच्छों की पट्टावलियाँ प्रकाशित हुई हैं उनकी कुछ जानकारी नीचे दी जा रही है।

श्वेताम्बर, खरतरगच्छ, तपागच्छ आदि की कतिपय पट्टावलियाँ पहले कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में दी थी। फिर मुनिसुन्दर सूरि विरचित 'गुर्वावली' यशोविजय जैन ग्रन्थ माला से प्रकाशित हुई। तपागच्छ की इस गुर्वावली की द्वितीय-वृत्ति संवत् १९६७ में निकली वह हमारे संग्रह में है। संवत् १९८८ में मुनि जिनविजयजी द्वारा सम्पादित 'खरतरगच्छ पट्टावली संग्रह' को बाबू पूरणचन्दजी नाहर कलकत्ता ने प्रकाशित की। इसमें खरतरगच्छ की ५-६ पट्टावलियाँ संस्कृत भाषा में लिखित प्रकाशित हुईं जिनमें से एक खरतरगच्छ की आचार्य शाखा की और बाकी भट्टारक शाखा की हैं। खरतरगच्छ की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण 'युग प्रधानाचार्य गुर्वादली' की एक मात्र प्रति हमें बीकानेर के क्षमाकल्याण जैन ज्ञान भट्टार में प्राप्त हुई जो मुनि जिनविजयजी द्वारा सम्पादित सिधी जैन ग्रन्थमाला से सं० २०१३ में प्रकाशित हुई। तपागच्छ संबंधी पट्टावलियों में पन्यास कल्याणविजयजी द्वारा सम्पादित पट्टावली गुजराती विवेचन के साथ श्री विजयनीतिसूरीश्वरजी जैन लायब्रेरी, अहमदाबाद से प्रकाशित हुई। 'तपागच्छ श्रमण वंश वृक्ष', 'वीर धर्म पट्टावली' आदि

ग्रन्थ प्रकाशित हुये हैं। नागपुरीय तपागच्छ जो पायबन्द के नाम से प्रसिद्ध है, उसकी एक पट्टावली श्रीर 'पार्श्वचन्द्र गच्छ टूंक रूप रेखा' ये दोनों ग्रन्थ ग्रहमदाबाद से प्रकाशित हुये। उपकेश गच्छ की एक पद्य बद्ध पट्टावली मुनि ज्ञान सुन्दर रचित 'प्राचीन जैन इतिहास' भाग २१ में 'पार्श्व पट्टावली' के नाम से फलीषो से प्रकाशित हुई है। भ्रंजलगच्छ की एक बृहद् पट्टावली संवत् १९८५ में 'म्होटी पट्टावली' के नाम से अजंजार से प्रकाशित हुई है।

विविध गच्छों की पट्टावलियों के संग्रह रूप में ४ ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं जिनमें से मुनि वर्णविजयजी द्वारा सम्पादित 'पट्टावली समुच्चय' भाग १-२ श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थ माला, बीरमगांव, ग्रहमदाबाद से प्रकाशित हुये हैं। इसके प्रथम भाग में कल्पसूत्र, नन्दीसूत्र की स्थविरावली और तपागच्छ की कई पट्टावलियों के साथ 'जैन साहित्य संशोधक' में मुनि जिनविजयजी की प्रकाशित की हुई उपकेशगच्छीय पट्टावली भी दी गई है। परिशिष्ट में पल्लीवाल गच्छ की ऐतिहासिक सामग्री भी दी है। इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में प्रधान रूप से पद्यबद्ध भाषा पट्टावलियों का संग्रह किया गया है जिसमें तपागच्छ के अतिरिक्त कच्छूजीगच्छ, पूर्णिमागच्छ, आगम गच्छ, बृहद् गच्छ एवं कवला गच्छ की पद्यबद्ध पट्टावलियों देने के साथ-साथ परिशिष्ट में भी कई पुरवणी नामक विस्तृत टिप्पणियाँ महत्व की हैं। इनमें से बृहद्-गच्छ गुर्वावली मेने 'जैन सत्य प्रकाश' में पहले प्रकाशित की थी।

दूसरा प्रयत्न स्व० मोहनलाल देसाई का है। उन्होंने 'जैन गुर्जर कविप्रो' भाग २-३ के परिशिष्ट में खरतर गच्छ, तपागच्छ, भ्रंजलगच्छ, उपकेशगच्छ, लोंका गच्छ, आगमगच्छ, पूर्णिमागच्छ, पल्लीवाल गच्छ की प्राप्त पट्टावलियों का गुजराती में सारांश दे दिया है। तपागच्छ और खरतरगच्छ की कई शालाग्रो की पट्टावलियाँ भी दी हैं। इनमें से 'उपकेश गच्छ प्रबन्ध' जो अभी तक मूल रूप में प्रकाशित भी नहीं हुआ है, उसका सारांश देकर श्री देसाई ने उसे सुलभ बना दिया। वैसे आचार्य श्री बुद्धिसागर सूरि ने भी बहुत वर्ष पहले ऐसा एक प्रयत्न किया था और उनका एक गुजराती ग्रंथ प्रकाशित हुआ था पर उस समय ग्रन्थ ऐतिहासिक सामग्री प्रकाश में नहीं आ पाई थी। इसलिए देसाई की टिप्पणी आदि का प्रयत्न विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

तीसरा महत्त्वपूर्ण प्रयत्न मुनि जिनविजय जी का है। उन्होंने 'विविध-गच्छीय पट्टावली संग्रह' प्रथम भाग सिंधी जैन ग्रंथ माला से सं० २०१७ में छपवाया। पर खेद है केवल भूमिका आदि के लिए ही अब तक इसका प्रकाशन रका हुआ है। इसमें 'गणधर सत्तरी' आदि कई अभी तक की अप्रकाशित रचनायें हैं। उपकेशगच्छ, आगम गच्छ, तपागच्छ, नागपुरी तपागच्छ, बृहद् गच्छ, राजगच्छ, पल्लीवाल गच्छ, भ्रंजल

गच्छ, लोका गच्छ, कटुकमति, पूरिभागच्छ, और एक छोटी 'स्वानकवासी पट्टावली' भी थी गई है। इनमें से बृहदगच्छ, राजगच्छ, वीरवंश पट्टावली, आदि मैंने मुनिजी को भेजी थीं। 'जैन साहित्य संशोधक' में प्रकाशित 'वीरवंशावली' भी इस ग्रंथ में सम्मिलित कर ली गई है। इसमें प्राकृत, संस्कृत, राजस्थानी और गुजराती आदि की पट्टावलियों का महत्वपूर्ण संग्रह है।

चौथा प्रयत्न जैन इतिहासविद् मुनि कल्याणविजय जी ने किया। उनके 'श्री पट्टावली पराग संग्रह' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन जालोर से सं. २०२३ में हुआ है। इसमें छोटी-बड़ी ६४ पट्टावलियों का सारांश दिया गया है। मुनि कल्याण विजयजी की टिप्पणियाँ और विवेचन भी उल्लेखनीय हैं। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का यह एक ही ग्रंथ है। इससे पहले 'वीर निर्वाण संघत' और 'जैनकाल गणना' नामक ग्रन्थ द्वारा मुनि कल्याणविजयजी अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। 'प्रभावक चरित्र' के पर्यालोचन में उन्होंने जैनाचार्यों के इतिहास पर अच्छा प्रकाश डाला है। उनके 'श्री पट्टावली पराग संग्रह' नामक ५१७ पृष्ठों के ग्रन्थ में बृहदगच्छ, तपागच्छ, खरतर गच्छ, पूर्णिमा, साध पूर्णिमा गच्छ, अंचन, आगमिक गच्छ, लघु पोशालिक, बृहद पोशालिक, पत्नीवाल गच्छ, उपदेशगच्छ, पार्श्वचन्द्र गच्छ, लोकागच्छ, कटुकमत, बार्डस सम्प्रदाय, तेरहपंथ की पट्टावलियाँ हैं।

'विष्णुकगच्छ की पट्टावली' टिप्पणियाँ सहित मैंने श्री महावीर जैन विद्यालय के रजत जयन्ती अंक में प्रकाशित की थी। पत्नीवाल गच्छ पट्टावली, इससे पहले 'श्री आत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रन्थ' में और कई अन्य पट्टावलियाँ 'जैन सत्य प्रकाश' आदि में प्रकाशित की, और कई अप्रकाशित संग्रह करके रखी हुई हैं।

दिगम्बर सम्प्रदाय के कई संघों की पट्टावलियाँ 'जैन सिद्धांत भालकर' में बहुत वर्ष पहले छपी थी। एक पट्टावली मैंने भी प्रकाशित की। उल्लेखनीय ग्रन्थ में जीवराज जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित 'भट्टारक सम्प्रदाय' नामक ग्रन्थ का जोहरपुरकर का सं० १९६८ में प्रकाशित हुआ जिसमें सेमगण, बलत्कारगण की कई शाखाओं और काष्ठा संघ के चार गच्छों की पट्टावलियाँ प्रकाशित हुई हैं। प्रस्तावना में भट्टारको सम्बन्धी बहुत-सी महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

प्रस्तुत 'पट्टावली प्रबन्ध संग्रह' नामक ग्रन्थ में लोकागच्छ की ७ और स्वानकवासी परम्परा की १० इस तरह कुल १७ पट्टावलियाँ छपी हैं। इनमें से पहली पट्टावली नागोरी लोकागच्छ की आचार्य परम्परा सम्बन्धी रत्ननाथ ऋषि रचित संस्कृत में है। उसके बाद शशि तेजस्वी द्वारा 'पञ्च पट्टावली' केवल ४ पंक्तियों

की है। फिर संक्षिप्त पट्टावली, बालापुर पट्टावली, बड़ौदा पट्टावली, मोटा पक्ष की पट्टावली और लोकागच्छीय पट्टावली है। ये राजस्थानी-गुजराती गद्य में हैं।

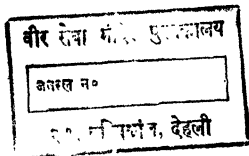
तदनन्तर स्थानकवासी परम्परा की प्रथम पट्टावली कवि विनयचन्द कृत पद्य बद्ध है जिसका अर्थ भी रघुनाथ की संस्कृत पट्टावली की तरह साथ में ही दे दिया गया है। उसके बाद की सभी पट्टावलियां राजस्थानी-गुजराती गद्य में हैं। इनमें सबसे बड़ी मरुधर पट्टावली है। यह पट्टावली संवत् १६५७ में लिखी हुई है। इसमें मुनि सीभागमलजी ने वास्तव में बहुत श्रम करके काफी महत्वपूर्ण जानकारी दी है। अब तक लोकागच्छ और स्थानकवासी पट्टावलियों का कोई ऐसा संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ था, इसलिए इस ग्रन्थ की पट्टावलियों के संग्राहक उपाध्याय श्री हस्तीमलजी का प्रयत्न बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

लोकाशाह, इनकी मान्यताओं एवं परम्परा तथा स्थानकवासी सम्प्रदाय की पट्टावलियों के संग्रह का प्रयत्न में भी करीब ३० वर्ष से करता आ रहा हूँ। कई छोटी-छोटी पट्टावलियां 'जिनवाणी' नामक पत्रिका में प्रकाशित भी कर चुका हूँ। इस ग्रन्थ में प्रकाशित छोटी-बड़ी कई पट्टावलियां मेरे संग्रह में भी हैं और कुछ अभी तक अप्रकाशित भी हैं।

पट्टावलियों के अतिरिक्त लोकागच्छ व स्थानकवासी परम्परा के अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्याओं सम्बन्धी कई रास, एवं गीत भी मैंने प्रयत्नपूर्वक सगृहीत किये हैं, जिनका इन पट्टावलियों की अपेक्षा भी ऐतिहासिक महत्त्व अधिक है, क्योंकि वे सभी रचनाएँ समकालीन रचित हैं जबकि पट्टावलियां तो श्रुति परम्परा के आधार से पीछे से लिखी गई हैं। इनमें से कइयो में तो केवल नाम ही मिलते हैं और कुछ में आचार्यों का विवरण बहुत ही संक्षेप में मिलता है। ऐतिहासिक रास, गीत, इन पट्टावलियों से बहुत अधिक और नवीन जानकारी देते हैं। इसलिए उनका एक संग्रह सम्पादन करके मैंने व्यावर प्रकाशनार्थ भेजा है।

—श्री अग्ररचन्द नाहटा

पट्टावली ग्रन्थ संग्रह



लौकागच्छ परम्परा

(१)

पट्टावली प्रबन्ध

[प्रस्तुत पट्टावली नागौरी लौकागच्छीय परम्परा से सम्बन्धित है । इसके रचना रघुनाथ ऋषि लक्ष्मराज जी के प्रपौत्र शिष्य थे । इसकी रचना सं० १८९० में पटियाला के पास अवस्थित खुनाम नामक ग्राम में की गई । इसमें भगवान् महावीर के निर्वाण से लेकर सं० १८९० तक की मुख्य घटनाओं और नागौरी लौकागच्छ की उत्पत्ति से वर्तमान पट्टावली श्री पूज्य लक्ष्मीचन्द्र जी तक का ऐतिहासिक परिचय प्रस्तुत किया गया है । संस्कृत भाषा में निबद्ध यह रचना 'रचनाकार' के प्रौढ़ भाषा ज्ञान की परिचायिका है । ऋषि शिवचन्द्र न सं० १९०७ में भक्तखूदाबाद के बालूचर नामक गांव में इसे लिपिबद्ध किया ।]

नमः श्री सर्वकृत्ताय ।

मूल—अर्हदनन्ताचार्योपाध्याय मुनीन्द्र रूप शिष्टाय ।

इष्टाय पंच परमेष्ठिनेऽस्तु नित्यं नमस्तस्मै ॥१॥

अर्थ—श्री सर्वज्ञ को नमस्कार हो । अरिहन्त, अन्तरहित सिद्ध आचार्य, उपाध्याय और मुनीन्द्र रूप, शिष्ट एवं इष्ट पंच परमेष्ठि को नित्य नमस्कार हो ।

मूल—प्रणिपत्य सत्य मनसा, जिनपं वीरं गिरं गुरुंश्चाऽपि ।

पट्टावली-प्रबन्धो, विलिख्यते, निज गणज्ञप्त्यै ॥२॥

अर्थ—सत्य मन से, जिनेन्द्र महावीर को, बाणी को और गुरुओं को प्रणाम करके, अपने गण की जानकारी के लिए पट्टावली-प्रबन्ध को लिखता हूँ ।

मूल—इह किलावमर्पिण्यां श्री ऋषमाऽजित संभवाऽमिनन्दन-
सुमति-पद्म प्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-
वासुपूज्य-विमलान्तधर्म-शान्ति-कुंधु-अर-मल्लिमुनि सुव्रत-
नभि, नेमि-पार्श्वेषु, मर्वेषु त्रिलोकी दीपकेषु, परिनिर्दृ-
तेषु नन्दन नृप जीवो दशम देवलोक्तश्च्युतो द्विजवर ऋषमदत्त
गृहिणी देवानन्दोदरेऽवतीर्णः पुत्रत्वेन ।

अर्थ—निश्चय इस अवसरपिणी काल में ऋषभ, अजितनाथ, संभव-
नाथ, अमिनन्दन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ,
शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ,
शान्तिनाथ, कुंधुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिमुव्रत, नभिनाथ, नेमि-
नाथ और पार्श्वनाथ इन सर्वजन हितकारी त्रिलोक दीपकों के बहु जाने
पर, नन्दन राजा का जीव दशवें देवलोक से चबकर, द्विज श्रेष्ठ ऋषभदत्त
की पत्नी देवानन्दा के उदर में पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ ।

मूल—तदैव देव राजेन शक्रेणावधि-विज्ञात भगवदवतारेण विधि-
वद् विहित हितकृत्प्रभुस्त्वेन विमृष्टमहोक्तकर्मणा विपाको यच्चर-
मतनुरपि चतुर्विंशतितनस्तीर्थकृन्महावीर नामा द्विजाति कुले-
ऽवतारीदित्यादि सकलं यस्य चरित्रं परम पवित्रं सुवाचित-
मेव ।

अर्थ—उसी समय देवराज इन्द्र ने अवधि ज्ञान से भगवान् का अव-
तार जान कर और विधि पूर्वक हितकारी प्रभु की प्रार्थना करके सोचा
कि अहो ! यह कर्म का परिणाम है कि अन्तिम शरीर धारी भी चौबीसवें
तीर्थङ्कर श्री महावीर ब्राह्मण कुल में अवतरित हुए हैं । इस तरह जिनका
'परम पवित्र, सम्पूर्ण चरित्र अच्छी तरह पढ़ा जा चुका है ।

मूल—तस्योत्पन्नकेवलस्य भगवतः श्री इन्द्रभूति १ अग्निभूति २ वायुभूति ३ व्यक्त ४ सुधर्म ५ मंडित ६ मौर्य पुत्र ७ अकंपित ८ अचल भ्रातृ ९ मेतार्य १० प्रभासनामानः १. एकादश गणधरा जाताः ।

अर्थ—उन भगवान् महावीर के केवल ज्ञान उत्पन्न होने के पश्चात् इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्म, मण्डित पुत्र, मौर्य पुत्र, अकंपित, अचल भ्रातृ, मेतार्य और प्रभास नाम के ग्यारह प्रमुख शिष्य गणधर हुए ।

मूल—तेषु प्रथमः श्री इन्द्रभूतिर्गौतम गोत्रीयः गुब्बर ग्राम निवासि द्विजवर वसुभूति सुतः समग्रोत्तमार्थं पृथ्वी पृथ्वी मातृकुचि शुक्ति मुक्ता समः, सप्तकरोन्नत तनुः, पद्मार्ग गौरवर्णः समधीत सकल हृद्यविद्योऽस्तिमं जिन वचनाऽमृत पानानन्तरमेव समुपात्त दीक्षश्चतुर्दश पूर्व रचनाकरण प्रथित वाग्निमवः सकल सकल साधु मंडलाग्रणीः पंचाशदब्दान् गार्हस्थ्य स्थिति माक्, त्रिंशत् समाशुद्ध्यवस्थावस्थाभूत्, तदनुसम्वत्पन्नकेवलज्ञानः प्रति बोधितानेक भव्यजन निकरः श्री वीर निर्वाणाद् द्वादशवर्षैः सिद्धः ।

अर्थ—उनके प्रथम श्री इन्द्रभूति हुए जो गौतम गोत्रीय गुब्बर ग्राम निवासी ब्राह्मण श्रेष्ठ वसुभूति के पुत्र थे । पृथ्वी के समान विशाल हृदया पृथ्वी नामा माता थी । उसकी कोख रूप सीप में मोती के समान सकल उत्तमार्थयुक्त आपने जन्म लिया । आप सात हाथ की ऊँची बेह और कमल पराग की तरह गौर वर्ण वाले थे । इन्होंने सभी उत्तम विद्यार्थी को जानकर अन्तिम तीर्थङ्कर भगवान् के वचनानुसृत का पान किया और उपदेश से प्रभावित होकर दीक्षा ग्रहण कर ली । चौबहू पूर्व की रचना से जिन्होंने अपना भूतिबल प्रगट किया वे समस्त साधु मण्डल के अग्रणी थे । पचास वर्षों तक गृहस्थ स्थिति में रहे, दीक्षित हो कर तीस वर्ष की छद्मस्थपर्याय के बाद केवलज्ञान प्राप्त किया और अनेक भव्य जन समूह को प्रतिबोध देकर वीर निर्वाण से बारहवें वर्ष सिद्ध पद के अधिकारी हुए ।

मूल—एवं पूर्णं दानरति ममायुः प्रथमं पट्टोदयाचल मानुः ॥ १ ॥

अर्थ—इस प्रकार सम्पूर्ण वरानवें वर्ष की आयु पाये, तथा प्रथम पट्ट रूप उदयाचल के सूर्य की तरह सुशोभित रहे ।

मूल—तत्पट्टे पंचमणभृन् सुधर्मस्वामी श्री बीरात् सिद्धो विंशति-
तमेऽब्दे ॥ २ ॥

अर्थ—उनके पाट पर पंचम गणधर श्री सुधर्म स्वामी बीर निर्वाण से बीसवें वर्ष में सिद्ध हुए । आप भगवान् महावीर के प्रथम पट्टधर हुए, गौतम बड़े होने पर भी केवली होने से पट्टधारी नहीं बने । ऊपर प्रथम पट्ट-धर लिखा है वह शासन की अपेक्षा नहीं, बड़े होने की दृष्टि से समझें ।

मूल—तत्पट्टे श्रीजंबूस्वामी श्रीवीरान् चतुःपट्टि मितेऽब्दे मुक्तः ।

श्रीवीरे षुद्धे चतुःपट्टि समायावत् केवलज्ञानमदीपि ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री जम्बूस्वामी हुए । बीर से चौसठवें वर्ष में वे मुक्त हुए । बीर निर्वाण के बाद चौसठ वर्ष तक केवल ज्ञान चमकता रहा ।

मूल—अथ श्री जम्बूस्वामिनि मोक्षं गते मनःपर्यवज्ञानं, (१) परमा-
वधिः, (२) पुलाकलब्धिः, (३) आहारकृतनुः, (४) उपशम-
श्रेणिः, (५) क्षपकश्रेणिः, (६) जिनकल्पित्वम्, (७) परिहार
विशुद्धिः (८) सूक्ष्म संपरायः (९) यथाख्यात नामकंचेति चारित्र
व्रितयम् (१०) एतेऽर्थाः व्युच्छिन्नाः ॥ ३ ॥

अर्थ—श्री जम्बू स्वामी के मोक्ष जाने के बाद, मनःपर्यवज्ञान १ परमावधि २ पुलाकलब्धि ३ आहारकशरीर ४ उपशम श्रेणि ५ क्षपक श्रेणि ६ जिन कल्प ७ परिहार विशुद्धि ८ सूक्ष्म सम्पराय ९ और यथाख्यात नाम के और तीन चारित्र विच्छिन्न हो गये ।

मूल—तत्पट्टे श्री प्रभव प्रभुः श्रीवीरात् ७४ तमेऽब्दे स्वर्गगतः ॥ ४ ॥

अर्थ—जम्बू के पाट पर श्री प्रभव स्वामी बीर से ७४ वें वर्ष में स्वर्गगामी हुए ।

१. टि० दश बोल में १ केवलज्ञान का उल्लेख है । उसके बदले श्रेणी आरोहण में दोनों श्रेणियां एक में आ जाती हैं ।

मूल—तत्पट्टे श्री शय्यमवसूरिः श्री वीरात् ६८ तमेऽब्दे देवत्वं प्राप
॥ ५ ॥

अर्थ—प्रभव स्वामी के पाट पर श्री शय्यमव सूरि वीर से ६८ वें वर्ष में देवत्व को प्राप्त हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री यशोभद्रसूरिः श्री वीरात् शततमे (१००) वर्षे देवत्वं गतः ॥ ६ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री यशोभद्र सूरि श्री वीर से १०० वर्ष बाद देवलोक वासी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री संभूतिविजय स्वामी श्री वीरात् १४८ तमेऽब्दे स्वरियाय ॥ ७ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री संभूतिविजय स्वामी श्री वीर से १४८ वें वर्ष में स्वर्ग पधारे ।

मूल—तत्पट्टे श्री भद्रबाहु स्वामी नियुक्तिकृत् श्री वीरात् १७० तमे वर्षे स्वर्ग गतः ।

अर्थ—उनके पाटपर श्री भद्रबाहु स्वामी नियुक्तिकार श्री वीरनिर्वाण से १७० वें वर्ष में स्वर्गगामी हुए ।

मूल—श्री वीरात् २१४ वर्षेऽव्यक्तवादी तृतीयो निह्वोऽभवत् ॥८॥

अर्थ—श्री वीरसे २१४ वें वर्ष में अव्यक्तवादी तृतीय निह्वव हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री स्थूलभद्रस्वामी २१५ वर्षे स्वर्जंगाम ॥ ९ ॥

अर्थ—भद्रबाहु के पाट पर श्री स्थूलभद्र स्वामी हुए जो वीर निर्वाण से २१५ वें वर्ष में स्वर्ग गए ।

मूल—तत्पट्टे श्री महागिरिर्जिनकल्पाभ्यास कृत् ॥ १० ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री महागिरि जिनकल्प के अभ्यासी हुए ।

मूल—श्री वीरात् २२० वर्षे शून्यवादी तुर्यो निह्वोऽभूत् ।

अर्थ—श्री वीर से २२० वें वर्ष में शून्यवादी चोथे निह्वव हुए ।

मूल—श्री वीरात् २२८ वर्षे क्रियावादी पंचमो निह्वोऽजनि,
एकस्मिन् समथ क्रिया द्वयं ये मन्यन्ते ते क्रियावादिनः ।

अर्थ—श्री वीर से २२८ वें वर्ष में पंचम क्रियावादी निहल्व हुए । जो एक समय वो क्रियाओं का होना मानते हैं, वे क्रियावादी हैं ।

मूल—अथ श्री महागिरि पट्टे श्रीसुहस्तिसूरिः येन 'संप्रति' नामा नृपः
प्रतिबोधितः ॥ ११ ॥

अर्थ—बाद श्री महागिरि के पाट पर श्री सुहस्तिसूरि हुए जिन्होंने "संप्रति" नाम के राजा को प्रतिबोध दिया ।

मूल—तत्पट्टे श्री सुस्थित सूरिः कोटिकगण स्थापयिता ॥१२॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री सुस्थित सूरि हुए जिन्होंने कोटिक गण की स्थापना की ।

मूल—तत्पट्टे श्री इन्द्रदिक्ष सूरिः ॥१३॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री इन्द्रदिक्ष सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री आर्यदिक्ष सूरिः ॥१४॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री आर्यदिक्ष सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री सिंहगिरिः ॥१५॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री सिंहगिरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे दशपूर्वधरः श्री वयरस्वामी यतो वयरी शाखा प्रवृत्ता ।

अर्थ—उनके पाट पर दश पूर्व के धारक श्री वयर स्वामी हुए जिनसे 'वयरी' शाखा प्रचलित हुई ।

मूल—तत्पट्टे श्री वज्रसेनाचार्यः श्री वीरात् ४७० वर्षे स्वर्ग गतः

॥१७॥ अस्मिन्नेव समये विक्रमादित्यो नृपोऽभूत्, कीदृशः श्री

जिन धर्म पालकः पुनः परदुःखापनोदकः पुनः वर्णादिव्यक्ति

सम्यक् विधाय पृथक् २ स्वस्वकुल मर्यादाकारको जातः ।

अर्थ—उनके पाट पर श्री वज्रसेनाचार्य श्री वीर से ४७० वर्ष में स्वर्ग गए । इसी समय विक्रमादित्य नाम का राजा हुआ वह कंसा था—जैन धर्म का पालक, पर दुःखहारक और भली भाँति वर्ण व्यवस्था करके सबके लिये अलग २ कुल मर्यादा बनाने वाला हुआ ।

मूल—तत्पट्टे श्री आर्यरोह स्वामी ॥१८॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री आर्यरोह स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री पुण्यगिरि स्वामी ॥१६॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री पुण्यगिरि स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री फल्गुमित्र स्वामी ॥२०॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री फल्गुमित्र स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री धरणिगिरि स्वामी ॥२१॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री धरणिगिरि स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री शिवभूति स्वामी ॥२२॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री शिवभूति स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री आर्यमद्र स्वामी ॥२३॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री आर्यमद्र स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री आर्यनक्षत्र स्वामी ॥२४॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री आर्य नक्षत्र स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री आर्यरक्षित स्वामी ॥२५॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री आर्यरक्षित स्वामी हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री नागेन्द्र सूरिः ॥२६॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री नागेन्द्रसूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री देवद्विगणिक्रमाश्रमणाह्लाः सूरिपादाः बभूवुः ।

ते च कीदृशाः तदाह, गाथया—सुतत्थयण मरिए, खमदम
मद्व गुणेहिं संपन्ने । देवद्वि खमाश्रमणे, कासव गुत्ते पणिव-
यामि । एवं सप्तविंशति पट्टा जाताः ॥२७॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री देवद्विगणि क्षमाश्रमण नाम के आचार्य
हुए । वे कैसे थे यह गाथा के द्वारा कहा है—सूत्रार्थ रत्नों से भरपूर
क्षमा इन और मार्दवादि गुण वाले काश्यप गोत्रे, देवद्वि क्षमाश्रमण को
मैं प्रणाम करता हूँ । इस प्रकार सत्ताइस पाट हुए ।

मूल—श्री वीरात् ६८० वर्षेषु गतेषु आगमाः पुस्तके लिखितास्त-
त्कारणं कथयन् प्रथमं गाथामाह—

वज्रहिं पुरंमि नयरे, देवद्विद पमुहेण समख संघेण ।
 पुत्थे आगम लिहिया, नव सय असीयाउवीराउ ॥१॥
 एकदा प्रस्तावे देवद्विदमाश्रमणैः ककोपशमाय गृहस्थ गृहा-
 देकः शुंठी ग्रन्थिरानीतो याचनया, सचाऽऽहार समये विस्मृति
 दोषान्न जग्धः । अथ प्रतिक्रमणावसरे प्रतिलेखनायां क्रियमा-
 णायां धरातले स शुंठिग्रन्थः कर्णात्पतितस्तच्छब्दं श्रुत्वा
 ज्ञातमहो शुंठी ग्रन्थिर्विस्मृतः, समयानुमाबोध्यम् यन्मति-
 र्हीना जाताऽधुनाऽऽगमाः कथं मुखे स्थास्यन्तीति विमृश्य
 वल्लभीपुरे सकलाचार्य समुदायं मेलयित्वाऽऽगमाः पुस्तकारूढाः
 कृताः । पूर्वं मुख पाठः श्रुत आसीत्--पुनः आचारांगीयं महा
 प्रज्ञानामकं सप्तममध्ययनं साधूनां पठ्यमानमासीत् । तस्य
 षोडशाऽप्युद्देशाः किञ्चित् कारणं विज्ञाय देवद्विगणि क्षमा
 श्रमणैर्न लेखिता अतस्ते विच्छिन्नाः ॥२७॥

अर्थ—श्री वीर से ६८० वर्ष बीत जाने पर आगम पुस्तक रूप में लिखे
 गये—उसका कारण बतलाते हुए पहले गाथा कहते हैं—वल्लभीपुर नगर में
 देवद्वि प्रमुख श्रमण संघ ने वीर निर्वाण से ६८० वर्ष में आगमों का पुस्तक
 रूप में लेखन किया । एक समय देवद्वि क्षमा श्रमण कफ शान्ति के लिए एक
 गृहस्थ से सूंठ की गंठिया मांग के लिए । वह भोजन के समय विस्मृति
 दोष से खाना भूल गए । बाद प्रतिक्रमण के समय प्रतिलेखना करते वह
 गांठ कान से जमीन पर गिर पड़ी । उसका शब्द सुनकर जाना कि अहो
 हम सूंठ खाना भूल गए । यह समय का प्रभाव है कि बुद्धि कमजोर पड़
 गई । इस समय शास्त्र कैसे कंठस्थ रहेंगे यह सोचकर वल्लभीपुर में सकल
 आचार्य समुदाय को एकत्रित करके आगम को पुस्तकारूढ़ किया । इसके
 पहले श्रुत मुलाप्र थे । फिर आचारांग का महाप्रज्ञा नाम का सातवाँ
 अध्ययन जो साधुओं के पढ़ने में आता था, उसके १६ उद्देश कुछ कारण
 जानकर देवद्वि गणी क्षमा श्रमण ने नहीं लिखे जिससे वे विच्छिन्न हो गए ।

मूल—तत्पट्टे श्री चंद्रसूरिः येन संग्रहणी प्रकरणं रचितं समलधार
 गच्छेऽभूत्, अतोऽग्रे चतस्रः शाखाऽभूवन्-चंद्रशाखा १ नागेन्द्र

शास्त्रा २ निर्वृतिशास्त्रा ३ विद्याधरशास्त्रा चेति ४ ॥२८॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री चन्द्रसूरि हुए जिन्होंने प्राकृत भाषा में संग्रहणी नामा प्रकरण की रचना की । वे मूलधार गच्छ में हुए थे । इसके आगे चार शास्त्राएँ हुईं, जैसे—चन्द्रशास्त्रा १, नागेन्द्र शास्त्रा २, निर्वृतिशास्त्रा ३ और विद्याधर शास्त्रा ४ ।

मूल—तत्पट्टे विद्याधर शास्त्रायां श्री समन्तभद्र सूरिर्निर्ग्रन्थ चूडा-
मणिरिति यस्य विरुदोऽभूत् ॥२९॥

अर्थ—उनके पाट पर विद्याधर शास्त्रा में श्री समन्तभद्र सूरि हुए जिनको निग्रन्थ चूडामणि विरुद प्राप्त था ।

मूल—तत्पट्टे श्री धर्मघोष सूरिः पंचशतयति परिवृतो नानादेशेषु
विहरन् क्रमादुज्जयिनी पार्ष्ववर्ति धारायांपुरि पुमारवंश सुमणि
श्री जगदेव महाराज पुत्र रत्नं श्री सूरदेवेश्वरं नाना प्रत्यय
दर्शन पूर्वकं प्रतिबोध्य श्री जैनधर्मे स्थिरीचकार । पुनः सप्त
कुव्यसन परिहारं कारितवान् तत एव श्री धर्मघोष गच्छः
सर्वत्र विश्रुतो जातः । तदैव च श्री सूरदेव लघु आता सांखल
नामा सोऽपि प्रतिबुद्धः त्रिंशत्तमोयं पट्टः श्री वीरशास-
नेऽजनि ॥३०॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री धर्मघोष सूरि हुए जो ५०० यतियों से धिरे हुए अनेक देशों में विहार करते हुए क्रमशः उज्जयिनी के पास धारा नगरी आये और वहाँ पुमारवंश शिरोमणि श्री जगदेव महाराज के पुत्र रत्न श्रीसूर-
देवेश्वर को अनेक प्रकार के परिचय दिलाकर जैन धर्म में प्रतिबोध देकर स्थिर किया । फिर सात कुव्यसन का परित्याग करवाया । तभी से श्री धर्म घोष गच्छ सब जगह प्रसिद्ध हुआ । उसी समय श्री सूरदेव के छोटे भाई सांखल नाम वाला भी प्रतिबुद्ध हुआ । यह तीसवां पट्ट श्री वीर शासन में हुआ ।

मूल—तत्पट्टे श्री जयदेव सूरिः ॥३१॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री जयदेव सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री विक्रमसूरिः दुष्ट कुष्ठादि रोग दूरीकरणेनाऽनेको-
पकारं कृत ॥३२॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री विक्रम सूरि हुए दुष्ट कुष्ठादि रोग को दूर
कर जिन ने अनेकों लोगों पर उपकार किया ।

मूल—तत्पट्टे श्री देवानन्द सूरिः, एतस्मिन् गणाधीशे श्री सूरदेवा
पत्यतः सूरवंशः प्रतीतो जाति जातः । तथैव सांखलावंशोऽपि
राज्यं तु म्लेच्छैरपहृतं । ततो धनदसम संपत्त्या शत्रुजयादि
तीर्थ यात्रा विधानं संघपति पदं प्रोक्तुं यवनाधीश साहि-
शिरोमणिभिः प्रदत्तं सकल जैन संघेनापि ॥३३॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री देवानन्द सूरि हुए । इनके आचार्य बनने
पर श्री सूरदेव के पुत्र से सूर वंश संसार में प्रसिद्ध हुआ । इसी प्रकार
सांखला वंश भी । राज्य तो म्लेच्छों ने छीन लिया था । फिर भी धन
कुबेर सी बिपुल संपदा से शत्रुजयादि तीर्थों की यात्रा करने के
कारण समस्त जैन संघ एवं यवनाधीश शाह शिरोमणि ने भी आपको संघ-
पति का सबसे ऊँचा पद प्रदान किया ।

मूल—तत्पट्टे श्री विद्याप्रभु सूरिः ॥३४॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री विद्याप्रभु सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री नरसिंह सूरिः ॥३५॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री नरसिंह सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री समुद्र सूरिः ॥३६॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री समुद्र सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री विबुध प्रभु सूरिः । सर्वेप्येते सूरयो जाग्रत्तर प्रत्यया
बभूवुः ॥३७॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री विबुध प्रभु सूरि हुए । ये सभी आचार्य प्रगत
प्रभाव वाले थे ।

मूल—तत्पट्टे संवत् ११२३ श्री परमानन्द सूरिर्जातः । तस्मिन् गुरौ
जाग्रति ११३२ वर्षे सूरवंशः कुतश्चित्कर्म दोषात्तुच्छतां प्राप्तः

परिकरेण । ततो गुरुणाऽऽज्ञप्तं भो यूयं नागोर नगरे वसत, तत्र स्थितानां भवतां महानुदयो भावीति श्रुत्वा सूरवंशजो वामदेव संघपतिः सकलत्र एव नागोर नगरेऽपितः संवत् १२१० वर्षे । सुखेन तत्रप्रतिवर्षं महती कुल वृद्धिर्जाता । १२२१ वर्षे सूरवंशीय संघपति सतदास गृहे ससाणी नाम्नी कुलदेवी माता जाता । १२२६ वर्षे नागोर पुरादुत्थिता मोरख्याणा नाम ग्रामेऽन्तर्हिता । १२३२ वर्षे ससाणी माता प्रकटिता मोला सूरवंशीयस्य स्वप्ने दर्शनं दत्त्वा पुत्तलिका प्रकटीभूता, मोला-केन देवालयः कारितः ॥३८॥

अर्थ—उनके पाट पर संवत् ११२३ में श्री परमानन्द सूरि हुए । उनके गुरुत्व काल ११३२ वर्ष में किसी कर्म दोष से सूर वंश अपने परिकर के साथ तुच्छ वशा [स्थिति] को प्राप्त हो गया तब गुरु ने आदेश दिया कि तुम सब नागोर नगर में बसो । वहां रहते हुए तुम सबों का बड़ा उदय होने वाला है । यह सुन कर सबत् १२१० वर्ष में सूरवंशज संघपति वामदेव अपनी पत्नी के संग नागोर नगर में रहने लगे । वहां सुख पूर्वक रहते हुए प्रति वर्ष उनको बड़ी कुल वृद्धि होने लगी । १२२१ वर्ष में सूर वंशीय संघपति सतदास के घर में ससाणी नाम की कुल देवी माता पैदा हुई । १२२६ वर्ष में नागोर नगर से उठकर मोरख्याणा नाम के ग्राम में वह अन्तर्धान हो गई और १२३२ वर्ष में ससाणी माता पुनः प्रकट हुई तथा सूर वंशीय मोला को स्वप्न में दर्शन देकर फिर पुत्तली रूप से प्रकट हुई । इस पर मोला ने देवालय बनवा दिया ।

मूल—तत्पट्टे श्री जयानन्द सूरिः ॥ ३६ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री जयानन्द सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे श्री रविप्रभ सूरिः ॥ ४० ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री रविप्रभ सूरि हुए ।

मूल—तत्पट्टे ११८१ श्री उचित सूरिः, ततः श्री धर्मघोषीय गण उचितवाल संज्ञो जातः, तत्प्रतिबोधिता इदानीं श्रीस्तवाल संज्ञ-काः कथ्यन्ते भावक जनाः ॥ ४१ ॥

अर्थ—उनके पाट पर सं० ११८१ में श्री उचितसूरि हुए। वहीं से धर्मघोषीय गण उचित बाल नाम से कहा जाने लगा। उनसे प्रतिबोध पाये हुए आबक जन इस समय ओस्तवाल कहलाते हैं।

मूल—तत्पट्टे सं० १२३५ श्री प्रौढसूरियेनोवसगगहरस्तोत्र पाठेनैव श्रद्धालु गृहे प्रवृत्तामारी निवर्तिता ततएव धर्मघोषीया पूढ़वाल शाखाजाता, पुनस्तत् प्रतिबोधिताः प्राग्वाटकाः कथ्यन्ते।

अर्थ—उनके पाट पर सं० १२३५ श्री प्रौढसूरि हुए जिनने “उवसग-हर” स्तोत्र के पाठ से ही श्रद्धालु आबकों के घर में उत्पन्न मारी-प्लेग की बीमारी दूर करदी। वहीं से धर्म घोषीय “पूढ़वाल” शाखा हुई फिर उनसे प्रतिबोध पाये हुए वे ही पोरवाड़ या प्राग्वाटक कहलाये।

मूल—अथोत्कुण्टतर संपदायां परिवर्द्धमानायां सूरवंशीयाः (सूरं-सूर्य मणन्ति तेजसा गच्छन्ति ते) “सुराणा” इति कथापिता लोके। एतस्मिन् समये तत्पट्टालंकरिण्युः श्री विमलचन्द्रसूरिरभवत्।

अर्थ—बाव बहुत अधिक सम्पत्ति के बढ़ जाने पर सूरवंश वाले [तेज से सूर याने सूर्य का अनुगमन करने से] लोक में “सुराणा” कहाये। इस समय उनके पाट को अलंकृत करने वाले श्री विमलचन्द्र सूरि हुए।

मूल—तत्पट्टे श्री नागदत्तसूरिरभूततो धर्मघोषीया नागोरी गच्छ संज्ञाधराः जाताः, तत्प्रसंगश्चायम् श्री विमलचन्द्र सूरैर्नाग-दत्त १ मांडलचंद २ नेमचंदाह्वास्त्रयोऽन्तेऽसिनो बभूवुस्तेषु-नागदत्तः पाटणवासी श्री श्रीमाल ज्ञातीयोऽभूत्, सच सं० १२७८ केनाऽपिकार्येण लवपुरीमगात् पुनस्ततो निवर्तमानो नागोरपुरे समेतः। तत्र श्री विमलचन्द्र सूरैर्मुखाद्वर्मोपदेशमा-कर्ण्य संजात वैराग्यः सन् दीक्षांलभौ ॥ १ ॥ अथ मांडलचंद उज्जयिनी निवासी तातेङ्ग गोत्रीयः सोऽपि कार्यवशेन नागोर पुरे समागतः नागदत्तं दीक्षितं श्रुत्वा स्वयं प्रवव्राज। एवं

द्वावपि उग्रतप साष्टमपारणायामाचाम्लं कुर्वन्तौ श्रुतपारणौ
बहु निमित्तज्ञौ जातौ, कियत्कालं श्रीविमलचंद्र सुरिणा सादरं
विहृत्यं उज्जयिनीमागतौ । तत्रस्थितेन नागदत्तेन स्वीय
गुरुन् शिथिलाचारान् दृष्ट्वा ४५ साधुभिः सह पृथग् विजह ।

क्रमेण प्रति ग्रामं विहरतानेक 'श्रावक' श्राविकाः प्रति-
बोधयता पुनर्नागोरपुरे समेत्य चतुर्मासी चक्रे । बहुधा धर्म
ध्यान तपः प्रभृतिकं सत्कर्म च । ततोऽन्य गच्छीयाः श्रावकाः
स्वीय यतीन् श्रीपूज्यांश्च शिथिलान् वीक्ष्य नागदत्तान्तिके
समेत्य धर्म ध्यानं व्याख्यान श्रवणं च कुर्वन्ति एवं नागोर-
पुरे तिष्ठति पश्चान्मांडलचंद्रोऽपि एकादशयति परिकृतस्ततो
निःसृत्य लवपुरी देशे गतस्तत्र बहवो नवीनाः श्रावका प्रति-
बोधितास्तदा धर्मघोषीया मंडेचवाल शाखा जाता सातु सांप्र-
तं दृश्यते । इतश्चोज्जयिन्यां श्री विमलचन्द्र सुरयो दिवंगता
अन्तसमये नेमचंद्राय निज पदवी प्रदत्ता । अथच कियत्सु
दिनेषु गतेषु एतां प्रवृत्तिमाकर्ण्य श्रावकाः संभूय नागदत्तान्तिके
समेताः आगत्य चोक्तं, हे स्वामिन् ! श्री विमलचंद्र सुरयो
दिवंगताः नेमचंद्राय पट्टः प्रदत्तः, परन्तु स्वामिन् ! पट्टयो-
ग्यास्तु भवन्त एव सन्ति, ततोऽधुनास्मामिरत्रभवंतः पट्टेस्था-
पयिष्यन्ते, श्रीपूज्याः करिष्यन्ते इति मिथः समालोच्य सर्वो-
त्तम मुहूर्तं दृष्ट्वा श्री श्रीमाल-सुराणा-तातेङ्ग-गांधीचोर-
वेटिक प्रमुख सर्वश्रावकैर्नागोर मध्ये सं० १२८५ अक्षय
तृतीया दिने श्री नागदत्तेभ्यः पदवी दत्ता श्रीश्री पूज्याः कृताः ।
ततो नागपुरीय गणो निःसृतः प्रसिद्धिं प्राप । तदनु श्रीनाग-
दत्त जितांतपस्याप्रमावाकृष्ट चेता भवनवासी रत्नचूडाभिधो

देवः सान्निध्यं कृज्जातः । एकदा तद्देव प्रमावान्नज
गुरुणा सूरि मंत्र पत्रं नेमचन्द्रसूरि पार्श्वीदाकृष्टं स्वपार्वे ।
ततः सूरि मन्त्रमृतो जाताः । अथ श्री नागदत्त सूरयो यत्र
गतास्तत्र नागोरी गच्छीयाः कथापिताः । अनेके श्रावकाः प्रति-
बोध्य स्वगच्छीयाः कृताः । तदनु बहवो यतयोऽपि नेमचन्द्र-
सूरीन् शिथिलान् वीक्ष्य श्री नागदत्त सूरि पादान् सिषेविरे ।
नागोरी गच्छीय साधवः कथापिताः । ईदृशा महाप्रतापिनो
जागरूक भगधेयाः सेदिस्तटस्तंभनक प्रतिष्ठइति स्तोत्र कर्तारः
श्री नागदत्त सूरयो जज्ञिरे ॥ ४४ ॥

अर्थ—उनके पाठ पर श्री नागदत्त सूरि हुए । उनसे धर्म घोषीय
नागोरी गच्छ नाम चला । उसका प्रसंग इस तरह है—श्री विमलचन्द्र सूरि
को नागदत्त, मांडलचंद और नेमचन्द्र नाम के तीन शिष्य हुए । उनमें
नागदत्त जो पाटणवासी श्री श्रीमाल जाति के थे । वे सं० १२७८ में किसी
कार्य से लखपुरी गये और वहाँ से लौटकर फिर नागौर आये । वहाँ पर
श्री विमलचन्द्र सूरि के मुँह से धर्मोपदेश सुनकर वैराग्य जपा और दीक्षा
ग्रहण करली । बाद मांडलचन्द्र उज्जयिनी निवासी जो तातेड़ गोत्रीय था,
वह भी कार्यवश नागौर आया और नागदत्त को दीक्षित हुआ सुनकर स्वयं
दीक्षित हो गया । इस प्रकार ये दोनों उग्र तपस्या से अष्टम के पारणा में
आचार्य्य करते हुए शास्त्र के पारंगामी और बहुत निमित्त के जानकार
हो गए । कितने ही समय तक श्री विमलचन्द्र सूरि के साथ वे दोनों विहार
करते रहे फिर उज्जयिनी आए । वहाँ ठहरे हुए नागदत्त ने अपने गुरु को
शिथिलाचारी देखकर ४५ साधुओं के साथ पृथक विहार कर दिया ।

क्रमशः गांव गांव विहार करते और अनेक श्रावक श्राविकाओं को
प्रतिबोध देते हुए उन्होंने फिर नागौर नगर में आकर चतुर्मास किया ।
बहुत प्रकार के धर्म ध्यान और तपस्या आदि सत्कर्म हुए एवं अपने यति
और श्री पूज्यों को शिथिलाचारी देखकर अन्य गच्छ के श्रावक भी नागदत्त
के पास आकर धर्म ध्यान और व्याख्यान श्रवण करने लगे । इस प्रकार
नागौर में रहने पर पीछे से मांडलचन्द्र भी एगारह साधुओं के साथ वहाँ से
निकल कर लखपुर चले गये और वहाँ बहुत से नवीन श्रावकों को

प्रतिबोध दिया। उस समय धर्मघोषीय मंडेचबाल शास्त्रा प्रगट हुई। अब वह शास्त्रा नहीं दिखाई देती। इधर उज्जैन में विमलचन्द्र सूरि का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने अन्त समय में अपनी आचार्य पदवी नेमचन्द्र को प्रदान कर दी। बाद कितने ही दिन बीतने पर जब आबक लोगों ने यह बात सुनी तब इकट्ठे होकर नागवत्त के पास आए और बोले कि हे स्वामी ! श्री विमलचन्द्र सूरि का स्वर्गवास हो गया और नेमचन्द्र को उन्होंने अपना पाट दिया है, किन्तु पाट के योग्य तो आप ही हैं। इसलिए अब हम सब आपको उनके पाट पर स्थापित करेंगे और श्रीपूज्य बनाएंगे। इस तरह आपस में विचारकर सबसे उत्तम मुहूर्त देखकर श्री श्रीमाल, सुराणा, तातेड़, गांधी, और चोरवेटिक (चोरडिया) प्रमुख सभी आबकों ने नागौर के मध्य सं० १२८५ अक्षय तृतीया के दिन श्री नागवत्त को पदवी प्रदान की और श्री पूज्य बनाया, वहाँ से नागपुरी (नागोरी) गण निकला और प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद आ० नागवत्त की तपस्या के प्रभाव से आकृष्ट होकर भवनवासी रत्नचूड़ ! नामका देव उनकी सेवा में रहने लगा। एक समय उस देव के प्रभाव से अपने गुरु नेमचन्द्र सूरि के पास से मंत्र पत्र को आकर्षित कर प्राप्त किया। तब से आप सूरि मंत्रधारी हो गए। बाद श्री नागवत्त सूरि जहां गए वहां नागोरी गच्छीय कहलाये। अनेक आबकों को प्रतिबोध देकर अपने गच्छानुगामी बनाये। इसके पश्चात् बहुत से यति भी नेमचन्द्र सूरि को शिथिल देखकर श्री नागवत्त सूरि के चरण-शरण में आए और नागोरी गच्छ के साधु कहाए। ऐसे महाप्रतापी, जागरूक भाग वाले "सेडिस्तदस्तंभनक प्रतिष्ठ" इस स्तोत्र के कर्ता श्री नागवत्त सूरि हुए। ४४।

मूल—तत्पद्मे श्री धर्म सूरिः ॥ ४५ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री धर्म सूरि हुए।

मूल—तत्पद्मे श्री रत्नसिंह सूरिः ॥ ४६ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री रत्नसिंह सूरि हुए।

मूल—तत्पद्मे श्री देवेन्द्र सूरिः ॥ ४७ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री देवेन्द्र सूरि हुए।

मूल—तत्पद्मे श्री रत्नप्रभ सूरिः ॥ ४८ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री रत्नप्रभ सूरि हुए।

मूल—तत्पद्मे श्री अमरप्रभ सूरिः ॥ ४९ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री अमरप्रभ सूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री ज्ञानचन्द्र सूरिः ॥ ५० ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री ज्ञानचन्द्र सूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री मुनिशेखर सूरिः ॥ ५१ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री मुनिशेखर सूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री सागरचन्द्र सूरिस्त्रैवेद्य गोष्ठी ग्रन्थकर्ता यवनराज-
समामुलब्धजयः ॥ ५२ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री सागरचन्द्र सूरि हुए जो “त्रैवेद्य गोष्ठी”
ग्रन्थ के कर्ता थे, इन्होंने मुसलमान राजा की समा में विजयभी
प्राप्त की ।

मूल—तत्पद्मे श्री मलयचन्द्र सूरिः ॥ ५३ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री मलयचन्द्र सूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री विजयचन्द्र सूरि रुपसर्गहरस्तोत्र व्याख्याकृत् ॥ ५४ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री विजयचन्द्र सूरि “उपसर्ग हर” स्तोत्र
की व्याख्या करने वाले हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री यशवंत सूरिः ॥ ५५ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री यशवंत सूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री कल्याण सूरिः ॥ ५६ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री कल्याणसूरि हुए ।

मूल—तत्पद्मे श्री शिवचन्द्र सूरिः सं० १५२६ जातः स च शिथिला-
चारः एकमालयमाश्रित्य स्थितः साधुव्यवहार रहितः सूत्र
सिद्धान्त वाचनामकुर्वन् रास भासादिकं वाचयितुं लग्नः ।
स चैकदाऽकस्माच्छूल रोगेण मृत्युमाप ॥ ५७ ॥

अर्थ—उनके पाट पर सं० १५२६ में श्री शिवचन्द्र सूरि हुए । वे
शिथिलाचारी होकर एक ही जगह नियत रूप से रहने लगे । और साधु
व्यवहार से रहित, सूत्र सिद्धान्त की वाचना नहीं करते हुए भासा के रास
वाचने लगे और एक समय अकस्मात् शूल रोग से उनकी मृत्यु हो गई ।

मूल-तस्य देवचंद माणकचंद नामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । तयो
 र्मध्ये देवचंदस्तु व्यसनी विजयाहि (मल) फेनादिकमत्ति
 शिथिलतरो माहात्मतुल्यो जातः । अथ माणकचंदो यति
 व्यवहार रचकः. श्रद्धालुनां पुरतो व्याख्यान प्रत्याख्या-
 नादिकं धर्म कर्म साधयति, श्रावयति च मन्त्रामरादि स्तवान् ।
 उभयकालं प्रतिक्रमणं करोति । अस्मिन्नवसरे माणकचंद पार्वे
 सूरणा डेडोजी, देवदत्त जी, वीरमजी, रयण जी, सांडो जी,
 सोहिल जी, नरदास जी प्रमुखाः, गांधी सदारंगजी, सीचो,
 जी, गेहोजी प्रमुखाः पुनस्तातैः सहोजी, कम्मोजी, नंदोजी
 प्रमुखाः पुनरवेटिका, नाथोजी, बीजोजी, रूपोजी, खेमो
 जी प्रमुखाः पुनः श्री श्रीमाल सहसकरण जी, शिवदत्तजी,
 श्रीकरण जी, प्रमुखा आगच्छन्ति सामायिक प्रतिक्रमणादिकं
 च कुर्वन्ति । तस्मिन्नवसरे धर्मवोषा सूरणा गच्छीयैः पौषध
 शालिकैः सूरणा डेडोजी देवदत्त जी प्रमुखान् प्रतिमणितं
 भवन्तोऽस्मान् शिथिलान् दृष्ट्वा नागोरी गच्छणा जाता, त
 दिदानीं तु एतेऽपि रत्नलयाचारा एव जाता, अतो भवन्तोऽधुनाऽ-
 स्मत्पौषधशालायामागच्छन्तु । तदा सूरणा प्रमुख श्रावकै-
 रुक्तम्-सक्रियावतो युष्मान् वीक्ष्याऽस्मद्वृद्धाः नागोरी गच्छीया
 जाता । अथ को गुणो भवत्सुयमाश्रित्य युष्मासु तिष्ठेम, तदा
 पुनः पौषध शालिका अकथयन् अस्माभिर्भवद्वृद्धा प्रतिबोध्य
 उक्तेषाः कृताः । जगदेव पुमारतोऽखिला प्रवृत्तिः श्राविता
 पुनरवोचच्च वयं युष्मदीयाः कुल गुरवोऽतोऽस्मभ्यमपि अश-
 नादिकं दीयतां । तदा सूरणकैरवाचि अग्रतोऽस्माकमपि-
 स्थान नामादि लिख्यतांऽस्मतोऽशनादिकमपि गृह्यतां ततः
 पौषध शालिकैर्विवाह पट्टिकासु नामादि लिखनमकारि । जातस्य

परिखीतस्य च लागभागपुपाददतेस्म । ते एवं प्रकारेण धर्म
घोषीय नागोरी गच्छस्य श्री महावीर देवात् ५८ पट्टा अभू-
वन् ।

अर्थ—उनके देवचन्द और माणकचन्द नाम के दो शिष्य थे । उन
दोनों में देवचन्द तो व्यसनी बन भंग अफीम आदि खाने लगा, अतिशिथिल
होने से महात्मा जैसा हो गया । दूसरा माणकचन्द जो यति व्यवहार का
रक्षक था अज्ञान भक्तों के आगे व्याख्यान प्रत्याख्यान आदि धर्म कार्य करता
और भक्तामर आदि स्तवन सुनाता तथा दोनों समय प्रतिक्रमण करता । इस
अवसर पर माणकचन्द के पास सूराना डेडोजी, देवदत्तजी, वीरमजी,
रयगुजी, सांडोजी, सोहिल जी, नरदास जी आदि गांधी सदारंग जी, सीबो
जी, मेहोजी प्रमुख, तातेड और सहो जी, कम्मो जी, नंदो जी प्रमुख तथा
चौरबेटिक, नाथो जी, बीजो जी, रूपो जी, खेमो जी प्रमुख और श्री श्रीमाल
सहसकरण जी, शिवदत्त जी, श्रीकरण जी प्रमुख आते और सामायिक प्रति-
क्रमणादि करते । उस समय धर्म घोष सूरानागच्छीय पौषधशालिकों ने
सूराना डेडोजी देवदत्त जी प्रमुख लोगों को कहा कि आप हम सबको
शिथिल देखकर नागोरी गच्छ में चले गये थे । किन्तु इस समय तो ये भी
शिथिलाचारी बने हुए हैं अतः आप अब हमारी पौषध शाला में आजाओ ।
तब सूराना प्रमुख भावकों ने कहा—क्रियावान् देखकर हमारे पूर्वजों ने
नागोरी गच्छ स्वीकार किया था । अब आप में क्या गुण हैं जिसको लेकर हम
आपके गच्छ में रहें । तब फिर पौषध शालिक बोले—हमने आपके वृद्धों को
बोध देकर उकेश गच्छी बनाये । जगदेव पमार से लेकर सारी प्रवृत्ति
सुनायी और फिर बोले—हम तुम्हारे कुल गुरु हैं अतः हम सबको भी आहार
आदि प्रदान करो । तब सूराना बोले—आगे से हमारे भी नाम तथा
पता लिखो और हमारे यहाँ से भोजनादि भी ले जाओ । तब से पौषध
शालिक विवाह पट्टिकाओं में नाम आदि लिखने लगे और जन्म और
विवाह की लाग भी लेने लगे । इस तरह धर्म घोषीय नागोरी गच्छ का
श्री महावीर देव से ये ५८ पट्टे हुये ।

मूल—अथैकोनषष्ठितमे पट्टे श्री श्रीमाल गोत्रीयाः श्री हीरागर
सूरयोऽभवन् । पितृनाम मालाजी माखिक्यदेजी जननी, नौलाई
ग्रामे जन्म ।

अर्थ—१६ वें पाट पर श्री श्रीमाल गोत्रीय श्री हीरागर सूरि हुए । इनके पिता का नाम मालो जी और माता का नाम माणिक्यदेवी था, नौलाई ग्राम में इनका जन्म हुआ ।

मूल—वष्टितमे पट्टे सूरणा गोत्रीयाः श्री रूपचन्द्राचार्या जाताः ।
पिता रयणुजी, माता शिवादे, नागोर नगरे जन्म ।

अर्थ—साठवें पाट पर सूरणा गोत्रीय श्री रूपचन्द्र आचार्य हुए । इनके पिता का नाम रयणुजी तथा माता का नाम शिवादे था । नागोर नगर में इनका जन्म हुआ था ।

मूल—अथ श्रीहीरागरजी रूपचंद्रयोः कथा लिख्यते—ऋद्विस्तिमित समृद्धं नागोर नाम नगरं तत्र साहि शिरोमणिर्गुलान्वयः फीरोजखान नामा राज्यं करोति । तत्र नगरे बहवः साधुकारा जनाः धनिनो वसन्ति । तेषु शिरोमणिः सूरणा देवदत्तजीकोऽस्ति, तदीयो वृद्ध भ्राता डेडोजीकोऽस्ति, देवदत्तजीकस्य देवदत्तजी ? कमादेजी चेति भार्याद्वयम् आद्यायास्त्रयः पुत्राः रयणुंजी ? सांडोजी २ सोहिलजी ३ नामानो जाताः । एते त्रयोऽपि सुधर्माणः शत्रुंजयस्य संघः पृथक् २ त्रिभिर्निष्कासितः तेन ते त्रयोऽपि भ्रातरः संघपतयः कथापिताः । द्वितीयस्या भार्यायाः सहस्र मल्लाख्यः पुत्रोऽभूत् अथ रयणुजीकस्य मांडराज ? हरचंद २ रूपचंद ३ कम्मो ४ पंचायण ५ नामकं पुत्र पञ्चकमजनि, पंचाप्येते सहोदरा महान्तो बहुप्रदा नगरेऽग्रेसरा अभवन् । सांडेजीकस्य नाथू ? नापो २ नंदो ३ नान्हो ४ नामानश्चत्वारः सुताबभूवुः । सोहिलकस्य पुत्राभावेन रयणुंजी पार्श्वोद् रूपचन्द्रोऽंके गृहीतः । पश्चात् कियदिनेषु गतेषु रूपचन्द्रस्य पुण्यातिशयात् सोहिलजीकस्य खेतसी नामांगजोऽजनि । सहस्र मल्लस्यांके पंचायणको दत्तः । डेडोजीकस्य साहवीरम् १

श्री करणाऽख्यौ द्वौ सुतावभूताम् । साहवीरमकस्य पुत्रो नर-
दासोऽभूत्तस्य नागोजी नामासुतोऽजनि ।

अर्थ—अब श्री हीरागरजी और रूपचन्दजी की कथा लिखते हैं—
धनधान्य से परिपूर्ण नागोर नाम का नगर है । वहाँ पर शाह शिरोमणि
मुगलवंशीय फीरोजखान नाम का राजा राज्य करता था । उस नगर में
बहुत से धनी साधुकार-साहुकार लोग वास करते थे । उनमें सुराणा शिरो-
मणि देवदत्ताजी एवं उनके बड़े भाई डेडोजी भी थे । देवदत्ताजी को देल्हजी
एवं कमादेजी नामकी दो स्त्रियाँ थीं । पहली देल्हजी को रयणुंजी, सांडोजी,
और सोहिलजी नाम के तीन पुत्र हुए । तीनों ही धर्मात्मा तथा शत्रुजय
का अलग २ संघ निकालने के कारण संघपति के रूप में प्रसिद्ध हुए ।
द्वितीय स्त्री के सहस्समल्ल नाम का पुत्र हुआ । फिर रयणुंजी के
भांडराज १, हरचंद २, रूपचंद ३, कम्मो ४, एवं पंचायण ५ नाम के पांच
पुत्र हुए । ये पाँचों सहोदर बड़े और दानी होने से नगर में अग्रणी थे ।
सांडोजी को नाथू १, नापो २, नंबो ३ और नल्हो नाम के चार पुत्र हुए ।
सोहिलक ने पुत्र के अभाव में रयणुंजी के पास से रूपचंद को गोद लिया ।
बाव कितने ही दिन बोलने पर रूपचंद के पुण्य प्रभाव से सोहिलजी को
खेतसी नाम का पुत्र हुआ । उधर सहस्समल के गोद में पंचायण को दिया ।
डेडोजी को साहवीरम और श्री करण नाम के दो पुत्र हुए । साहवीरम को
नरदास नाम का पुत्र हुआ, उसको नगोजी नाम का पुत्र हुआ ।

मूल—अथ सं० १५४५ राज वीकाजीकेन योधपुराभिर्गत्य पितृव्य
कांक्षलजी कृत साहाय्येन वीकानेर पुरं स्थापितम् । सं० १५५६
माघ शुक्ल पंचम्यां रयणुंजी साहो वीकानेर पुरे समेत्य राज्ञः
पार्श्वे गृहाणां भूमि-गृहीतवान् । तत्राप्यर्द्धं वासः स्थापितः ।
अथ सं० १५६२ श्री चतुष्पथी मंदिरं 'वत्सापत्यैः'
पंचजनैस्सह संभूय कारितम् प्रतिष्ठादिवसे सं० १३८० वर्षे
नवलवा(खा)रासल पुत्रराजपालात्मज साह नेमचंद वीरमदुसाह
देवचन्द कान्हडादिभिः प्रतिष्ठापिता, मूलनायक प्रतिमा मंडो-
बराड् वत्सापत्यैरानीता सतीसम्यक् स्थापिता, सर्वैरेकत्र मिलि-

तैराणां शुक्ल नवम्यां राव श्री वीकाजी राज्ये पश्चात्तदेव मंदिरं सर्व पंचजनानामंके धृतम् । सं० १५७१ चतुष्पथीय मंदिरस्य परितो दुर्ग कारितं वत्सापत्यैः । अथैकदा कार्तिक्याः पूजायां विधीयमानायां रयणुंसाहेनाभाणि अद्यवयमादौ पूजाविधास्यामः तदा वत्सापत्यैरुक्तं भो साहजिदः अस्मत् कारितं मंदिरमस्ति, पुनर्मंडोवरादस्मत-आनीता मूल प्रतिमाऽस्ति, ततोऽद्यमहतीमर्चा वयं करिष्यामः । यूयं श्वः कर्तास्थेति भणिते-ऽन्योन्यं विवादो जातः । तदा वत्सापत्यैः साहंकारं वचोभाषितं भोः साहजित् इयद् बलं तु नवीनं मंदिरं विधाप्यकर्तुं मुचितम् । ततो रयणुंसाहो मंदिराग्निः सृत्य निज भवने मनस्युद्विग्नः सन् विमृशति नभ्यं मंदिरं कारायणं विना महत्त्वं न तिष्ठति । द्रव्यस्य तु गणना नास्ति मम, परंतु तत्कारित मंदिरोपरि स्वीयत्वं न धार्य इति विमृश्य चतुष्पथीय मंदिरे गमनं त्यक्तम् ।

अर्थ—बाद सं० १५४५ में राव वीकाजी ने जोधपुर से निकल कर चाचा कांथलजी की सहायता से बीकानेर नगर की स्थापना की । सं० १५५६ माघ शुक्ल पंचमी में रयणुंजी साह बीकानेर में आकर राजा के पास घर बनाने की जमीन प्राप्त की । वहां आकर रहना भी आरंभ कर दिया । बाद सं० ६१५२ में चतुष्पथ चौक का मन्दिर बछावतों ने पंचों के साथ मिलकर बनाया प्रतिष्ठा के दिन नवलखा रासल पुत्र राजपाल के आत्मज साह नेमचंद और वीरमडु-साह देवचन्द कान्हड़ आदि द्वारा प्रतिष्ठित १३८० की मूलनायक की प्रतिमा बछावतों ने मंडोर से लाकर विधिपूर्वक स्थापित की । एक जगह मिलकर सभी ने आषाढ़ शुक्ल नवमी को राव श्री वीका जी के राज्य में फिर वही मन्दिर सभी पंचजनों के अधीन कर दिया । और सं० १५७१ में चतुष्पथ मंदिर के चारों ओर बछावतों ने एक कोट बना दिया । फिर किसी समय कार्तिक की पूजा के समय रयणुंजी ने कहा—आज हम पहले पूजा करेंगे, तब बछावत बोले—ओ साहजी ! मन्दिर हमने बनवाया है और मंडोर से मूल प्रतिमा भी हम ही लाये हैं अतः आज बड़ी पूजा तो हम करेंगे । तुम सब कल करना यह कहने पर परस्पर बिबाद हो

गया । तब बछावतों ने अहंकार पूर्वक कहा साहजी ! इतना बल तो नवीन मन्दिर बनाकर करना उचित है । इस पर से रयणजी साह मन्दिर से बाहर निकल गये और अपने भवन में उद्विग्न मन से सोचने लगे कि नवीन मन्दिर बनवाए बिना महत्त्व नहीं रहेगा । मेरे पास द्रव्य की तो कोई गिनती नहीं है परन्तु उनके बनवाए मन्दिर पर अपना अधिकार नहीं रखना चाहिए यह सोचकर चतुष्पथ वाले मन्दिर में जाना छोड़ दिया ।

मूल—पश्चादनेके मेलका आगताः परन्तु रयणुंजी साहो न गतः ।

क्रियद्दिनानंतरं नागोर पुरे गत्वा आठु—आठुजैः सह स्वीय-
वार्त-कथन पूर्वकं, नय्य मंदिरकरण-प्रतिज्ञा स्थापिता । सुखेन
तत्र तिष्ठतोरयणुं साहस्य राव श्री लूणकरणानां प्रसाद-पत्राणि
समेतानि । तानि वाचं २ रयणुं साहो भांडैजीकमैजीकाभ्यां
विमर्शं कृतवान् सकलत्रवारों बीकानेर पुरे समागतो नगोजी-
कोऽपि । रूपचन्द्रस्तु स्त्रियं विनैवा-गतस्तत्र राजातिके रूपम
पंचशती प्राप्नुती कृता । राज्ञी महान् सन्मानः कृतः कथितं च
यूयं महीयांसो वरीयांसः साधुकाराः स्थ । अतः सुखेन वाणि-
ज्यादिकं कुरुष्व । यच्चात्मकार्यं राजोचितंवाच्यं वाच्यमेवं श्री
महाराजेन सहर्षमुदिते सद् वस्त्रादिभिः सत्कृताः सर्वेऽपि ।

अर्थ - पीछे अनेकों मेले आए परन्तु रयणजी साह नहीं गए । कुछ दिनों के बाद नागोर नगर में जाकर उन्होंने भाई और भतीजों के साथ परामर्श में अपनी बात कहकर नये मंदिर बनाने की प्रतिज्ञा रखी । सुख से वहाँ रहते हुए रयण साह को राव श्री लूणकरण आदि के प्रेम पत्र प्राप्त हुए । उनको बांच बांच कर रयण साहने भांडैजी से बिचारकिया और स्त्री वर्ग सहित बीकानेर चले आए । नगोजी भी आगए । रूपचन्द्र बिना स्त्री के ही आए । और वहाँ राजा के पास ५०० मुहरें भेंट की । राजा ने भी बड़ा सम्मान किया और कहा कि तुम सब बड़े अच्छे साधुकार हो अतः सुख से यहाँ व्यापारादि करो और हमारे योग्य कोई कार्य हो तो बोलना इस प्रकार महाराज के सहर्ष कहने पर सबका उत्तम वस्त्रों से सत्कार किया गया ।

मूल—एवं तिष्ठतां तेषां आषाढ चातुर्मासी पर्व समागतं । तदानीं रूप-

चन्द्रादिभिः सदलङ्कारभूषितैर्देव-सदनं मंतुकामैः रयणुं साहः
 पृष्टः सन् इति व्याहृतवान् मोः ! श्रूयतामस्माकं तु वत्सापत्यैः
 साद्धं विवादो जातोऽस्ति, नवीनं मन्दिरं कारयित्वैव जिन-
 मंदिरे गमनं युक्तमन्यथा नहि, इत्याकर्ण्य रूपचन्द कामोजी-
 काम्यामुक्तं कृतं प्रसाधनं नोत्तारयामोऽधुना एतेनैव प्रति-
 कर्मणा राज्यद्वारतो मन्दिरभूमिं गृह्णीमस्तदा वरं इत्या-
 मृश्य प्रधानमेकं शिरोभूषणं रजतैकसहस्रं च लात्वा राज्य-
 द्वारे राज्ञः प्राभृतीकृतम्, तदा राज्ञा श्री लूणकरणेनाङ्गप्तं मोः
 कथ्यतामित्युक्ते रयणुं साहेन विज्ञप्तं महाराज ! वयं नवीनं
 श्री जैनमन्दिरं कारयिष्यामस्ततो मन्दिरोचिता भूमिः
 प्रदीयताम् । तदा राज्ञाऽभाषि नगरे सति-भूमिर्मवदीया यथेच्छं
 गृह्यतामस्मच्छासनमस्ति । ततो रयणुं साहेन मनोऽभिमता
 भूरुपात्ता ।

अर्थ—इस प्रकार वहां रहते हुए उनको आवाह चातुर्मासी का पर्व
 आ गया । उस समय रूपचन्द्र आदि ने अच्छे अलङ्कारों से भूषित होकर
 मन्दिर जाने की इच्छा से रयणु साह को पूछा तो उन्होंने कहा कि हमको
 वच्छावर्तों से विवाद हुआ है । अतः नवीन मन्दिर बनवाकर ही जिन मन्दिर
 में जाना ठीक होगा, अन्यथा नहीं । यह सुनकर रूपचन्द और कामोजी ने
 कहा—किया हुआ प्रसाधन अब नहीं उतार, अभी इसी वेशभूषा में राज-
 द्वार से मन्दिर की भूमि प्राप्त करें तो ठीक रहेगा, ऐसा सोचकर प्रधान
 शिरोभूषण और हजार रुपये लेकर राजा के यहां गये और भेंट की । तब
 राजा लूणकरण ने आज्ञा दी कहो—सेठ क्या है ? इस पर रयणु साह ने
 निवेदन किया कि महाराज ! हम सब नवीन जैन मन्दिर बनाना चाहते
 हैं—इसलिए मन्दिर के योग्य भूमि ढीजिये । तब राजा बोला—नगर में
 तुम्हारी जमीन है, जहां चाहो ले लो—हमारी आज्ञा है । तब रयणु साह ने
 इच्छानुसार अच्छी जमीन ले ली ।

मूल—सं० १५७= विजयदशम्या दिवसे श्रीवीरवर्द्धमान स्वामिनो
 मन्दिरस्य पादोष्ठतः । ततः परं शिवाद् रूपचन्द, कामोजी,

नगोजीका मन्दिरकार्यं कारयन्ति, रजतानां पंचविंशति-
सहस्राणि रयणुंसाहेन पृथगेव रक्षितानि सन्ति, अस्मिन्-
वसरे सोहिलात्मजस्य रूपचन्द—भ्रातुः खेतसीकस्योद्वाहो
नागोर पुरे मंडितोऽस्ति तदुपरि रयणुंजी-रूपचन्दजी-कमोजी-
का अहिपुरं गताः । मांडोजी-नगोजीकौ बीकानेरे स्थितौ ।
रयणुंजीकेन नागोरपुरं गच्छता रूपचन्दजीकस्य कथनेन
मन्दिरकार्यसमर्पणा नगोजीकस्य कृता, रजतानां पंचदश
सहस्राणि दत्तानि कथितं च मन्दिरकार्यं शीघ्रतया कार्यम् ।

अर्थ—सं० १५७८ विजया दशमी के दिन श्री बड़मान स्वामी के
मन्दिर की नींव डाली गई । बहुत शीघ्रता से रूपचन्द, कमोजी और नगोजी
मन्दिर का कार्य कराने लगे । चांदी के पचीस हजार रुपये रयणुं साहाने
इसके लिए अलग ही रखे थे । इस अवसर पर सोहिल के पुत्र श्रीरूपचन्द के
भाई खेतसी का नागोर नगर में विवाह होने वाला था । उसमें रयणुंजी,
रूपचन्दजी और कमोजी नागोर गए । मांडोजी और नगोजी बीकानेर में
ठहरे । रयणुंजी ने नागोर जाते रूपचन्दजी के कहने पर मन्दिर का कार्य
नगोजी को समर्पित किया और १५००० हजार रुपये भी दिए और कहा कि
मन्दिर का कार्य शीघ्रता से किया जाय ।

मूल—अथ नगोजीकः श्री मन्दिर कृत्यं कारयति तस्मिन् समये कोड-
मदेसर निवासी सोनो नाम वैद्यो निःस्वोऽस्ति तेनाऽऽगत्य
नगोजीकं प्रति लपितं, एतत्कार्यं मम समर्प्यताम्, इत्युक्ते
स्थानीयोऽयमिति मत्वा मन्दिरकृत्यं तद्वस्तेन कारितम् ।
तावता रजतानां पंचदश सहस्राणि व्ययीभूतानि, तदा सोना-
केनोक्तं पुनारजतानि प्रदीयताम् । तदा नगोजीकेनाभाणि,
सांप्रतं कार्यं शैथिल्यं विधीयतां, समयान्तरेण पुनः करिष्यते ।

अर्थ— श्री नगोजी मंदिर का कार्य करवा रहे थे उस समय कोड मदेसर
निवासी सोनो नाम का वैद्य जो साधारण स्थिति का था, नगोजी से आकर
बोला—यह कार्य मुझे संमलाइये । उसके ऐसा कहने पर नगोजीने स्थानीय
समझ कर मंदिर का काम उसके हाथ में कर दिया । उसने में १५ हजार

रूपये खर्च होगए तो सोना ने कहा और रुपये बीजिये । तब नमोजीने कहा कि अभी काम बन्द कर दो, बाद फिर करेंगे ।

मूल—अस्मिन्नसरे यद् वृत्तं तन्लिपिक्रियते, नगरलोकेषु प्रशस्यः
 श्रावक शिरोरत्नं धनी सुकृती गांधी गोत्रीयः सदारंगजी
 सींचोजीकरच वर्तते । तयोर्मध्ये सींचोजीको महान् धर्म
 भर्मज्ञः शास्त्रार्थज्ञोऽस्ति, सींचोजी—पार्श्वे रूपचंद्रस्य महती
 स्थितिः उभौ धर्मगोष्ठीं कुरुतः, परं सिद्धान्त—पुस्तकानाम-
 लाभात् साधु श्रावक धर्म भेदं न जानीतः । सिद्धान्त श्रवणोत्कं
 मनो विशेषादेतयोः सदैवास्ते । इतश्च कैश्चित्पौषधशालिकैः
 सिद्धान्त पुस्तकानि भूमिगृह—मध्यस्थानि गलितानि ज्ञात्वा
 जालोर—निगम—निवासी लुकाह्वं लेखकमाहूय रहः संस्थाप्य
 पुस्तक लिखनं कारितम् ।

अर्थ—इस समय जो बात हुई उसे लिपिबद्ध किया जाता है । नगर के लोगों में प्रशस्त, श्रावक शिरोभूषण धनी और सुवशवाले गांधी गोत्रीय सदारंगजी एवं सींचोजी रहते थे । उन दोनों में सींचोजी बड़े धर्मज्ञ और शास्त्र तथा उसके अर्थ के जानकार थे । सींचोजी के पास रूपचन्द्रजी बहुत ठहरते और दोनों धर्म-गोष्ठी करते रहते किन्तु सिद्धान्त ग्रन्थों के नहीं मिलने से साधु व श्रावक के धर्मभेद को नहीं जानते । विशेष रूप में इन दोनों का मन सदा सिद्धान्त सुनने को उत्कण्ठित रहता । इधर किसी पौषधशालिकों ने भूमिघर में स्थित सिद्धान्त ग्रन्थों को गलता हुआ जानकर जालोर निवासी लुंका नाम के लेखक को बुलाकर उसे एकान्त में रखकर पुस्तक लेखन करवाया ।

मूल—अथ पुस्तक लिखनं कुर्वता लुंकासाहेन साधोराचारं दृष्ट्वाऽर्थ
 विचारं मनसिकृत्वा सहर्षभरं विमृष्टं धन्यं श्री जैनशासनं,
 धन्याः साधवो ये ईदृगुणैर्विराजमाना भवन्ति तच्चरण रज
 सैव पापानि विलययान्ति, इत्यामृशान्यपत्राणि कृत्वा यतिभ्यः
 प्रच्छन्नं स्वस्मै सिद्धान्तान् लिखति लेखकः सः । एवं कुर्वता

सर्व-ग्रन्थाः लिखित्वा गुरुभ्यो विसृष्टाः स्वस्यापि पार्श्वे रक्षिताश्च ।

अर्थ—फिर पुस्तक लिखते हुए लुंकाशाह ने साधुओं का आचार देखकर और मन में अर्थ का विचार कर हर्षित मन से विचारा कि जैन शासन धन्य है और धन्य हैं इसके साधु जो इस प्रकार के गुणों से विराजमान हैं, उनके चरणरज से ही पाप नष्ट हो जाते हैं ऐसा सोच कर दूसरे पत्र लिखकर यतिओं से प्रच्छन्न रूप में लेखक अपने लिए भी सिद्धान्त लिखते । इस तरह करते हुए सभी ग्रन्थों को लिखकर गुरु को दे दिये और अपने पास भी रख लिये ।

मूल—अथ गुरुतो गृहगमनाज्ञा प्रार्थिता तस्मिन्नावसरे रूपचंदजी-केन प्रवृत्तिरियं प्राप्ता लुंकासाहं प्रति-उक्तं दर्शयतांनः सिद्धान्तान् लिखित्वाऽपि च दीयताम् । तदा लुंकासाहेनावादि अत्र तु लिखने यतयो विगृह्णन्ति, गृहे गत्वाऽखिल-राट्ठान्तान् लिखित्वा वः प्रेषयिष्यामीत्युक्ते रूपचंदजीकेन व्याहृतं बचो दीयतां, तदा लुंकासाहोऽवदत् यूयमपि बचोदत्थ, तदारूप-चन्द्रेणामाणि वयं कीदृग्वचो ददुमः ततो लुंकासाहोऽवदत् अहं जाने भवद्वेशमनि ईदृशी संपदस्ति, एतद्वोवयः सुन्दरं विद्यते पुनर्भवतां धर्मे परिणामातिरेकं वीक्ष्य जानामि भवन्तः सत्क्रियोद्वारं करिष्यन्ति, तन्ममापि नाम चेद्रक्ष्यं भवेत्तदाहं सिद्धान्तान् लिखित्वा प्रदद्याम्, इत्युदीरिते रूपचंदजीकोऽवोचत्, मम वचोऽस्ति अस्माभिश्चेत् क्रियोद्वारः कृतस्तदावयं नागोरी गच्छीयाः स्म एव भवतामस्माकं चेत्युभयेषां नाम रक्षिष्यामः ।

अर्थ—कार्य समाप्त होने पर शाहजी ने गुरुजी से घर जाने की आज्ञा मांगी । उस समय रूपचंदजी को लुंकाशाह को इस प्रवृत्ति का पता चल गया था, उन्होंने लुंकाशाह को आकर कहा — हमको सिद्धान्त दिखाओ और लिखकर भी दो । इस पर लुंकाशाह बोले कि यहां तो लिखने में यति लड़ते हैं । घर जाकर निश्चय सभी सिद्धान्तों की लिखकर आपको भेज दूंगा । उसके ऐसा कहने पर रूपचंदजी ने कहा कि बचन दो, तब लुंकाशाह बोला कि आप भी बचन दो । इस पर

रूपचन्द्रजी ने कहा कि हम किस तरह का वचन दें। तब लुंकासाह बोला— मैं जानता हूँ कि आपके घर में इतनी अधिक सम्पत्ति है और आपकी यह उम्र भी सुन्दर है फिर भी धर्म में आपकी परिणति देखकर जानता हूँ कि आप क्रियोद्धार करेंगे। अतः मेरा नाम भी अगर उसमें रहे तो मैं सिद्धान्त लिख कर दूँ। उसके ऐसा कहने पर रूपचन्द्रजी बोले मेरा वचन है, हम यदि क्रियोद्धार करेंगे तो नागोरी लोंकागच्छी होकर ही तुम्हारा और अपना दोनों का नाम रखेंगे।

मूल—अथ लुंकासाहेन जालोर पुरात् सर्वागम कदम्बकं रूपचंद्रेभ्यः प्रहितम्। अन्य देशेष्वपि योग्य गृहिणो वीक्ष्य दत्तम्। अथ रूपचंद्रजीकः सींचोजी पार्श्वे सिद्धान्तान् शृणोत्यधीते च। एकदा सींचोजीकेन रूपचंद्रजीकं प्रति कथितं भवन्तश्चेत् क्रियोद्धारं कुर्युस्तदा जगति महन्नाम स्यात्। पुनः धर्मस्य महिमा महान् भवति। भवदीयां गिरमाकर्ण्य बहवो जीवाः प्रतिबुध्यन्ते। चतुर्विध श्रीसंघस्थापना च जायते। तदा रूपचंद्रजीकेनोदितं स्त्रियं प्रतिबोध्य पित्रोराज्ञां च लात्वा दीक्षां कक्षीकरिष्येऽहं। पुनर्यावद्दीक्षाज्ञां न प्राप्नुयां तावत्-शुद्ध श्रावक धर्मं पालयिष्यामिदित्युदीर्य गृहं गताः सर्वे।

अर्थ—बाद लुंकाशाह ने जालोर नगर से सभी आगम लिखकर रूपचन्द्रजी के पास भेज दिये। अन्य देशों में भी योग्य व्यक्ति को देखकर शास्त्र दिये। रूपचन्द्रजी सींचोजी के पास सिद्धान्तों को सुनने और पढ़ने लगे। एक समय सींचोजी ने रूपचन्द्रजी से कहा कि आप यदि क्रियोद्धार करें तो संसार में बहुत नाम होगा। फिर धर्म की बड़ी महिमा होगी, आपकी बाणी सुनकर बहुत से जीव प्रतिबोध पाएंगे। चतुर्विध श्री संघ की स्थापना भी होगी। इस पर रूपचंद्रजी बोले—स्त्री को प्रतिबोध करके तथा माता पिता की आज्ञा लेकर मैं दीक्षा लूँगा। जब तक दीक्षा की आज्ञा नहीं प्राप्त कर लूँ तब तक शुद्ध श्रावक धर्म का पालन करूँगा। ऐसा कहकर सब घर चले गए।

मूल—अथ तत्क्षणकृत-सरस भोजन-नानावल्लीदल चर्चण सरसा

मोद लेपन गुलाब जलेन स्नान (केसर) कश्मीर जन्मादि तिलक करखादीनि सर्वाणि त्यक्तानि रूपचंदजीकेन विरक्तात्मना (विरक्त कामेन) । एवं सति हीरागरजीकेनेयं वार्ता श्रुता विमृष्टं च धन्यः सूरारणा गोत्रीयः श्री रूपचंद्रोऽस्यामवस्थार्या परामीदृशीं ऋद्धिं त्यक्त्वा दीक्षामंगीकरिष्यति ततो वयमपि लास्यामो व्रतम्, एवं ज्ञात्वा रूपचंद्रान्तिके समेतो हीरागरः श्री श्रीमालान्वयः । अथ रूपचंदजीकस्य द्वितीये सहाये मिलिते दीक्षामिलाषो महानेव जातः ।

अर्थ—बाद उसी समय रूपचंद्रजी ने सरस भोजन, नागर बेल के पत्ते का चर्चन, सरस घामोददायक लेपन, और गुलाब जल से स्नान, केश-रादि कश्मीरोत्पन्न वस्तुओं का तिलक आदि विरक्तमन से सब कुछ छोड़ दिया । इस स्थिति में जब हीरागरजी ने यह बात सुनी तो सोचा कि सूरारणा गोत्रीय रूपचंद्र धन्य है कि इस उम्र में इतनी बड़ी सम्पत्ति छोड़कर वीक्षा लेगा । तो मैं भी व्रत ग्रहण करूं ऐसा जानकर (सोचकर) वह श्रीमाल गोत्रीय हीरागरजी भी रूपचंद्रजी के पास आये । जब रूपचंद्रजी को दूसरा सहायक मिला तब उनकी वीक्षा की अभिलाषा और भी बढ़ गई ।

मूल—अथैकदा रूपचंदजीको गृहे पित्रादिपरिवार मध्ये स्थितः

सरस सिद्धान्त व्याख्यानं कुर्वन्नाह (श्लोकः)—

यो दीक्षानुमतिं दत्ते, संसारे नास्ति तत्समः ।

निषेधयति दीक्षां यो, धीहीनोपि न तत्समः ॥१॥

एवमुक्ते रयणुंजीकः प्राह दीक्षा निवारणं न कार्यमितिमे नियमः-
भ्राता वा पुत्रो वा नारी वा यः कश्चिद् भाग्यवान् गृहारंभ समारं-
भादिकं त्यक्त्वा प्रव्रज्यामादत्ते स सुकृती, तस्मिन्नवसरे सोहिल
साहे स्वर्गते रूपचन्द्रेण विमृष्टमधुना गृहे स्यात्तर्था नहि,
पितृवसुः समीपे गत्वा कृतांजलिना दीक्षानुमतिरर्थिता ।

अर्थ—फिर एक समय रूपचंद्रजी घर में पिता आदि परिवार के बीच बैठे हुए सरस सिद्धान्तों का व्याख्यान करते हुए बोले “जो वीक्षा ग्रहण

में अनुमति देता है, संसार में उसके समान दूसरा नहीं और जो बीक्षा का निषेध करता है उसके समान हीन बुद्धि भी कोई दूसरा नहीं। उनके ऐसा कहने पर रयलुंजी बोले—बीक्षा नहीं रोकने का मेरा नियम है। माई हो या पुत्र अथवा स्त्री जो कोई भाग्यवान् घर के आरम्भ समारम्भ को छोड़कर बीक्षा अंगीकार करता है वह पुण्यात्मा है। उस समय सोहिल साह स्वर्गवासी हो गए थे। तब रूपचंद्र ने सोचा कि अब घर में नहीं रहना चाहिये अतः भूमाजी के पास जाकर उन्होंने अंजलिबद्ध होकर बीक्षा की प्रार्थना की।

मूल—अथ पितृष्वसाह—हे रूपचंद्र ! मवान् भोगिभ्रमरः शृणु मद्-
वचः, इह तव सुन्दरमोदक पक्वान्नसहितोदनं रोचते, साधुत्वे
तु शीत विरसाद्यन्न प्राप्तिः, अत्र अतलसादि मज्ज्य मज्ज्य नम्र्य नेप-
थ्यानि तत्र तु मलिनांशुक धारणं, शिरोलोचकरणं मवेध्यति,
अत्र तु तांबूलं गले पुष्पस्रग्, तत्र दन्तधावनमपि न, देहस्य
शुश्रूषाऽपि न कार्या, अत्र रम्यशयनीये शयनं तत्र भूमावेव
शयनोपवेशनादि। अत्र मज्ज्य जलैः स्नानं तत्र गात्रे मल-
संचयः, अत्र गोदुग्धादि पेयममेयम्, तत्र नित्यमुष्णजलं
पास्यसि, अत्र त्वं राजेवाज्ञां करोषि, तत्र तु गृहे २ मिच्चार्थ-
मटनं कंटकादि सहनमित्यादीनि पितृष्वन्ना बहूनि वचांसि
व्याहृतानि तदा रूपचंद्रेणोक्तं हे पितृष्वसः ! साधुमावात्
कातरो विमेति न शूरपुरुषः, एवं पितृष्वसारं प्रति-
बोध्याऽऽज्ञा गृहीता।

अर्थ—तब भूमा बोली कि—हे रूपचंद्र ! तुम भोगी भ्रमर हो हमारी
बात सुनो—यहां तुमको सुन्दर मोदक, पक्वान्न सहित ओवन अच्छा लगता
है और साधु बनने पर तो ठंडे तथा बिरस अन्न प्राप्त होंगे, यहां पाठ आदि
के सुन्दर २ नये कपड़े पहनने को हैं और वहां मलिन कपड़े धारण
तथा शिरोलुंचन करना पड़ेगा। यहां पान और गले में माला और वहां पर
बंतौन और बेहू की सम्माल भी नहीं करनी होगी। यहां सुन्दर बिस्तरे पर
सोना और वहां जमीन पर ही सोना, बैठना आदि होंगे। यहां पर सुन्दर

सीतल जल से स्नान और वहाँ शरीर पर मल संचय करना होगा। वहाँ मोक्षध आदि अनेकों पेय और वहाँ रोज गर्म पानी पीना होगा। वहाँ तुल्य राजा की तरह आज्ञा करते हो और वहाँ तो घर २ भीख मांगने घूमना और कांटों आदि का कष्ट सहन करना होगा, इस तरह भूषा ने बहुतसी बातें कहीं। तब रूपचंद्र बोले—कि हे भूषा ! साधुपन से कातरजन करते हैं किन्तु शूर पुरुष नहीं, इस तरह भूषा को प्रतिबोध देकर आज्ञा प्राप्त की।

मूल—अथैकदा रूपचंद्रो नवीनं मंदिरोपरि रमणीयं बेलिगृहं कारयित्वा स्त्रियायुतः पर्यकोपरि निष्णुणः सन् धर्म वार्तां करोति । अनेन जीवेन गढ़ इम्यादि—सुंदरस्त्रियो राज्यलीलाश्चानेकशोऽधिगताः परंतु संयमं बिना जीवस्य न किञ्चित्कार्यं सरति इत्थं वार्तयतोः स्त्रिया हास्येन भणितं संयमं गृह्यतः को वारयति कस्याऽपि चित्ते दीक्षाऽमिलाषोऽस्ति चेत्तदा गृह्यतां संयमश्रीः, इतिकथिते सत्येव रूपचंद्रः प्राह, अथ गार्हस्थ्ये वसनस्य मेनियमोऽस्ति, इत्याकर्ण्य स्त्री विलक्षा जाता सती वभाणहे कांत ! मयातु हास्यं वचोऽप्याहृतं, तदा रूपचंद्रेणामाणिमामिनि ! हस्तिनां ये रदा निर्गतास्ते पश्चाच्च प्रविशन्ति तथैव ममापि नियमो नापवर्तते । पुनरस्मिन् संसारे देवलोकादिष्वनंतशः स्त्रीमर्तुसम्बन्धः प्राप्तः तस्मात्प्रसन्न हे सुमगे ! दीक्षाजुमतिं देहि इत्युक्ते तया आज्ञा प्रदत्ता ।

अर्थ—फिर किसी समय रूपचंद्र मन्दिर के ऊपर नवीन सुन्दर क्रीड़ागृह बनवाकर स्त्री के संग पलंग पर बैठा हुआ धर्म की बात कर रहा था कि इस जीव ने गढ़ महल, सुन्दर स्त्री और राज्य लीला अनेक बार प्राप्त की किन्तु संयम के बिना जीव का कुछ भी कार्य नहीं बना। इस प्रकार बात करते हुए स्त्री ने हँसी से कहा—संयम ग्रहण करने वाले को कौन रोकता है ? किसी के चिरा में बीक्षा की अभिलाषा है तो वह संयम ग्रहण करे। ऐसा कहने पर रूपचन्द्र बोला—अब गृहस्थाश्रम में रहने का मुझे नियम है, वह सुनकर स्त्री बुझी हो गई और बोली—हे कांत ! मैंने तो हँसी की

बात कही थी। तब रूपचंद्र बोले ऐ भामिनि ! हाथी के बाल निकलने के बाद फिर नहीं पैठते वैसे हमारा भी नियम अब नहीं बदलता। फिर इस संसार में और देवलोकवि में अनन्तवार स्त्री स्वामी का सम्बन्ध प्राप्त हुआ, इस-लिये हे तुमने ! प्रसन्न होकर बीक्षा की आज्ञा दे दो, ऐसा कहने पर स्त्री ने आज्ञा प्रदान की।

मूल—अथ रूपचंद्रः प्रसन्नः सन् प्रातःकालीनं प्रतिक्रमणं कृत्वा समुदिते दिनकरे मातापित्रोरुवाच—भोः पितरौ ! अन्यैस्तु सर्वैराज्ञा दत्ता ऽस्त्येव परं भवदाज्ञा विशेषतः श्रेयसी गृहीतुं युज्यते, अतः सा प्रदीयताम् । तदा पितृभ्यामत्याग्रहं ज्ञात्वा आज्ञाप्रदत्ता । अथ रूपचंद्रः प्रहृष्टः फलितमनोरथः सन् दीक्षां लातुमुद्यतो जातः, तस्मिन्नवसरे पंचायणनामा स्वसहोदरः सहसमन्त्रांकपुत्रो द्वितीयां स्त्रियं परिणेतुमना विवाहमकरोत्, तोरणानि बद्धानि सधवस्त्रीभिर्मंगलगीतानि गातुमारब्धानि सन्ति, तत्समये पंचायणजीकेन रूपचन्द्रस्य दीक्षावार्ता श्रुता, विचारितं च असारोऽयं संसारः धन्यो रूपचंद्रः यो विद्यमानं संपदं रम्यां रमणीं च त्यजति, धिगस्तु मां योऽहं द्वितीयां स्त्रियं परिणेतुमना अस्मि, इत्यामृश्य विवाहस्य महं दीक्षायाः कृत्वा रूपचंद्रांतिकेगतः पंचायणजीकः प्राह—भो महामाग ! रूपचंद्र प्रज्ज्या समादानं प्रस्थितयोर्भवतोरहं तृतीयो भवामि, अहं मपि दीक्षामादास्ये इति पंचायणजीकस्य वचोनिशम्य ही-रागरूपचंद्राभ्यां विमृष्टमहोशुभः सार्धो मिलितः, तनु-मनो-नयनानि विकसितानि ।

अर्थ—बाद रूपचंद्र प्रसन्न होकर प्रातःकालीन प्रतिक्रमण करके सूर्य उगने के बाद मां बाप से बोला—ऐ माता पिता ! अन्य तो सबने बीक्षा की आज्ञा दे दी है किन्तु आपकी आज्ञा लेनी अधिक श्रेयस्कर है, अतः आज्ञा प्रदान करें, तब मां बाप ने अत्याग्रह जान कर आज्ञा दे दी। बाद रूपचंद्र प्रसन्न एवं सफल मनोरथ होकर बीक्षा लेने के लिए तैयार हो गये।

उस समय पंचायण नामका उसका सहोदर भाई जो सहस्रमल के मोद गया था दूसरी स्त्री से परिणय करने को विवाह कर रहा था, तोरण बंध चुके थे सधवा स्त्रियों ने मंगलगान गाने प्रारम्भ कर दिये । उस समय पंचायणजी ने रूपचन्द्रजी की दीक्षा की बात सुनी और विचार कि यह संसार प्रसार है, रूपचंद्र धन्य है जो विद्यमान सम्पत्ति और सुन्दरी स्त्री को छोड़ता है । मुझको धिक्कार है, जो मैं दूसरी स्त्री से परिणय करना चाहता हूँ ऐसा सोचकर विवाहोत्सव की दीक्षा का उत्सव बनाकर रूपचन्द्र के पास गए । पंचायणजी बोले—ऐ महाभाग रूपचन्द्र ! दीक्षा ग्रहण के लिए तैयार आप दोनों के बीच में तीसरा होता हूँ । मैं भी दीक्षा लूंगा ऐसा पंचायणजी का वचन सुनकर हीरागर और रूपचन्द्र दोनों ने सोचा कि ग्रहो शुभ साथी मिला है, इससे उनके तन मन और नयन प्रफुल्लित हो उठे ।

मूल—अस्मिन्नवसर सिद्धान्तवचसा वर्षसहस्रद्वयस्थितिको मस्म—

ग्रहोऽपि समुत्तीर्णः उदितो जिनधर्म सहस्रकरः ।

श्लोकः—मस्मग्रहे समुत्तीर्णे, त्रयाणां जगतामिव ।

जिनधर्माऽऽख्येनैषां, प्रध्वस्तं ह्यन्तरं तमः ॥१॥

अथैतस्मिन् समायोगे सं० १५८० मिते वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्रति पदो दिनं दीक्षाग्रहूर्तं शुभमागतम् । हीरागरस्य प्रव्रज्या

महोत्सवः सहस्रमल्ल—श्रीकरणसहस्रवीर—शिवदत्तैर्मंडितः

रूपचंद्र पंचायणकयोर्महामहः सह रथयुंजीकेन प्रारब्धः ।

अर्थिभ्यो दीयमानेषु दानेषु बह्वी वेला लग्ना तावता भानुरस्त-
गतः ।

अर्थ—इस अवसर पर सिद्धान्त वचन से दो हजार वर्ष की स्थिति वाला मस्म ग्रह भी बीत गया और जैन धर्म का सूर्य उदित हुआ । कहा भी है—मस्मग्रह के बीत जाने पर जिन धर्म रूप ग्रन्थोदय से तीनों जगत का आंतर अन्धकार मिट गया । फिर उस शुभ संयोग में सं० १५८० के वर्ष में ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का दिन दीक्षा का शुभ मुहूर्त प्राप्त हुआ । हीरागरजी का दीक्षा महोत्सव सहस्रमल, श्रीकरणसहस्रवीर और शिवदत्तजी ने किया और रूपचन्द्र तथा पंचायणजी का दीक्षोत्सव साह रथयुं द्वारा संपन्न हुआ । याचकों को दान देने में बहुत समय लगा और तब तक सूर्य डूब गया ।

मूल—अथ प्रातरुत्थाय स्वजन-सम्बन्धिं वर्गेभिलिते प्रथम-रस-
शोभा समुदये जाग्रति गीयमानेषु गीतेषु, सजल-जलधर-गंभीर-
गर्जेषु नादीतूर्येषु बाद्यमानेषु दीक्षा समादातुं निर्गच्छन्ति-
त्रयोऽपि शूरतर पुरुषाः । तस्मिन्नवसरे नगरे वार्ता विस्तृता
बहवो राजकीया पुरुषाः पञ्चजनाः साधुकाराश्चागताः साहि-
शिरोमणिनाऽपि स्त्रीयकृष्णमन्त्रीश्वरः उत्सवह्वरणाय प्रेषितः ।
अथ त्रयोऽपि ते तिस्रः शिविका आरुह्य जयजय शब्देषु प्रवर्त-
मानेषु बहुषु-क्षत्रिय-महाजन-द्विजाति-प्रमुख-नागरिकेषु पादयो-
र्नमस्तु, मस्तके मुकुटं बद्ध्वा गलेषु हारेषु ध्रियमाणेषु श्री-
सिद्धार्थ-महाराज-पुत्रवदतिशयेन दीयमानेषु नानादानेषु
सायरसाहस्याऽग्रोद्याने समेताः, प्रथमतः शिविका शीरागरस्य
ततो रूपचन्द्रस्य, तत्पृष्ठतः पञ्चायतकस्य चलिताः क्रमेण सायर-
साहस्याऽग्रोद्याने त्रयोऽपि शिविकाम्यः समुतीर्य प्रथमालापं
मुखादुच्चार्य आभरणादिकं सर्वं समुतार्य च पूर्वदिगभिमुखं
त्रयोऽपि-उपविष्टाः । ततः स्वहस्तेन लोचं कृत्वा अर्हत्-सिद्धसाधु-
न्मसकृत्य च महाव्रतरूपं सामयिकं-सामायिकचारित्रमादृतं
त्रिभिः, बहुषु लोकेषु धन्या धन्या एते इति शब्दं कुत्रोणेषु श्री
श्रीचन्द्रप्रभ स्वामिनो मंदिरे समेत्य स्थिताः ।

अर्थ—फिर सबेरे उठकर स्वजन सम्बन्धियों के मिलने पर, प्रथम
शोभा समूह के जागने पर और गीतों के गाए जाने पर, सजल मेघ के समान
गंभीर नाद वाले नांदी और तूर्य के बजते हुए 'तीनों शूर पुरुष' दीक्षा
लेने के लिए निकल पड़े । उस समय नगर में बात फैल गई तो बहुत से
राजकीय पुरुष और पञ्च, एवं साहूकार भी आए । शाह शिरोमणि ने भी
अपने कृष्ण मन्त्रीश्वर को उत्सव करने के लिए भेजा । बाद वे तीनों दोक्षार्थी
तीन पालकिनों पर चढ़कर जयजय शब्दों के बीच बहुत से क्षत्रिय, महाजन
और ब्राह्मण प्रमुख नागरिकों के चरणों में प्रणाम लेते हुए माथे पर मुकुट
और गले में हार धारण किए हुए श्री सिद्धार्थ महाराज के पुत्र वर्धमान की

तरह मुक्त मन से अनेक विधि दान देते हुए सायर साह के बगीचे में आए । पहले हीरागरजी की पालकी फिर रूपचन्द्रजी की और उसके पीछे पंचायणजी की चली । सायर साह के बगीचे के आगे तीनों पालकी पर से उतर कर मूल से प्रथमा लापक उच्चारण कर और समस्त आभूषण उतार कर तीनों पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ गये, और अपने हाथ से लोचकर अरिहन्त, सिद्ध और साधु को नमस्कार कर महाव्रत रूप सामायिक चारित्र्य को तीनों ने स्वीकार किया एवं लोगों के द्वारा धन्य धन्य का अभिनन्दन पाते हुए श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के मन्दिर में आकर ठहरे ।

मूल—अथ सिकदार श्रेष्ठ साधुकारैः सर्वैरागत्य श्री हीरागर रूप-
चन्द्रयोराचार्यपदं दत्तं, लुंकासाहस्य वचः पालितं, नाग-
पुरीय लुंकाः कथापिता लोके, अथ सकल पर्षदि समेतायां
“आरंभे नत्थिदया, महिला संगेण नासए बंभं । संकाए-
सम्मत्तं, इत्यादि जीवदया पूर्वकं उपदेशो दत्तः, काव्यद्वयं
श्रुत्वोपदेशं बहुमिस्तु भय्यैरारंभकृत्यां सततं निषिद्धं
समादृतं शीलमहर्ष्यं रत्नं सम्यक्त्वमादृतं । तंच निशाशनोनम्
(रात्रिमोजन वर्जितं) । आचार्य हीरागर रूपचन्द्रैः समादृते
श्री मुनिसिंह धर्मे सुखं प्रवृत्तं, भवभीः प्रणष्टा । जातोहि सर्व
गुणप्रकाशः ।

अर्थ—बाद प्रसिद्ध सेठ और साहूकार सभी ने आकर श्री हीरागर रूपचन्द्र को आचार्य पद प्रदान किया और लंकासाह की बात रखकर नागोरी लुंका नाम से लोक में प्रसिद्ध हुए । फिर सारी सभा के मिलने पर उन्होंने उपदेश दिया कि ‘जहां आरंभ है वहां दया नहीं रहती और नारी के संग में ब्रह्मचर्य नहीं रहता तथा शङ्ख से सम्यक्त्व नष्ट होता है, इत्यादि जीव दया पूर्वक उपदेश सुनाया । काव्यमय इन दोनों उपदेशों को सुनकर बहुत से लोगों ने सदा के लिए आरंभ का त्याग कर दिया और ब्रह्मचर्य पालन का व्रत लिया तथा सम्यक्त्व ग्रहण किया । साथ ही रात्रि मोजन भी छोड़ा । आचार्य श्री हीरागर और रूपचन्द्र द्वारा मुनीन्द्र का धर्म स्वीकार

करने पर सुख प्राप्त हुआ और अब भ्रमण की नीति नष्ट होगई । तथा सब गुणों का प्रकाश होगया ।

मूत्र-अथ श्री रूचन्द्र स्त्रियाऽपि श्रावक व्रतान्पादतानि, कियत्सु दिनेषु गतेषु श्री हीरागरजी, रूपचन्द्रजी, पंचायणजीकैर्वनवासः समादृतः । तृतीय यामे नगरे गोचर्यै आगच्छन्ति, शुद्धाहारं गृह्णन्ति, षट्काय-जीवरक्षां कुर्वन्ति, पुनः पंचाचारपालनं कुर्वन्ति, वने कायोत्सर्गं विदधति, ग्रीष्मे आतापनां समाददते, शीतकाले शीत-परीषहं सहन्ते, उपशमरसे रक्ताः, मध्यजीवान्प्रतिबोधयन्ति, समकांचन-प्रस्तराः, पूजापमानयोः समाः, महोज्ज्वलतरैर्गुणैर्विराजमानां अरकेऽस्मिन् परमपुरुष-वह्नुष्करक्रियां कुर्वन्तः सुखेन संयममाराधयन्ति, अथ ते त्रयोऽपि देशनगरादिषु विहरन्ति श्रीधर्ममुदीपयन्तः । यत्र ते व्रजन्ति तत्र श्रेष्ठिप्रमुखाः सम्यक्त्वमाद्रियन्ते केचन श्रावकस्य एवं मालवदेश-वागङ्ग-मरुधरदेश-मेदपाट-देशादिषु विचरन्तः श्रीजिन-धर्म-प्रभावनाभिः केम्यश्चित् संयमं ददानाः बहून् श्रावकान् कुर्वन्तः नागपुरीय-लुंका गच्छस्याचार्या इति विरुदं दधानाः सन्ति ।

अर्थ-श्री रूपचन्द्र की स्त्री ने भी श्रावक व्रत स्वीकार किए । कुछ दिन बीतने पर श्री हीरागरजी, रूपचन्द्रजी और पंचायणजी ने वनवास स्वीकार किया । वे तीसरे पहर में जङ्गल से नगर में गोचरी के लिए आते शुद्धाहार ग्रहण करते और षट्काय के जीवों की रक्षा करते थे । फिर पंचाचार का पालन करते एवं वन में कायोत्सर्ग करते थे । ग्रीष्म ऋतु में श्रूय की आतापना लेते और शीतकाल में शीत का कष्ट सहन करते, शान्ति रस में तल्लीन हो मध्य जीवों को प्रतिबोध देते, स्वरुण और पत्थर को समान तथा मान एवं अपमान को भी समान ही मानते थे । इस प्रकार अत्यन्त उज्ज्वल गुणों से युक्त होकर इस पंचम काल में महान् पुरुष की तरह कठिन क्रिया करते हुए सुख पूर्वक संयम की आराधना करते थे । फिर वे तीनों

मुनि देश, नगर आदि में बिहार करते रहे श्री जैन धर्म को उद्दीप्त करते प्रभावना करते हुए ये जहाँ भी जाते वहाँ के सेठ प्रमुख सम्प्रदाय ग्रहण करते और कोई कोई श्रावक भी बनते। इस प्रकार मालवा, बागड़, मरुधरा और मेव पाट आदि देशों में विचरते हुए श्री जैन धर्म की प्रभावना से किसी किसी को संयम देते तथा बहुत को श्रावक बनाते हुए नागोरी लुंका गच्छ के आचार्य का विरुद्ध धारण करते रहे।

मूल—अथैकदा पंचायणजीको मुनिराज्ञां लात्वा कतिचित्साधुपरिवृतो मालवदेशे नगरकोट्टे समेतः सर्वोऽपि नगरलोको दृष्टः अस्तोक-लोकोपरि धर्मोपदेशदानादिनोपकारः कृतः । तत्र तिष्ठतः श्रीपंचायणजीसाधोः शरीरे असाध्यो रोग उत्पन्नस्तदा अनशनं कृत्वा स्वर्गं प्राप्तः । अथ सं० १५८५ रयणुंजी-केनात्महितं : ज्ञात्वा श्रीहीरागरसूरि-पार्वे दीक्षा कचीकृ-ताऽहिपुरे बहून् दिवसान् यावत् पंचाचारशुद्धं संयमं प्रतिपान्त्वान्तसमये अनशनं कृतम् । तस्मिन् समये श्री रूपचन्द्र-सूरिमिः स्तम्भपुरकोट्टे स्थितै रयणुंजीकैरनशनं गृहीतं श्रुत्वा नागोरपुरे समेत्य स्वपितुराराधना कृत्यानि पूर्णानि कृ-तानि । पंचाशद्दिनानि संस्तारकमाराध्य शुमध्यानेन कालं कृत्वा वैमानिको देवो जातः ।

अर्थ—बाद एक समय पंचायणजी मुनि आज्ञा लेकर कुछ साधुओं के सङ्ग मालव देश के नगर कोट में आए। नगर के सभी लोग प्रसन्न हुए। बहुत लोगों पर धर्मोपदेश से उपकार किया। वहाँ ठहरे हुए श्री पंचायणजी साधु के शरीर में असाध्य रोग उत्पन्न होने से उन्होंने आजोवन अनशन करके स्वर्ग प्राप्त किया। बाद सं० १५८५ में रयणुजीने भी आत्म हित जानकर श्री हीरागर सूरि के पास में दीक्षा ग्रहण की और नागोर में बहुत दिनों तक पंच महाव्रत रूप शुद्ध संयम का पालन करके अन्त समय में अनशन धारण किया। उस समय श्री रूपचन्द्र सूरि ने स्तम्भ पुर में रहते हुए रयणुजी के अनशन के समाचार सुने तो नागोर आकर अपने पिता की सेवा और अन्तिम आराधना का कार्य संपन्न किया। पचास दिन पर्यन्त

संस्कारक की आराधना करके वे शुभ ध्यान से काल कर वैमानिक देव हुए ।
 मूल—अथ श्री हीरागर—रूपचन्द्रसूरयोऽनेकसाधु सहिताः नागोर—
 पुराद् विहृत्य सं० १५८६ बीकानेरे समायातास्तदा तत्र चोर-
 वेटिकः श्रीचन्द्रनामा लक्षाधीशोऽस्ति । तेन बहु-साधु-जनानां
 सुखेन संयम-यात्रा-निर्वाहार्थं स्वकीया कोष्ठिका चतुर्मासी-
 स्थित्यैदत्ता । अथ व्याख्यानं श्रोतुं पौषध प्रतिक्रमणादिकं
 कर्तुं च सूरवंशीयाश्चोरवेटिका अन्ये च बहवः समागच्छन्ति ।
 तस्मिन्नवसरे कमलगच्छीय—यतयः शिथिलाचारा अभूवन् ।
 ततः तेभ्यो विरक्तास्तन्तः एतद् गुप्तरञ्जितारच चोरवेटिकाः
 सर्वे नागोरी लुंकागच्छीया जाताः, कोष्ठिकोपाश्रय-निमित्त-
 दत्ता । अथ चातुर्मास्यनन्तरं विहृत्य क्रमेणोज्जयिनी पुरीं गताः,
 तत्रांत्यसमयं मत्वा श्री हीरागरसूरिभिरेकविंशति-दिनाना-
 मनशनं साधयित्वा मृत्वा वैमानिक सुरत्वं प्रपेदे । पदवी १६
 समा भुक्ता । ५६ ।

अर्थ—बाद श्री हीरागर और रूपचन्द्र सूरि दोनों अनेक साधुओं के
 साथ नागोर नगर से बिहार कर सं० १५८६ में बीकानेर पधारे, उस समय
 वहां चोरवेटिक (चोरडिया) श्रीचन्द्र नाम का लक्षपती सेठ था, उसने
 बहुत साधुओं के सुख पूर्वक संयम यात्रा निर्वाह के लिये अपनी कोठी चातुर्मा-
 स वास को दे रखी थी । वहां व्याख्यान सुनने तथा पौषध प्रतिक्रमण आदि
 करने को सूरवंश के चोरवेटिक और अन्य भी बहुत से लोग आते थे । उस
 समय कमलगच्छी यति शिथिलाबारी हो गये थे । अतः उनसे विरक्त और
 इनके गुण से प्रसन्न होकर चोरवेटिक (चोरडिया) सभी नागोरी लुंका-
 गच्छीय हो गए और कोठी उपाश्रय के लिए दे दी । फिर चातुर्मास के पीछे
 बिहार करके क्रमशः उज्जैनी नगर गए । और वहां पर अपना अंत समय
 जानकर श्री हीरागर सूरि बीस दिन का अनशन साध कर मरे और वैमानिक
 देव हुए । उनसे १६ वर्ष तक पद का भोग किया ।

मूल—अथ श्री रूपचन्द्र सूरय उज्जयिनीतो विहृत्य क्रमान्महिम नगरे
 पादावधारितास्तत्र चातुर्मासिक-स्थिति-करणाय कोटि धना-

धीश गोवर्द्धननामकश्रेष्ठिपार्श्वतः स्थानं मार्गितं ततः परीक्षां कर्तुं तथा हास्यपूर्वकं श्रेष्ठी ग्राह भो महामागाः ! स्थतुं योग्या वसतिस्तु काचिन्नास्ति परं त्वस्मदीय कोष्ठिका-मिमुक्षु-चतुर्द्वारिकेऽस्मद्रथ-चक्राणि पतितानि सन्ति तेषामुपरि-स्थीयतां सुखेन, तदाचार्यश्रीरूपचन्द्रैरन्ये तु साधवोऽन्यत्र चातुर्मास्यै प्रेषिताः स्वयं देपागर मृनिनाऽन्वितैः रथचक्रोपय्यु-पविश्य मासोपवासं प्रत्याख्याय धर्म ध्यान परायणैः स्थितम् । श्रेष्ठिना रहो लोका रक्षिताः परंते तु महान्तः उत्तम पुरुषा मेरु-वद्धर्मध्यानेऽचलाः स्थिता दृष्टाः । श्रेष्ठिपार्श्वे तैर्लोकैः सर्वोऽपि धर्म ध्यानादिको व्यतिकरस्तेषां निरूपितः ।

अर्थ—बाब श्री रूपचन्द्र सूरि उज्जयिनी से विहार करके क्रमशः महिम नगर पधारे और वहाँ चौमासे के लिए करोड़पति गोवर्द्धन नामक सेठ के पास भकान की याचना की । तब परीक्षा के लिए सेठ ने हंसी पूर्वक कहा—ऐ महामाग ! रहने योग्य स्थान तो कोई नहीं है परन्तु हमारी कोठी के आगे चतुर्द्वारिक (चोबारे) में हमारे रथ के चक्के पड़े हुए हैं, उन पर सुख से ठहर जाओ, तब आचार्य श्री रूपचन्द्र ने अन्य साधुओं को अन्यत्र चातुर्मास के लिए भेज कर स्वयं देपागर मुनि के सङ्ग रथ के चक्के पर बैठकर मास उपवास का प्रत्याख्यान करके धर्म ध्यान परायण हो ठहर गए । सेठ ने छिपे कुछ लोग रखे परन्तु वे तो महा उत्तम पुरुष थे, अतः मेरु की तरह धर्म ध्यान में अचल बसे गये । गुप्तचरों ने उन साधुओं का धर्म ध्यानादि सब हाल सेठ को कह सुनाया ।

मूल—अथ श्रेष्ठी तदीय गुण श्रवणेन जागरूक मध्य परिणामः सन् प्रातरुत्थायागत्य प्रदक्षिणात्रय दान पूर्वकं नत्वा पादयोर्निपत्य कृताञ्जलिः सन्नित्युवाच । हे स्वामिन् ! असारोऽस्मिन् संसारे भवन्तो धन्याः शुद्धक्रियोद्धारकाः पापवारकास्तारकाश्च सन्ति, न दृश्यतेऽस्मिन् समये मवादृशः कश्चित् तपोधनेषु मुख्यः । अहं पापीयानस्मि येन भवतां कष्टं दत्तं महान्

अविनयो वः कृतः तदिदानीं स्वामिन् ! भवन्तः कृपां कृत्वाऽन्य-
स्मिन् स्थाने समीचीने तिष्ठतु । तदा श्री रूपचन्द्राचार्यैरुक्तं
हे महानुभाव ! एको मासक्षपणस्त्वत्रैव करिष्यते पश्चात्
स्पर्शनानुरूपं विधास्यते । एवं कुर्वतां मासक्षपणः पूर्णो
जातस्ततः पारणार्थे द्वये चलिताः पारणाय एकैकमुत्कलं गृह-
रक्षितमासीत्, तदा श्री रूपचन्द्राचार्यैस्तु गृहस्थस्यैकं गृहमक-
पाटं वीक्ष्य प्रवेशः कृतस्तत्र गृहस्थेनाऽमाणि-महामाण ! अधुना
तृतीययामेऽन्य आहारस्तु न, साम्प्रतं प्रासुकाः माषाः पतिताः
सन्ति ते यदीच्छाऽस्ति तदा गृह्यताम् । अथ तैरपि शुद्धाहार-
निरीक्षणं पूर्वं गृहीताः । अथ देपागरसाधुरेकस्य मिथ्यात्विनो
गृहस्थस्य भवनमकपाटं विलोक्य प्रविष्टस्तदा तत्रैका स्त्री
प्राह—अधुना अशनस्य का वेला रचान्वितारब्धा—स्थाली कस्मै-
चित्कार्याय भृत्वा धृताऽस्ति यदीच्छाऽस्ति तदेयं गृह्यताम् ।
तदा शुद्धां मत्वा सा गृहीता । अथ द्वयेऽपि स्थाने पारणां विधा-
याष्टमं गृहीतम्, तस्यैव श्रेष्ठिन आज्ञां लात्वा तस्यामेव कोष्ठि-
कायां महत्यन्यस्मिन् चतुर्द्वारके स्थिताः ।

अर्थ—अब उनके गुण श्रवण से शुभ परिणाम वाला सेठ सवेरे
उठकर उनके पास आया और तीन बार प्रवक्षिणा करके पांचों में गिरकर
हाथ जोड़े हुए बोला—हे स्वामी ! इस असार संसार में आप धन्य हैं, शुद्ध
क्रिया के उद्धारक, पाप के निवारक और तारक-तारने वाले हैं । इस समय
आपके जैसा दूसरा कोई प्रमुख तपस्वी नहीं दिखाई देता । मैं तो पापी हूँ
जिससे कि आपको कष्ट दिया और आपका बड़ा अभिनय किया । इसलिए हे
स्वामी ! अब कृपा करके आप दूसरी किसी अच्छी जगह में ठहरें । तब श्री-
रूपचन्द्राचार्य बोले—हे महानुभाव ! एक मास क्षपण तो यहीं करेंगे बाब
स्पर्शना के अनुकूल किया जायगा । इस तरह उनका मासोपवास पूरा हो
गया । बाब दोनों पारणा के लिए चले । पारणा के लिए एक एक घर खुला
रक्सा था । श्री रूपचन्द्राचार्य ने गृहस्थ का एक घर खुला देखकर प्रवेश

किया । वहाँ गृहस्थ ने कहा - महाभाग ! अभी तीसरे पहर में दूसरा आहार तो नहीं है, प्रासुक उड़ब पड़े हैं, यदि तुम्हारी इच्छा हो तो ले लो । उन्होंने भी शुद्ध आहार देखकर ले लिया । बाद वेपागर साधु एक मिथ्यात्वी गृहस्थ का लुला घर देखकर वहाँ गये, तो घर में एक स्त्री बोली—अभी भोजन का समय तो नहीं है । राख पड़ी हुई राख की थाली किसी काम से घरी हुई है, अगर इच्छा हो तो यह ले सकते हो । शुद्ध समझ कर उन्होंने वह राख ले ली । बाद दोनों ने स्थान पर पारणा करके अष्टम तप पचल लिया फिर सेठ की आज्ञा लेकर उसी की कोठी में किसी बड़े चौबारे में ठहर गए ।

मूल—अथ श्रेष्ठी बभ्राण—हे स्वामिन्नाद्य प्रभृति मनोवाक्कायैर्युग्मं मे गुरवोऽहं भवदीयः श्रावकोऽस्मि । अथ देशान्तरेषु श्रेष्ठिना निजवर्णिकं पुत्रानन्यान्पि स्त्रीयसम्बन्धिप्रमुखां पण्यीनि-दायं २ निवेदिताः समाचाराः, यदेते मुनयः सत्याः सत्क्रिया-पालकाः धन्यतराश्च कियद् गुण वर्णनालिख्यते, ये केचनै-तेषां चरणारविन्दयुगलं न संस्यंति तेषां जन्म फलेग्रहि—सुफलं । वयं तु एतेषां श्रावका जाताः स्म, इतीदृशान् समाचारान् वाचं २ बहवो लोकाः श्रावका जातास्तत्रत्याऽपि बहवस्तथैव, जालोरे कोचरान्नया वेलापत्याः । कालू निवासिनो मांडागारिणः, जेसलमेरौ बोहराऽभिजनाः, कृष्णगढ़े व्याघ्रचारा, चाण्डालिया चौधरी, चोपड़ा, भट्टनयरे नाहरगोत्रीयाः महीपालापत्या साह-पद धारिणः, बैद्या, वाफणा, ललवाणी, लूणापत्याः, बरढीया, नाहटा प्रमुखा अनेक—ज्ञातीया ओकेशवंशीया अग्रोतकाश्च 'अगरवाल' नागोरी लुंका गणीया जाताः । एवमेकलक्षमशीति-सहस्राधिकं गृहाणां प्रतिबोधितम् । पूर्णमद्रदेवोऽपि सान्निध्य-कृज्जातः । अथ श्री रूपचन्द्राचार्याः स्वान्त्यसमयं ज्ञात्वा पंचविंशति दिनानि यावदनशनं विधाय महिमपुरे एव कालं कृत्वा वैमानिकसुरत्वं प्रपेदिरे । सं० १५८० तः २६ वर्षान् यावत्पदं भूक्तम् । ६० ।

अर्थ—एक दिन सेठ बोला—हे स्वामी आज से आप हमारे गुप्त हैं और मन, वचन, काया से मैं आपका आश्रित हूँ। फिर सेठ ने वेशान्तरों में अपने अन्य वणिक् पुत्रों को और प्रमुख सम्बन्धियों को भी पत्र दे देकर निवेदन किया कि ये मुनि सचमुच में सत् क्रिया के पालक और धन्य-तर हैं, कहां तक इनका गुण वर्णन लिखें। जो कोई इनके चरण कमल को प्रणाम करेगा उसका जन्म सुफल होगा। हम सब तो इनके आश्रित हो गए हैं, इस तरह के समाचार पढ़ कर बहुत से लोग आश्रित हो गए, वहां के भी बहुत से बंसे ही, जालोर में कोचर वंशीय बेलावत, कालू निवासी भंडारी, जंजलमेर में बोहरावंशी, कृष्णगढ़ में बाघचार, चाण्डालिया, चौधरी चोपड़ा, मट्टनगर में नाहर गोत्री महीपाल के पुत्र साहपदधारी बेद, बाफणा, ललवाणी, लूणावत, बरढीया, नाहटा प्रमुख अनेक जाति के ओकेश वंशीय (ओसवाल) और अग्रवाल भी नागोरी लुंकागच्छी हो गए। इस तरह एक लाख अस्सी हजार घर को उन्होंने प्रतिबोध दिया। शासन रक्षक पूर्णमन्न देव भी उनका सेवक हो गया। बाद श्री रूपचन्द्र आचार्य अपना अन्त समय जानकर २५ दिनों का अनशन करके महिमपुर में स्वर्गवासी होकर वैमानिक देव हुए। सं० १५८० से २६ वर्षों तक आचार्य पद पर रहे। ६०।

मूल—तत्पट्टे श्री देपागर सूरयो बभूवुस्ते परीक्षक वंशीयाः कोरडा निगमे खेतसी नामा जनकः, धनवती जननी नागोरपुरे चारित्रं, पदमपि तत्रैवाचम् (गृहीतं) सं० १६१६ चित्रकूट महादुर्गो कावडियान्वयो भारमल्लो धनी तपागणीयोऽभूत् तेन श्री देपा-गर सूरीणामभिधानं शुद्धक्रियाधारकत्वं च श्रुतं तदादित एव तद् गुणरञ्जित-चेतस्कोऽवदत्, श्लोकः—“धन्यो देपागर स्वामी, प्रदीपो जैन शासने, एष एव गुरुर्मेस्ति, धन्योऽहं तन्निदेशकृत् ।” इति भावनया शुद्धात्माभूद्भारमल्लः तस्मिन्नवसरे तत्रत्यो मामा नामा नाहटोऽस्ति तद्गृहे पुण्ययोगाद् दक्षिणा-वर्तः शंखः प्रादुरभूत्। तत्सान्निध्यात् गृहेऽष्टादश कीटयो धनस्य प्रकटी भवन्ति।

अर्थ—उनके पाट पर श्री देपागर सूरि हुए। वे परीक्षक (पारख)

बंशी थे, कोरडा निगम में खेतसी नामा उनके पिता और धनवती माता थी। नागौर में संयम लिया और वहीं पर आचार्य पद भी ग्रहण किया। सं० १६१६ चित्रकूट (चित्तौड़) महाद्वगं में कावडिया बंशी भारमल्ल तपागच्छी एक सेठ था, उसने श्री बेपागर सूरि का नाम और शुद्ध किया-धारीपन सुना। तब से ही वह उनके गुण में रंजित चित्त बाला हो गया और बोला कि—धन्य बेपागर स्वामी, जो जैन शासन में प्रवीण हैं। यही हमारे गुरु हैं, उनका आज्ञाकारी होने से मैं धन्य हूं। इस भावना से भारमल्ल की आत्मा शुद्ध हो गई। उस समय में वहां मामा नाम का नाहुटा सेठ था। उसके घर में पुण्य योग से दक्षिणावर्त शंख प्राप्त हुआ। उसके संयोग से घर में १८ करोड़ धन की संपदा हो गई।

मूल—अथ एवमासी प्रान्ते शंखदेवेन भामाकस्य स्वप्ने दर्शनं दत्तं
निवेदितं च भो मामासाह ? त्वं शृणु तव भार्यायां उदरे
पुत्रीत्वेन कश्चिज्जीवः समेतोऽस्ति कावडिया—भारमल्ल
भार्योदरे सुकृती कश्चन जीवः सुतः अवतीर्णोऽस्ति ततस्तत्-
पुण्य—प्रेरितो भारमल्ल कावडिया गारेगमिष्यामि, इत्या-
कर्ण्य मामाकोऽवदत्—एवं मा याहि यथाहं करोमि तथा-
गच्छेत्युक्ते तेनोमिति मखितम्, अथाहर्मुखे जाते सर्व-
स्वजन सहितः शंखं स्वनजागरुकी कृतानेकलोकः स्वर्ण-
स्थाले दक्षिणावर्त शंखं निधायाति महर्घ्ये (न) वस्त्रे शा-
च्छाद्य भामाको भारमल्ल—भवनाभिमुखमागतस्तमायान्त-
मालोक्य सानन्दं सादरं भारमल्लोभिमुखं मिलितः पृष्ठञ्च
किमागमन—प्रयोजनं प्रोच्यतामित्युदिते भामाकोऽवदत्
कर्णे भोः सम्य सम्बन्धिन् ! ममपुत्री तव च पुत्रो भविष्यति,
तयोः सम्बन्धं कर्तुं श्रीफलं स्थाने इममवभुत—माहात्म्यं
शंखं ददामि इति निशम्य समुत्पन्नपरमामोदो बहु-दान-
मान—पूर्वकमग्रहीत् भारमल्लः गृहकोष्ठकान्तः समभ्यर्च्य
सम्यक् चंदनचतुष्कोपरि संस्थाप्य संस्मृतो देवस्तेना-

प्टादश कोटि धनं तत्र प्रकटितम् । अथ महती कीर्ति-
र्विस्तृता ।

अर्थ—बाद षण्मासी के अन्त में शंखदेव ने मामा को स्वप्न में दर्शन दिया और बोला कि ऐ मामाशाह ! तुम सुनो—, तुम्हारी स्त्री के पेट में पुत्री रूप में कोई जीव आया हुआ है और भारमल्ल कावडिया की स्त्री के उदर में कोई पुण्यात्मा जीव पुत्र रूप से अवतरित हुआ है—इसलिये उसके पुण्य से प्रेरित होकर मैं भारमल्ल कावडिया के घर जाऊंगा, ऐसा सुनकर मामाशाह बोला—ऐसे मत जाओ जंता मैं कलं बंसे जाओ, ऐसा कहने पर उसने हां कहा । फिर प्रमात होने पर अपने सभी स्वजनों के साथ शंख के स्वर से अनेक लोगों को जगाते हुए, सोने की थाली में दक्षिणावर्त शंख को रखकर ऊंचे मूल्यवान् वस्त्र से ढक कर मामाशाह भारमल्ल के घर की ओर आये । उसको आते देख कर आनन्द और आदर सहित भारमल्ल भी आगे आकर मिले और पूछा कि—कहिये कैसे पधारना हुआ ? ऐसा कहने पर मामा ने कान में कहा—ऐ सम्य सम्बन्धिन् ! मुझे पुत्री और आपको पुत्र होगा, उन दोनों का सम्बन्ध करने के लिए श्री फल के स्थान में इस अद्भुत माहात्म्य वाले शंख को देता हूं । यह सुन कर परम प्रसन्नता के साथ एवं बहुत-बहुत दान मान-पूर्वक भारमल्ल ने शंख ग्रहण किया एवं घर के कोठे में अच्छी तरह से पूजाकर चन्दन की चौकी पर रख के देव का स्मरण किया, जिससे १८ करोड़ धन वहां पर प्रकट हुआ—इससे बड़ी कीर्ति फली ।

मूल—एकदा तत्र वनान्तरुचैर्मंडपाधो धर्मध्यानं विदधत् साधु
गुणग्रामाभिरामः श्री देपागरस्वामी शुद्धतपोधनो भारमल्लेन
दृष्टो, विधिवद् बंदितश्च शुद्धधर्मोपदेशामृतं पीतं श्रवणा-
भ्याम् । अति-प्रसन्नेन भारमल्लेन विमृष्टमहो महान्
माग्योदयो मे प्रकटितो यदीदृग्गुणगुरवो दृष्टाः सर्वेऽर्था
मे सेत्स्यन्ति तदा भारमल्लो अन्ये च बहवः श्रावका जाताः
नागोरी लुंका गणीयाः ॥

अर्थ—एक समय वहां नगर के वन में उच्च मंडप के नीचे भार-
मल्ल ने धर्म ध्यान करते हुए साधु के गुण समूह से सुन्दर शुद्ध तपोधनी

श्री देवागर स्वामी को देला और बिधि पूर्वक वन्दन किया और कानों से शुद्ध धर्मोपदेश रूप अमृत का पान किया । भारमल्ल ने अत्यन्त प्रसन्न मन से विचार किया कि अहो मेरा महान् भाग्योदय है कि इस तरह के शुभी गुरु के दर्शन हुए—मेरे सभी मनोरथ सिद्ध होंगे । उस समय भारमल्ल और दूसरे भी बहुत से श्रावक नागोरी लुंका गच्छी हो गये ।

मूल—अथ भारमल्लस्य भामा नामकः सुतोऽजनि महान्महः कृतः सर्वत्र दानादिनार्थिजन-मनोरथाः पूरिताः, अन्येऽपि ताराचन्द्रादयः पुत्रा अभूवन् । तत्र भामासाह-ताराचंद्रौ विश्रुतौ जातौ । स्वगच्छरागेण बहवो जनाः स्वगणे समानीताः । पुनः श्री राणाजीतोऽमात्य पदलात्वा बलिनौ जातौ । ताराचंद्रेण सादङ्गी नाम नगरं स्थापितं । सर्वत्र पौषधशालादिकानि स्थानानि कारितानि । स्थाने २ पुरे २ ग्रामे २ बहुजनेभ्यो धनं दायं (दत्वा) स्वगणीयाः कृताः । श्री नागोरीय-लुंकागणोऽति-ख्यातिमाप । पुनर्भामासाहेन दिगम्बर मतगा नरसिंहपौराः स्वगणे समानीता, बहुस्वं दत्वा १७०० गृहाणि तेषामात्मीयानि कृतानि । भिंडरकादिपुरेषु तदा च जातं श्रावक गृहाणां चतुरशीति सहस्राधिकं लक्षमेकम् १८४००० पुनः श्री देपागर सुरेर्विजयराज्ये लुदिहाना निगम निशासी श्रीचंद नामा ओस-वाल जातिश्चतुरशीति-कोटिवित्तेश्वरो तस्य सोदरः सुरी-भूतः प्रत्यहं वणिक-पुत्राणां लेखानितस्ततो दत्ते येन बहुधनोत्पत्तिर्भवति ! सचैकदा नायातस्तदा श्रीचंद्रेण पृष्टं हे भ्रातर्हः कथं नागतः—उदा सुरेणोक्तं भ्रातः ह्यः प्राचि महाविदेहे श्री सीमंधर जिनं नंतुमिंद्रोऽणात् तेन सहाऽह-मपि गतोऽभूवम् ।

अर्थ—बाद भारमल्ल को भामा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके लिए बहुत बड़ा उत्सव किया । सर्वत्र दानादि देकर याचकों के मनोरथ पूर्ण किये । ताराचंद्र आदि और भी पुत्र हुए । उनमें भामासाह और

ताराचंद्र दोनों बहुत प्रसिद्ध हुए । अपने गच्छ के धर्म राग से बहुत से ब्राह्मी अपने गण में लाए गये । फिर श्री राजाजी से मंत्रिपद पाकर दोनों भाई और भी बलशाली बन गए । ताराचंद्र ने सादड़ी नामक गांव स्थापित किया । सब जगह पौषध शालादि के स्थान बनवाए । स्थान २ में, नगर २ और ग्राम २ में बहुत से जनों को धन देकर अपने गच्छ में किया—इस तरह श्री नागोरी लुंका गच्छ अत्यन्त ख्याति प्राप्त हो गया । फिर मामा-शाह ने दिगम्बर मतानुयायी नरसिंहपुराओं को अपने गण में लिये । बहुत सा धन देकर इनके १७०० घरों को अपना बनाया । तब मिंडर गाँव गाँवों में १८४००० आबकों के घर हो गए । फिर श्री देपागर सूरि के विजय राज्य में लुधियाना नगरवासी ओसवाल जातीय श्रीचंद नाम का ८४ करोड़ धन का स्वामी था, उनका सहोदर भाई देवलोक में था । स्नेहवश वह वणिक् पुत्रों के लेख नित्य इधर उधर भेजा करता जिससे सेठ को बहुत धन की आमद होती । वह एक दिन नहीं आया, तब श्रीचंद ने पूछा कि हे भाई ! कल क्यों नहीं आए तब देव बोला कि हे भाई ! कल पूर्व महा-विदेह में श्री सीमंघर स्वामी को नमस्कार करने को इन्द्र गया था, उनके साथ मैं भी गया हुआ था ।

मूल—आख्यानान्ते शक्रेणानुयुक्तः प्रमो ! भरतक्षेत्रेऽपि कश्चित् सत्यः साधुः—वर्तते नवेति पृष्टे प्रभुणाऽमाणि हरे ! अस्मिन् समये देपागर नामा मुनिपोऽस्ति, स चतुर्थारक मुनि—समः संयमभृत्, इमां प्रवृत्तिमाकर्ण्य श्रीचंदेनोक्तं स क्व साम्प्रत-मस्ति ? देवः प्राह—सन्मानकपुरे (समाणा नगरे) तपस्यती-त्याकर्ण्य हृष्ट चेतसा श्रीचंदेन स्व मानुषः प्रेषितः । तत्रत्यः—श्राद्धानामिति कथापितं च भवद्भिर्देपागर स्वामिनं नत्वा मदीयाऽन्नागमन—प्रार्थना कार्या । ततस्तैः पुराद् बहिर्देवमंडपे स्थिता दृष्टाः प्रणताश्च भक्त्या विज्ञप्ताः, तदा श्री सूरिमिरुक्तं ज्ञास्यते साधुधर्मोऽस्ति । ततो द्वित्रेऽवधेषु गतेषु श्री श्रीपूज्या लुदिहाना बाबोद्याने निरवध प्रदेशे तपस्यन्तः स्थिताः तदा प्राग्ज्ञापितेनारामिकेण वर्द्धापनिका श्रीचंदाय दत्ता, सोऽपि

सत्वरं तस्य पद-एवागत्य ववन्दे, तुष्टाव च धन्योऽसि स्वामिन्,
मवाहशः संयमी कोऽपि साम्प्रतं नास्ति, ततः श्री सूरिमिरुप-
देशामृत पानेन तच्छ्रवसी तोषिते तस्मिन्नेवावसरे श्रीचंदसुतया
धर्मकुमरीत्याख्यया त्यक्त-श्वसुरादिसंबंधया ज्ञाततत्त्वया गृहे
स्थितयैव श्रावकाचार पालनपरया सर्वांगम श्रवणावगत-पर-
मार्थया तत्रागत्य विधिवद् गुरवोऽभिवादिताः गुरुवचन सुधा-
रस सुहितया दीक्षाकक्षीकरणाय चेतो विशोध्य स्वयमेव तत्सा-
क्षिकं चरणमात्तं तिसृभिर्द्धर्म सखीभिः साद्धं, लोके महान्
धर्म प्रकाशोऽजनि यशश्च । अस्मिन् गणे सैव प्रवर्तिनी प्रथमा
ऽभूत्तयापि द्वादश-क्रोशी-परिमंडल विहारः कृतोनाधिकः ।
एवं श्री देवागरस्वामिना धर्मोद्योतं विधायार्थ-पदं नचत्र
मितसमाः परिश्रुज्य मेढतानगरेऽनशनं कृत्वा २१ एक-
विंशति दिनान्ते स्वर्गतिः प्राप्ता । ६१ ।

अर्थ—व्याख्यान के अन्त में शक्र ने पूछा कि प्रभो ! भरत क्षेत्र में
भी क्या कोई सच्चा साधु है ? प्रभु बोले—हे इन्द्र ! इस समय देवागर
नामक मुनीश हैं—जो चौथे द्वारे के मुनि समान संयमधारी हैं । इस समा-
चार को सुनकर श्रीचंद बोला वह अभी कहाँ है ? देव ने कहा—समाणा
नगर में तपस्या करते हैं यह सुनकर प्रसन्न चित्त हो श्रीचंद ने अपना आदमी
भेजा और वहाँ के आदमियों को कहलाया कि आप सब देवागर स्वामी को
नमस्कार कर मेरे यहाँ आने की प्रार्थना करना । तब उन लोगों ने गांव
के बाहर देव मंडप में ठहरे हुए देवागर मुनि के दर्शन किये और प्रणाम
किया और भक्ति पूर्वक बिनती की । तब श्री सूरि बोले—जाना जायगा
साधु का मार्ग है । फिर दो तीन वर्ष बीतने पर श्री श्री पूज्य लुधियाना
के बाहरी बगीचे में शुद्ध स्थान में तपस्या करते हुए ठहरे । तब पहले सूचना
पाये हुए बागवान ने श्री चंद को बधाई दी । उसने भी शीघ्र उनके चरणों
में आकर बन्दना की और प्रसन्न हुआ, नत मस्तक हो स्तुति करने लगा—
हे स्वामी ! आप धन्य हैं आप जैसा कोई दूसरा तपस्वी अभी नहीं है ।
बाब श्री देवागर सूरि ने उपदेशामृत के पान से लोगों के काम कृत्त किये ।

उसी समय श्रीचंद की धर्म-पुत्री नामवाली पुत्री स्वसुर कुल के सम्बन्ध को छोड़ तत्त्वों की जानकारी एवं घर में रहती हुई, भावकाचार को पालन करने लगी, वह समस्त आगमों के परमार्थ को जानने वाली थी। उसने वहाँ आकर विधि पूर्वक गुरु वन्दना की और गुरु-वचन रूप भ्रमृत रस से अपना हित मानने वाली दीक्षा स्वीकार करने को चित्त शुद्धि करके गुरु की साक्षी से स्वयमेव तीन धर्म सखियों के संग चारित्र्य अंगीकार किया। लोक में महान् धर्म का प्रकाश और यश हुआ। इस गण में वही पहली प्रवर्तिनी हुई, उसने भी बारह कोश के मंडल में बिहार किया, अधिक नहीं। इस प्रकार श्री देवागरस्वामी ने धर्म का प्रकाश करके २७ वर्ष तक आचार्य पद भोग कर मेड़ता नगर में २१ दिनों के अनशन से स्वर्गवास प्राप्त किया।

मूल-तत्पट्टे श्री वैरागर स्वामी दिदीपे, श्रीमाल ज्ञातिः मल्लराजः
पिता, रत्नवती जननी नागोरपुरे जन्म, चारित्र्यपदं च तत्रैव ।
एकोनविंशतिः ११६ सुमाः पदवी भोगः । मेड़तानगरे ११
दिनान्यनशनं कृत्वा देवत्वं प्राप । ६२ ।

अर्थ—उनके पाट पर श्री वैरागर स्वामी सुशोभित हुए। श्रीमाल ज्ञाति के मल्लराज उनके पिता और रत्नवती माता थी, नागोरपुर में जन्म, दीक्षा एवं आचार्यपद भी वहीं हुआ। १६ वर्ष तक पदवी भोग कर मेड़ता नगर में ११ दिन का अनशन करके देवपद प्राप्त किया।

मूल-तत्पट्टे श्री वस्तुपालोऽलं चक्रे, कड़वाणीय गोत्रे महाराजः
पिता, हर्षानाम्नी माता नागोरपुरेऽजनि, चरणं पदं च नागोर
पुरे । वर्ष सप्तकं पदवी भुक्ता, सप्तविंशति २७ दिनान्यनशनं
कृत्वा मेड़तापुरे स्वर्जगाम ॥ ६३ ॥

अर्थ—उनके पाट पर श्री वस्तुपाल सुशोभित हुए, कड़वाणीय गोत्रीय महाराज पिता और हर्षा नामकी माता थी, नागोर में जन्म और चारित्र्य पद प्राप्त किए। ७ वर्ष तक पदवी भोग कर और २७ दिनों का अनशन करके मेड़ता में स्वर्ग गए।

मूल-तदीयपट्ट विभूषणं-परिष्कर्ता श्रीकन्यासुरिर्जातः, शिव-

दासः पिता सूरारणा गोत्रीयः, कुशला नाम प्रसूः । राजलदेसर निगमे जन्म, बीकानेरे चारित्रं, पदं च नागौरपुरे जातम् । चतुर्विंशति समाः पदं भुक्तं, लवपुर्यां दिनाष्टकमनशनं देव-लोकालंकारतामियाय, अयं सूरिर्महाप्रतापः शतं शिष्याणां हस्तदीक्षितानामजनि जागरूक प्रत्ययो गच्छवृद्धिक्नु ॥६४॥

अर्थ—उनके पाट को सुशोभित करनेवाले श्रीकल्याणसूरि हुए, सूरारणा गोत्री शिवदास उनके पिता और कुशला नाम की माता थी । राजलदेसर गाँव में जन्म, बीकानेर में बीक्षा और नागौर में आचार्य पद हुआ । २४ वर्षों तक पद का पालन किया । लवपुर (लाहौर) में आठ दिनों का अनशन करके देवलोक को प्राप्त हुए । यह आचार्य महाप्रतापी थे, सौ शिष्यों को दीक्षित किये तथा जागरूक प्रत्यय एवं गच्छ की वृद्धि करने वाले थे । ६४ ।

मूल—तत्पट्टे भैरवाचार्यो दिदीपे, सूरवंशजः । तेजसीजी पिता तस्य, लक्ष्मी नाम्नी प्रसूरभूत् । १। जन्म चारित्रपट्टं श्रीकृत्यं नागौरपूर्वरे । द्वादशाब्दी तु सूरित्वे, दिग्दिनान्यनशनं कृतम् । २। सोजताहपुरे प्राप देवत्वं, शुद्ध संयमः । पंच षष्ठितमः सूरिः, क्रियाद् वृद्धिगणे पराम् । ३। यस्य धर्म राज्येऽनेके व्यति-कराः शुभा जाताः नागौरपुरे गहिलड़ा गोत्रीया हीरानन्द प्रभृतयो निःस्वीभूय मेढतापुरे श्री गुरुवंदनाय गता, निशीथे भैरव विहित—साभिध्यात् श्री श्रीपूज्यैरेतेषामृद्धि—वृद्धि—वचो-दत्तं तेऽपितस्य गुरोः कृपया पूर्वाशानगरेषु महेश्या भूता तदनुतदपत्यै (फर्क सेरतो) दिल्लीश्वराज्ञाज्जगच्छेष्टिपदं महा-राजपदं च प्राप्तं सर्वसेनतो वितीर्ण कोटि धनैरिदं तु प्रसिद्धतरं आख्यानं ततो न विस्तृत्य लिखितम् ॥६५॥

अर्थ— उनके पाट पर भैरवाचार्य सुशोभित हुए, सूरवंशज तेजसीजी उनके पिता और लक्ष्मी नाम की माता थी । जन्म, बीक्षा, और पदवी दान का काम नागौर में हुआ । बारह वर्षों तक सूरि पद पर रहे, दस दिनों का

अनशन किया और सोजत नाम के नगर में देवलोकावासी हुए । ये शुद्ध संयमी ६५ बें सूरि गण में उत्तम बृद्धि करें । जिनके धर्म राज्य में अनेक शुभ वृत्त हुए । नागौर में यहिलड़ गोत्रीय हीरानन्द प्रभृति वरिष्ठ होकर मेड़तापुर में गुरु वन्दन के लिए गये । रात में भैरव की सेवा से श्री श्रीपूज्य ने उसको श्रद्धा सिद्धि बृद्धि का वचन दिया, वह भी गुरु की कृपा से पूर्व दिशा के नगर में बहुत बड़ा धनी हो गया । बाब में बिलौरवर की आज्ञा से जगत सेठ और महाराज पद को प्राप्त किया और बड़ा धन का विस्तार किया, इसका कथानक बहुत प्रसिद्ध है इसलिये यहाँ विस्तार से नहीं लिखा ।

मूल—तत्पट्टे श्री नेमिदाससूरिरभवद् विजयी सूरवंश्यः रायचंदः
पिता, सजना जननी, जन्मचारित्रे बीकानेरपुरे, पदमहिपुरे
गृहीतं सत् १७ समा भुक्तं दिनसप्तकानशनेन उदयपुरे
स्वरितः (स्वर्ग प्राप्तः) ॥६६॥

अर्थ—उनके पाट पर श्रीनेमिदाससूरि हुए, विजयी सूरवंशीय रायचन्द उनके पिता और सजना माता थी । जन्म और बोधा बीकानेर में और पदवी नागौर में ग्रहण की जो १७ वर्षों तक भोगी गई । दिन सात के अनशन से उदयपुर में स्वर्गवासी हुए ।

मूल—तत्पट्टं शोभयामास श्रीआसकरणाचार्यः । सूरवंशीयः लब्ध-
मल्लः पिता तारांजीति मातृनाम । मेड़तापुरे जन्मचारित्रं च,
पदं नागौरपुरे, एकदा श्री श्रीपूज्या नागौरनगरे स्थिता-
स्मन्ति । तस्मिन्नवसरे भागचन्द नामा सूरवंश्यः स्वपितृ-पितृव्य-
भ्रातृ-भ्रातृज-पुत्रादि-परिवृतो व्याख्यानं श्रुण्वन्नुपाश्रये स्वस्थाने
उपविष्टोऽस्ति । तदानीं यशोदा कुञ्चिजास्तस्य पंचापि पुत्रास्तत्र
स्थितास्सन्ति, चत्वारस्तुसुता अग्रजाः स्त्रोचित स्थाने निषण्णाः
पंचमोऽगजः सदारङ्गनामा सप्तवर्षीयो निज पितृव्यांके उप-
विष्टः । महत्यां श्रीसंधर्षदि व्याख्याने जायमाने बाल-
स्वभावत्वाद् सदारङ्गः पितृव्यांकादुत्थायोपपट्टं बृद्धमुनि
समुपवेशनस्थाने द्रुतंगत्वा निषणाद, तदा सर्वैर्हास्यपूर्वक-

भुक्तं मो अत्र मा उपविश, अत्र तु यः कश्चित् तपस्वी
 प्राज्ञो यतिः प्रवयास्तस्योपवेशनभूरियमितिभणितेऽहंयतिरेवभूत्वा
 निषत्स्यामि अत्रेत्युक्ते सदारंगेण, सर्वेषु मौनमाधायस्थितेषु
 श्रीःश्रीपूज्यास्ततो विद्वत्य मेढतापुरे गतास्तदनु तेन सदारंगेन
 गृहे मात्रादीनां पुरतो निज-संयम-ग्रहणाशयः प्रोक्तः, अत्या-
 ग्रहेण तदाज्ञामादाय श्री सूरीनाकार्यं च कृत-सुमत्तिसंगेन
 सदारंगेणाऽमितवसुत्यक्त्वा महामहपूर्वकं दीक्षांगीचक्रे,
 नवमवर्षे, तत्प्रभृत्येवाध्येतुंलग्नः वर्षपंचके एवानुचानो
 जातः । ततः पञ्चदशाब्दिकेन षष्ठतपोमिग्रहो गृहीतः ,
 महान् तपस्वी, विकृति त्यागी, शुद्धाशयो, विज्ञश्चेति
 मत्प्राचार्यैरन्त्य-समये श्रीवर्द्धमाननाम्नोऽन्तेवासिनो गणभृत्
 पद दानावसरे प्रोक्तं, भवतामात्मीय पदं सदारङ्गाय देयमिति
 १८ समाः पदं भुक्तं दिननवकाननशन करणेन श्री श्रीपूज्यैर्द्यौः
 प्राप्ता सम्भत् १७२४ फाल्गुन मासे ॥६७॥

अर्थ—उनके पाठ को श्री आसकरणाचार्य ने सुशोभित किया ।
 सूरवंशीय लब्धमल्ल उनके पिता और ताराजी माता का नाम था ।
 मेढता नगर में उनका जन्म और दीक्षा हुई, पदवी नागौर नगर में हुई ।
 एक समय श्री श्रीपूज्य नागौर नगर में विराज रहे थे, उस समय भाग-
 चन्द नाम का सूर वंशीय सेठ अपने पिता, चाचा, माई, भतीजे और
 पुत्रादि से युक्त होकर व्याख्यान सुनने को उपाश्रय में अपने स्थान पर
 बठा । उस समय यशोदा की कूँक्ष से उत्पन्न उसके पाँचों पुत्र वहाँ थे ।
 चार तो आगे अपने-अपने स्थान पर बैठे थे, किन्तु पाँचवां पुत्र
 सदारंग नाम का जो सात वर्ष का था, अपने चाचा की गोदी में बैठा
 था । बहुत बड़ी शीसंध की समा में व्याख्यान चल रहा था । बाल
 स्वभाव से सदारंग चाचा की गोदी से उठकर पाटे के पास बृद्ध मुनि के
 बैठने की जगह जाकर जल्दी से बैठ गया । तब उपस्थित सब लोग
 हंसी से बोले ऐ बाल ! वहाँ मत बैठो, यहाँ तो जो कोई तपस्वी, विद्वान्,
 और अवस्था से बृद्ध यति होता है, उसके बैठने का स्थान है । इस पर

सवारंग ने कहा कि मैं यति होकर ही इस पर बैठूँगा, उसके ऐसा कहने पर सब चुप हो गए। श्री श्रीपूज्य वहाँ से विहार कर मेड़ता गए। उनके पीछे सवारंग ने घर में माँ आदि के आगे अपने संयम ग्रहण की भावना व्यक्त की। अत्याग्रह से उनकी आज्ञा लेकर श्री और श्री सूरि को बुला कर सवारंग ने सुमति के संग अमित धन छोड़ कर बहुत उत्सव पूर्वक नवमे वर्ष में दीक्षा ली एवं उसी दिन से पढ़ने में संलग्न हुए और पाँच वर्ष में विद्वान् बन गये। फिर १५ वर्ष से छठ २ तप का अग्रिमग्रह ग्रहण किया। महान् तपस्वी, विगई त्यागी, शुद्ध आशय वाले और विज्ञ मान कर आचार्य ने अन्तिम समय में श्री बद्धमान नाम के शिष्य को गण संचालक का पद देते कहा—कि आपको अपना पाठ सवारंग को देना चाहिये। १८ वर्ष तक पद का भोग किया और नौ दिन का अनशन करके श्री श्रीपूज्य स्वर्गगामी हुए सं० १७२४ फाल्गुन मास में।

मूल—तदीय पढ़े श्री बद्धमानाचार्यो वैद्यवंश्याः, सूरमल्लः पिता जननी लाडमदेजीति, जाखामरे जन्म चारित्रमहि—पुरे, पदमपि तत्रैव सं० १७२५ माघशुक्लपंचम्याम्। तदनन्तरं १७३० वर्षे वैशाख शुक्ल दशम्यां श्रीवीकानेरे पदावधारिताः श्री श्रीपूज्यास्तत्र, महान्महः संजातः श्रीकलैः प्रभावना कृता श्री देवगुञ्जोद्भा चिन्तामणि विभूषित—मस्तकैः श्रावकैः महती प्रतिष्ठा अयधायि। ततोऽनेक क्षेत्रेषु विद्वत्य पुनर्वीकानेरे समेत्य स्वान्त्यसमयवेदिभिर्दिनसप्तकानशनमाश्रित्य त्रिदिवोऽलंचक्रे, वर्षाष्टकपदमोगिभिः श्री श्रीपूज्यैः। ६८।

अर्थ—उनके पाठ पर श्री बद्धमान आचार्य हुए। वैद्य वंशीय सूरमल्ल उनके पिता और माता लाडमदेजी थी। जाखामर में आपका जन्म और नागौर में ही दीक्षा एवं सं० १७२५ माघ शुक्ल पंचमी में पद की प्राप्ति हुई। तदनन्तर सं० १७३० के वर्ष वैशाख शुक्ल दशमी में श्री श्रीपूज्य वीकानेर पधारे। वहाँ पर बहुत बड़ा उत्सव हुआ—नारियल की प्रभावना की गई। श्री देव गुरु की आज्ञा रूप चिन्तामणि से युक्त शिर वाले श्रावकों ने बड़ी प्रतिष्ठा की। बाद अनेक क्षेत्रों में विहार करके

फिर बीकानेर में आकर अपना अन्तिम समय जान कर सात दिन के अनशन से श्री पूज्य ने स्वर्गवास प्राप्त किया ।

मूल—श्री वद्धमानाचार्यैर्गुरुदेव वचःस्मरद्भिः श्री सदारङ्गसूरयो निजपद्मे स्थापिताः । तत्र महति महे विधीयमाने श्रावकैरनेकैर्वा मिलिते स्वपरागणीये श्रीसंघे महान् प्रमोदः सर्वेषां भवन्नस्ति । तस्मिन्नवसरे सुच्यायदेवी — यात्रागतैर्निजसंपद्—मरावगणित — धनिनिवहैर्हिमारकोटनिवासिभिर्ब्रह्मचा— गोत्रीयैः कुहाडापरपरीयैः शालिमद्रोत्तमचन्द्रादिभिः सम्यपरिकरान्वितैः क्रमाज्ञागोरनगरे समेतैर्विज्ञात — पदवीमहैः सुश्रावकैर्गुरुतर गुरुभक्त्या साधर्मिक वत्सलत्वादि सुकृत्य— कृतये रजतानां चतुःसहस्री उपविताः । तत्र नेषां यशोनाम— कर्म प्रकृतेरुदयो महानजनि तत्रत्यैः सूरवंशेभ्योऽपि तैः सह स्व सम्बन्धः कृतोऽत्राप्रेतन विस्तरस्तु न पृष्ठः ।

अर्थ—श्री वद्धमान आचार्य ने गुरु देव के वचन का स्मरण कर श्री सदारङ्ग को अपने पाट पर स्थापित किया । वहाँ श्रावकों द्वारा किये गये बहुत बड़े उत्सव में अनेक बार स्व पर गणोपसंघ के मिलने पर सबके मन में बहुत हर्ष हुआ, उस समय सुच्याय देवी की यात्रा के लिए आये हुए अनेक धनियों ने जो कि हिसार कोट निवासी ब्रह्मचा या कुहाड़ गोत्री कहाते थे । शालिमद्र उत्तम चन्द्र आदि सम्य परिकरों से युक्त क्रमशः नागोर नगर में पदवी महोत्सव जानकर आए, उन सुश्रावकों ने बड़ी गुरु भक्ति से साधर्मिक वत्सलादि सुकृत्य के लिए चार हजार चांदी के सिक्के व्यय किए । वहाँ उन सबके यशोनाम कर्म प्रकृति का महान् उदय हुआ । वहाँ के सूरवंशीयों ने भी उनके साथ अपना सम्बन्ध कायम किया । आगे का विस्तार यहाँ नहीं किया गया है ।

मूल—ततः श्री सदारङ्ग सूरयः किञ्चिन् कालं तत्र स्थित्वा—
 अन्य देशेषु विहरन्तः श्रीमत्पातसाहिना (आलमगीर)
 मार्गे मिलितेनाभिर्बन्दिताः स्तुताश्च सत्प्रत्यय

दर्शनेन तत्र बीकानेर स्वामिना श्री अनोपसिंह
महाराजेनाऽपि निज हृद्गत मुत चिन्ता निवर्त्तन पूरण
विस्मित चेतसाऽभ्यर्चिताः, सत्कृताः, कथितं च श्री श्रीपूज्य-
पादा भवंत उत्तम पुरुषा सर्व विद्या विशारदाः श्रेयांसो वरी-
यांसोऽखिल जगतः पूज्याः अस्माकं विशेषतो गुरवः प्रतीच्या-
श्चेत्यादि शिष्टाचार पूर्वकम् ।

अर्थ—बाद श्री सदारंग सूरि कुछ काल तक वहां ठहर कर देशान्तर
में बिहार करते हुए मार्ग में बादशाह से मिले उसने बंदन किया । बीका-
नेर के राजा श्री अनोपसिंह जी ने वहां परिचय प्रभाव देखकर और
अपने हृदयगत पुत्र चिन्ता निवारण की पूर्ति से विस्मित होकर श्री श्रीपूज्य
सदारंगजी की महिमा की, सत्कार किया और बोले कि हे पूज्य ! आप उत्तम
पुरुष हैं, सभी विद्याओं के जानकार हैं, कल्याणकारक हैं, अछे हैं सारे
संसार के पूज्य हैं, हमारे तो विशेष रूप से गुरु हैं, प्रतीक्ष्य हैं इत्यादि
शिष्टाचार पूर्वक श्रीपूज्य की स्तुति की ।

मूल—ततोऽनोपसिंहात्मज महाराज मुजानसिंहेनाऽपि तथैव मानिताः,
श्री श्रीपूज्या लवपुरीं गताः, तत्राऽपि बहवो लोका रंजिताः सं०-
१७६० धर्मक्षेत्रे चतुर्मासी कृता, तत्र पातसाहि मान्याऽमात्य-
मुहनाखी शीतलदासेन शिविराद् विनीय चतुर्मासीकरण विज्ञप्ति
लेखः प्रहितः, परं न तत्र स्थितास्ततो विहृत्य पानीयप्रस्थ
(पानीपत) — द्रंगेऽग्रोत्तकैः श्रावकैर्बहुविज्ञप्तिकरणपूर्वकं
स्थापिता । तत्रामात्य शीतलदासेन खानमहाशय द्वाविंशत्या
युतेन दर्शनमकारि । जंतुत्राणोपदेशः सर्वैराकणितः, उररी
कृतश्च दयाधर्मो, बहुलामः समुपार्जितः । ततो योगिनी पुरे
श्राद्धारंजिता, विशदतर सिद्धान्त सदर्थ सार्थ प्रकाशनेन ततो-
ऽर्गलापुरे पातसाहिस्यालकस्य महाखानस्य सत्प्रत्यय दर्शन
पूर्वकं जीवदयोपदेशेन मानसं रंजितं यावत् स्थितिकालं जीव-

दया महाखानेन प्रवर्त्तिता सर्वत्र नगरे । ततो विहृत्य सं०
१७६६ पुनर्वीकानेरपुरे पूर्वगोपुरे पादावधारितास्तत्र कतिचिदि-
नानि शुक्रास्तादि मलिन दिवसत्वात् श्रावकैः पटमंडपे रम्यतरे
स्थापिताः । तत्र नगर प्रवेशोत्सव वार्तायां जायमानायां
श्रावकाः संभूय विचारयन्तिस्म यन् ईदृशः प्रवेशः कार्यते
यादृक् केनाऽपि न कृतः, कारितो वा पूर्वम् ।

अर्थ—बाद महाराज अनोपसिंह के पुत्र महाराज सुजानसिंह ने भी वंसा
ही मान किया । श्री श्रीपूज्य सबपुरी गए । वहां भी बहुत से लोग प्रसन्न
हुए । सं० १७६० धर्मक्षेत्र में चातुर्मास किया वहां बादशाह के मान्य मंत्री
मुहनाणी शीतलदास ने कैम्प से निकल कर विनय पूर्वक चतुर्मास करने का
निवेदन पत्र भेजा, किन्तु वहां नहीं ठहरे । वहां से बिहार कर पानीपत में
अप्रवाल श्रावकों ने बहुत विनय पूर्वक ठहराये । वहां पर मंत्री शीतलदास
ने खान महाशय और २२ के संग दर्शन किये । सबने जीव दया का उपदेश
सुना और दया धर्म को स्वीकार किया, तथा बहुत साम लिया । उसके
बाद योगिनीपुर के श्रावकों को शुद्ध सिद्धान्त, सवर्थ और अर्थ सहित ज्ञान
उपदेश कर प्रसन्न किये । बाद अगलापुर में बादशाह के साले महाखान
को सच्चा परचा दिखाकर जीव दया के उपदेश से प्रसन्न किया । जब
तक श्रीपूज्य वहां ठहरे, महाखान ने सारे नगर में जीव दया पालन करने
की घोषणा करवा दी । वहां से बिहार कर सं० १७६६ में फिर बीकानेर
के पूर्व दिशा के द्वार पर पधारे । वहां पर शुक्रास्त आदि से मलीन दिन
होने के कारण श्रावकों ने कपड़े के मंडप में कतिपय दिन उन्हें ठहराया ।
वहां पर नगर प्रवेशोत्सव की बात चलने पर श्रावकों ने मिलकर विचार
किया कि ऐसा प्रवेश कराया जाय जैसा कि पहले किसी ने न किया और
न कराया हो ।

मूल—इतश्च साह विमलदासेन गत्वा राज्यद्वारे मणितं महाराज !
भवदीय पूर्वजैर्ये मानिता, अर्चिता, वंदितास्तेऽत्र श्री श्रीपूज्य
चरणाः समेतास्सन्ति । त्तोराज शार्दूलैः सनातनः पन्थाऽ-
ज्ञायते एवास्माकं श्रीमद्भदन्त पुंगवाः पूर्वगोपुरादेव देववादित्र
वादनादिकया महत्या विच्छित्या प्रविशन्ति । सांप्रतं केचन

यति पाशाः किञ्चित्काचपिच्छ्यं विदधति का बन्धे तसो वृत्ति-
व्याक्रियतामिति भाषिते श्रीमहाराजैरवादि, एते तु श्री श्री-
पूज्या अस्मदीया एव तत एतान् कोरुणद्धि, श्री श्रीपूज्यानां
यादृशः प्रवेश महामहो भवति तादृश एव विधीयताम् किम-
त्रान्यत्, सर्वाऽपि राज्यद्विरादीयतां, सति राजशासने को-
निवारयिता । ततो हस्तिवर तुरंगादि बाघ ध्वज पटहातोद्यादि
समादाय राजकीय सचिवः समेतः कथयितुं लग्नः श्री महा-
राजेनाङ्गप्तमस्ति । अन्यापि या काचित् भवतां मर्यादा भवेत्
तदनुरूपमपि क्रियताम् ।

अर्थ—इधर साह बिमलवास ने जाकर राज्यद्वार में कहा कि
महाराज ! आपके पूर्वजों से सम्मानित, पूजित, बंशित श्री श्री पूज्य चरण
यहाँ आए हुए हैं, अतः राज शार्ङ्गल सनातन नियम से परिचित हैं ही ।
हमारे श्री पूज्यवर पूर्व द्वार से ही देखोचित बाघ और बड़े समारोह से प्रवेश
करते हैं । अभी कुछ यति लोग कुछ २ उल्टी बातें कर रहे हैं, अतः आपकी
क्या इच्छा है फरमाइये ऐसा कहने पर महाराज ने कहा ये श्री श्री पूज्य तो
हमारे ही हैं तब इनको कौन रोकता है ? श्री श्रीपूज्यों का जैसा प्रवेश
महोत्सव होता है वैसा ही करें । इस विषय में और क्या ? राज्य की सारी
वस्तुएं ली जाय, राज शासन के होते हुए रोकने वाला कौन है ? तब हाथी
और अष्ट घोड़े, बाजे, ध्वजा पटहा “निशान” आदि लेकर राज मन्त्री
आए और कहने लगे कि श्री महाराज की आज्ञा है कि और भी जो कुछ
आप सबकी मर्यादाहो, उसके अनुकूल भी कीजिये ।

मूल—ततः प्रतोलीत्रयं कारितं, तत्र चैका सूरवंश्यानामपरा चोर-
वेटिकानां, तृतीया समेषां श्रद्धालूनाम् । एवं प्रतोली त्रय—पद
मंडन पटोलिका प्रभृति सर्व महःकृत्यं कृतम्, स्वावदातो-
द्योतित पूर्वसूरयो युगप्रधान श्रीसदारंग सूरयः संमुखामता-
स्तोक — लोक—समुत्कीर्त्यमान—विशदतर—कुंद—कुमुद—बान्धव
मयूख समानानेक प्रवेशक शम दम—संयम—प्रकारा निज—चरख

गति—मृदुतापहसित—राजहंस—सुरगजमत्तवृषभाः मुनिवृषभाः
 शनैः शनैः स्थानीये स्थानीये यावतानेक यतियुताः प्रविशन्ति,
 तावता खरतर—कमल—गण्डीय—संजतराटी मंत्रः—प्रारम्भः पूर्व
 परस्परं पश्चात्पुरलोकाग्रतो मणन्ति अस्मदीया एवातोद्य-
 निवहा अत्र ध्वनन्ति नैतेषां पुनः प्राहुः एतद्वाद्यादिकं
 राजकीयं सुतरां । यतयः वादयंतु परं शंखो भल्लरिकांच
 श्रीचिन्तामणि श्रीमहावीरयोरेव सप्तविंशति महल्लेषु
 वादयिष्यति अन्यस्य न । नागोरी—लुंकागण्डीयान्प्रति परानपि
 तथा गौर्जरादीन् प्राहुः भवतां शंखं तु न कुत्रापि वादयितुं
 ददुमः । तदा श्रीमदन्तपादैरुक्तं अस्मदग्रेऽस्मदीय एव
 शंखो ध्वनिष्यति अन्यं वयमपि नेच्छामः । तदापुनर्पुनर्नृ-
 पादेशः समेतः शीघ्रतया प्रवेशो विधीयताम् यदा तपो न
 परामवतिपौरान् तदाऽमात्येन शंख व्यतिकरो निवेदितो
 नृपाग्रे, शंखस्तु—अवश्यमेव युज्यतेऽत्र ।

अर्थ — बाब तीन प्रतोली-द्वार बनवाये जिसमें एक सुरबंशियों का दूसरा
 घोर पेटिकों का और तीसरा सभी भड्गालुओं के लिए । इस तरह तीन
 प्रतोली द्वार और चरण-मंडन को प्रतोली प्रभृति सब उत्सव के कृत्य किए ।
 अपने उज्ज्वल प्रभाव तेज से पूर्वाचार्यों को प्रकाशित करने वाले युग प्रधान
 श्री सवारङ्ग सूरि सामने आए हुए समस्त लोगों से सुयश गाये जाते हुए
 (स्वच्छतर कमल के मित्र) सूर्यकिरण के समान शम, इमावि विविध
 बेदीप्यमान गुण वाले अपने चरण गति की मृदुता से राजहंस ऐरावत हाथी
 और मत्तवृषभ को भी उपहास करने वाले मुनिवृषभ घीरे २ स्थान २ में
 अनेक यतियों से युक्त जब तक प्रवेश करते हैं, तब तक खरतर एवं कमल
 गच्छ वाले यतियों ने राटी मंत्र, कलह प्रारम्भ किया, फिर सब मिलकर
 नगर लोगों को कहते कि हमारे ही बाजे यहां बज रहे हैं इनके नहीं—फिर
 बोले कि ये सब राजकीय बाद्य भले यति बजाएं पर शङ्ख और भल्लरिका
 तो श्री चिन्तामणि और श्री महावीर के हैं जो २७ मुहूर्तों में बजेंगे, दूसरों
 के नहीं । नागोरी लंकागच्छी और अन्य गच्छ वालों तथा गुजराती आदि

को बोले कि आपके शङ्ख को तो कहीं भी नहीं बजने देंगे, तब भी आचार्य बोले कि हमारे आगे तो हमारा ही शङ्ख बजेगा । अन्य को हम भी नहीं चाहते तब फिर राजा का आदेश आया कि शीघ्रता से प्रवेश कराया जाय जिससे नगरवासियों का तप खराब नहीं हो । तब मन्त्री ने शङ्ख की बाधा राजा के आगे निवेदित की, शङ्ख का बजना तो यहाँ आवश्यक है ।

मूल—तस्मिन्समये श्री लक्ष्मीनारायणप्रसादमादाय नयनाख्यः

शंखध्माः समेतः, तंवीच्य लालाणीभ्यास उदयचन्द मुधड़ा चतुर्भुजाभ्यामुक्तं एष शंख विवादः यतिभिः क्रियते, ततः कथं च निवर्त्तते । एते वदन्ति १३ महल्लेषु श्रीचिन्तामणि भगवतः शंखो बाधतेऽन्येषु श्री महावीरदेवस्य, एतयोस्तु शंखादिकं श्री श्रीपूज्या अपि नोरीकुञ्चन्ति, अतोऽत्र श्रीलक्ष्मीनारायणजीकस्य शंखो ध्वन्यते, एवं विवादो याति अन्यथानेत्यामृश्योपनृपमागत्य विज्ञप्तं, श्रीमहाराजः अधुना तु प्रवेशोत्सवे श्री लक्ष्मीनारायणजीकस्य शंखः प्रदीयते तदावरमग्रे श्रीमहाराजानामिच्छा तदा श्रीमहाराजेन नयनाह्वः शंखध्मा दृष्टः, कथितं च मो नयन, त्वं श्रीठाकुरजीकानां सेवकोऽसि वयं निर्दिशामः श्री श्रीपूज्य सदारंगजीकानां प्रवेश महे श्रीठाकुरजीकानां शंखो ध्वन्यताम् । ततस्त मादाय स तत्र गतः, महताडम्बरेण प्रवेश मङ्गः कारितः । नारिकेलानां प्रभावना कृता, श्रीफलानां नवशति लाना तदनुयेनाडम्बरेण प्रवेशोत्सवो जातः तेनैवाडम्बरेण खराणा सुन्दरदास वेशमनि चमा भ्रमणाशनं गृहीतम् ।

वार्थ—उसी समय में लक्ष्मीनारायण का प्रसाद लेकर नयन राम नाम का शंख फूंकने वाला आया उसको देखकर लालाणी भ्यास, उदयचंद मुधड़ा और चतुर्भुज ने कहा यह शंख का विवाद यति लोग करते हैं, इससे कैसे बचा जाय । ये कहते हैं १३ महलों में श्री चिन्तामणि भगवान् का शंख बजता है और अन्य महलों में महावीर देव का । इन दोनों का

शंख श्रीपूज्य भी झड़नेकार नहीं करते । इसलिए यहां श्री लक्ष्मीनारायण भी का शंख बजता है, दूसरी तरह नहीं । यह सोचकर राजा के पास आकर निवेदन किया कि महाराज ! अभी तो प्रवेशोत्सव में श्री लक्ष्मीनारायण भी का शंख दिया जाय तो अच्छा, आगे महाराज की इच्छा उसके बाद महाराजश्री ने नयन (नैनजी) नाम के शंखबादक को देखा और कहा कि ऐ नयनजी ! तुम ठाकुरजी के सेवक हो, मैं तुम्हें आशा देता हूं कि श्री श्रीपूज्यसदारंगजी के नगर प्रवेश महोत्सव में श्री ठाकुरजी का शंख बजाओ । तब वह नयनजी शंख को लेकर वहां गया और बड़े आडम्बर से प्रवेशोत्सव कराया गया । नारिकेल की प्रभावना हुई, ६०० श्रीफल लगे । इसके बाद फिर जिस आडम्बर से प्रवेशोत्सव हुआ उसी आडम्बर से सूरणा सुन्दरदास के घर क्षमाभ्रमण का आहार ग्रहण भी हुआ ।

मूल-तत आषाढ चातुर्मास्यागमेऽन्ययति-विहित-शंख-विवादं मत्वा पूज्यश्रीस्वामिदासजी, रामसिंहजी, पेमराजजी, कुरालचन्दजी नामकैः प्रवरयतिभिः श्री राजसमीपे गत्वा मणितं मो ! महाराजाधिराजाः श्री श्रीपूज्यैवैः शुभाशीर्वचांसि दत्तानि सन्ति, पुनः शंख विवाद निवर्तनोऽन्तरं कथापितः सोऽधुना विमृश्य क्रियताम् । किंच खरतर कमलगण्णीयश्रावकैः पूर्वं या स्थितिः कृता प्रोक्ता सा पृच्छ्यताम्, केनेयं स्थितिः कृताऽभूत् । तत्कर्णालादिकं चेत्स्यात्तदा दर्श्यताम्, पुनः पूज्य स्वामिदासैरवादि, महाराजाधिराज सं० १६४० यावत्तु कोऽपि विवादो नाऽसीत्, कोऽपि कस्मै न वर्ज्जनमकरोत् । ततो विश्वविश्वंमरामार समुद्रखादि 'वराह' कल्प श्री-रायसिंहजी राज्ये कर्मचंदवत्सापत्येन सीमा स्वीय यतीनां कृताऽन्येषां शंखो भ्रूल्लरिका च न वाद्यते । ततः श्रीखर-सिंहजी राज्ये ठाकुर नाम वैद्येन स्वगण्णीय शंखादि स्थितः स्थापिताऽधुना नय एष विमृश्य विधेयः । ततः श्री

महाराजेन द्वयेऽपि समाकार्यं पृष्टाः, भवदीया स्थितिः केन बद्धा, कथंचान्येषां शंखवादनादि निरस्तं ? तैर्मणितं—महाराज ! अस्माकं राज्य द्वारतोऽयमारोपः कृतः यत् १३ महन्त्रेषु खर-तर गलीयानां श्री चिन्तामणि शंखः, १४ महन्त्रेषु श्री महा-वीर देवस्य शंखो भद्ररिका च प्रवर्तते, एवमुक्ते श्री महा-राजेन मणितं य आरोपः कृतोऽस्ति भवतोर्द्वयोस्तत् कर्ग-लादिकं दर्शनीयं, तदा तैरुदितं कर्गलादिकं तु तावन्नास्ति किं दर्शयामः श्री महाराजेनाभाणि भवतां राज्यद्वार कर्गलं विना द्वयोः आरोपः कया रीत्या जातः । पुनः श्रीमहाराजेन पृष्ट-मन्येषां वर्जितो यः शंखस्तस्य श्री महाराजकृतं लिखन पठना-दिकं भवेत्तदपि दर्शयताम् । अन्यथा केन हेतुनाऽपि अन्य-गलीयान् वर्जयन्ति यतयः, तदा तैर्व्याहृतम् हे श्री महाराज ! वैद्य वत्सापत्या गव श्री बीकाजीकस्य सार्थे समेता अभूवन्, तेन हेतुना तैर्निज निज सीमाकारि । अग्रे देवपादानां मनसि-भवेद्यथा तथा विधेयं । तदा श्री महाराजैर्मणितं वयं श्री प्रभुणा यथावन्नीति प्रवर्तनार्थं राजानः कृता स्मः । तद्वरीतेरेव प्रवृत्तिर्भविष्यति एवमुक्ता मनसि विमृष्टं, एतेषामपि रीति-स्याप्यैव पूर्वजादेशाधिकारि विदित्वात् ।

अर्थ—फिर आषाढ़ चातुर्मासी के आने पर दूसरे यतियों से उठाये गए शंख विवाह को मानकर, पूज्य श्री स्वामिदास जी, रामसिंह जी, पेम-राज जी और कुशलचंद जी नाम के प्रमुख यतियों ने राजा के समीप जाकर कहा कि—ऐ महाराजाधिराज ! श्री श्रीपूज्य ने आपको शुभाशीर्वाचन कहलाया है और फिर शंख विवाह मिटाने का संवाद भी कहा है उस पर अब विचार किया जाय । खरतर गच्छ, कमल गण के भावकों ने पहले जो स्थिति उत्पन्न की और कहा उसके लिये पूछा जाय । किसके द्वारा यह स्थिति पैदा की गई और इसके कागज आवि हों तो बिलार्थे फिर पूज्य स्वामिदास बोले—महाराजाधिराज ! सं० १६४० तक तो कोई विवाह

नहीं आ, कोई किसी को रोक-टोक भी नहीं करता । बाब विश्व की विश्व-जरा के भार समुद्धरण में बाराह तुल्य श्री रायसिंह महाराज के राज्य में कर्मचंद वच्छावत ने अपने यतियों के लिए सोमा निर्धारण किया इसलिये दूसरे यतियों के शंख और भल्लरिका नहीं बजती । फिर श्री सूरसिंह जी के राज्य में ठाकुर नामक वेद ने अपने गण में शंखादि की स्थिति कायम की । अब बहुत सोचकर न्याय करना चाहिये । बाब में महाराज ने दोनों को बुलाकर पूछा—आपकी स्थिति मर्यादा किसने बाँची और कैसे दूसरों के शंख बजाने आदि बंद हुए, उन्होंने कहा—महाराज ! हमारे पर राज्य द्वार से यह आरोप किया गया कि १३ मुहल्लों में खरतर गच्छ वालों की ओर से श्री चिन्तामणि का शंख और १४ मुहल्लों में श्री महावीर देव का शंख भल्लरिका का प्रयोग होता है । ऐसा कहने पर श्री महाराज ने कहा—जो आरोप आप दोनों पर किया है उसके कागज आदि दिखावे, तब उन्होंने कहा—कागज तो नहीं है क्या दिखावे ? श्री महाराज ने कहा राज्य दर-बार के कागज बिना आप दोनों का आरोप कैसे सिद्ध हुआ । फिर महाराज ने पूछा कि दूसरों का शंख जो रोका गया है उसके लिये राज्य की कोई लिखा पड़ी आदि हो तो वह भी दिखाई जावे । नहीं तो किस कारण से ये यति अन्य गण वालों को रोकते हैं—इस पर वे बोले हे महाराज ! वेद और वच्छावत राव श्री बोकजी के साथ आये थे इसलिये उन्होंने अपनी २ सीमा बनाली । आगे देव चरण की जैसी इच्छा हो वैसा करें ? तब श्री महाराज ने कहा भगवान् ने हमको यथावत् नीति मार्ग को चलाने के लिये राजा बनाये हैं, तो रीत-मर्यादा से ही काम होगा । यह कहकर राजा ने मन में विचारा कि इन लोगों की भी रीति पूर्वजों के आदेशानुसार होने से चालू रखनी चाहिये ।

मूल—अथैतेषां श्रीश्रीपूज्यानां समाधिका कर्तुंमुचितेति परा-
मृशयोक्तं यूयं सप्तविंशति महच्छ्रेष्ठा सर्वदिकी स्थितिः क्रिय-
ताम् । एतेषां तु अथ प्रभृत्यैव श्रीलक्ष्मीनारायणजीकानां
शंखः सर्वत्रपुरे वादयिष्यति, एतदीयश्राद्धानामपि हर्ष-वर्द्धापने
श्री ठाकुरजीकानामेव शङ्को वादयिष्यति, श्री चिन्तामणि
महावीरयोः शङ्कस्य नावकाशः एनं शंखं निराकुर्वन् जनः श्री

ठाकुरजीकैभ्यो विमुखो भविष्यति । पुनः श्रीराज्यद्वारस्या
पराधी द्युपं भक्षित्वा शंखध्मा विसृष्ट इति ।

अर्थ—फिर इन श्रीपूज्यों का समाधान करना उचित है यह
विचार कर महाराज ने कहा—आप लोग २७ मुहूर्तों में सर्वदा की
व्यवस्था कायम करें । इन सबके तो आज से ही श्री लक्ष्मी नारायणजी
का शङ्ख सारे नगर में बजेगा । इनके आचकों के हर्ष वधावे में भी ठाकुरजी
का ही शङ्ख बजेगा । श्री चिन्तामणिजी और श्री महावीर का शङ्ख वहाँ
नहीं बजेगा इस शङ्ख को रोकने वाला ठाकुरजी से विमुख होगा । और वह
राज्य द्वार का अपराधी होगा । यह कह कर शङ्ख बजाने वाले को बिदा
कर दिया ।

मूल—अथ श्री श्रीपूज्यैरष्टत्रिंशद्वषपर्यन्तं धर्मराज्यं कृतं, तत्र
चतुर्विंशति शिष्याः जातास्तन्नामानियथा (१) श्रीगोपालजीका
अटक महादुर्गे महान्तस्तपस्विनोऽटक जलं जनं क्षुम्बघत्पद
स्पर्शादपसृतं नदी जलेनाऽपि यच्छासनं मानितम् । श्री आनन्द-
रामजीका वनूड नगरे स्थिता अभूवन् (२) मागूजीकाः
तोलियासरे प्रसिद्धाः (३) महेशजीकाः मालव देशे प्रसिद्धाः
(४) वखतमल्लजीकाः महान्तो मल्ला अजीतसिंह नृप मल्लमान
मर्दकाः (५) चत्वारो रामसिंहजीकाः आसन् । एके तु ओकेश
वंश्याः कोचर गोश्रीयाः उदयसिंहजीकैः समंमलिताः (६)
द्वितीयाश्च हुवाणामिजनाः मालवदेशे (७) तृतीयाः खत्ति-
ज्ञातीया मालवे (८) तुर्यारामसिंहजीका मीमजी अमीचंदजीकां
गुरवः (९) श्री सुखानन्दजीका वीदासर स्थलेषु कृतानशना
दिवं ययुर्ये ते तपस्विनः (१०) श्री उदयसिंहजीकायैर्गणभेदः
कृतः (११) श्री जगज्जीवनदासजीका मूल पट्टाधिपाः (१२)
द्वौ शिष्यावादिमौ धर्मचन्द्र-गुणपालाख्यौ सिद्धान्तं पठन्तौ
(१३) देवोपसर्गं जनिता महाकष्टौ सम्यगाराधनामाधाय
दिवंगतौ (१४) पेमराज रायसिंहजीकौ, मैरव मंत्राराधकौ

(१५) भ्रमाभिषि चलितौविहलिसपदौ मूकौ जातौ (१६) विधिचंदजीका दीक्षातोऽशीतिदिनेष्वेव स्वर्गं गताः शूल रोगेण (१७) वस्तपालजी, हीराजी धन्वाजीकास्तपसा प्रसिद्धाः (१८) सार्द्धद्विसेर जलकृत नियमा ग्रीष्मे उपसर्ग सहनं कृत्वा सं० १७६५ वर्षे पञ्चत्वमापुः (२०) वैद्यवंशीया (श्या) ज्ञानजीका आगमज्ञा महान्तो मालव देशे दुष्ट डाकिन्या गृहीता कृतानेकोपचारा अपि न पटवो जाताः (२१) मालव देशे भारजीकाः प्रसिद्धाः (२२) लक्ष्मीका आनन्द रामजी-सार्थ एव विहृतवन्तः (२३) दुर्गदासाह्वास्तु मालवे सार्थाद् भ्रष्टादरी निपातेन केनाऽपि लक्षिताः (२४) एतेषां मध्यान्नवनव-देशेषु शिष्येषु विद्यमानेषु श्री श्रीपूज्यै रुदयमिहस्य तपस्विनः शिष्यस्य प्रोक्तं भो ! पदं गृहाणेत्युक्ते उदयसिंहजीकैरभाषि मम पदेन कोऽर्थः सर्वगुणसंपन्नाः, प्रज्ञाला जीवनदासजी-कास्तन्ति तेभ्यः प्रदीयतामहंतु तन्निर्देशकृत् मविष्यामि इत्युक्ते पुनरप्याग्रहेणोक्तं, पदं गृहाण पश्चान्नकिञ्चित्कर्तु-मुचितम् तैः पदादानं नोरीकृतम् । तदा श्रीस्वरिशार्दूलैरव-सरं विज्ञाय श्रीसंघसाक्षिकमन्यगणीयानां च पुरतः श्रीमद्-भदंत पदं श्रीजगजीवनदासजीकेभ्यो लिखित्वा प्रदत्तम् । स्वयमारोधनादिनदशकं यावत्साधयित्वा त्रिदिवं मंड-यामासुः सं० १७७२ एवं पट्टानि ६१ जातानि ।

अर्थ—इस प्रकार श्री श्रीपूज्य जी ने ३८ वर्ष पर्यन्त धर्म राज्य किया वहां चौबीस शिष्य हुए उनके नाम इस प्रकार हैं—श्री गोपालजी अटक महातुर्ग में बड़े तपस्वी हुए, लोकों को सुख करने वाला अटक का जल जिनके चरण स्पर्श से दूर हो गया नदी जल ने भी जिनका शासन मान्य किया । (१) बनूड नगर में श्री आनन्द रामजी हुए । (२) मागुरजी तोलियासर में प्रसिद्ध हुए (३) महेशजी मालवा में प्रसिद्ध हुए । (४) वल्लभतल्लजी बड़े शक्ति शास्त्री थे जिन्होंने अजीतसिंह राजा के पहल-

वन का मान भेद न किया । (५) रामसिंहजी चार हुए थे, जिनमें एक तो ओकेश बंश के कोचर गोत्रीय उदय सिंहजी के साथ मिल गए । (६) दूसरे हुवाणा में हुए जो मालव देश में हैं । (७) तीसरे क्षत्रिय जाति के मालवा में हुए, (८) चौथे रामसिंहजी भीमजी और प्रमोचंदजी के गुरु थे, (९) श्री सुखानन्दजी जो तपस्वी थे बीबासर में धनशन करके स्वर्ग सिधारे, (१०) उदयसिंहजी ने गण भेद किया । (११) श्री जगजीवन दासजी मूल गादी के अधिपति थे । (१२) प्रारम्भ के दो चेले धर्मचन्द्र और गुणपाल सिद्धान्त पढ़ते हुए देवता के उपसर्ग से महान् कष्ट को पाते हुए सम्यग् आराधना करके स्वर्ग गए । (१४) प्रेमराजजी और राधासिंहजी भैरवमन्त्र के आराधक थे । भ्रमवश वे रात में चलायमान हो गये और बिछा से लिप्त पेर वाले गूंगे हो गए । (१५-१६) विधिचंदजी बीला के 'अस्सी बें दिन में ही' शूल रोग से स्वर्गवासी हो गए । (१७) वस्तपालजी, हीराजी और धन्नाजी तपस्या से प्रसिद्ध थे । दिन में २॥ सेर जल का ही वे उपभोग करते, गर्मी में उपसर्ग सहकर सं० १७६५ वर्ष में काल धर्म प्राप्त कर गये । (२०) वैद्यवंशीय ज्ञानजी आगम के बड़े ज्ञाता थे, मालव देश में दुष्ट डाकिनी से ग्रस्त हुए अनेक उपचारों से भी ठीक नहीं हुए । (२१) मालव देश में भारजी प्रसिद्ध हुए । (२२) लक्खजी आनन्दरामजी के साथ ही विचरते रहे । (२३) दुर्गादासजी मालवा में साधियों से अलग गुफा में गिर जाने के कारण किसी से देखे नहीं गये । (२४) इनमें से नव देशों में विद्यमान् श्री श्रीगुरु ने तपस्वी सिष्य उदयसिंहजी से कहा—भो तपस्वी ! पद ग्रहण करो, ऐसा कहने पर उदयसिंहजी बोले—मझे पद से क्या प्रयोजन सर्वगुण सम्पन्न प्रज्ञावान, जीवनदासजी हैं, उनको पद दीजिये मैं उनके निर्देश का पालन करूंगा, ऐसा कहने पर भी फिर आप्रह से कहा—पद ग्रहण करो पीछे कुछ भी करना उचित नहीं पर उन्होंने पद लेना स्वीकार नहीं किया । तब सूरि शार्दूल ने समय देखकर श्रीसंघ की साक्षी और दूसरे गण वालों के आगे श्रीमत् भवंत पद जगजीवन दासजी को लिखकर दे दिया, और आप १० दिनों की आराधना करके सं० १७७२ में स्वर्ग को सुशोभित किया । इस प्रकार यह ६६ वां पाठ हुआ ।

मूल—तस्मिन्नन्दे शिष्यापत्राणि नागपुरीय सुराद्या सहस्स-
मन्त्रादिभिर्लेखं लेखं यतिभ्यः प्रदत्तानि श्री उदयसिंहजीका
यति त्रयान्विता बीकानेरे स्थिताः, माविस्वरयस्तु बहुमुनि-

परिवृताः श्रीनागोरपुरे स्थितास्तत्रपट्टमुहूर्तं वर्षद्वयं यावच्छुद्धं नागतं, ततः समीचीने मुहूर्ते श्री श्रीपूज्याचार्या जगजीवनदासजीकाः पट्टं भूषयामासुः, चोरवेटिक गोत्रीयाः वीरपालजी पितृनाम, जनन्या नाम रतना देवीति, पड़िहारा निगमे अनुश्चारित्रं मेड़तापुरे, पद महिपुरे । अथ नागोर नगरे घोड़ापत्यैः कथंचित् किंचिन्न्यूनरागैश्चोरवेटिकादि—युतैर्भांडापत्य सूरणा गोत्रीयाणां लेखं दत्त्वा कथापितं, महत्तु—दयसिहेषु स्थितेषु अत्रत्यैः आर्द्धरैरेतस्मिन्विषयतास्तस्मात्माकं हृद्यं जातमथ बीकानेरे स्थिता अपि उदयसिंहजीकाः पट्टे स्थाप्या इति मुहुर्मुहुः समाचारे प्रवर्तमाने श्री श्रीपूज्यैः कथापितमद्यापि किमपि गतं नास्ति, अत्रागत्य पदमाऽदीयतां युयं महान्तः तदोदयसिंहजीकैरमाणि मम तु पदादानेच्छा नहि ततस्तत्रत्यैर्भांडापत्यादिभिरत्याग्रहेण प्रसह्य पदे स्थापिताः बीकानेरे एव । एवं गण स्फोटे जातेऽपि श्री मूल—पट्टेश्वरमाभिध्यात् बहु यतितति परिवृताः श्री जगजीवनदासजी नामधेया वरमाग धेयाः सर्वत्र देशे २ क्षेत्रे २ आर्द्धैरन्यगणीय संघेनापि संमानिताः पूजिताश्च ।

अर्थ—उस वर्ष नागोर के सूरणा सहस्रमल्ल आदि ने शिक्षा पत्र लिख लिखकर यतियों को बिये । श्री उदयसिंह जी तीन यतियों के साथ बीकानेर ठहरे और मावी श्रीपूज्य बहुत मुनियों के संग नागोर बिराजे । वहां पर दो वर्ष तक शुद्ध पाठ मुहूर्त नहीं आया—फिर अच्युत मुहूर्त में श्री श्री पूज्याचार्य जगजीवनदास जी ने पद ग्रहण किया, चोरडिया गोत्रीय वीरपाल जी आपके पिता का नाम और माता का रतनादेवी था, पड़िहारा मंडी में जन्म मेड़ता में बीक्षा और अहिपुर में पद । फिर नागोर में घोड़ावतों ने किसी कारण धर्म राग की कमी से चोरडिया आदि के साथ भांडावत और सूरणा गोत्रीयों को पत्र देकर कहलाया कि बड़े उदयसिंह के रहते हुए यहां के आक्कों ने जगजीवनदास जी को अभिविक्त

किया है यह हम लोगों के मन को अच्छा नहीं लगता । इसलिये बीकानेर में बिराजमान उदयसिंह जी को पाट पर स्थापित करना चाहिए, इस प्रकार बार २ समाचार देने पर श्री श्रीपूज्य ने कहलाया कि आज भी कुछ गया नहीं है यहां आकर पद ले लिया जाय क्योंकि आप बड़े हैं । तब उदयसिंह जी बोले मेरे को पद लेने की इच्छा नहीं है, तब वहां के भांडाबत आदि लोगों ने हठात् आप्रह पूर्वक बीकानेर में ही उनको पट्ट पर स्थापित कर दिये । इस तरह गण में बिस्फोट होने पर श्री श्री मूल-पट्टेश्वर के साभिध्य से बहुत यतियों के परिवार सहित भाग्यवान् श्री जीवनदास जी सभी देश और क्षेत्रों में श्रावकों एवं अन्य गण के संघों से भी सम्मानित तथा पूजित रहे ।

मूल-नागोर पुराद् विहृत्य भट्टनेरकोटे पादावधारितास्तत्र लघीय-
 सोऽपि वाधासाहस्य वचन साहाय्यं कृतं तेनाऽल्प संपत्को
 वाधासाहः प्रभावनां महतीं कृतवान् ग्रन्थ गौरव मयात्र
 विस्तरतो लिख्यते, सर्व संबंधस्ततः सरस्वती पतने, हिंसार-
 कोटे बुढ़लाडा निगमे, टोहणा, सुनाम, सन्मानक, रोपड,
 बजवाडा, राहौ, जालंधर, गुजरात, रावलपिंडी प्रमृतिषु क्षेत्रेषु
 विहृत्य सम्यग् लवपुर्या प्रवेशोत्सवे जायमानं मुगल यवनः
 कश्चिद्युवा तत्रत्यस्थापुक सुतोऽकस्मात् संमूर्छितो लोकैर्मृत
 इति संभावितः, सशोकेषु लोकेषु जातेषु श्री नमस्कृति जलेन
 सर्वलब्धि वितानसंस्मारित पूर्वगणधरैः श्री श्रीपूज्य पादैः
 सिक्कः प्रत्यागत चेतनः सन् परमभक्तो महामहिमानमकरोत्,
 ततोऽनकेषु क्षेत्रेषु विहरद्भिः श्री श्रीपूज्य चरणैः ये प्रत्यया
 दर्शितास्तान् को लिखितुं शक्नोति नवा वक्तुमलम् ।

अर्थ - नागोर से विहार कर भट्टनेर कोट में श्रीपूज्य जी पधारे, वहां पर छोटे बाघाशाह को वचन से साहाय्य किया जिससे थोड़ी सम्पत्ति वाला भी बाघाशाह बड़ी प्रभावना कर गया । ग्रन्थ बढ़ने के मय से यहां विस्तार पूर्वक सब सम्बन्ध नहीं लिखा जाता है । फिर सरस्वती पतन, हिंसार कोट, बुढ़लाडा मंडी, टोहणा, सुनाम, समाणा, रोपड, बजवाडा, राहौ,

आलंकार, गुजरात और राजस्थान की प्रभृति क्षेत्रों में बिचर कर सबपुरी में प्रवेशोत्सव किया उस समय वहाँ के किसी मुगल अधिकारी का युवा पुत्र अकस्मात् मूर्च्छित हुआ और लोगों ने समझ लिया कि मर गया । तब लोगों के शोकमग्न होने पर पूर्वाचार्यों के लब्धि को स्मरण कराने वाले श्री पूज्यचरण ने नमस्कृति मंत्र के जल से सींचकर उसे स्वस्थ किया जिससे वह परम् मत्त हो गया और उसने बड़ी महिमा की । इसके बाद अनेक क्षेत्रों में बिहार करते हुए श्री श्रीपूज्य ने जो चमत्कार दिखाये उसको कौन लिख सकता अथवा कौन बोल सकता है ?

मूल-पुनरटक धुनी (नदी) पतिता समर्थनाम साहकस्य बहुपण्य-
भृतानौस्तारिता तत्रत्यैर्हिंदूर्यवनैः प्रभावनाधिका चक्रे ।३। ततो
निवृत्य समागच्छद्भिः स्वरिपादैरोपद्वनगरे बृद्ध श्राविकायाः
गलत्कुष्ठमपहतम् । ४ । पुनः सरस्वतीपत्तने विषम दुष्काल
भीतैर्यवनैर्महम्मद-हुसेनस्योक्तं, वणिग्-जनैरेते यतयो रौरव-
निबंधनवृष्ट्य-मावार्थं रक्षिता अत्रेत्याकर्ण्य दुर्मतिना तेन
लोकानां पुरतः प्रोक्तं एतेनातश्चेद् गमिष्यन्ति तदाऽहं कच-
ग्राहमेनाभिष्कासयिष्यामीति वार्त्ता कस्यापिमुखाच्छ्रुत्वा
निष्प्रतिम पुण्यपण्यशालिमिलोकोचरातिशयधरैः श्री श्रीपूज्यै-
र्मणितं भोः ? यतयोऽतः शीघ्रतया विहृत्तव्यमतः स्थानाद्
द्वित्रैष्वहस्तु यदत्र भावि तत्स एव दुर्धी ईक्ष्यसीत्युक्त्वा
विहृत्तुं लग्नाः तदा श्राद्धैरुक्तं-स्वामिन् वयमपि भवत्पद
युगमाश्रिताश्चलाभः एवं कथनेन श्री सूर्यस्तत्रैव स्थापिताः ।
अथ तृतीये दिवसे भोरड यवनैः प्रातरेवागत्य बहिर्निर्गतो
महम्मदहुसेनः शिरः श्मश्रु कचग्राहं भुवि निपात्य भृशं
कुट्टितः, श्वसन् मुक्तः । ततो ज्ञात वृत्तान्तेन तत् पित्रा हसन-
खा महाशयेनातीव निर्मत्तितः, रे पुत्र पाश ? त्वादृशोऽवमो
मत्कुले कथंजातः अस्मत्पूज्य पूज्यानामविनयो वाचाऽपि

कृतो दुःस्वायैव केवलमस्मत्प्राणास्तु तद् दत्ता एव किमधि-
कलपितेन । तत्र हसनखां नवावेन बहुभक्तिपूर्वकमारा-
धिताः । तदुक्तम्-दर्शितप्रत्ययं को हि, नाराधयति सत्तमम् ।
ध्वस्तध्वान्तं नमेदीप्तं, रविं को न निषेवते । इति ॥५॥

अर्थ—फिर अटक नदी के दरिया में, समर्थ नामक साहू की द्रव्य
से भरी हुई नाव को तिराबी । इससे वहाँ के हिन्दू और मुसलमान बहुत
प्रभावित हुए । वहाँ से लौटकर आते हुए सूरिचरणों ने रोपड़ नगर में
एक बृद्ध भ्रातृका के गलते कुष्ठ का निवारण किया । ४ । फिर सरस्वती
पत्तन में भयङ्कर अकाल से चिन्तित मुसलमानों ने मुहम्मद हुसेन से कहा
कि बगियों ने इन यतियों को वर्षा रोकने के लिए यहां रक्खा है, यह
सुनकर उस बुबुद्धि ने लोगों के सामने कहा कि ये सब यति अगर यहां से
नहीं जाएंगे तो मैं इनके केश पकड़ कर बाहर निकाल दूंगा, यह बात
किसी के मुंह से सुनकर परम पुण्यशाली और लोकोत्तर अतिशयधारी
श्री श्री पूज्य ने कहा—ऐ यतियों ? यहां से शीघ्र ही विहार कर देना
चाहिए क्योंकि—दो तीन दिनों में यहां जो होने वाला है उसे यही
बुबुद्धि देखेगा, यह कहकर श्रीपूज्य विहार करने लगे तब भावकों ने
कहा—स्वामी ! हम सब भी आपके चरणों के आश्रित, पीछे चलते हैं,
ऐसा कहने से श्री पूज्यजी वहीं ठहर गये । बाब तीसरे दिन भोरड के यवनों
ने सवेरे ही आकर बाहर निकले हुए मुहम्मद हुसेन को शिर तथा दाढ़ी के
केश पकड़ कर जमीन पर गिरा के बहुत पीटा और सिसकते जान
छोड़ दिया, मालूम होने पर उसके पिता हसन खां महाशय ने उसकी बड़ी
भत्सना की और कहा—रे पुत्र ! तुम्हारे जंसा नीच हमारे वंश में कैसे
उत्पन्न हुआ, कि हमारे पूज्यों के पूज्य का वचन से भी अविनय करना
बुद्ध के लिए होता है । हमारे प्राण तो उन्हीं के दिए हुए हैं, अधिक क्या
कहें ? वहां हसनखां नवाब ने बहुत भक्ति से श्रीपूज्य की आराधना की
कहा भी है—परिचय दिखाये हुए सत्पुरुष की आराधना कौन नहीं करता,
आकाश में अन्धकार का नाश करने वाले दीप्तिमान् सूर्य का सेवन कौन
नहीं करता ।

मूल—ततो भट्टनेर मार्गेऽति तृषाकुला करमवाहकाः सद्गुरु ५१

चरण स्मरन् परायणास्तस्त्वयमष्टचरममृतोष्मं पानीयम्

पिबन् ६ । ततः सं० १७८४ वर्षे श्री बीकानेर नगरे पादा-
वधारितास्तत्र प्रत्यर्थि—द्विप—पंचाननं श्री सुजानसिंह
महाराजेन विशेषतः सन्मानिताः दृष्टप्रत्ययतया तत्रत्यैः सर्वैरपि
राजकीय पुरुषैः समेत्य स्वपर—पञ्चाभित—जन—मनोहारी
महान् प्रवेशोत्सवोऽकारि । एका प्रतोली चोरवेटिका कृता
अपरा सूरवंशीया—नामिति प्रतोलीद्वय—मंडनं चित्रकूटदेव
जातम् । श्रीफलैः प्रभावना व्यवायि । हर्षावेगात्परवशैरिव
श्राद्धैः सूरणा मुकनदासजीकानां गृहे क्षमाश्रमण—विहरणं
कृतम् । द्वितीय दिवसे आचार्य प्राणनाथजीकैरागत्य श्री
महाराज कृतदंडवत्प्रसक्त—निवेदनमकारि, तदा श्री श्री-
पूज्यचरणैरपि यानिकानिचिद् वचनानि विहितानि तानि
श्रीमन्महाराज—कुंजरैः प्रतीतानि सांकेतिकतया (सद्यः
फल तथा) वृत्तानि । ॥७॥

अर्थ—फिर मट्टनेर के मार्ग में प्यास से व्याकुल ऊँट के चालक लोगों
ने सहगुरु के चरण स्मरण के प्रभाव से उसी क्षण भाग्य से प्राप्त अमृत के
समान पानी प्राप्त किया । ६ । बाद संवत् १७८४ वर्ष में श्री पूज्य बीका-
नेर पधारें, वहाँ विपक्षी रूप हाथी के लिए सिंह के समान श्री सुजानसिंह जी
महाराज ने परिचय प्राप्त होने से विशेषतः सम्मानित किया । वहाँ के
सभी राजकीय पुरुषों के संग स्व-पर पक्ष के अगणित जनों के साथ बड़ा
मनोहर प्रवेशोत्सव किया । एक प्रतोली चोरवेटिक की और दूसरी सूरवंशी-
यों की, इस तरह दोनों प्रतोली-द्वारों का मंडन आश्चर्यकारी था । हर्षातिरेक
से परवश की तरह भावकों ने श्री फलों की प्रभावना की, दूसरे दिन मुकन-
दास सूरणा के घर क्षमाश्रमण ने आहार लिया । आचार्य प्राणनाथ जी
ने आकर श्री महाराज द्वारा किया गया दंडवत्—नमस्कार निवेदन किया,
तब श्री पूज्यचरण ने जो कुछ भी वचन कहे वे महाराज को सद्यः
फलवाचक प्रतीत हुए ।

मूल—तत्र पुरे श्री श्रीपूज्यपार्द्वतुर्मास द्वितीया कृता ततो मूलवादि

जनपदेषु विहृत्य सिंहाद्धेनुमोचन निर्द्धन—आद्धस्य सुत-
धन-वरप्रदान देवलिया नगरे कीटिकामत्कोटक भूयस्त्वनिरा-
करण-मटेव-राशिशुकस्य नगरमुख्यता प्रतिपादन प्रभृतयोऽने-
केऽवदात निहरा जाताः । पुनर्मंदसौर नगरेऽतीवनिःस्वता
विदित सतत सद्भक्ति भावित चेतस्क खंजमृजा आदलवेगकस्य
शुद्ध वचोऽमृत पानानन्तर मुक्तं त्वं याहीतः सकल मालवाना-
माधिपत्यभृद् भविष्यसीत्याकर्ण्यैवोजयिन्यभिमुखं चलत-
स्तस्यानेके महाराष्ट्रिकाश्चारोहा मिलितारत प्रतिगदितं त्वमस्म-
त्पुरोगमो भूत्वा ग्रामपुरादीनि दर्शय यथास्मभवीन राज्य
संस्था समीचीना जायेत, तदा तेनामेति भणित्वा तदुक्तं कृतं,
पश्चान्नाह्ना साहिबकस्य दाक्षिणात्यानामधिपस्य मिलितस्तेनो-
ज्जयिनी मंदसौरेंदोरनाम्नां बृहत्पुराणामाधिपत्यं प्रददे ।
ततः सोऽतीव बलवान् प्रतापी यवनोऽपि हिंदुकवत् परममक्रो
जातः श्री श्रीपूज्य चरणानाम् ।

अर्थ—उस नगर में श्री श्री पूज्यपाव ने दूसरा चातुर्मास किया फिर
मालवादि देशों में विहार करके सिंह से गाय को छुड़ाना और निर्धन आधक
को पुत्र एवं धन का वर प्रदान करना, देवलिया नगर में कीड़ियों एवं
मकोड़ों का निवारण करना, मटेवरा के बालक को नगर का मुख्य कहना
आदि अनेक शुद्ध प्रभावना के काम हुए । फिर मंदसौर नगर में अत्यन्त
गरीबी तथा सद्भक्ति से स्निग्ध हृदय वाले अवलवेग खां को श्री श्री पूज्य
ने उपदेश वचनानामृत पान के बाद कहा—तू यहां से जा सारे मालवा का
स्वामी हो जायगा । यह सुनकर वह उज्जयिनी की ओर चल पड़ा रास्ते में
अनेक महाराष्ट्रीय घुड़सवार मिले और उसको बोले कि तुम हमारे आगे
होकर ग्राम नगर आदि बिलाओ जिससे हमारी नवीन राज्य संस्था ठीक
बनी रह सके । तब उसने हां कहकर उसके कथनानुकूल किया । पीछे
नान्हा साहब दक्षिणी लोगों के अधिनायक मिले, उन्होंने उज्जैन, मंदसौर,
और इन्धौर जैसे बड़े नगरों का उसको स्वामित्व-अधिकार दे दिया,—तब वह

अत्यन्त बलवान् प्रतापी मुसलमान भी हिन्दू की तरह थी श्री पूज्य का परम भक्त बन गया ।

मूल—ततः श्री नागौरपुरे सं० १८१० समेताः सम्यक् प्रवेश महोऽ-
जनि, तत्राकस्मादाक्षिणात्यैर्निरुद्ध-विधिधासारप्रसारं नगरं
विहितं बृद्ध भावेन दृष्टिप्रचारो हीनो जातः । विवृति त्याग-
रूपया तपः श्रिया शरीरमपि सखेदं जातं, वर्षद्वयं तत्र स्थित्वा
ततो यथाकर्थाचित् बीकानेर पुरे समेताः तनुशक्तेरभावेन
प्रवेशनमहोऽपि न कृतः, चतुर्मास चतुष्कमकारि । ततो विहि-
तानशूनैः सं० १८१६ आश्विन कृष्ण सप्तम्याः प्रातर्दिनं पञ्च-
कानन्तरं स्वर्गोर्मंडितः ४४ समाः पदभोगः । ७०,

अर्थ—फिर सं० १८१० में श्रीपूज्य नागौर में पचारे प्रवेशोत्सव हुआ । वहां पर अचानक दक्षिणात्यो ने नगर के अनेक आसार प्रसार बन्द कर दिये थे । बृद्धावस्था के कारण श्रीपूज्य की दृष्टि कमजोर हो गई—इधर विवृति त्याग रूप तप से शरीर भी क्षीण हो गया था । अतः दो वर्ष तक वहां विराज कर फिर जैसे तैसे भी बीकानेर पधार गए । शारीरिक शक्ति की कमी से प्रवेश महोत्सव भी नहीं किया । चार चातुर्मास किए और फिर अनशन करके सं० १८१६ आश्विन कृष्ण सप्तमी को प्रातः पांच दिन के संभारे से स्वर्ग लोक को अलंकृत किया । ४४ वर्षों तक पद भोग किया ।

मूल—तत्पट्टे श्री भोजराज सूरयो वोहित्यान्वया जीवराजः पिता
कुशलाजी जननी रहासरे ग्रामे जन्म, फतेपुरे चारित्रं, पदं तु
श्री नागौरपुरे । सं० १८१६ वर्षे काल्पुन मासे मालवानी
वृत्ति पंचाशद् यतिवर परिकरिताश्विरं विहृत्य मेढतापुरे दिन
त्रिकाऽनशन प्राप्त-स्वर्गाभिभवन् । वर्ष षट्कं पदमुक्तिः, एषां
सप्त गुरुभ्रातरोऽभूवन्—श्री लालजी १ जयसिंहजी २ जयराज
जी ३ श्री भोजराज जी ४ श्री लक्ष्मराज जी ५ श्री दूदा जी ६

श्री रामचन्द्र जी ७ क्षेमचंदजी ८ नाम धेवा अष्टौ शिष्याः श्री
मज्जगजीवनदाससूरीणां दिग्गजा इव ७१ ।

अर्थ—उनके पाट पर श्रीभोजराज सूरि हुए, वोधरा वंश के
जीवराज जी पिता और कुशलाजी माता थी । रहासर ग्राम में जन्म तथा
फनेपुर में बीक्षा और नागोर में सं० १८१६ फाल्गुन मास में पद ग्रहण
किया । मालवीय पचास यतियों से श्रीपूज्यजी चिरकाल विहार कर मेड़ता
पधारे वहां तीन दिन के अनशन से आपका स्वर्गवास हुआ । छः वर्ष तक
पद पर रहे । इनके सातगुरु भाई हुए जैसे—श्री लालाजी १, जयसिंहजी २,
जयराज जी ३, श्री भोजराज जी ४, श्री लखराज जी ५, श्री दूबा जी ६,
श्री रामचन्द्र जी ७, क्षेमचंद जी ८, नाम के श्रीमज्जगजीवनदास जी के
दिग्गज की तरह ये आठ शिष्य थे ।

मूल—तत्पट्टोदय कारिणः श्री हर्षचन्द्र सूरयः नवलखा गोत्रे पिता
भोपतजी नामा, माता मक्तादेवीति करणुं ग्रामे जनुः, सोजत
पुरि चारित्रं, श्री नागोरपुरे पदमापुः सं० १८२३ वैशाख
शुक्ल ६ दिने पदं, वर्ष १६ भुक्तं । श्रीहर्षचन्द्रसूरेर्विजयति
धर्मराज्ये महान्तोऽमीयतयः संघाटकधराः तथाहि अमयरंजजी,
अमीचंद जी, लखराजजी, उदयचंदजी, गुलाबचंद जी, मेघराज
जी, हीरानंदजी, आनंदरामजी, प्रभृतयो मरुधरदेश समीप
वासिनो मालवदेशे मनसारामजी नैणसीजी प्रमुखाः ३२,
उदीच्यां सेठू जी, जयराज जी, हरजी जी, मंगूजी, हरसहाय-
जी, हरचंदजी प्रमुखाः ११ । एषां वैदुष्यं यादृशं जातं तादृश-
मत्र युगे न कस्याऽपि भूतम् । विस्तरस्तु मत्कृत पद्यबंध पट्टावली-
तो ज्ञेयः । सपादजयपुरे विहिताऽनशना दिन त्रयं दिवं भूषया-
मासुः ७२ ।

अर्थ—उनके पाट का उदय करने वाले श्री हर्षचन्द्र सूरि हुए ।
नवलखा गोत्रीय पिता भोपत जी और माता मक्तादेवी थी, करणुं ग्राम में
जन्म और सोजतपुरी में बीक्षा तथा नागोर में सं० १८२३ वैशाख शुक्ल

६ के दिन पद प्राप्त किया, १६ वर्ष तक पद पालन किया। श्री हर्षचन्द्र सूरि के धर्म राज्य में ये बड़े २ यति संघाड़ा के धारक थे जैसे—अमयराम जी १, अमीचंद जी २, लक्ष्मराज जी ३, उदयचंद जी ४, गुलाबचंद जी ५, मेघराज जी ६, हीरानंद जी ७, आनंदराम जी ८ प्रभृति, मारवाड़ के पास रहने वाले मालवा में मनसाराम जी, नैणसी जी प्रमुख ३२। उत्तर में में सेहू जी, जयराम जी, हरजी जी, मंगू जी, हरसहाय जी, हरचंद जी प्रमुख ११ थे। इनकी विद्वत्ता जैसी थी वैसे इस युग में किसी की नहीं हुई। विस्तार मेरी की हुई पद्यबंध पट्टावली से जानना चाहिए। तवाई जयपुर में तीन दिन का अन्नशन करके आप स्वर्ग सिधारे।

मूल—तत्पद्मे श्री श्रीपूज्याचार्या श्री श्रीलक्ष्मीचन्द्रजी नामानः,
कोठारी गोत्रं जीवराजजी नामा पिता जयरङ्गदेवी जननी
“नवहर” निगमे जन्म, चारित्र महिपुरे स्वहस्तेन
पदमपि तदैव। सं० १८४२ आषाढ़ कृष्ण २ दिने। तत्र
चातुर्मासद्वयी कृता। व्याख्यान—प्रत्याख्यानानि—सम्यग्धर्म-
कर्म प्रवर्तितं, श्रीसंध मनोरथाः सफलीकृतास्ततो वेनातट
निगमे श्रीसंधेन महोत्सवेन चतुर्मासी कारिता ततो
जोजावर नगरे पंचविंशति यति—समन्विता वर्षद्वयं स्थिताः।
ततोऽन्यत्राऽनेक क्षेत्राणि निज चरण न्यासेन पूतानि विहितानि
ततो बीकानेर नगरादिषु प्रभूत शुद्ध भाविताःकरण श्रद्धालूनां
मनांसि प्रमोद मेदुराणि विधाय श्री सुनाम “पठ्यालांवाला”
धर्म क्षेत्र, रोपड़, होशियारपुरा, जेजो जगद्रम्य, कृष्णपुरा
खंडेलवाल श्रावक मंडित पंडित यति प्रमुखानेकच्छेक जन-
मनस्तु अमंदानन्दमुत्पादयन्तोऽमृतसरो लवपुरी शालि-
कोटाद्यदभ्रक्षेत्रेषु विहरन्तः श्री श्रीपूज्याः पुनः सर्वद्वि चारु
चूरु निगमादिषु चतुर्मास्योऽनेकशो विधाय हितकृद्। धर्म
प्ररूपणा दिल्ली, लक्ष्मणपुरी (लखनऊ) काशी, पाडलि-
पुत्र, मकसदावादादि स्थानीयेषु संस्थित्य च पुनर्दिन्ती

नगरे चतुर्मासीद्वयमकाष्टः । ततो भूरि परिकरान्विताः
 सुश्रावक प्राभृतीकृत शिविकोत्तमारूढा मरतपुर, गोद
 निगमादिषु विहृत्य कोटानगरादिषु च दाक्षिणात्यमहिता
 मालवादिजनपदेषु च बहुशोऽशेष श्रीसंघमनोविनोदाय
 संस्थितास्ततः श्री नागोर नगरमधिष्ठाय जालोर जेसलमेरु
 श्रीसंघेन बहुविज्ञप्तिपत्राणि संप्रेष्याऽऽहूताः । श्रीमद् मदन्त
 पुंगवाः सुखेन शुद्ध सुकृतोपदेश कादंबिन्याऽस्तोक लोक-
 हृद्गत रौरवतामपनीतवन्तः । ततो विहृत्य फलवर्द्धि पुरी
 प्रभृति क्षेत्रेषु चिरं चतुरचेतश्चमत्कारि हारि विहार करणेन
 भ्रज्जू निगमे समेताः ! राजाधिराज महाराज श्री रत्नसिंह-
 देवैः प्रज्ञाल प्रवर्ह मुनिवंशाभरण श्री गुरुचरण वनज
 भजनावाप्त परमानंद महर्षि वचन रचना चारिमातिशय
 प्रीणित चित्तै रजतयष्टि शुद्ध लेख संप्रेषण पूर्वकं बहु विज्ञप्य
 श्रीबीकानेरपुरे पुरातन पृथ्वीराज कारित प्रवेशोत्सवातु-
 कारिणा महामहेन प्रवेशिता, विशेषतो भक्तियुक्तिः कृता कारिता
 च एक विंशति यति मधुषाच्चिंत चरणाः सुखेनानन्दत्रयमस्थुः ।

अर्थ—उनके पाट पर विजयमान श्री श्रीपूज्य लक्ष्मीचन्द्रजी आचार्य
 हुए कोठारी गोत्र के जीवराजजी पिता और जयरङ्गदेवो नाम की माता थी,
 नोहर में जन्म और अहिपुर में बीक्षा अपने हाथ से । पद भी वहीं सं०
 १८४२ आषाढ़ कृष्ण २ को हुआ । वहाँ पर दो चौमासे किए । व्याख्यान
 और त्याग पचखान आदि से भली-भाँति धर्म प्रवृत्ति हुई । संघ का मनोरथ
 सफल किया । उसके बाद मंडी में श्रीसंघ ने महान् उत्सव पूर्वक चतुर्मास
 कराया । फिर जोजावर नगर में २५ यतियों के साथ दो वर्ष तक रहे ।
 फिर अनेक दूसरे क्षेत्रों को अपने चरण न्यास से पवित्र किये । बाद बीकानेर
 आदि नगरों में प्रचुर शुद्ध भावना भावित चित्त वाले श्रावकों के मन को
 परम प्रसन्न करके श्री सुनाम, पटियाला, अंबाला, धर्मक्षेत्र, रोपड़,
 होशियारपुर जेजो, जगद् रम्य—जगराबा कृष्णपुरा जो कि संडेलवाल

आत्थकों से मंडित है अनेक पंडित और यति प्रमुख कुशल लोगों के मन में अत्यन्त आनन्द उत्पन्न करते हुए अमृतसर, लवपुरी, श्यालकोटादि क्षेत्रों में बिहार करते हुए श्री श्रीपूज्य फिर सब श्रद्धि से युक्त सुन्दर चक्र शहर आदि में अनेक चीमासे करके हितकारी धर्म प्रवृत्ति करते हुए दिल्ली, लखनऊ, काशी, पटना, मकसूबाबाद आदि स्थानों में ठहर कर फिर दिल्ली नगर में दो चीमासे किए। वहां से बहुत परिकर सहित सुभावकों द्वारा लायी गई उत्तम पालकी पर आरुढ़ हो भरतपुर, गोद मंडी में बिहार कर कोटा आदि नगरों में दक्षिणी लोगों से पूजित होकर मालव भूमि में समस्त श्रीसंघ के मनोविनोद के लिए बहुत काल ठहरे। वहां से नागौर नगर पधारे वहां जालोर, जेसलमेर श्री संघ ने बहुत विनती पत्र भेजकर पधारने को आग्रह किया। श्रीमद् भदन्त पुंगव ने सुख पूर्वक शुद्ध पुण्योपदेश कथा से समस्त लोगों के हृदयगत पापों को दूर किया। वहां से बिहार कर फलवर्द्धि पुरी प्रभृति क्षेत्रों में चिरकाल तक चतुर चित्त को चमत्कृत और मोहित करने वाले बिहार से भृङ्गू निगम पधारे। राजाधिराज श्री रत्नसिंह देव ने प्रज्ञावान् श्रेष्ठ भुनि वंश के आभरण श्री गुरुचरण कमल के भजन से परम आनन्दित हो तथा महर्षि वचन से अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर चांदी की छड़ी और शुद्ध लेख भेजकर और बहुत निवेदन किया और बीकानेर में पुराने राजाओं के द्वारा किए गए उत्सव के अनुसार महान् उत्सव के सङ्ग उनका नगर प्रवेश कराया, विशेषरूप से भक्ति युक्ति की एवं कराई। २१ यति मधुपों से पूजित चरण श्री पूज्य सुख से वहां तीन वर्ष ठहरे।

मूल—इतश्चोदीच्य यावत् क्षेत्र श्रीसंघेन सुनामस्थ यति रघुपति प्रति कथापितं बहु वत्सर वृन्दमतीतं श्री श्रीपूज्य पाद दर्शनामृत सतृष्णमस्मदीय मानसं वर्धति तेनाशु विज्ञप्ति-पत्राणि संप्रेष्य श्री सूरयः समाकार्याः। तदा तेनाऽपि बहुशस्त्रदाः विसृष्टाः संदेशहराश्च, अस्मिन्नवसरे स्थैर्योदार्यादि गुणावली-समुपार्जित हीराड्डहास-राका-शशाङ्क-कर-निकर-सोदर यशः स्तोमैः श्री श्रीपूज्य चरणैः सद्यः प्रसद्य समागम दल द्वारा ज्ञापितमागमनम्। ततो बीकानेरान्महता महेन विहृत्य नवहर निगमं पुनानै राजपुरा, रोदी, बुडलाडादिषु समागत्य सुनाम

नगरे चातुर्मासी कृता । तत्र लद्धराजजीकानां प्रपौत्र-शिष्यो
 रघुनाथर्षिः शिष्य चतुष्टय युतः अपरेऽपि विंशति साध-
 वस्तैः परिवृताः श्रीमद्मदन्तपुंगवाः सदागमावलीं
 सम्यगव्याख्यातवन्तः । ततो विद्वत्स्य सम्मानक धर्मक्षेत्र
 सङ्गौरा, अंबाला, बनूढ़, रोपड़, नालागढ़, लुदिहाना प्रमुख
 क्षेत्राणि स्पर्शना-पूतानि विधाय च सं० १८६० वर्षे श्रीमत्पट-
 याला नामनि पुटमेदने श्रावकैश्चतुर्मासी कारिताऽस्ति, तत्र
 सुखेन धर्म कर्म प्रवर्तयन्तो विराजन्ते, ते सर्व जनपदेषु पूर्व-
 वद् विजयमानाश्चिरं जीव्यासुः कोटि दीपमालिकाः । एत-
 दाज्ञया श्री संघः प्रवर्त्ताम् । पट्टाचल्याः प्रबन्धोऽयं, रघुनाथ-
 पिणा द्रुतम् । लिखितः सुगमः शोध्यो, विशेषज्ञैः पुनर्मुदा
 (१) इति श्रीमद् विबुध चक्र शक्र श्रीमुनिराजसिंह चरणान्ज
 चंचरीक रघुनाथर्षिणा पट्टावली प्रबन्धो रचितः लिखितः ।
 श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । श्री अहिपुराभिधान स्थानीये
 श्रेयः श्रेण्यस्सन्तु । मुनि संतोषचन्द्रेण लिपिकृतं,
 संवत् १८६६ वर्षे-प्रथम चैत्र शुक्ल चतुर्दशी तिथौ
 भृगुवासरे ।

अर्थ—इधर उत्तरीय यावत क्षेत्र के श्रीसंघ ने सुनाम में स्थित रघुनाथ
 यति को कहलाया कि बहुत वर्ष हो गए श्रीपूज्यचरण के दर्शनामृत के
 लिए मेरा मन अतिशय सतृष्ण बना हुआ है । इससे शीघ्र विनति पत्र भेज
 कर श्री सूर को बुलाना चाहिए । तब उन्होंने भी बहुत पत्र लिखे और दूत
 भी भेजे, इस अवसर पर स्थिरता, उदारता और गंभीरता आदि गुणावली
 से प्राप्त होकर से अट्टहास वाले और युनम के चन्द्र किरण वत् धबल यश
 समूह वाले श्री श्रीपूज्य ने शीघ्र उत्तर पत्र द्वारा आने की सूचना भेज दी ।

फिर बीकानेर से बड़े उत्सव के साथ बिहार करके नबहर निगम
 को पवित्र करते हुए राजपुरा, रोबी, बुड़लाडा आदि क्षेत्रों में होकर सुनाम
 नगर में चातुर्मास किया । वहां लद्धराजजी के प्रपौत्र शिष्य रघुनाथ ऋषि

चार सिद्धों के साथ और अन्य बीस साधुओं से घिरे श्री श्रीपूज्य सतत आगम समूह की सुन्दर व्याख्या करते रहे । वहाँ से बिहार कर सम्मानक, धर्म क्षेत्र, सढ़ीरा, अंबाला, बनूड, रोपड़, नालागढ़, लुधियाना, प्रमुख क्षेत्रों की स्पर्शना से पवित्र बनाते हुए सं० १८६० वर्ष में श्रीपटियाला नामक नगर में आत्माओं ने आनुर्मासी कराई । वहाँ पर सुख से धर्म कर्म कराते हुए बिराजते रहे । वे सब देशों में पूर्ववत् विजय प्राप्त करते हुए चिरकाल तक जीएँ । करोड़ों दीप मालिका इनकी आशा से श्री संघ जलता रहे ।

प्रशस्ति—यह पट्टावली का प्रबन्ध रघुनाथ ऋषि ने शीघ्रता से सुगम रूप में लिखा है—विशेषज्ञों को चाहिए कि प्रमोद भाव से इसका संशोधन करें । इस प्रकार विबुधों में इन्द्र के समान श्रीराजसिंह मुनि के चरण सेवक रघुनाथ ऋषि ने पट्टावली प्रबन्ध की रचना की तथा लिखा । श्री हो, कल्याण हो । श्री अहिपुर नाम के स्थान में कल्याण की अर्पणियाँ हों । मुनि सन्तोषचन्द्र ने सं० १८६६ के प्रथम चैत्र शुक्ल चतुर्वशी शुक्र में इसको लिपि बद्ध किया ।



(२)

गणि तेजसी कृत पद्य-पट्टावली

[चार धन्दों की इस पट्टावली में गणि तेजसी (तेजसिंह) ने लोकागच्छ परम्परा से सम्बन्धित रूपजी, जीवराजजी, बड़े वरसिंहजी, लघु वरसिंहजी, जलवंतजी, रूपसिंह जी, दाभोदरजी, क्रमसिंहजी, तथा अपने गुरु केशव जी का पट्ट-क्रम से स्तवन किया है ।]

[१]

रूपजी बघारयो रूप, सिधाति कहाँ सरूप,
 जैन धर्म है अनूप, बया धर्म रोपीयो ।
 मान माया मोह मेदि, बया धर्म लेइ बेदि,
 ज्ञान सु पावन पेठ, हिंसा धर्म लोपीयो ॥
 पंच व्रत रूप आधि, संयम कुं लेइ साधि,
 क्षमा लग गहे हाधि, कर्म केरे कोपीयो ।
 द्वादश अंगी विचार, सिद्धांत सब ही सार,
 चित्त में सदाबघार, भ्यान अंग ओपीयो ॥

[२]

जीवजी विचारघो जीव, छकाय मम सबीव,
 संसार की एह नीव, जीव रक्षा कीजीये ।
 तजीये कुटुंब मार, मुक्ति के धन अपार,
 मनमें करो करार, साधु व्रत लीजीये ॥

बोसी तेजपाल तन, साधु में भयो रतन,
 लोक कहे धनि धनि, दान धनय दीजीय ।
 लोक कुं कहे विचार, सुणीये सिद्धांत सार,
 तजीय सब संसार, कर्म कूँ न धीजीय ॥

[३]

तस्स पाटि प्रधान, हरियुगम सुगम, जिन शासन सोम बधी ।
 जसवंत जिहाज भयो जसको, जस उजर लीरसो रूप ऋद्धि ॥
 रूपसी रूप अनोपम उपम, देइ गुण ग्राम करे सुबुधी ।
 तस्स पाटि पटोवर, भये दमोदर, शील शिरोमणी ज्ञान निधी ॥

[४]

कर्म प्रताप भयो कर्मसिंध जू, कर्म मे वारण सिंध सबाइ ।
 पाट प्रताप विराजित केशव, ताकी जू है नवरंगदे माइ ॥
 नेतसी नंद, लुंका गच्छ इंद, कानी ताराचन्द ए चीनती पाइ ।
 गावत गुण सदा गणि तेजसी, गोतमसी गुरु की गिरूयाई ॥

॥ इति पट्टावली ॥

(३)

संक्षिप्त पट्टावली

[यह पट्टावली कुंवरजी-पक्ष से संबंधित है । इसमें लौकागच्छ की उत्पत्ति के समय से लेकर भांशाजी, भोदाजी, वृंनाजी, भोभाजी, जगमालजी, सरवाजी, रूपजी, जीवजी, कुंवरजी, श्रीभस्वजी, रत्नसीजी, केशवजी, शिवजी, संघराज जी, खुशभस्वजी तथा तत्कालीन आचार्य भागवन्दजी (संवत् १७६३) तक का कालक्रमानुसार संक्षिप्त पट्ट-परिचय, प्रस्तुत किया गया है । इसका लिपि काल संवत् १८२७, ज्येष्ठ कृष्णा १३ बुधवार है ।]

॥ ॐ नमः सिद्धं ॥

प्रथम संवत् १५२५ वर्ष, कालूपुर मध्ये, साहलको, आणन्द सूत, जाति ना बीसा श्रीमाली, भितमालना वासी अनं कालूपुर ना साह लक्ष्मी सी दया धर्म प्रगट हूओ ।

संवत् १५३१ वर्षे ऋषि श्री मांणा सीरोही ना वेश मध्ये अरहट्ट बाढाना वासी, जाति पोरबाड, अहमदाबाद मध्ये स्वयंमेव दिव्या लीधी ॥१॥ ऋषि भद्रा^१ सीरोही ना वासी, जाति ओसवाल, गोत्र साधुरीया, संघवी तोला ना भाई जणा ४५ संघातं ऋषि भाणानं पासं दिव्या लीधी ॥२॥ ऋषि श्री नूना ऋषि भद्रा पासं दिव्या लीधी ॥३॥ ऋषि श्री-मीमा पाली गामना वासी, जाति ओसवाल गोत्र लोढा, ऋषि श्री नूना पासं दिव्या लीधी ॥४॥ ऋषि श्री जामाल उत्तराध माहै, सधर गाम-

ना वासी, जात ओसवाल, गोत्र सूराना, ऋषि श्री भीमा पास दिह्या लीधो भभरी मध्ये ॥५॥ ऋषि श्री सुरवा, जात श्रीमाली सीध, डाढी लीना वासी, संवत् १५५४ वर्ष, ऋषि श्री जगमाल पास दिह्या लीधो ॥६॥ ऋषि श्री रूपजी अणहट्टवाडा पाटण ना वासी, जात ओसवाल, गोत्र वेद मुहता, संवत् १५५४ जन्म-संवत्, १५६८ दिह्या संवत्, १५८५ संवारो पाटण मध्ये दिन २५ नो तोहां श्री जीव जी न पववी दीधो । ऋषि श्री रूपजी पाटण मध्ये स्वयंमेव दिह्या लीधो ॥७॥ ऋषि श्री रूप-जी न पाटं ऋषि श्री जीवजी दोसी, तेजमाल^१ ना पुत्र, माता कपूर दे, सूरत ना वासी, जाति ओसवाल, गोत्र देसडला, संवत् १५७८ वर्ष सूरत मध्ये ऋषि श्री रूपजी पास दिह्या लीधो । ऋषि श्री जीवजी माह सुद ५ वरस २८ मै दिह्या लीधो । संवत् १६१३ वर्ष बुतीय जेष्ठ वदि-१० संवारो कीधो दिन ५ नो संवारो आराध्यो ॥८॥

ऋषि श्री जीवजी न पाटं ऋषि श्री कुंयरजी, पिता ऋषि लहुया, माता रुडाई, जात श्रीमाली, माता पिता आदि जणा ७ संघातं संवत् १६०२ वर्ष जेष्ठ सुदि ६ दिने, ऋषि श्री जीवजी पास दिह्या लीधो ॥ ९ ॥ ऋषि श्री कुंयरजी न पाटं ऋषि श्रीमल्लजी, अहमदाबाद ना वासी, जाति पोर-वाड़, साह थावरना पुत्र, माता कुंयरी, संवत् १६०६ वर्ष मागसिर सुद ५ दिने, अहमदाबाद मध्ये, ऋषि श्री जीवजी पास दिह्या लीधो ॥ १० ॥

ऋषि श्रीमल्लजी न पाटं ऋषि श्री रत्नमीजी, नवानप्र ना वासी, जाति श्री भीमाली, गोत्र सील्हाणी, साह सूराना पुत्र, माता सूरवदे, बीवाह मेल्या पछी कुवारे जणा ९ संघातं अहमदाबाद मधे, संवत् १६४८ वर्ष वइसाख वदि १३ दिने, श्रीमल्लजी पास दिह्या लीधो । तिबारं पछं संवत् १६५४ वर्ष जेष्ठ वदि ७ दिने श्रीमल्लजीय स्वयंमेव पववी दीधो ॥ ११ ॥ ऋषि श्री रत्नसौंह जी न पाटं ऋषि श्री केशवजी, मारुमाड मध्ये, डुनाडा ना वासी, जात श्री भीमाली, साह बजाना पुत्र, माता जयवंतदे, डुनाडा मध्ये संवत् १६७६ वर्ष फागुण वदि ५ रत्नसौंह जी पास, रत्न तिलोकसी केसवजी पास जणा ७ संघातं दिह्या

लीधी । संवत् १६८६ वर्षे जेष्ठ सुदि १३ गुरौ रत्नसींहजी ने संयारे संघ मिली ने केशवजी ने पदवी दीधी ॥ १२ ॥

आ० श्री केशवजी ने पाटे आ० श्री शिवजी, नवानगर ना बासी, जात श्रीमाली, संघवी अमरसीह ना पुत्र, माता तेजबाई, संवत् १६५४ वर्षे माह सुद १ नों जन्म संवत् १६६६ वर्षे फागुण सुदि २ दिने आ० श्री रत्नसींहजी पास दिहया लीधी, संवत् १६८८ वर्षे जेष्ठ सुदि ५ सोमे चतुर्विध संघ पदवी दीधी, संवत् १७३४ वर्षे दिन ६६ नो संयारौ आराध्यौ ॥ १३ ॥ आ० श्री वजनो' ने पाटे आचार्य श्री मंधराजजी, सीढ पुर ना बासी, जात पोरवाड, संघवी बासाना पुत्र, माता बीरमदे, जणा ३ संघातै संवत् १७१८ दिक्षा चैत्र सुद ११ मंगल । संवत् १७०५ जन्म । पदवी संवत् १७२५ वर्षे माह सुद १३ । संयारौ संवत् १७५४ चैत्र बदि ११ तत पाटु आचार्य श्री सुखमल्लजी, संवत् १७४१ आलणपुर मध्ये, सिधराज जी पास दिहया लीधी । संवत् १७५५ पोस सुदि पदवी दीधी । संवत् १७६३ धोराजी मै संयारौ कीधी । ततपटे आचार्य श्री भागचंदजी, संवत् १७६० मागसिर वदि २ दिहया लीधी । संवत् १७६३ पदवी दीधी, पोस वदि ७, नवानगर मध्ये ॥

॥ इति पट्टावलि लुंका संपूर्ण संवत् १८२७ ज्येष्ठ वुदि १३ बुधवारे ॥

(४)

बालापुर पट्टावली

[यह पट्टावली भी कुंवरजी-पक्ष से सम्बन्धित है। प्रारम्भ में भगवान् महावीर से लेकर देवद्वि क्षमा प्रमथा तक ३५ पाठों का उल्लेख किया गया है। तदनन्तर लोकागच्छ की उत्पत्ति के समय से लेकर १७ आचार्यों—१-भाखाजी, २-भोदाजी, ३-रूनाजी, ४-भीमाजी, ५-जगन्नाथजी, ६-सरवाजी, ७-रूपजी, ८-जीवोजी, ९-कुंवरजी, १०-श्रीमल्लजी, ११-रतनसिंहजी, १२-केशवजी, १३-शिवजी, १४-संघराजजी, १५-धुखभलजी, १६-भागवन्दजी तथा तत्कालीन आचार्य १७-बाहलचन्दजी तक—का जन्म, माता-पिता, दीक्षा, पदवी, संन्यास, स्वर्गवास आदि के उल्लेख के साथ संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।]

॥ अथ श्री पट्टावली लिखीइ छे ॥

हवइ श्री महावीर नइ पाटे श्री सूधरमा स्वामी । १ । तेहने पाटे श्री जंबू स्वामी । २ । तेहने पाटे प्रम स्वामी । ३ । तेहने पाटे सिज्जं-मव स्वामी । ४ । तेहने पाटे यशोभद्र स्वामी । ५ । तेहने पाटे श्री-संभूति विजय स्वामी । ६ । तेहने पाटे भद्रबाहु स्वामी । ७ । तेहने पाटे धूलभद्र स्वामी । ८ । तेहने पाटे गिरी महागिरी सुहस्ती आचार्य

१६। तेहने पाटे सुप्रतिबद्ध आचार्य १०। तेहने पाटे इन्द्रदिक्ष
 आचार्य ११। तेहने पाटे आर्यदिक्ष आचार्य १२। तेहने पाटे
 सीहगिरि नामाचार्य १३। तेहने वयर स्वामी १४। तेहने पाटे
 आर्यरथ नामाचार्य १५। तेहने पाटे पूस गिरी आ० १६।
 तेहने पाटे फग्गुमित्राचार्य १७। तेहने पाटे धन गिरि आ० १८।
 तेहने पाटे शिव भूति आ० १९। तेहने पाटे आर्यमद्र स्वामी
 २०। तेहने पाटे आर्यनचत्र आ० २१। तेहने पाटे आर्यरक्षित
 आ० २२। तेहने पाटे आर्यनाग आ० २३। तेहने पाटे आर्य-
 जेहल आ० २४। तेहने पाटे आर्यविष्णु २५। तेहने पाटे आर्य-
 कालक नामाचार्य २६। तेहने पाटे आर्यमद्र २७। तेहने पाटे
 सपलित आ० २८। तेहने पाटे आर्यवृद्धि आ० २९। तेहने पाटे
 संघ पालक आ० ३०। तेहने पाटे आर्यहस्ती आ० ३१। तेहने
 पाटे आर्यधर्म ३२। तेहने पाटे आर्यसीह ३३। तेहने पाटे
 संमिल आचार्य ३४। तेहने पाटे देवदी गणी खमासम ३५।

॥ इति पट्टावली ॥

॥ अथ श्री लुंका गछ नी उत्पत्ति लिखिइं छे ॥

सं० १५२८ ना वर्षे, श्री अणहलपुर पाटन मध्ये, मेंतां लुकां बुद्धि
 ए श्री सिद्धांत लिखतां। सूत्रार्थ वांचो। सूत्र मध्ये प्रतिमा नो अधिकार
 किहाई नही, बीजा जतो पोसाल धारी भया। तिवारे ते लंके विचारी,
 बया धर्म नी सूत्र परपणा करी, गछ काढ्यो। अन्य दर्शनीय नाम लुंका-
 मती कहा। तिहांची लुंका गछ थपाणो।

शुभ मुहूर्त शुभ वेलाइ प्रथम आख्या ऋषजी इं श्री अमवावाह
 मध्ये। संवत् १५३१ ना वर्षे, न्याते पोरबाह, सीरोही वेश अरहठ बाडा
 गमना वासी, स्वयमेव बीक्षा लीधी। माटे मंडाणे मोटे रागे, घणो द्रव्य-

रूपीया मुकीने, तेहने पाटे ऋषि श्री भीदा जी ए बीक्षा लीधी । जातो ओसवाल, साथरीया गोत्र, सीरोही देश ना वासी, पोताना कुटुम्बी मनुष्य जण ४५ संघाते बीक्षा लीधी । घणो द्रव्य मुंकीने माणा ऋषि ना शिष्य थया । संवत् १५४० बीक्ष्या लीधी । ओजे पाटे ऋषि श्री ५ नूना जी थया । भीदाजी पासे बीक्ष्या लीधी संवत् १५४६ ना वर्षे थया, घणो द्रव्य मुंकीने थया । ४ चौथे पाटे ऋषि श्री ५ भीमा जी थया । पाली गामना वासी, जाति ना ओसवाल, गोत्र लोढा, लक्ष द्रव्य मुकीने ऋषि श्री-५ नूनाजी पासे बीक्ष्या लीधी । तेहना शिष्य थया । ५ पांचमे पाटे ऋषि-श्री ५ जगमाल जी उत्तराध मध्ये नवनरड गामना वासी, जात ओसवाल श्री भांभर मांहि बिल्या लीधी । सुराणा ना गोत्र ना ऋषि श्री ५ भीमा-जी पासे बिल्या लीधी । संवत् १५५० बीक्षा लीधी । ६ छठे पाटे ऋषि श्री ५ मरवोजी थया । पातसाह अकबर नो वजीर बीवान हता, रुपया कोड ५ द्रव्य हतो, ते मुकी बीक्ष्या लीधी । जाति श्रीमासी बीसा, संवत् १५५४ बिल्या लीधी । दिवाली दिनइ संवत् १५६६ निज हस्ते बिल्या लीधी । नवसें घरनी सामग्री श्री पाटण मध्ये लुंका गछना आवक थया । श्री पूज्या आचार्य श्री रूप ऋषि जी ओगणीस बरसनी बिल्या पाली । संवत् १५८५ पंचासीइ देवगति साधी । तास पाटे जीवो साह सूरति नगर ना वासी, तेजपाल साहना सुत, माता कपूरा, रूप ऋषि नी वाणी सांमली छठ्या । ३२ लाख मुह मंडी द्रव्य मुकी बीक्ष्या लीधी । लाख रुपया एक महोछवे खरच्या । पछे आचार्य श्री ६ रूप ऋषि जी पासे बीक्ष्या लीधी । तिवारे सूरति नगर मध्ये नवसें घर सभत्या लुंका आवक थया । आचार्य श्री ६ जीव ऋषि जी थया । तस पाटे ६ में आचार्य श्री-६ कुयरजी बाबी । जयकर लहु मुनि जस तात अमदाबाद मोहोछव बीक्षा ले जिण सात माणस साथे बीक्षा लीधी । जीव ऋषिजी पासे महा बिद्यामान पंडित कुंयरजी आचार्य थया, जिणे चोरासी ग्रह बरत्यां । पंचम आराना बिषे एहवा साधु हवा । पदवी महोछव श्री अहमदाबाद मध्ये कीधी । इहांथी नानो गुर माइ बरसंघजी बीजी पक्ष लुंकानी थइ । बरसंघ ने पदवी ओपत साहे देवरावी, तिहांथी बीजी पक्ष थई ।

आचार्य श्री ६ कुंवरजी ने पाट १० में श्रीमन्नुजी, ब्रह्मदाबाब ना बासी, घणो द्रव्य मुंकीने दीक्षा लीधी । आचार्य श्री ६ श्री मलजी थया । तस पाटे ११ में रतनसिंह नवानगर नाबासी, सोहलाणी बीसा श्रीमाली, स्त्री श्री वाइ कुंधारी मूंकी, नव जन नव मनुष्य संघाते, श्री बाई ना माता पिता, रतन सी ना माता पिता एवं नव जणा संघाते दीक्षा लीधी । आचार्य श्री ६ रतन नगर नेमीश्वर नो ओपमा पांचमा आराने विषे नेमनाथनी करणी करी । तस पटे १२ में केशवजी थया । मारवाड नव कोटी तें मध्ये ग्राम कनाडो आचार्य रतन सीहूनी बाणी सांमली घणा बेराग पाम्या । वार वरस बेराग परो रह्या । घणो द्रव्य मुंकी आचार्य श्री ६ रतन सीहू पासे दिह्या लीधी । पछे पववी घर थया । एक वरस पववी पाली । पछे देवागत थया । आचार्य श्री ६ केसवजी थया । तस पाटें १३ आचार्य-श्री ६ शिवजी थया । नवा नगर ना बासी, श्रीमाली पंच माई आचार्य रतनसीह नो उपदेश सांमली घणुं बेराग्य पाम्या । छती ऋद्ध मूंकी, घणी द्रव्य मूंकी आचार्य श्री ६ रतनसीह पासे दीक्षा लीधी । घणा सुत्र, सिद्धांत व्याकरण, काव्य न्याय शास्त्र, लाला ऋषे शील्या, मणाव्या । पछे पाटोघर थया । कृपा पात्र माहा बेरागो शुद्ध चारित्र ना पालक, कृपा सागर, गुणना आगर, एहवा आचार्य । श्री ६ शिवजी गणघर ओपमा तेहने १६ शिख थया । जातवंत कुलवंत क्रियापात्र सुधा साधु विद्यावंत शास्त्रना पारगामी ऋषि श्री ५ जगजीवन जो आदि देई पंडित शिष्य थया । एहवा मोटा आचार्य श्री ६ शिवजी थया जिरणे पांचमें आरानें विषे पांच पांडव नी करणी करी । जिरणे ६६ दिहाडा नो संथारो कीधो । तिबिहार संथारो बाकी दिन ६ रह्या, ते चौबीहार अणसण कीया एवं ६६ दिन नो संथारो लीधी । ब्रमदाबाब भवेरी वाडा मध्ये पहिली रात्रने समे काल प्राप्त थया । अमर विमान पाम्या । जिवारे काल कीधो तिवारे उजवाली थयो थोडी सी बेला । एहवा गछनायक हवा आचार्य श्री ६ शिवजी ।

तास पाटे १४ मे श्री संघराजजी जाते पोरबाड़ बिसा, सिद्धपर नगर ना बासी, संघवी बासाना पुत्र, माता बिरदे बेहेन मेघवाई तात पुत्र बेहेन संघाते आचार्य श्री ६ शिवराजजी पासें, घणों द्रव्य मुंकी ने दीह्या लीधी । पछे ऋषि श्री ५ जगजीवनजी ने शिष्यपरणे सुप्या । एहने सारी पटे

मणावज्यो तिवारे ऋषि श्री ५ जगज्जीवन जी मणावे । प्रथमतो सुत्र सिद्धांत, इग्यार अंग, बार उपांग, ४ छेद, मूल सूत्र वज्रीस अर्थ टीका सहित मणाव्या । पछे व्याकरण, काव्य, सर्वे अलंकार, छंद, सिद्धांत कौमुदी, दस हजार प्रक्रिया कौमुदी, न्याय सास्त्र ना ग्रंथ, गणित सास्त्र, लीलावती आदि बेई । एवं ६ लाख ग्रंथ का अर्थ सहित सर्वे मणाव्या । शिष्य ने तिवार पछी आचार्य श्री ६ शिवजी पोतानो अवसर जाणी राग पूरण आणी, अह्मदाबाद भवेरी वाडे मोठे उपासरे, घरणे झाडंबरे, घरणे महोछवे चतुर्विध संघ समस्त वेष्टता आचार्य श्री ६ सिधराजजी ने पोते स्वहस्ते संवत् १७२५ वीसें माहा शुदि १३ मंगलबारे पदवी दीधी । घरणे ब्रह्म खरची तिवारे गद्य नायक पद दीधो । महा रूपवंत, गुणवंत, आठ संपदा ना धारणहार थया । २६ बरसनी पदवी भोगवी । सर्वे आउखो बरस ५० संवत् १७५५ ने आगरा सहरे मां फागुण शुदि ११ दिने काल कीधो । देवांगत पद पांम्यां । तिहां घणा ब्रह्म संवे खरच्या, घणो धर्म नो लाहो लीधो, दिन ११ संधारो आव्यो ।

आचार्य श्री ६ संघराजजी ने पाटे १५ में सुखमलजी थया । देश मारवाड जेसलमेर आसणी कोट गामना वासी, जाति ओसवाल. वीसा, संघबालेचा गोत्र, आचार्य श्री ६ संघराज जी पासे मोटे बेरागे दीख्या लीधी । बार बरस तप तप्या घणा सुत्र सिद्धांत मण्या । अमदाबाद सहरे सैदपुर मध्ये संवत् १७५६ चतुर्विध संघ मिली पदवी दीधी । आचार्य श्री ६ सुखमल जी थया । मोटा तपेश्वरी श्री पूज्य थया । आचार्य सुखमल जी पासे बहेन तेजबाई ये दीख्या लीधी । आठ बरसनी पदवी भोगवी । सोरठ देस मध्ये सहरे धोराजी चौमासो रह्या । संवत् १७६३ आसोज बदि ११ दिने काल कीधो । सूरपद पांम्या, सर्व आउखुं बरस ५० भोगव्यो । तेहने पाटे १६ में आचार्य श्री ६ भागचंदजी थाया । श्री पूज्य आचार्य श्री ६ सुखमलजी भागचंदजी भागेज ने कछ देश मध्ये, भुज-नगर रा ओ श्री प्रागराज्ये संवत् १७६० श्री पूज्य सुखमलजीये भागेज भागचंदजी ने दीख्या दीधी । घणा सुत्र सिद्धांत मण्या । संवत् १७६३ नवे नगर चतुर्विध संघ मिली घणो महोछव करी भगसर बदि ७ पाठ पदवी दीधी । तिवार पछे बरस ४५ पदवी भोगवी । आउखुं बरस ६६ नुं पालीने अंत ससे दिवस ७ नो संधारो कीधो ; मारवाड देश में सांचोर सहरे में महावीर निर्वाण दिवसे स्वर्ग पहीता । तत्पट्टे १७ में श्री पूज्य श्री

बाह्यचंदजी थया । मारवाड देशने बिले फलोधी सेहर ना वाली, मास ओसवाल, गोत्र गोलेछा, पिता साह भागरा, माता सुजाणवे, जण त्रण संघाते बास परले बेराण्य पामीने वे पुत्र घने माता त्रण संघाते छती श्रद्धि छोडीने मोटे मंडारणे श्री पूज्य श्री मागचंदजी पासे दीक्षा लीधी । तब उपरंत श्री पूज्याचार्य श्री मागचंदजी संबत् १८०० ५ (?) वर्षे कार्तिक सुद ३ दिने गुस्बासरे सुभ बेला स्वहस्ते श्री साचोर सहरे में चतुर्विध संघ मोटे मांडले पद महोद्यव करीने, श्री पूज्य ६ श्री बाह्यचंदजी ने आचार्य पद दीधो ।



(५)

बड़ौदा पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली में भगवान् महावीर से लेकर देवर्द्धि गशि क्षमाप्रमथा तक २७ पाटों का उल्लेख करते हुए विभिन्न गच्छों की उत्पत्ति का निर्देश किया गया है। तदनन्तर लोकागच्छ की उत्पत्ति व सम्बन्धित परम्परा के २४ आचार्यों—१-भाशा जी, २-भोदाजी, ३-भूनाजी, ४-भोनाजी, ५-सरवाजी, ६-रूपजी, ७-जीवजी, ८-बडवरसिधजी, ९-सधुवर-सिधजी, १०-असवंतजी, ११-रूपसिंहजी, १२-दाभोदरजी, १३-कर्मसिंह जी, १४-केशव जी, १५-तेजसिंह जी, १६-कान्हाजी, १७-तुलसीदासजी, १८-अगरूपजी, १९-अगजीवन जी, २०-मेधराजजी, २१-सोमचन्दजी, २२-हर्षचन्दजी, २३-अयचन्दजी, तथा तत्कालीन आचार्य २४-कल्याणचन्दजी (संवत् १९५७ तक)—का कालक्रमानुसार परिचय दिया गया है। २२ वें आचार्य हर्षचन्दजी तक के उल्लेख के साथ संवत् १९३८ भगसर विद १ को बड़ौदा में इस प्रति का लेखन किया गया। अन्तिम दो आचार्यों का परिचय बाद में जोड़ा गया है।]

प्रथम पाटे श्री महावीर स्वामी यया ॥ १ ॥ ३० वर्षे श्री सुधर्म स्वामी मोक्षे पहुँता ॥ २ ॥ ६४ वर्षे श्री जम्बू स्वामी ॥ ३ ॥ ७५ वर्षे श्री प्रभव स्वामी यया ॥ ४ ॥ ६८ वर्षे श्री सियंभव स्वामी यया

॥ ५ ॥ १४८ वर्षे श्री जसोभद्र स्वामी भया ॥ ६ ॥ १५६ वर्षे श्री संभूतविजय स्वामी ॥ ७ ॥ १७० वर्षे श्री भद्रबाहु स्वामी ॥ ८ ॥ २१५ वर्षे श्री स्थूलभद्र स्वामी भया ॥ ९ ॥ २४५ वर्षे श्री धार्य-महागिरी स्वामी भया ॥ १० ॥ २८० वर्षे श्री वलिसाह स्वामी भया ॥ ११ ॥ ३३३ वर्षे श्री स्वांति स्वामी भया ॥ १२ ॥ ३७६ वर्षे श्री स्यामाचार्य स्वामी भया ॥ १३ ॥ ४०६ वर्षे श्री सांडिल स्वामी हवा ॥ १४ ॥ ४५४ वर्षे श्री जातधरम स्वामी हवा ॥ १५ ॥ ५०८ वर्षे श्री आर्य समुद्र स्वामी हवा ॥ १६ ॥ ५६१ वर्षे श्री नंदिल स्वामी हवा ॥ १७ ॥ ६८४ वर्षे श्री नागहस्ती स्वामी हवा ॥ १८ ॥ ७१८ वर्षे श्री खेत स्वाभि हवा ॥ १९ ॥ ८०६ वर्षे श्री सिंह स्वाभी हवा ॥ २० ॥ ८१४ वर्षे श्री सुंदिल स्वामी हवा ॥ २१ ॥ ८४८ वर्षे श्री हेमवन्त स्वामी भया ॥ २२ ॥ ८७५ वर्षे नागार्जुन स्वामी हवा ॥ २३ ॥ ८७७ वर्षे श्री गोविन्द स्वामी हवा ॥ २४ ॥ ९१४ वर्षे श्री भूतदिन स्वामी हवा ॥ २५ ॥ ९४२ वर्षे श्री लोहितस्यगणि स्वामी हवा ॥ २६ ॥ ९७५ वर्षे श्री दुख्यगणि स्वामी हवा ॥ २७ ॥ तत्पट्टे ९७६ वर्षे श्री देवदगणी क्षमाश्रवण पाटे बैठा ।

ते पछे पांचमे वरसे ९८० वर्षे सिद्धान्त पुस्तके चढाववा मांडघो । चौबे वरस सिद्धान्त पुस्तके चढावतां लागी । ९९३ में वर्षे-संवत्सरे ११ अंग, १२ उपांग इत्यादिक ८४ सूत्र नाम जाणवा । श्री वीरय के ४७० वर्षे विक्रमादित्य नो संवत् थयो छे । विक्रमादित्य श्री १३५ वर्षे सालि-वाहन नो साको थयो । विक्रमात् ५२३ वर्षे कालिकाचार्येण पंचमो तथा चतुर्थि पर्यवषणा कृता तथा ५२३ वर्षे पंचमो पर्यवषणा कृता तथा विक्रम संवच्छर हूति १२५७ वर्षे चतुर्दशोनि स्थापना हुई ॥१॥ संवत् ४१२ वर्षे चैत्यनां बेहरा प्रवर्त्या भस्मग्रह ने जोगे करी ने जाणबो ॥२॥ संवत् १००८ वर्षे पीषण शाला हुई ॥३॥ संवत् ९९४ वर्षे चोरघासी गच्छना मत भया ॥ ४ ॥ संवत् १००१ वर्षे मठधारी महातिमा भया ॥ ५ ॥ संवत् १२१३ ना वर्षे खडतर गछ उजलमना भया ॥ ६ ॥ संवत् १२१४

ना वर्षे आंचलिया उजलमान थया ॥ ७ ॥ संवत् १२३४ ना वर्षे नागोरी महातमा थया ॥ ८ ॥ संवत् १२५० ना वर्षे आगमीया, पूनमिया महा-
तोमा थया ॥ ९ ॥ संवत् १२८५ में वर्षे तपा माहातिमा थया तथा
बडगच्छ नो महातमो एक, तपगच्छ नो एवं २ थो चित्रगच्छ नीकल्यो
तिहां महातिमा नो गच्छ मंडाण थयो ॥ १० ॥ संवत् १५२३ ना वर्षे
लोकांपति थया ॥ ११ ॥ संवत् १५४४ ना वर्षे बीजामतिए प्रतिमा
पूजी ॥ १२ ॥ संवत् १५७१ ना वर्षे पायचन्द प्रतिमा पूजी, क्रिया
उद्धरी ॥ १३ ॥ संवत् १५८३ वर्षे आरांद विमल सूरि ए क्रिया
उद्धरी ॥ १४ ॥ संवत् १६०२ वर्षे आंचलिए क्रिया उद्धरी ॥ १५ ॥
संवत् १६०५ वर्षे षडतरे क्रिया उद्धरी ॥ १६ ॥ संवत् १६८१ ना वर्षे
महादेव एक गुजराति एवं २ ऋषि मायानी पासे ऋषि रूपचन्द ऋषि
हीरानन्द नागोरी सीराना कुवा पासे दीक्षा लिधी । तिवार पछे ४ वर्षे
एकठा रह्या । पछे सिचामति नागोरी लोका निकल्या ॥ १७ ॥

संवत् १५३१ ना वर्षे अमदाबाद माहे पोताने मेले ऋ० भाणा सिरोही
वेश माहे, अरहट्टवाडा गांनना वासी, जाते पोरवाडते दिका लोधी एवं
पाट १ थयो ॥ १८ ॥ ऋषि भीदाजी सिरोही ना वासी, ओसवाल, गोत्र
साथरिया एवं पाट २ । सा० तोलाना भाईए^१ ऋषि भीदानि पासे दिका
लोधी, अमदाबाद मध्ये एवं पाट ३ थया । ऋषि भीना पालि गांमना
वासी, ऋषि भीना, ऋषि नूना, ऋषि रतनसिए दीक्षा लोधी । ऋषि
भीना^२ पालि गामना वासी, जाते ओसवाल, गोत्र सुराणा, तेणे भांभर
गाम माहे दीक्षा लोधी एवं पाट चार थया । ऋषि जगमाल ना शिष्य
ऋषि सरवा, जाते ओसवाल, गोत्र सुराणा, ओमालि गोत्र संघाड, उत्तर-
वेश लिबि गाम माहे दीक्षा लिधि संवत् १५५४ वर्षे तेमज ५४ वरस नो
दीक्षा पाली एवं पाट ५ थया^३ । ऋषि सरवाने पासे पाटण ना वासी

१—अन्य पट्टावलियों में तीसरे पट्टधर आचार्य का नाम नूनाजी मिलता है ।

२—अन्य पट्ट में भीमा ।

३—अन्य पट्टावलियों में पाँचवे पट्टधर आचार्य का नाम जगमालजी मिलता है । सरवाजी छठे आचार्य हैं । इस पट्टावली में जगमालजी की आचार्य रूप में गणना नहीं की गयी है ।

गोत्र वेद ऋषि रूपजी ए संवत् १५६५ ना वर्षे वीक्षा तिथि । वर्ष १७ नि वीक्षा थि दिन २५ संथारो उबये मां धाव्यो । सबं धायु वर्ष ४२ नो पाल्यो एवं पाट ६ थया । संवत् १५७८ ना वर्ष, सुरतना वासि, महा-सुबो १५ गुरु दिने, जीवजिये पदवी लिधि । इहां थो सीमल^१ ऋषि नो गच्छ निकल्यो । संवत् १५८५ वर्षे, पाट्टण मांहे पदवि लिधि; ते पदवी वर्ष २८ नो पदवि जाणवि, सर्वायु वर्ष ६३, संवत् १६१३ ना वर्षे जेष्ठ बीजा वद १० वार सोमे दिन ५ नो संथारा थयो एवं पाट ७ थया ।

तत्पट्टे ऋषि ब्रह्मवरसिंघ जी जाते ओसवाल, गोत्र नाटदेव का, पाटण ना वासि, वर्ष २३ हुता, संवत् १५८७ चैत्र सुवि ४ देने वीक्षा वर्ष २५ नो । पदवी संवत् १६१२ ना वैशाख सुवि ७ सोमे पदवि वर्ष ३३ नो पाली । संवत् १६४४ ना कार्तिक शुब २ दिने पोहोर ११ नो सागारी संथारो खंभातमां कीधो, सर्वायु वर्ष ८० नो पाल्यो एवं ८ पाट थया । बीजा लघुवरसिंहजी साबड़ी ना वासी, ओसवाल, गोत्र बोहोरा ना परि-वार मां, संवत् १६०६ वर्षे वीक्षा, संवत् १६२० पदवी, वर्ष ३६ नो पदवी । सर्वायु वर्ष ७२ सुबो भोगवी । संवत् १६२१ ना खंभात मध्ये ऋ० कुंवरजी नो गच्छ निकल्यो । संवत् १६६२ वर्षे उसमापुर मध्ये, लघुवरसंघजिए पोहोर ८ नो संथारो, पाट नवमो ।

तत्पट्टे जसवंत जी सोहीजतना वासी, ओसवाल, गोत्र लोकड, संवत् १६४६ वर्षे वीक्षा, वर्ष ३६ नो पदवि, सर्वायु वर्ष ५५, पोहोर ८ नो संथारो, एमदपुर मध्ये । संवत् १६८८ ना वर्षे, एवं पाट १० थया । तत्पट्टे रूपसिंहजी गुंढवचना वासि, गोत्र बोहोरानु ओसवाल जाते पुनमिया, संवत् १६७४ वर्षे वीक्षा, बरस ८ नो पदवी, सर्वायु वर्ष ३५ पोहोर बे नो संथारो एवं पाट ११ । तत्पट्टे दामोदरजी अजमेर ना वासी, गोत्र लोढ़ा, संवत् १६८८ ना वर्षे वीक्षा, संवत् १६६६ वर्षे मास ८ नि पदवी, वीक्षा वर्ष ८ पोहोर १ नो संथारो । सबं धायु वर्ष २३ मास ३ दिन २४ एवं

पाट १२ । तेहने पाटे कर्मसिद्धि माता रत्नादे, पिता सा० रतनसी, ओसवाल, गोत्र लोढा । अजमेर ना वासि, खंभात मध्ये संथारो पोहोर ६ नो आराध्यो एवं पाट १३ थया । तत्पट्टे केशवजी पिता सा० नेतो, माता नवरंगदे, गाम जेतारण, गोत्र कोठारी, कोलदा माहि जेठ वदि ६ सने संवत् १७२० ना वर्षे संथारो पोहोर २४ नो आराध्यो एवं पाट १४ थया । तत्पट्टे श्री तेजसंघजी ओसवाल वंशे ऊपना, तेहनो मोटो उपगार कहीए एवं पाट १५ ।

तत्पट्टे श्री काहानजी ओसवाल वंशे, तेहनो मोटो एवं पाट १६ थया । तत्पट्टे श्री तुनसीदास जी ओसवाल वंशे तेहनो मोटो उपगार कहिये पाट १७ । तत्पट्टे श्री जगन्नाथजी ओसवाल तेहनो ... पाट १८ । तत्पट्टे श्री जगजीवन जी ओसवाल वंशे, तेहना पाट १९ । तत्पट्टे श्री मेवराज जी ओसवाल ते पाट २० । तत्पट्टे श्री आचार्य श्री श्री सोमचन्द्र जी, ओसवाल वंशे वर्ते २१ पाट । तत्पट्टे वर्तमान श्री ६ श्री श्री हर्षचंद जी ओसवाल वंशे वर्तमान गच्छाधिराज सिरौमणि पंडित चरंजीबी हो जो । इति श्री पट्टाबलि पूर्वाचार्यनि संपूर्ण । सं० १९३८ ना वर्षे मगसर विद १ दिने । श्री बडोदा मध्ये लिखि छे ।

तत्पट्टे श्री जयचंद्र सुरी, ओसवाल वंशे मरुधर देस पाली ग्राम ना, दोक्षा वरस ६०, गादीधर पाट थापन सं० १८६८ महासुद ५, निरवाण बडोदरे सं० १९२२ ना बै० शुद १५ संथारो दिन ८ नो पाट २३ में हुवा । तत्पट्टे श्री कन्याण चंद्र सुरी, रेवासी पाली ना मरुधर देशे, पिता बोलतराम जी, माता नोजी बाई, गोत्र करणावट, ओसवाल वंशे, दोक्षा जोरणगढ़ मां संवत् १९१० मागसर सुद ३, पाट थापन वटपद्र नगरे सं० १९१८ ना महासुद ११ बुधे गावि ऊपर बैठा, सं० १९५७ अश्वण वद १० दिने बारसनी मोक्ष पदने पाग्या संथारो दिवस ३ नो तनु सासन प्रवरते ।

(६)

मोटा पक्ष की पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली लोकागच्छ के मोटा पक्ष से सम्बन्धित है। इसमें महावीर के पश्चात् २७ पट्टधर आचार्यों के नाम-काल-निर्देश के साथ उल्लिखित कर मध्यवर्ती घटनाओं का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् नागोरी लोकागच्छ की उत्पत्ति का वर्णन कर २५ आचार्यों—१-भाशाजी, २-भोदाजी, ३-साहा तोला वू भाई (वूनाजी), ४-भोनाजी, ५-जग-भालजी, ६-सरवाजी, ७-रूपाजी, ८-जीवाजी, ९-वड वर-सिंहजी, १०-सधु वरसिंहजी, ११-असवंतजी, १२-रूपसिंहजी, १३-दाभोदरजी, १४-कर्मसिंहजी, १५-केशवजी, १६-तेजसिंहजी, १७-कान्हाजी, १८-तुलसीदासजी, १९-जगरूपजी, २०-जगजीवनजी, २१-मेघराजजी, २२-सोमचंद्रजी, २३-हर्षचंद्रजी, २४-अयचंद्रजी एवं तत्कालीन आचार्य २५-कल्याणचंद्रजी तक का—जन्म, माता-पिता, दीक्षा, पदवी, संन्यास, स्वर्गवास आदि के उल्लेख के साथ संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके लिपिकार ऋषि भूलचंद्र हैं। इसकी हस्त लिखित प्रति उदयपुर में है।

अथ श्री शतावीस पाठ नी पटावलि लीष्यते । प्रथम पाटे श्री महावीर स्वामी यथा । तारे पछे ३० वर्षे मुचर्मा स्वामी मोक्ष पोंता

२ पाट जाजबां । ६४ वर्षे श्री जम्बु स्वामी यया पाट त्रीजे । ७५ वर्षे श्री प्रभव स्वामी यया पाट ४ चोथो । ८८ वर्षे श्री संभव स्वामी यया पाट ५—मो । १४८ वर्षे श्री यशोमद्र स्वामी यया पाट ६ ठो । १५६ वर्षे श्री संभुति विजय स्वामी यया पाट ७ मो । १७० वर्षे श्री मद्रवाहु स्वामी यया पाट ८ मो । २१५ श्री थूलीमद्र स्वामी यया पाट ९ मो । २४५ वर्षे श्री आर्य महागिरी स्वामी यया पाट १० मो । २८० वर्षे श्री बलसिंह स्वामी यया पाट ११ मो । ३३३ वर्षे श्री शांति स्वामी यया पाट १२ मो । ३७६ वर्षे सामाचार्य स्वामी यया पाट १३ मो । ४०२ वर्षे श्री सांडिल स्वामी यया पाट १४ मो । ४५४ वर्षे श्री जीतधर स्वामी यया पाट १५ मो । ५०८ वर्षे आर्य समुद्र स्वामी यया पाट १६ मो । ५६१ वर्षे श्री नन्दील स्वामी यया पाट १७ मो । ६८४ वर्षे श्री नागहस्ती स्वामी यया पाट १८ मो । ७१८ वर्षे श्री रेवत स्वामी यया पाट १९ मो । ८०८ वर्षे श्री सिंह स्वामी यया पाट २० मो । ८१४ वर्षे श्री खुंदिल स्वामी यया पाट २१ मो । ८४८ वर्षे श्री हेमवंत स्वामी यया पाट २२ मो । ८७५ वर्षे श्री नागार्यन स्वामी यया पाट २३ मो । ८७७ वर्षे श्री गोविन्द स्वामी यया पाट २४ मो । ९१४ वर्षे श्री भूतदिन स्वामी यया पाट २५ मो । ९४२ वर्षे श्री लोहित्य गणी स्वामी यया पाट २६ मो । ९७५ वर्षे श्री दुस्यगणी स्वामी यया पाट २७ मो । तेहने पाटे ९७६ वर्षे श्री देवदी क्षेमाश्रमण पाट वेठा । ते ५०० साधुने परिवारे बीचरे छे ।

ते पाट पछे पांचमें वर्षे ९८० वर्षे सीद्धान्त पुस्तके चढाववा मांडयो । चउव वर्षे सीधांत पुस्तके चढावता थयां । ९९३ वर्षे संवत्सरे ११ अंग, १२ वारे उपांग, ६ छेद ग्रन्थ, बस पहना, चार मूल सूत्र एवं सूत्र अनुक्रमे लिप्या । श्री वीर यकी ४७० वर्षे बीकमादित्य नो संवत्सर थयो । विक्रमादित्य थी १३५ वर्षे सालिवाहन नो साको थयो । बीकमात् ५२३ वर्षे कालकाचार्य पंचमी थी चतुर्थि पशुपण करघा,

५२३ वर्षे पंचमी पञ्चवष करया, बिक्रम संबद्धर हुतो १२५७ वर्षे चतु-
दशीनी स्थापना थई, संवत् ४१२ वर्षे जेय देहरा प्रथम प्रवर्त्या । ते
मस्मग्रह ने जोगे जाणवो सं० १००८ वर्षे पोषधशाला उपाध्वय थया ।
संवत् ६६४ वर्षे ८४ गच्छ नी स्थापना थइ । संवत् १००१ वर्षे मठ धारी
माहत्मा थया । संवत् १२१३ वर्षे खतरगच्छ उजलमान थया । संवत्
१२१४ वर्षे अंचलगच्छ उजल थया । १२३४ वर्षे नागोरी माहत्मा
थया । संवत् १२५० वर्षे आगमिया पुनमीया माहत्मा थया । संवत्
१२८५ वर्षे तपा माहत्मा थया, बडगछनो माहात्मा १, एक तपा
गछना माहात्मा एवं २ एक थइ ने चोत्रगछ नीकल्यो । तोहां
माहात्मा नो गछ मंडण थयो । संवत् १५२३ वर्षे लोकागछ नीकल्यो ।
संवत् १५४४ वर्षे बीजा मतीए प्रतिमा पुजो । संवत् १५७१ ना
वर्षे पायचन्द गछे प्रतिमा पुजो, क्रीया उधरी । संवत् १५८३ वर्षे
आणन्दबोमलसूरीये क्रीया उधरी । संवत् १६०२ वर्षे अंचलगछे
क्रीया उधरी । संवत् १६०५ ना वर्षे षत्तर गच्छे क्रीया उधरी ।
संवत् १६८१ वर्षे मदावेद एक गुजराती एवं २ एक थई ने ऋष
मयाचन्द नी पासे, ऋष रूपचन्द, ऋष हीरानन्द, नागोरी, सीराना
कुवा पासे दीक्षा लीधी । तीवार पछी चार वर्ष मेलो बिहार कीघो ।

पछे तेरो सांचामती नागोरी लुंका नीकल्या । संवत् १५३१ वर्षे
वेशना सांमली, ते अमदावाद मध्ये, पोतानी मेलेरी साणा, सीरोही देस
मां, अरहटवाल गामना वासी, नाते पोरवाड, तणे दीकरा लीघो ।
नीरंजन जोतो स्वरूपी सुध दयामय धर्म परूपी, अनेक जीवनों उधार
करघो । स्थविर भाणाजी नो प्रथम पाट थयो । भीदा जी सीरोही नो
वासी, ओसवाल वंश, गोत्र साथरीया, पाट २ । एवं साहा तोला' ने
भाइ ए ऋष भीदा जी पासे दीक्षा लीधी अमदावाद मध्ये एवं ३ पाट ।
सा भीमा पाली ना वासी, भीना, नूना, रतना एवं ३ जणे ऋष भीदाजी
पासे दीक्षा लीधी, ऋष भीना एवं ४ पाट । ऋष जगमाल ऋष सरवा-
जी ते ओसवाल, गोत्र सूराना, तेणे भाऊर गाम माहे दीक्षा लीधी एवं
५ पाट । ऋष जगमालना शिष्य ऋष सरवाजी ते वंश ओसवाल, गोत्र

श्रीधीमास ते संघाड, उत्तर वंशे लीची गाम माहे बीक्षा लीची एवं ६ पाट । पाटण गामना वासी, ज्ञाते ओसवाल, गोत्र ते हुवे साहा रूपाए संघ काडपो शेत्रुजानो अनुक्रमे, भ्रमदाबाब माहे संघे चातुर्मास गाल्युं ते सरबाजी स्थिबर ते रूपाजी ने प्रतिबोध्या, जण ५०० ते सूं बीक्षा लीची, स्थिबरे अन्त शमे मास १ नो संथारो करघो, श्री संघ सर्व ने तेडी, ऋष रूपाजी ने पाट घापी, आचार्य पब सोप्यो । वर्ष १७ नी भवस्थाए बीक्षा संवत् १५६५ मां बीक्षा लीची, दिन २५ संथारो, सर्वायु वर्ष ४२ नो एवं ७ पाट । संवत् १५७८ ना वर्षे, सुरतना वासी, महा सुद १५ गुरूवार दिने साहा जीवाजी सूरि पब लीघो ।

इहां थी सेमल ऋखनो गच्छ नीकल्यो । संवत् १५८५ ना वर्षे, पाटण मांहि पदवी लीची, ते पदवी वर्ष २८ जाणवी, सर्व आयु वर्ष ६३, सं १६१३ ना वर्षे जेठ बीजा वद १०, वार सोमे, दिन ५ नो संथारो एवं ८ पाट । तत् पटे ऋख वडवरसिंहजी सूरि ओसवाल वंशे, गोत्र कर्णावट, पाटण ना वासी, वर्ष २३ ना हुता, वेशना सांभली बीक्षा लीची, संवत् १५८७ वर्षे चैत्र सुद ४ दिने । पदवी सं० १६१२ ना वर्षे वैशाख सुद ७ ने दिने । वर्ष ३३ पदवी भोगवी । सं० १६४४ ना वर्षे कारतक सुद २ दिने, पोहोर ११ सागारी संथारो श्री खंभात मांहि कीघो । आयु वर्ष ८० नो पाल्यो एवं ६ पाट । बीजा लघुवरशीघजी सूरि साबडी ना वासी, ओसवाल वंशे, गोत्र बोराना परिवार मां १६०६ ना वर्षे बीक्षा लीची । सं० १६२० मा पदवी । सं० १६३६ माहे कुंवरजी नी पक्ष नीकली श्री बीकानेर मध्ये नानी पक्ष जाणवी । सर्व आयु वर्ष ७२ नो पोहोर ३ नो संथारो श्री खंभात मांही एवं १० पाट । तत् पटे जसवंत सूरि श्री सोजत ना वासी, ओसवाल वंशे, गोत्र लंकड सं० १६४६ नी पदवी । वर्ष ३६ नी पदवी भोगवी । आयु वर्ष ५५, संथारो पोहोर ८ नो श्री भ्रमदाबाब मध्ये एवं ११ पाट । तत् पटे रूपसिंह जी सूरि गाम गुंवेच ना वासी, गोत्र बोरा, ओसवाल वंशे, पुनमीघा मध्ये सं० १६७४ ना वर्षे वेशना सांभली बीक्षा लीची । वर्ष ८ नी पदवी । सर्वायु वर्ष ३५, पोहोर २० नो संथारो पाटण मध्ये एवं १२ पाट । तत् पटे ऋष दामोदर सूरि भ्रजमेर ना वासी, लोढा, सं १६८८ ना वर्षे बीक्षा । सं १६६६ मांय पदवी । सर्वायु वर्ष २३, संथारो पोहोर १ नो एवं १३ पाट ।

તત્પટે ઋણ કર્મસીંઘ સૂરી માતા રતના બે, પિતા સાં રતનશી, ઓસવાલ બંશે, ગોત્ર લોઢા, અજમેર ના વાસી, પોહર ૮ નો સંચારો એવં ૧૪ પાટ । તત્પટે ઋણ કેશવજી સૂરી પિતા સા નેતોજી, માતા નવરંબે, ગ્રામ જંતારણ, ગોત્ર કોઠારી, કૌલાબે ગ્રામે દીક્ષા લીધી । સર્વ આયુ વર્ષ ૨૫ નો પાલી દિન ૮ નો સંચારો એવં ૧૫ પાટ । તત્પટે શ્રી તેજસિંઘ જી સૂરી થયા । ઓસવાલ બંશે, ગોત્ર છાજેડ, ગ્રામ જેપુર મધ્યે દીક્ષા લીધી । સર્વ આયુ વર્ષ પાલી સંચારો દિન ૧૫ નો એવં ૧૬ પાટ । તત્પટે શ્રી કાન્હા જી સૂરી ઓસવાલ બંશે, ગામ ચાળોદ મધ્યે દીક્ષા । સર્વાયુ વર્ષ સંચારો પોહોર ૪ નો એવં ૧૭ પાટ । તત્પટે ઋણ તુલસીદાસ જી આચાર્ય તેનો વંશ ઓસવાલ, તેમનો મોટો ઉપગાર જાળવો એવં ૧૮ પાટ । તત્પટે શ્રી જગ-રૂપ જી સૂરી ઓસવાલ બંશે, તેમનો મોટો ઉપગાર જાળવો એવં ૧૯ પાટ । તત્પટે શ્રી જગજીવન સૂરી ઓસવાલ બંશે, તેમનો મોટો ઉપગાર જાળવો એવં ૨૦ પાટ । તત્પટે શ્રી મેઘરાજ સૂરી ઓસવાલ વંશ, તેનો મોટો ઉપ-ગાર એવં ૨૧ પાટ । તત્પટે શ્રી સોમચન્દ્ર જી સૂરી ઓસવાલ વંશે, તેમનો મોટો ઉપગાર જાળવો એવં ૨૨ પાટ । તત્પટે શ્રી હર્ષચન્દ્ર સૂરી થયા । તેમનો મોટો ઉપગાર જાળવો એવં ૨૩ પાટ । તત્પટે શ્રી ધર્મ ના વાતાર શ્રી પૂજ્ય જો ઋણ શ્રી ૬ શ્રી જયચન્દ્ર જી સૂરી ગણાધિરાજ થયા । નગર પાલીના વાસી, જાતે વીસા ઓસવાલ, ગોત્ર કર્ણાવટ, દીક્ષા વર્ષ ૨૦ । પદ થાપના વર્ષ ૭૫ । સર્વાયુ વર્ષ ૬૫, અન્તે સંચારો પોહોર ૫ નો શ્રીવટ પદ નયરે મોઝ, એવા સૂરી સોરોમળી થયા એવં ૨૪ પાટ । તત્પટે શ્રીપૂજ્ય શ્રી કન્યાણ ચન્દ્ર સૂરી થયા । વાસી નગર પાલીના, જાતિ ઓસવાલ, ગોત્ર કર્ણાવટ, જોરણ ગઢ દીક્ષા લીધી । વર્ષ ૨૧, ગાદી થાપન વડોદે વર્ષ ૨૬ તે આજના કાલે લુંકા ગણાધિરાજ ઘોઘમાન જયવંતા વિચરે છે । તેનું નામા મી ધાર લેતાં જીવને પરમ જ્ઞાન ના વાતાર ચીરંજીવી મૂયાત્ ।

॥ ઇતિ શ્રી લોકાગચ્છ મોટા પક્ષ નો પટાવલો સમાપ્ત ॥

। સીંઘ ઋણ મૂલચન્દ્ર ।

(७)

लौकागच्छीय पट्टावली

[इस पट्टावली में भगवान् महावीर से लेकर ५७ पाटों तक का उल्लेख करते हुए आनन्द विभक्त धरि के क्रियोद्धार की चर्चा की गयी है । तदनन्तर लोकाशाह से लेकर तत्कालीन आचार्य खूबचंदजी (संवत् १४२८ से लेकर १९८२) तक के २७ पट्टधर आचार्यों का जन्म-दीक्षा, पदवी, संघात, स्वर्गवास आदि के उल्लेख के साथ, परिचय प्रस्तुत किया गया है ।]

**अथ पट्टावली लखी छे श्री लौकागच्छ नी परंपराये
महावीर ने पाटे थी मांडी ने लखी छे ।**

१ श्री भगवन्त ने पाटे श्रुधर्मा स्वामी २ । तत् पटे जम्बुस्वामी ३ । तत् पटे प्रभव स्वामी ४ । तत् पटे श्री जंभव स्वामी ५ । तत्पटे श्री जसोभद्र स्वामी ६ । तत्पटे श्री संशुती वीजय स्वामी ७ । तत्पटे धूली भद्र स्वामी ८ । तत्पटे श्री आर्य महागिरी स्वामी ९ । तत्पटे आर्य सुहस्ती स्वामी १० । तत्पटे सुस्ती प्रतीबोध स्वामी ११ । तत्पटे इन्द्रदीन सुरि त्यां थी डीगंबर गछ निकल्यो ७०० बोलनु छेद्द पाडु १२ । तत्पटे दीन सुरि १३ । तत्पटे सीहगिरी सुरि थी ७ गछ निकल्या, जमले गछ ८ थीया १४ । तत्पटे वज्र स्वामी, त्याथी १२ वर्षि बुकाल पड़ो अंगुठा प्रमाणे प्रतिमा पुजीने दाणा मुके तेरो उबर

पूर्णा करे, सं० ६८० नी साले १५ । तत्पट्टे वज्रसेन स्वामी १६ । तत्पट्टे चन्द्रदीन सूरि थी गछ ६ निकल्या, जमले गछ १७ थीया १७ । तत्पट्टे सामंत सूरि थी शंभरी राजाए डुंगरे २ बेराकराव्या १८ । तत्पट्टे बुधदेव सूरि ३ गछ निकल्या, जमले गछ २० थीया । १९ । तत्पट्टे प्रद्योतन सूरि २० । तत्पट्टे मनदेव सूरि २१ । तत्पट्टे मानतुंग सूरि थकी गछ ३ निकल्या, जमले गछ २३ थया । जेणे भक्तांमर २२ । तत्पट्टे वीरचन्द्र सूरि २३ । तत्पट्टे जयदेव सूरि २४ । तत्पट्टे देवानन्द सूरि २५ । तत्पट्टे वीक्रमानन्द सूरि २६ । तत्पट्टे नरसींह सूरि थी ६ नव गच्छ निकल्या, जमले गच्छ ३२ वत्रोस थया २७ । तत्पट्टे सामंद्र सूरि २८ । तत्पट्टे देवढाणी खीमांश्रावणी थी १४ पूर्व बोछेव गया । पुस्तक कागले लखाणां २९ ।

तत्पट्टे वीबुध सूरि ३० । तत्पट्टे जयनन्द सूरि थी १२ वर्षी डुकाल पडो जती सर्व पोशालधारी थया, पोसालियो गछ थयो । प्रतीमा पथरनी पुजी जमले गछ तेव्रोस थया, ३१ । तत्पट्टे रवी प्रभ सूरि ३२ । तत्पट्टे जसोदेव सूरि थी गछ १७ निकल्या जमले गछ ५० थया ३३ । तत्पट्टे पद्योतन सूरि ३४ । तत्पट्टे मानचन्द्र सूरि ३५ । तत्पट्टे विमलचन्द्र सूरि ३६ । तत्पट्टे उद्योतन सूरि ३७ । तत्पट्टे सर्वदेव सूरि थी गछ १९ निकल्या जमले गछ ७० थीया । कोथलामती जे कोथला नो मोटो बाधो शामायक कोथलामां करे, कोथलामती गछ ३८ । तत्पट्टे देवचन्द्र सूरि ३९ । तत्पट्टे मानविमल सूरि थी बीजा मती गछ निकल्यो । नवी पछेडीमां जुना लुगडा नु थीगडु बीए मोह उतारवाने जमले गछ ७१ थीया ४० । तत्पट्टे जसोमद्र सूरि ४१ । तत्पट्टे मुनिचन्द्र सूरि ४२ । तत्पट्टे अजीतदेव सूरि ४३ । तत्पट्टे विजयसिंह सूरि ४४ । तत्पट्टे सोमप्रभ सूरि थी गछ ७ नीकल्या जमले गछ ७८ थीया ४५ । तत्पट्टे जगचन्द्र सूरि ४६ । तत्पट्टे देवचन्द्र सूरि ४७ । तत्पट्टे धर्म गोरव सूरि ४८ । तत्पट्टे सोमप्रभ सूरि ४९ । तत्पट्टे सोम-

तिलक सूरि ५० । तत्पट्टे देवसुन्दर सूरि थी धबल गछ निकल्यो ।
 १२ वर्षि हुकाल मां जतो मुडेवाल बाणीया थया । दुर्मीक्षम जमले गछ
 ७६, ५१ । तत्पट्टे सोम सुन्दर सूरि ५२ । तत्पट्टे मुनि सुन्दर सूरि
 ५३ । तत्पट्टे सेख रत्न सूरि थी खडतर गछ निकल्यो सं० ११५५ मां
 गछ ८० थया ५४ ।

त० खीमा सागर सूरिथी ५५ मासनी पुन्यम करी, पुनीमोड गछ
 निकल्यो, जमले गछ ८२ थीया ५५ । त० सुमत साध सूरि सं० १२२७,
 ५६ । त० हेमविमल सूरि ५७ । त० आण विमल सूरिथी कीया
 उधार कीधो । संघ १५२ (१५) सा माटा पाटण मां आव्या, वर्षारथे
 नील फुल उगी, संवत १४२८ मां पाटण मां बेरा देख स्थान जोई रीह्या त
 ए बीवसनी गमे नहीं तराल कोल्यो सीधांत ३२ लखी बेची और पूर्णा करे
 छे, ते पासे १५२ संघबी जेने ३२ सूत्र सामल्या तरे संघबी १५२ ने पुछ
 केहे लकालया भगवंत ने १ लाख ५६ हजार आवक थया, तेमा मोटा
 १२ वृतधारी १० ते एकावतारी, तेनु सूत्र रचु तेरे केणे, शंघ न काढो ।
 बेव न कराव्यु । प्रतीमा न पूंजी । तेनो पाठ उपाशगइसांग मां केम नाव्यो ।
 ते प्रतीमा तो जुठी माटे, अमार पैसे संघ काढा ना खराब कर्या, गाडाना
 पैडा हेठे अनेक जीव मरा माटे, आजीवक मत हो धीगस्तु । संसारने, द्रव्य
 छया छोकरा..... पडतां मुकीने १५२ साधु थया । पुस्तक लकालया
 कने थी न नके दीक्षा लीधी । १५३ ठाणु बीहार करी बनमा जइ रीह्या ।
 अने पनवणाए महापनवणा ऐ, माहापनवणा मां पाठमां कहूं छे जे भगवंतने
 इंद्रे बीनती कीधी । अंत शमेहे प्रभु भस्मग्रह वेशे छे, जो बेघडी आउलो
 वधारो तो तमारी ब्रष्टी ने जोगे २ हजारनी २ घडी मां उत्री जासे, प्रभु
 के, ए अर्थ न समर्थ, तीर्थंकर बल न फोरवे । तरा प्रभु पाछो जीव बया
 मूल धर्म बयाथी दीपसे । तेरे प्रभुए कहु जे जीवा रूपावो जीव भवीस्सई
 १ त्याथी जीव बया मूल धर्म दीपसे पछे लके ३ बिन अणसण करी चवा,
 मध्ये रात्रे देव आकाशे आवी १५२ साधु ने सूरि मंत्र दीधो ते साधुए सवारे
 कागले उतार्यो, कहूं जे हूं लको ऋषि देवलोके गयो छु, आलोको गच्छ
 सत्य छे ।

हवे त्याथी लोकागछनी पेढ़ी सं० १४२८ थी लखाणी

१-ऋ० लकाजी, पाटण ना रेवासी, जात बीसा उशवाल, गोत्रे

लकड़, दीक्षा भत्त ३ नी, सर्व आयु वर्ष ५७ । २—ऋ० माखोजी, गाम
अरहटवाडाना, बीसा उशवाल, गोत्रे लोडा, सं० १४३८ मां दीक्षा अमदा-
बाद मां । ३—ऋ० मीवाजी, सिरौही ना रेवासी, बीसा उशवाल,
सोघरीया गोत्री, जण ४५ साथे दीक्षा लीधी पाटणमां । ४—ऋ० नुनाजी,
बीक्षा लीधी नरुई ना रेवासी, जाते बीसा उशवाल, गोत्रे लोडा । ५—
ऋ० मीमाजी, पालीना रेवासी, जाते बीसा उशवाल, गोत्रे उसम, त्याची
तपोगच्छ निकल्यो । तेणे पन्नवणजीनी टीका मध्ये गाथा २ लखी छे ते
के छे । गाथा^२—पांणी २ सीधी ८ सुसी ५, तास्यु १ प्रमोती मत वछरे,
बीदधे । श्रीयोद्धार प्रत्वानु ग्रहकार भी १ आनंद बीमलाकानां, सुरीय सुष
भुरीय तपो भी दुस्तर लभे तपेती बीरुचंदये २ ते संवत १५८२ मां आणंद
बीमल सुरीए थी इडरीगढ मध्ये पीत्याई रावलनो वारे ४ मासखमण
ईडरना डूंगरनी गुफामां कर्मा, पारणे लोका भावकने घरे गया, लोट
चोखानो घोणमां राख बीरावी, शसरे आवी घोण राख नखावी ने सहेअ-
धर तपगछ काढो । लोकाट थी तपा थोया । हजार घर ए गाथा पनवणानी
टीका मांथी पादरा मध्ये संतिबीजेनी प्रत्यमाची उतार्या छे । ६—ऋ०
जगमालजी श्रीश्रीमाल, दलीना रेवासी ।

७—ऋ० सरवाजी उत्राधरा रेवासी, आभरीया गोत्रीया सं० १५४४
बीक्षा लीधी (१) तत्पटे श्री पूज्यपद धराव्यो श्री जीवरखजी,^३ जाति
उशवाल, गोत्रे देशलहर, रिवासी सुरतना सं० १४७८ बीक्षा लीधी ।
संवत १५१३ ना जेष्ठ वदि १३ संथारो दीन ३, दीक्ष्या वर्ष ३६ पाली,
सर्वाड वर्ष ६३ नो पालनपुरे (२) तत्पटे रूप ऋ० जी सुरी, जाते उश-
वाल, गोत्रे लोडा, रेवासी सोरोहिना सं० १५६१ नी बीक्षा (३) तत्पटे श्री
पूज्य ऋ० श्री वडवर शंघजी, जाति उशवाल, गोत्रे नाहटा, पाटण ना
रेवासी सं० १५८७ बीक्षा, सं० १६१२ वैशाख सुदि ६ गादीए बेठा, सं०
१६४४ कार्तिक सुदि ३ अणशण कीधी दीन १५ नो वर्ष ६३ दीक्षा । सं०
१६१७ ऋ० कुंवरजीए नानी पक्ष जुदा निकल्या, नानी पक्ष अमदाबाद

१—मीवाजी । २—गाथा का पाठ अशुद्ध है मूल रूप को वंसा ही रखा है ।

३—अन्य पट्टावलिओं में सरवाजी के बाद पट्टधर आचार्य के रूप में
रुपाजी का तथा रुपाजी के बाद जीवाजी का नाम आया है ।

मां ठाणा १८ थी, पण मोटी पक्षे शराप घायो (४) तत्पटे श्रीपूज्य जी ऋ० श्री ६ श्री लघुवर संघजी, शावडी नां रेवासी, जाते उशवाल, गोत्रे बोरा शाहिलेचा, संवत् १६०६ दुंदोया निकल्या । लवजी ऋ० दुंदोयो ठाणा ६ थी जुबा क्रिया पाली (५) तत्पटे पूज्य श्री ६ श्री जसवंतजी सुरी, सोजितरा निवासी, उशवाल, गोत्रे लउकड, सं० १६४६ माहा सुदि ३ बीक्षा वैशाख सुदि ६ गादीए वेठा, १६८८ मार्गसीर सुद १५ संथारो दिन १७ नो, सर्व आयुव ५४ (६) तत्पटे श्री रूपसींघजी सुरी, बीकेवाडाना, उशवाल, गोत्रे बोरा सोहलेचा, सं० १६७५ गुरुए मार्गसीर सुद १३ बीक्षा, सं० १६८८ मगसर सुद ८ गादीए, सं० १६९७ अषाढ वद १० संथारो दिन ७ श्री कृष्णगढ मध्ये (७) तत्पटे श्री दामोदरजी, अजमेर ना बीसा उशवाल, गोत्र लोढा, सं० १६९२ बीक्षा, सं० १६९७ पवढवा, (८) तत्पटे श्री कर्मसीहजी सुरी, दामोदरजी ना नाना माई, संवत् १६९८ मा सुदि ३ गादीए, १६९९ मा सुद १० संथारो दिन ७ नो ।

(९) तत्पटे श्री केशवजी सुरी छपीयारा वासी, बीसा उशवाल, गोत्रे उशम संवत् १६९९ बीक्षा, संवत् १६९९ मा० वद १३ गादीए । (१०) तत्पटे श्री तेजसिंघजी, चपेटोयाना बीसा उशवाल, गोत्रे उशम, संवत् १७०६ बीक्षा, संवत् १७२१ गादीए, अषाढ वदि १३ संथारो दिन ६ पालीए (११) तत्पटे श्री कान्हनजी, बीसा उशवाल, नरलीना, संवत् १७४३ बै० सुद ३ गादीए सुरतमां, संवत् १७७९ भादवा सुद ८ संथारा बी० ७ सुरतमां (१२) तत्पटे श्री तुलसीदासजी सुरी, संवत् १७६८ फागण सुद ३ बीक्षा, सं० १७७९ भादवा सुद ८ गादीए, संवत् १७८८ फा० सुद १२ संथारा बी० ९ ।

(१३) तत्पटे जगरूपजी सुरी, सं० १७८५ बीक्षा, सं० १७८८ फा० सुद ३ गादीए, संवत् १७९८ संथारो दिन ११ श्री बीव मध्ये (१४) तत्पटे श्री जगजीवन जी, संवत् १७८९ बीक्षा, संवत् १७९९ गादीए, संवत् १८१२ मा वद ५५ संथारो दिन ६ नो बीव मध्ये, (१५) तत्पटे श्री पूज्य श्री ६ श्री मेघराज जी, संवत् १७९९ बीक्षा, संवत् १७९९ गादीए, संवत् १८१२ मा वद ५५ संथारो दिन १३ नो (१६) तत्पटे श्री सोमचंद

जी, सं० १८३६ कागुण वद ६ गाढीए, संवत १८५५ संचारो दिन ७ दीव
मध्ये (१७) तत्पटे श्री हर्षचंद जी, संवत १८५५ कागुण सुद ६ गाढीए,
संवत १८६६ माद्रवे संचारो दिन ३ वडोदरे (१८) तत्पटे श्री पूज्य जी
ऋषि श्री ६ श्री जयचंदजी सुरी, पालीना रेवासी, बीसा उशावाल,
गोत्र कर्नावट । संवत १८८८ मा दीक्षा लीधी वरस ५५ सुरी पव
पाली संवत १९२२ ना बेसाख सुद १४ संचारो कीधो पुनमे पोर १ ।
दिन चढते देवांगत पाया श्री वडोदरे (१९) तत्पटे श्री पूज्य श्री ६
श्री कल्याणचंद्र जी सुरी, संवत १८९० ना चैत्र सुद १३ जन्म,
संवत १९१० मां दीक्षा, संवत १९१८ मां गाढीए सुरी पव, संवत १९५६
मां धावण वद १० देवगत पामा दीवस ३ नो संचारो कयो श्री उरण मा
देवगत पाम्या सांजना ४ बजे । (२०) तत्पटे श्रीपूज्य ६ श्री सुवचंद जी
सुरी, संवत १९२४ मां दीक्षा संवत १९४३ मां गाढीए सुरीपव पाम्या,
संवत १९८२ ना मगसर सुद ६ संचारो दीवस ३ नो मागसर सुद ६
मोमवारे चढते पोर ११॥ बजे वडोदरा मा देवगत पाम्यां ८२ वरसनी
उमरे ।



(१)

विनयचन्द्र जी कृत पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली स्थानकवासी परम्परा से सम्बन्धित है। इसके रचयिता श्रावक श्री विनयचन्द्रजी उच्चकोटि के कवि थे। इसमें शुद्धभस्त्रिवासी से लेकर देवद्विगशि क्षमाश्रमशा तक २७ पाठ का उल्लेख कर के आगम-लेखन के प्रसंग का वर्णन किया गया है। तदनन्तर विभ्रन्न गच्छ-श्रेय, लोकागच्छ की उत्पत्ति, और लवजी, धर्मदासजी आदि के क्रियोद्धार का वृत्तान्त है। सर्व श्री धर्मदासजी, धन्नाजी, भूधरजी, कुशलाजी, गुमानचन्दजी, दुर्गादासजी और तत्कालीन आचार्य रतनचन्दजी (संवत् १८८२ पदारोहण) तक के पट्ट-क्रम के सक्षिप्त परिचय के साथ इस पट्टावली का सम्पादन हुआ है।]

द्रुत विलम्बित

समणनाथ महागुण सागरं । अमल ज्ञान अनुग्रह आगरं ॥
 प्रबल तेज प्रताप पराक्रमं । निगुण रूप अनूप नमोनमं ॥१॥
 नृप किरीटि सिद्धारथ नन्दनं । नवल-जीरण-पाप निकन्दनं ॥
 अतुल तुम्य क्रतुही उत्तमं । निगुण रूप अनूप नमोनमं ॥२॥

जग सिरोमणि वीर जिनेश्वर । सकल सेवक तुभ्य सुरेश्वर ॥
 सुखदवानी प्रकाशि सुधासमं । निगुण रूप अनूप नमोनमं ॥३॥

अर्थ—प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में कवि भूषण विनयचन्द्रजी भगवान् महावीर की स्तुति करते हुए कहते हैं कि—हे भगवन् ! आप भ्रमणों के नाथ और क्षमा-शान्ति आदि महान् गुणों के सागर एवं निर्मल ज्ञान तथा अनुग्रह-कृपा के आकर (खान) हैं । आपके तेज, प्रताप और पराक्रम प्रबल है । आपके उपमा रहित निर्गुण रूप को मेरा बारम्बार नमस्कार हो । आप राजाओं में मुकुट तुल्य महाराज सिद्धार्थ के पुत्र तथा नये पुराने पापों की जड़ को नष्ट करने वाले हैं । आपके कृत्य अतुलनीय, कीर्तिपूर्ण एवं उत्तम हैं । आपके उपमा रहित निर्गुण रूप को मेरा बारम्बार नमस्कार हो । आप संसार शिरोमणि वीर जिनेश्वर हैं । इन्द्र आदि सकल देव आपके सेवक हैं । आपने अमृत के समान सुख देने वाली वाणी का प्रकाश किया है । आपके उपमा रहित निर्गुण रूप को मेरा बारम्बार नमस्कार हो ।

विशेष - रचना के प्रारम्भ में हमारे यहाँ विघ्न-निवारण के लिए मंगलाचरण करने की शास्त्रीय परिपाटी है । यह मंगलाचार तीन प्रकार का होता है—नमस्कारात्मक, आशीर्वादात्मक और वस्तु निर्देशात्मक । प्रस्तुत छंद नमस्कारात्मक मंगलाचरण का उदाहरण है ।

दोहा

सासण पति असरण सरण, नमो वीर मुनिनाह ।

पट्ट प्रकट पाटावली, उर धर परम उछाह ॥ १ ॥

अर्थ—जो जिन शासन के स्वामी, असहायों के आश्रय-स्थल तथा मुनिजनों के नाथ हैं, ऐसे भगवान् महावीर स्वामी को नमस्कार करके, एवं हृदय में परम उत्साह धारण कर मैं प्रकट रूप में पट्टावली को पढ़ता हूँ ।

विशेष—यह छंद वस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण का उदाहरण है ।

छप्पय

वरष बहोतर वीर, प्रगट आयुर्बल पामी ।

व्रत बयालिस वर्ष, सर्व पान्यो जग-स्वामी ॥

साढा द्वादस साल, पक्ष एक अधिक प्रसिद्ध ।

मगन रहे छद्मस्थ, विपुल तप करि बहुविध ॥

करुणा निधान तप कर कठिन, परमुज्ज्वल निज पद परस ।

तज कर्म चार पाये तुरत, दिव्य ज्ञान केवल दरस ॥१॥

अर्थ—भगवान महावीर ने बहूतर वर्ष का आयुर्बल प्राप्त किया जिसमें बयालीस वर्ष तक उन्होंने संयम-जीवन की साधना-आराधना की । उसमें एक पक्ष अधिक साढ़े बाहर वर्षों तक छद्मस्थ अवस्था में अनेक प्रकार के तप किये । करुणा-निधान भगवान महावीर ने अत्यन्त उज्ज्वल आत्म-पद-निज रूप को स्पर्श करने के लिये कठोर तप से चार घाती कर्मों को क्षय कर, दिव्य ज्ञान—केवल ज्ञान-प्राप्त किया ।

विशेष—मनुष्य जीवन का परम ध्येय मुक्ति प्राप्त करना है और वह कठिन तपस्या के द्वारा, ज्ञानावरणीय, वशनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय रूप चार घाती कर्मों को नष्ट कर, केवल ज्ञान की प्राप्ति कर लेने से ही प्राप्त होती है ।

दोहा

प्रभु कीन पावा पुरी, चरमकाल चोमास ।

कार्तिक अमावस कर्यो, वर पंचमी गति वास ॥२॥

जनम रास जिनराज की, भस्म आगमन माल ।

जैश दिवस कर जोरि के, पूछे सक सुरपाल ॥३॥

साल दोय सहस्रलू, कठन भस्म ग्रह काथ ।

उदै उदै मुनि आसतां, नाहि हुसे जगनाथ ॥४॥

अर्थ—भगवान महावीर ने अन्तिम समय का चातुर्मास पावापुरी में किया जहाँ कार्तिक कृष्णा अमावस्या को उन्होंने पंचम गति अर्थात् मुक्ति

प्राप्त की। निर्वाण के पूर्व सुरपति इन्द्र ने जिनराज महावीर की जन्म-राशि पर भस्मक ग्रह का आगमन देखकर नम्र निवेदन किया कि प्रभो ! इसका परिणाम दो हजार वर्ष तक शासन के लिये अनुभूत है। अतः अपने आयु-काल को कुछ घटा या बढ़ा लीजिए ताकि यह योग टल जाय, क्योंकि-ग्रह के प्रभाव से २ हजार वर्ष तक मुनियों की उदय २ पूजा नहीं होगी।

विशेष :— महावीर का अन्तिम चातुर्मास पावापुरी के हस्तिपाल राजा की रज्जुशाला में था, जहाँ कार्तिक कृष्ण अमावस्या को उन्हें निर्वाण पद की प्राप्ति हुई। उनकी जन्म-राशि पर भस्मक ग्रह का योग था, जिसका दुःप्रभाव दो हजार वर्ष तक संघ पर पड़ता था-अत इन्द्र ने निर्वाण की घड़ी को आगे या पीछे करने के लिये प्रभु से निवेदन किया। संसार का रागी जीव भविष्य की चिन्ता में छटपटाता और उसको जंते-तंते टालना चाहता है। उसे भान नहीं रहता कि कर्मफल तो अवश्य भोक्तव्य होता है।

छुप्य

दुक मुहूर्त इक टाल, काल धरमारथ कारण ।
 भाख्यो श्री भगवंत, तत अक्खर जगतारण ॥
 सगत छती मम सक्र, हेमगिरि पकर हलावन ।
 तदपि भमो एक तनिक, बने नहीं आउ बधावन ॥
 हुई न हूँ न हूँसी न हिव, श्रीमुख कहै सुरेस सुनि ।
 स्थित बधारण सके सक्रति, कल अनन्ते माहि कुनि ॥२॥

अर्थ :— इन्द्र ने कहा भगवन् ! धर्म-हित का कारण जान कर एक मुहूर्त भर का समय टाल दीजिए। यह सुन कर भगवान ने जगत् हित के लिए यह तात्त्विक उत्तर फरमाया कि-हे इन्द्र ! कंचन गिरि-मेरु को पकड़ कर हिलाने की शक्ति मुझमें है किन्तु आयु का एक समय भी बढ़ाया नहीं जा सकता। निश्चित आयु में एक समय की भी हानि एवं वृद्धि न तो कभी हुई, न होती और न कभी होगी। अनन्त काल में भी कोई स्थिति बढ़ाने वाला नहीं हुआ।

विशेष :— आयु की अवधि निश्चित होती है, उसको बढ़ाने वाला कोई नहीं है । मेरु को कँपाने वाले भी आयु बढ़ाने में अपने को असमर्थ पाते हैं । त्रिकाल अवधित मृत्यु की मर्यादा का उत्संघन करने वाला संसार में कोई भी पैदा नहीं हुआ और न कभी होगा ।

छप्पय

सुर नर मुनि समभाय, साम अश्वर्ग सिधाये ।
 गौतम केवल ज्ञान, परम दर्शन पुनि पाये ॥
 पाट विराजे प्रथम, समन श्री सुधर्म सामं ।
 चलत संघ विध चतुर, तासु आदेश तमामं ॥
 वानवे वर्ष आयुर्वला, इन्द्र भूत पामी इति ।
 वर ज्ञान दर्शद्वादसवर्ष, सर्व बयांलिस संयति ॥३॥

अर्थ :— इस प्रकार देव, मनुष्य एवं मुनिजनों को समझा कर भगवान् महावीर मोक्ष सिधार गए । उसी निर्वाण की रात्रि में गौतम स्वामी ने केवल ज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त किया । तत्पश्चात् भगवान् के प्रथम पट्ट पर श्रमण सुधर्मस्वामी विराजे । समस्त चतुर्विध संघ में सर्वत्र उनका आदेश चलता रहा । इन्द्रभूति गौतम स्वामी ने ६२ वर्ष की आयु भोग कर निर्वाण प्राप्त किया । ४२ वर्ष के सम्पूर्ण साधु-जीवन में वे ३० वर्ष तक छद्मस्थ रहे और १२ वर्ष तक केवली होकर विचरे, फिर मोक्ष पधारे ।

विशेष :— भगवान् के निर्वाण-काल में ही इन्द्रभूति गौतम स्वामी को (जो जाति के ब्राह्मण एवं याज्ञिक थे तथा सैकड़ों विद्यार्थी जिनके पास वेदाध्ययन करते थे) केवल ज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त हुआ । केवली हो जाने से वे भगवान् के प्रथम पट्टाधिकारी होते हुए भी पट्टधर नहीं हुए । क्योंकि केवली पट्टधर नहीं होते, ऐसा नियम है । भगवान् की दूसरी वेशना के समय वे ५०० छात्रों के साथ दीक्षित हुए तथा पचास वर्ष तक गृहवास में रह कर अध्ययन-अध्यापन कराते रहे ।

छन्द हनूफाल

नित जपूँ गौतम नाम, शुभ योग मुद्रा स्वाम ।

भवदुःख विनाशन मूर, साक्षात् गणधर शूर ॥१॥

अर्थ—योगमुद्रा के धारक गौतम स्वामी के शुभ नाम का मैं नित्य जप करता हूँ। सकल सांसारिक दुःखों के नाश हेतु गणपति गौतम साक्षात् शूर-योद्धा थे।

विशेष—भव-दुःख-विनाश में महापुरुषों का नाम-जप शुभ माना गया है। इससे आत्म-बल बढ़ता है।

छन्द हनूफाल

थिर महा सुख शिवथान, पाये आनन्द प्रधान ।

पुन साम सुधरम पाट, कर कठिन तप अधकाट ॥२॥

अर्थ—गौतम स्वामी ने महासुख रूप अचल आनन्द-धाम शिव पद प्राप्त किया। फिर भगवान के पट्ट पर प्रतिष्ठित स्वामी सुधर्मा ने तप-संयम की साधना करते हुए शासन को दीप्तिमान किया।

विशेष—गौतम स्वामी के निर्वाण के बाद सुधर्मा स्वामी ने भी कठोर साधना के द्वारा अपने अशुभ कर्मों का क्षय किया। क्योंकि पाप कर्मों का क्षय साधना से ही किया जा सकता है और वह भी अत्यन्त कठोर साधना से।

छन्द हनूफाल

धरि परम उज्ज्वल ध्यान, गुन लयो केवल ज्ञान ।

गोजीत अति गम्भीर, शतवर्ष आयु शरीर ॥३॥

अर्थ—प्रथम पट्टधर श्री सुधर्मा स्वामी ने परम शुक्ल ध्यान की साधना से केवलज्ञान का गुण प्राप्त किया। वे इन्द्रियजीत एवं अत्यन्त गम्भीर स्वभाव के थे। उनका आयु-काल सौ वर्ष का था।

विशेष—इन्द्रियजीत और गम्भीर स्वभावी व्यक्ति परम उज्ज्वल ध्यान से केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है।

दोहा

वर्ष आठ केवल विमल, पाण्ड्यो व्रत पच्चास ।

शिव पहुँचा भव कर सफल, निरचल सिद्ध निवास ॥५॥

अर्थ—अपने ५० वर्ष के संयम काल में वे आठ वर्ष तक विमल केवली पर्याय में रहे और अन्त में मनुष्य भव सफल कर उस अविचल सिद्ध पद को प्राप्त किया जो शाश्वत कल्याण रूप है ।

छन्द शंकर

शुभ पाठ सुधरम स्वाम के, कुलवन्त जम्बु कुमार ।

तज आठ परणी नार तरुणी, विमल बुद्धि विचार ॥

वैराग सुं जीवन वय में, भेष संयम धार ।

ले अराध्यो चौसठ वर्ष लग, तिरे बहु जन तार ॥१॥

अर्थ—सुधर्मा स्वामी के शुभ पट्ट पर कुलीन जम्बू कुमार, द्वितीय पट्टधर के रूप में प्रतिष्ठित हुए । अपनी विमल बुद्धि से अपनी आठ युवती नारियों को प्रतिबोध देकर वे मरी जवानी में विरागी बने—संयम ग्रहण किया और चौसठ वर्ष तक संयम की आराधना करके अन्त में बहुत से लोगों को तार कर स्वयं भी तिर गये ।

विशेष—जम्बू स्वामी राजगृही नगरी के श्रीमंत सेठ ऋषभ वत्स के सुपुत्र थे । उनकी माता का नाम धारिणी था । एक वैभवशाली परिवार में जन्म लेकर भी उनका मन वैभव-विलास से प्रभावित नहीं हुआ । मरी जवानी में आठ-आठ विवाहित पत्नियों को त्याग कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि जगत को कंपित करने वाला कामिनी का आकर्षण सच्चे साधक को विचलित नहीं कर पाता ।

कवित्त छप्पय

पद केवल पर्याय, वर्ष चमालीस वरनी ।

असी बरस सब आयु, वर्ष धर नहीं विसरनी ॥

आयु शक्ति कर अन्त, परम सिद्ध क्षेत्र पधारे ।

जा पीछे भव जीव, संघ चौविध सुरसारे ॥
 दश बोल विरह ममभक्त दुःखित, सोच करन लापा सही ।
 चित्त व्याकुलता पाम्या चतुर, कीविद कौन सके कही ॥४॥

अर्थ—जम्बू स्वामी चंवालीस वर्ष तक केवली पर्याय में रहे और बीस वर्ष छद्मस्थ । उनकी कुल आयु अस्सी वर्ष की थी, जिसे नहीं भूलना चाहिये । अन्त में आयु के समाप्त होने पर वे परम सिद्ध-क्षेत्र पधारे । उनके निर्वाण के बाद संसार के भव्य जीव, चतुर्विध संघ और सभी देवता दस बोल के विच्छेद होने से दुःखानुभव करने लगे । उस समय के उनके चित्त की व्याकुलता का वर्णन कौन विद्वान् कर सकता है ?

विशेष—जम्बू स्वामी के निर्वाण से दस बोल का अभाव हो गया जिससे समस्त जीव, मनुष्य और देवगण भी दुःखी हो गए । उस समय के उनके दुःख का वर्णन करना विद्वानों से भी असंभव है, फिर साधारण जनों की तो बात ही क्या ? वस्तुतः सत्पुरुषों का निधन असीम दुःखदायी होता है । दशबोल का विच्छेद हुआ, यह आगे बतायेंगे ।

दोहा

वीर जम्बु निर्वाण विच, केवलि अन्तर नांह ।
 भयो धर्म उद्योत बहु, श्री जिन शासन मांह ॥६॥

अर्थ—भगवान् महावीर और जम्बूस्वामी के निर्वाण काल के बीच में केवली का विरह नहीं रहा । अर्थात् वीर प्रभु से लेकर जम्बू स्वामी तक केवलज्ञानी अविच्छिन्न बने रहे और धर्म शासन का बड़ा उद्योत हुआ ।

विशेष—वीर प्रभु से लेकर जम्बूस्वामी तक का शासनकाल जैन-शासन के लिये उत्कर्ष का काल कहा जा सकता है क्योंकि इस बीच कभी केवली का अभाव नहीं रहा और धर्म की ज्योति जगमगाती रही ।

सवैया इकतीसा

चौसठ वर्ष पाछे वीर, निर्वाण हुसे,
 जम्बू शिव लहि, दस बोल, विरहो जानिये ।

केवल-अवधि-मन, परजाय त्रिज्ञान येह,
 आहारक, पुलाक लब्धि, द्वय मानिये ॥
 परिहार विशुद्ध सूक्ष्म-सम्पराय यथा ख्यात हू,
 चारित्र तीन नीका ए वखानिये ।
 मुनि जिन-कलपी, क्षपक सैण दशमो जू,
 याहि दश बोल को विच्छेद पहिचानिये ॥

अर्थ—भगवान् महावीर के निर्वाण से चौंसठ वर्ष बाद जम्बू स्वामी का निर्वाण हुआ, तब से दस बोल का विच्छेद हो गया । उनके नाम इस प्रकार हैं—(१) केवल ज्ञान, (२) मनः पर्यवज्ञान, (३) परमावधि ज्ञान, (४) आहारक लब्धि, (५) पुलाक लब्धि, (६) परिहार विशुद्ध चारित्र, (७) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र, (८) यथाख्यात चारित्र, (९) जिनकल्प और (१०) श्रेणी द्वय—उपसम श्रेणी एवं क्षपक श्रेणी । जम्बू स्वामी के पश्चात् साधक को इन दश बोलों का लाभ नहीं रहा ॥

विशेष—इन दस बोलों में—३ बोल ज्ञान से, २ बोल लब्धियों से ५ बोल चारित्र, कल्प व श्रेणी से सम्बन्धित हैं ।

दोहा

श्री सुधर्म मुनि आदि ले, पाट सत्ताईस शुद्ध ।

नाम कहूँ जाके प्रकट, सुनियो सरल प्रबुद्ध ॥

अर्थ—श्री सुधर्मा स्वामी से लेकर सत्ताईस पट्ट तक शुद्ध—आचार-परम्परा चलती रही । उनके नाम प्रगट रूप से कहता हूँ जिसे सभी विज्ञान अवगण करें ।

दोहा

सुधर्म^१ जम्बु,^२ प्रमत्र मुनि,^३ सिज्जंभव^४ जसोमद्र^५ ।

संभूत विजय,^६ मद्रबाहु^७ पुनि, धूल मद्र,^८ शील समुद्र ॥

सवैया इकतीसा

महामिरि^६ सुहस्त^{१०}, सुपरिबुध^{११}, इन्द्रदिन^{१२},
 आरजदिन^{१३} वेरसामी^{१४}, वज्रसेन^{१५} नाम है ।
 आरजरोह^{१६} पूषगिरि^{१७} फग्गुमित्र^{१८} धनगिरि^{१९},
 शिवभूत^{२०} आर्यमद्र^{२१} महागुण धाम है ॥१॥
 आरजनक्षत्र^{२२} आर्यरक्षित^{२३} जू नागस्वामी^{२४},
 जसुभूत^{२५} सिद्धल^{२६}, मुनीन्द्र अमिराम है ।
 देवहिंदू^{२७} खमासमण, ये सत्ताईस पाट शुद्ध,
 आत्म उजाल अरु, सारे निज काम है ॥२॥

अर्थ—१—श्री सुधर्मा स्वामी २—श्री जम्बू स्वामी ३—श्री प्रभव स्वामी ४—श्री शम्भु स्वामी ५—श्री यशोमद्र स्वामी ६—श्री संभूति विजय स्वामी ७—श्री भद्रबाहु स्वामी ८—श्री स्थूलिमद्र स्वामी ९—श्री महागिरी स्वामी १०—श्री सुहस्ति स्वामी ११—श्री सुपरिबुध स्वामी १२—श्री इन्द्रविजय स्वामी १३—श्री आर्यविजय स्वामी १४—श्री वज्र स्वामी १५—श्री वज्रसेन स्वामी १६—श्री आर्यरोह स्वामी १७—श्री पूषगिरि स्वामी १८—श्री फग्गुमित्र स्वामी १९—श्री धनगिरि स्वामी २०—श्री शिवभूति स्वामी २१—श्री आर्यमद्र स्वामी २२—श्री आर्य नक्षत्र स्वामी २३—श्री आर्य रक्षित स्वामी २४—श्री आर्यनाग स्वामी २५—श्री जसोभूति स्वामी २६—श्री आर्य सिद्धल और २७—श्री देवहिंदू गणि क्षमाधमण ये सत्ताइस पाट शुद्ध आचारी हैं । इन पट्टधरों ने आत्मा को उज्ज्वल किया और अपना कार्य सिद्ध किया ।

विशेष—सुधर्मा एवं जम्बू स्वामी का परिचय पहले दिया जा चुका है । शेष आचार्यों का जीवन वृत्त संक्षेप में इस प्रकार है :—

प्रभव स्वामी. — जम्बू स्वामीसे उद्बोधन पाकर ये पांच सौ व्यक्तियों के साथ वीक्षित हुए और अपनी अनुपम प्रतिभा एवं ज्ञान के द्वारा आचार्य के तीसरे पट्ट को सुशोभित किया । ३० वर्ष तक संसार में रहे, ५५ वर्ष तक संयम-पालन किया । जिसमें १० वर्ष तक आचार्य पद पर रहे । इनकी

कुल आयु ८५ वर्षों की थी। ये भगवान् महावीर-निर्वाण के ७५ वर्ष बाद स्वर्गवासी हुए।

शम्यंभव स्वामी :—ये ब्राह्मिक ब्राह्मण थे। एक बार इनके यहाँ यज्ञ हो रहा था, जिसमें प्रभव स्वामी ने अपने शिष्यों को भेजा और कहा—साक्षात् कि “अहो कष्ट महो कष्टं तत्त्वं न ज्ञायते” यह सुनकर शम्यंभव सोच में पड़ गए। उन्होंने गुरु से पूछा—‘सत्य कहो, तत्त्व क्या है?’ गुरु ने कहा—‘आर्य प्रभव के पास जाओ वे तुम्हें इसका मर्म समझावेंगे।’ शम्यंभव गुरु की आज्ञा पाकर प्रभवआचार्य की सेवा में आये। उनके उपदेश का इन पर इतना प्रभाव पड़ा कि ये यज्ञ को ही नहीं अपनी गर्भवती स्त्री तक को भी छोड़कर वीक्षित हो गए और अपनी योग्यता से प्रभव स्वामी के बाद २३ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। २८ वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहकर ३४ वर्ष तक इन्होंने संयम पालन किया। इस तरह इनकी कुल आयु ६२ वर्ष की थी। भगवान् महावीर के निर्वाण के ६८ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए। दशवैकालिक सूत्र की रचना इन्होंने ही अपने वीक्षित पुत्र मनक के लिये की थी।

यशोभद्र स्वामी :—ये तुंगियायन गोत्री थे। २२ वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहकर इन्होंने वीक्षा अंगीकृत की और चौंसठ वर्ष तक संयम पासा, जिसमें ५० वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। इस तरह इनकी कुल आयु ८६ वर्ष की थी। भगवान् महावीर के निर्वाण के १४८ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए।

संभूति विजय —ये यशोभद्र के शिष्य थे। इनका गोत्र माठर था। इन्होंने ४२ वर्षों तक गृहस्थाश्रम में रहकर पीछे संयम ग्रहण किया और ४८ वर्ष तक उसका पालन किया, जिसमें ८ वर्ष आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु ६० वर्ष की थी। भगवान् महावीर निर्वाण के ५६ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए।

भद्रबाहु स्वामी :—ये संभूति विजय के शिष्य थे तथा चतुर्वंश पूर्व के ज्ञाता थे। ४५ वर्ष गृहवास में रहकर संभूति विजय के पास वीक्षित हुए। १७ वर्ष सामान्य मुनि और १४ वर्ष युग प्रधान रूप से कुल ७६ वर्ष की आयु भोगकर वीर संवत् १७० में स्वर्गवासी हुए।

स्थूलि भद्र :—ये आचार्य संभूति विजय के दूसरे शिष्य थे। आचार्य भद्रबाहु के पश्चात् ये युग प्रधान हुए। पाटलिपुत्र के महाभात्य शकडाल

के ये पुत्र थे। ३० वर्ष की वय में आचार्य संभूति विजय के पास वैराग्य पूर्वक दीक्षित हुए। ये दशपूर्व के ज्ञाता थे। २४ वर्ष सामान्य मुनिता का पालन कर बीर संवत् १७० में युगप्रधान बने। ४५ वर्ष के बाद बीर सं० २१५ में स्वर्ग सिधारे।

महागिरि स्वामी :—ये स्थूलिभद्र के शिष्य थे। ३० वर्ष गृह-अवस्था में रहकर बीर सं० १७५ में दीक्षित हुए। ७० वर्ष तक शुद्ध संयम का पालन किया जिसमें ३० वर्ष आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु १०० वर्ष की थी। बीर निर्वाण के २४५ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए।

सुहृस्ति स्वामी :—ये आ० स्थूलिभद्र स्वामी के दूसरे शिष्य थे। ३० वर्ष तक गृह-अवस्था में रहकर दीक्षित हुए। इन्होंने ७० वर्ष तक संयम का पालन किया जिसमें ४६ वर्ष आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु १०० वर्ष की थी। बीर निर्वाण के २६१ वर्ष बाद स्वर्गवासी हुए।

सुपरिबुध स्वामी :—ये आर्य सुहृस्ति के पट्टधर शिष्य थे। २८ वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहकर दीक्षित हुए। इन्होंने ६८ वर्ष तक संयम का पालन किया—जिसमें ४८ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु ६६ वर्ष की थी। बीर निर्वाण के ३३६ वर्ष बाद इनका स्वर्गवास हुआ।

इन्द्रविभ्र स्वामी :—ये सुपरिबुध स्वामी के शिष्य थे। इनकी दीक्षा छोटी उम्र में ही हुई। ये ८२ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे और बीर निर्वाण के ४२१ वर्ष बाद स्वर्गवासी हुए।

आर्यविभ्र स्वामी :—ये इन्द्रविभ्र स्वामी के शिष्य थे। ३० वर्ष गृहवास में रहे। ८५ वर्षों के संयम काल में ५५ वर्ष ये आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु ११५ वर्ष की थी। बीर निर्वाण के ४७६ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए।

वज्र स्वामी :—ये आठ वर्ष तक गृह अवस्था में रहकर लघुवय में ही दीक्षित हो गये। इन्होंने ८० वर्ष तक शुद्ध संयम की आराधना की जिसमें ३६ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। इनकी कुल आयु ८८ वर्ष की थी। बीर निर्वाण के ५८४ वर्ष बाद ये स्वर्गवासी हुए। इनके बाद दस पूर्व का ज्ञान एवं चतुर्थ संहनन और चतुर्थ संस्थान का विच्छेद हो गया।

वज्रसेन स्वामी :—ये कौशिक गोत्र के थे । ६ वर्ष गृहावस्था में रहने के बाद लघुवय में ही इन्होंने बोझा ग्रहण करली और ११६ वर्ष तक संयम का पालन किया । ये मात्र तीन वर्ष आचार्य पद पर रहे । इनकी कुल आयु १२८ वर्ष की थी । वीर निर्वाण के ६२० वर्ष के बाद ये स्वर्ग-वासी हुए ।^१

कुण्डलिया

विवाहपञ्चमी अंग में, सतक बीस में सार ।

कीन उद्देशे आठ में, प्रश्न प्रथम गण धार ॥

प्रश्न प्रथम गणधार, जोर कर श्री जिन आगे ।

रहसी पूरव ज्ञान कठा—ज्ञग कहो अनुरागे ॥

साल एक सहस्र कखो जिनराज निग्रन्धी ।

सतक बीस में सार अंग श्री विवाहपञ्चमी ॥१॥

अर्थ—भगवती सूत्र के बीसवें शतक के आठवें उद्देशक में प्रथम गणधार गोतम स्वामी ने हाथ जोड़ कर भगवान् महावीर से प्रश्न किया कि भगवान् ! पूर्वश्रुत का ज्ञान कहाँ तक रहेगा ? भगवान् ने उत्तर देते हुए कहा—एक हजार वर्ष तक पूर्वों का ज्ञान रहेगा, बाद में उसका विच्छेद हो जायगा । यही विवाह प्रज्ञप्ति के बीसवें शतक का सार है ।

विशेष—भगवती सूत्र का ही दूसरा नाम विवाह प्रज्ञप्ति है ।

चन्द्रायण छन्द

श्री जिन दिन निर्वाण, पछे वरसां असी ।

तप कर गया सुरलोक, प्रभव काया कसी ॥

सितर ने सत एक, वर्ष जाता हुआ,

मद्रवाहु मुनिराज, जगत दुःखसुं जुआ ॥१॥

चौदेने सत दीय, वरस जातां खरो,

अव्यक्तवादी नाम, निन्हव हुआ तीसरो ।

१—श्री वज्रस्वामी और वज्रसेन के बीच आयं रक्षित और दुर्बलिका पुण्यभिन्न दो आचार्य हुए ।

पनरेने सत दीय, वरस बीतां पछे,
धूलभद्र दड़ सील, मुनि हुआ अछे ॥२॥

अर्थ—बीर—निर्वाण के अस्सी वर्ष बाद कठोर तप की साधना से अपनी आत्मा को निखार प्रभव स्वामी स्वर्ग लोक गए। वि० सं० १७० वर्ष बाद मुनि भद्रबाहु स्वामी जागतिक दुखों से मुक्त हुए। भगवान् महावीर के निर्वाण से बीसौ चौदह वर्ष बाद अव्यक्तवादी नाम के तीसरे निह्णव हुए। बीर निर्वाण के २१५ वर्ष बाद आचार्य स्थूलि भद्र स्वामी विवंगत हुए। वे सुमेरु के समान दड़ शील ब्रती संत थे।

विशेष—१ अव्यक्तवादी निह्णव—आवाड़ाचार्य के शिष्य थे। आवाड़ाचार्य एक दिन अपने शिष्यों को शास्त्र की वाचना दे रहे थे कि रात्रि में शूलवेदना से अकस्मात् उनका स्वर्गवास हो गया। वे मर कर देव बने। देव बनने के बाद शिष्यों पर उन्हें अनुराग से विचार आया कि शिष्यों की वाचना अपूर्ण रह गई है, अतः अच्छा है कि मैं पुनः जाकर उसे पूर्ण कर दूँ। इस प्रकार विचार कर वे अपने मृत शरीर में पुनः आकर प्रविष्ट हो गए और शिष्यों की वाचना पूरी कराके क्षमा वाचना सहित अपना परिचय देकर चले गए। जब शिष्यों ने यह जाना कि हम आज तक जिनको गुरु समझ कर बन्दन—नमन आदि करते रहे वह तो असंयमी देव था। तब वे शंकाशील होकर सोचने लगे कि न मालूम इन साधुओं में कौन खरा साधु है और कौन देव? ऐसा सोचकर उन्होंने पारस्परिक बन्दन—व्यवहार बन्द कर दिया।

२—संयम ग्रहण करने के पश्चात् स्थूलिभद्र स्वामी गुरुदेव की आज्ञा से पाटलीपुत्र की कोश्या (वेश्या के घर पर चातुर्मास करने पहुंचे। वे संयम ग्रहण के पूर्व भी कोश्या के यहां १२ वर्ष तक भोग भाव से रह चुके थे। कोश्या ने अपने पूर्व प्रेमी को संयम से डिगाने के लिये पूर्ण प्रयत्न किए किन्तु परम योगी स्थूलिभद्र सुमेरु के समान शील में दड़ रहे, अन्ततः वेश्या का भी—उसे सुधाविका बना कर—उद्धार कर दिया।

सवैया इकत्तीसा

दीय से अरु बीस साल, जात सून्य खिन्नवादी,
मये तिण खिण खिण, नवो जीव मानियो।

दोयसो अधिक अठा, बीस साल जात मयो,
पांचवो निन्हव क्रिया, वादी हू अज्ञानियो ॥
मानी तिन एक समय, उमय क्रिया मिध्यात,
मूढता पकर विपरीत, मत ठानियो ।
तीन सौ पैंतीस साल, जात मयो प्रथम ही,
कालकाचारज नाम संजती बखानियो ॥३॥

अर्थ—बीर निर्वाण के २२० वर्ष बाद शून्यवादी नाम का चतुर्थ
निह्लव हुआ जो क्षण-क्षण में नया जीव उत्पन्न होना मानता था । बीर
निर्वाण के २२८ वें वर्ष में एक समय में दो क्रिया को मानने वाला पंचम
निह्लव हुआ । मूढतावश यह विपरीत मत और मिध्यात्व का संस्थापक
था । बीर निर्वाण के ३३५ वर्ष बाद प्रथम कालकाचार्य हुए जो प्रसिद्ध
संयंती थे । वे श्यामाचार्य के नाम से भी प्रख्यात हैं ।

गीतिका छन्द

सतच्यार बावन वर्षे, दूजो कालचारज भयो ।
निज भगिनी सरस्वती बाली, गंधर्वसेन संगे जुध ठयो ॥
चारसे ऊपर वर्ष सित्तर, जात नृप विक्रम थयो ।
जिन करी वरणा-वरणी जग में, मेट पर दुःख जस लियो ॥१॥

अर्थ—बीर निर्वाण के ४५२ वें वर्ष में दूसरे कालकाचार्य हुए ।
उन्होंने अपनी बहिन सरस्वती के लिए गंधर्वसेन से युद्ध किया । फिर बीर
निर्वाण के ४७० वर्ष बाद विक्रमादित्य राजा हुए उन्होंने बर्ण-
व्यवस्था कायम की । प्रजा जनों का दुख मिटा कर, वे जग में यश
के भागी बने ।

विशेष :—कालकाचार्य द्वितीय बड़े विद्वान् और साहसी आचार्य
थे । उनकी बहिन सरस्वती ने भी बीक्षा ली थी । वह गुलाब के फूल
के समान सुन्दर तथा गुण गरिमा से युक्त थी । बाल ब्रह्मचारिणी होने से
उसकी तेजस्विता बहुत बढ़ी-बढ़ी थी । उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर
राजा गंधर्वसेन ने अपने सुमनों के द्वारा उसका हरण कर, उसे अपने

महल में मंगवा लिया । इस समाचार से कालकाचार्य बड़े दुखी हुए । उन्होंने अपने बृद्धि बल से एक सेना तैयार की और गन्धर्व सेन पर चढ़ाई करवाई । शकों का सहयोग और विद्या बल से गन्धर्व सेन को पराजित कर सरस्वती को वहाँ से निकाल लाए ।

वीर निर्वाण के ४७० वर्ष बाद उज्जैन में विक्रमादित्य नाम का एक नीति-निपुण-न्यायी राजा हुआ । वह प्रजा-जनों के दुख को अपना दुख मान कर उसे मिटाने का प्रयत्न करता था । उसने वर्ण-व्यवस्था कायम की और वर्णान्तर के सम्बन्ध का निवारण किया ।

गीतिका छन्द

पाँच से चमालीस वरसे, निन्हव छट्टो जानिये,
निरजीव थापक जे हुवो, जिन वचन विमुख बखानिये ।
चतुरासी पण सत वर्षे हुआ, वैर स्वामी मुनिसरू
सातवों निन्हव गोष्ठमाली हुवो, तिणही छमछरू ॥२॥

अर्थ—वीर निर्वाण के बाद ५४४ वें वर्ष में रोहगुप्त नाम का छट्ठा निहव हुआ जो जिन वचन के विरुद्ध निर्जोव राशि का संस्थापक था । वीर निर्वाण के बाद ५८४ वें वर्ष में वैर (वज्र) स्वामी मुनीश्वर हुए । इसी वर्ष में सातवां निहव गोष्ठा माहिल हुआ ।

विशेषः—जैन सिद्धान्त के अनुसार जीव और अजीव ये दो ही मूल तत्त्व माने गये हैं । किन्तु इस छट्टे निहव ने इनके अतिरिक्त एक तीसरे मिश्र तत्त्व का भी प्रतिपादन किया, जो जिन वचन के बिल्कुल विपरीत होने से यह त्रैराशिक निहव कहलाया ।

वज्र स्वामी दस पूर्वों के ज्ञाता थे । उनके समय से ही चतुर्थ संहनन और चतुर्थ संस्थान का विच्छेद माना जाता है । उनके समय में ही सातवां निहव गोष्ठमाहिल हुआ । उसकी मान्यता थी कि आत्मा और कर्म का सम्बन्ध सर्प के शरीर से जुड़ी हुई कँचुली के समान है, जबकि प्रभु महावीर की मान्यता के अनुसार आत्मा और कर्म का सम्बन्ध दूध और पानी के समान है ।

गीतिका छन्द

कर्म बंध जिम छै तिम न मान्यो, सात ही निहव सही ।
 बीजें तू चौथे पंच में, मिच्छामि दुक्कड़ं मुख कही ॥
 धुर सप्तमे षष्ठमे मिच्छामि दुक्कड़ं नहीं दाखियो ।
 इधकार निहव सातको, पाटावली में भाखियो ॥३॥

अर्थ—इस प्रकार सातों निहवों ने भगवान् महावीर के सिद्धान्त के विपरीत कर्म बंधाने वाली विपरीत प्रवृत्ति करके नया मत स्थिर किया । इनमें से दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें निहव ने अपनी भूल समझ में आ जाने से 'मिच्छा दुक्कृत' देकर अपनी शुद्धि करली किन्तु पहले, छठे और सातवें ने शुद्धिकरण नहीं किया । इस प्रकार सात निहवों का संक्षिप्त वर्णन पटावली में किया गया है ।

विशेष—इसके अतिरिक्त दो निहव जो भगवान् महावीर के समय हुए उनका वर्णन इस प्रकार है—

भगवान् महावीर के केवल ज्ञान प्राप्त होने के १४ वर्ष बाद श्रावस्ती नगरी में जमाली नाम का निहव हुआ । वह संसार पक्ष में भगवान् महावीर का जामाता था । वह पांच सौ राजकुमारों के साथ महावीर के पास दीक्षित हुआ । महावीर की मान्यता थी कि 'कडे माणे कडे' अर्थात् क्रियमाण को किया कहना, मगर जमाली की मान्यता से 'कडे माणे अकडे' विपरीत अर्थ होता था । इसी विपरीत मान्यता के कारण वह महावीर के संघ से अलग होकर विचरने लगा और लोगों के बहुत समझाने पर भी वापिस महावीर के पास नहीं आया ।

भगवान् महावीर को केवल ज्ञान प्राप्त होने के १६ वर्ष बाद ऋषभपुर नगर में चतुर्विंश पूर्वधर वसु नाम के आचार्य का शिष्य तिथ्यगुप्त, जीव के अंतिम प्रवेश में जीवत्व मानने की एकान्त विचारणा से दूसरा निहव हुआ ।

दोहा

षट सत नव वरसां पछे, भयो साहमल जैण !
 अपनी मत मुं थापियो, पंथ दिगम्बर तैण ॥६॥

अर्थ—वीर निर्वाण के बाद ६०६ वें वर्ष में साहमल (सहसमल) नाम का एक जैन साधु हुआ, जिसने अपने मत से दिगम्बर पंथ की स्थापना की ।

विशेष—कृष्णाचार्य के शिष्य सहसमल जिसको शिवभूति भी कहा जाता है, गुप्त के समझाने पर जो तैयार नहीं हुआ और अपनी मति के अनुसार दिगम्बर पंथ को स्थापित किया । रथवीरपुर से यह दृष्टि चालू हुई ।

छन्द मोती दाम

षट् सप्त बीस बरस बतीत, मई चऊ साख सुनो धर प्रीत ।

समे तिन द्वादस साल कराल, पर्यो दुखदायक उग्र दुकाल ॥१॥

अर्थ—वीर निर्वाण के छ सौ बीस वर्ष बाद संघ में चार शाखाएँ हो गयीं । उस समय बारह वर्ष का भयंकर दुःखदायी उग्र अकाल पड़ गया था ।

छन्द मोतीदाम

हुतें मुनि शुद्ध कियो संधार, थये व्रति कायर अष्ट तिवार ।

केई मुनि उत्तम जाय प्रदेश, महाव्रत कायम राख असेस ॥२॥

अर्थ—उस समय प्रासुक व ऐषणिक आहार पानी नहीं मिलने से कितने ही संतों ने संथारा ग्रहण करके जीवन को सफल बनाया और जो कायर थे वे आहार-पानी के अभाव में साधु-जीवन यानी संयम मार्ग से गिर गए । कुछ संतों ने अन्य अच्छे देशों में जाकर जहाँ आहार-पानी की सुलभता थी, समयपूर्ण जीवन व्यतीत किया ।

छन्द मोतीदाम

तज्यो नहीं देस तिके व्रतधारी, भिन्यो न आहार भया कु आचारी ।

धरे उर जोतस वैदग-जाल, करै बहु औषध मन्त्र कुचाल ॥

अर्थ—जिन संतों ने देश नहीं छोड़ा वे आहार नहीं मिलने से शिथिल-आचारी बन गए और ज्योतिष, वैद्यक, तंत्र-मंत्र एवं औषध करने की कुचाल को धारण कर प्राजीविका चलाने लगे ।

छन्द मोतीदाम

आज्ञा जिनराज तखी जेही मेट, अमुध आहार मरे निज पेट ।
सदोषन थानक वस्त्र पात्र, गहै अकल्प समारत गात्र ॥४॥

अर्थ—अकालप्रस्त क्षेत्र में रहे हुए संत, जिनराज की आज्ञा के विरुद्ध अशुद्ध आहार से अपना पेट भरने लगे । वे सदोष स्थानक, अकल्पनीय वस्त्र-पात्र ग्रहण करते एवं अपना शरीर साफ सुधरा रखते ।

विशेष - अकाल के कारण साधु, साधु-मर्यादा को भूलकर शिथिला-चारी और प्रमादी बन गये और शरीर को शोभा-विभूषा करने लगे ।

छन्द मोतीदाम

समे तिन एक मड़ाजन तेह, बडो लिछमीधर दीपत जेह ।
धना भ्रात स्वजन था जसु गेह, संतोषत साध हिये धर नेह ॥५॥

अर्थ—उस समय एक बड़ा महाजन लक्ष्मीधर सेठ था जो नगरी में दीप्तिमान था । उनके घर में बहुत से भाई और बंधु थे तथा जो मन में प्रेम धर कर साधुओं को प्रतिलाम दिया करता था ।

विशेष—तपागच्छ पट्टावलि के अनुसार इस सेठ का नाम जिनदत्त था जो सोपारक नगर का निवासी था । उसकी स्त्री का नाम ईश्वरी था ।

छन्द मोतीदाम

रखो गृह रंचक नाज तिवार, निश्चो अन सेठ प्रते कही नार ।
हुवे जबलु पुन काम चलाय, मिले न द्रव सटे न उपाय ॥६॥

अर्थ—उस समय उनके घर में रंच मात्र भी अनाज नहीं था । यह जानकर उनकी स्त्री ने अनाज की व्यवस्था के लिये उनसे कहा, तो वे बोले—‘द्रव्य से भी अनाज नहीं मिलता है, कोई उपाय काम नहीं करता अतः जब तक अनाज मिले तब तक किसी तरह काम चलाओ ।’

छन्द मोतीदाम

सुनि हम सेठ बचन सुबाम, कहे अनखोर चले नहीं काम ।
बदे दिल अन्तर सेठ विचार, करो तुम राव पियां बिष डार ॥७॥

अर्थ—सेठ की ऐसी बात सुनकर सेठानी बोली—‘अन्न बहुत कम है जिससे काम नहीं चल सकता ।’ इस पर मन से विचार कर सेठ ने कहा कि—‘तुम राब बनाओ, उसमें किच डालकर सब पी लेंगे ।’

दोहा

सरम रहे जैमो अर, देख्यो नहीं उपाय ।

करी तियारी रावरी, बांटे जेहर मंगाय ॥१०॥

अर्थ—साज बचने का कोई दूसरा उपाय नहीं देख कर उसने राब तैयार कराई और जेहर मंगाकर पीसने लगी ।

दोहा

तिण अवसर एक भैखधर, आयो लेन आहार ।

सेठ कहे कछु राब लै, दो इनको धर प्यार ॥११॥

अर्थ—उस समय एक भेषधारी साधु आहार लेने को वहाँ आए— इस पर सेठ ने सेठानी से कहा कि ‘थोड़ी सी राब लेकर इनको प्रेम पूर्वक दे दो ।’

दोहा

सू बांटो पूछे मिखु, सेठ कही समझाय ।

मिखु भाखे सुमता रहो, गुरु समीप हम जाय ॥१२॥

अर्थ—मिखु ने सेठ से पूछा कि—‘तुम क्या पीसते हो ?’ इस पर सेठ ने सब कुछ समझा कर कह दिया कि ‘अन्न के अभाव में परिवार का जीवन चलना असंभव जानकर, हम राबड़ी बना कर उसमें जेहर डाल कर पीकर मैं सपरिवार मरना चाहते हैं ।’ इस पर साधु बोले कि—‘कुछ बेर रुको ! जब तक गुरु के पास जाकर आता हूँ ।

चन्द्रायण

सकल हकीकत जाय, कही गुरु कूँ जबै ।

गुरु सुन सेठ समीप, आय बोल्यो तबै ॥

जो तुम जीवो सरव, कहा मुझ दीजिये ।

सेठ कहे तुम चाह, हुवे सो लीजिये ॥३॥

अर्थ—जब उस साधु ने गुरु महाराज की सेवा में जाकर सेठ से सम्बन्धित सारा वृत्तान्त सुनाया तो तत्काल गुरुजी सेठ के समीप आए और बोले कि—‘अगर तुम सब जो सको तो मुझे क्या दोगे ?’ इस पर सेठ ने कहा कि—‘तुम जो चाहो सो हम से ले सकते हो ।’

चौपाई

जो तुम आवक जीवन चाहो, तो मम आज्ञा एह आराहो ।
तुम सुत बहुत च्यार मोय दीज्यो, सेठ कहे निश्चय तुम लीज्यो ॥१॥

अर्थ—गुरु ने कहा कि ‘हे आवक ! यदि तुम जीना चाहते हो तो मेरी इस आज्ञा का आराधन करो । तुम्हारे बहुत से लड़के हैं, उनमें से चार मुझे दे दो ।’ इस पर सेठ ने कहा कि—‘अवश्य आप ले लेना ।’

विशेष—गुरु की आज्ञा से सेठ ने सोचा कि दुःख में सड़-सड़ कर मरने की अपेक्षा संयम-साधना से जीवन को ऊँचा उठाना परम श्रेष्ठ है । इसमें आज्ञा-पालन और जीवन-रक्षण दोनों लाभ हैं । कहा भी है—
‘सर्वनाशो समुत्पन्नो अर्थः त्यजति पंडितः ।’

चौपाई

जदपि बल्लभ होत कुमारा, तदपि मरण भय लीन विचारा ।
गुरु कहि बचन हमारो गहिये, सदर सप्त दिन लग पुनि रहिये ॥२॥

अर्थ—यद्यपि अपनी संतान हर माता-पिता को प्रिय होती है तथापि मरने के भय से विचारा कि यह अच्छा मार्ग है । गुरु ने कहा कि हमारी बात मानकर सात दिनों तक तुम ठहरो, पीछे संकट दूर हो जायगा ।

चौपाई

दूर दिसावर सुं बहु नाजा, आसी समुद्र उलंघ जिहाजा ।
बीते सप्त दिवस तब आई, नाज जिहाज सकल सुखदाई ॥३॥

अर्थ—सात दिनों के बाद समुद्र पार के अन्य देशों से जहाजों के

द्वारा बहुत सारा अनाज आयेगा । गुरुजी के कथनानुसार सात दिन बीतने पर अनाज से भरा सबको सुख देने वाला जहाज आ गया ।

विशेष—तपागच्छ पट्टावली में सात दिनों की अवधि का उल्लेख नहीं है ।

चौपाई

सेठ वचन वस गुरु पे जाई, स्रंप्पा पुत्र तजी न बढ़ाई ।

नागो नगेन्द्र रु लक्ष्मति जानो, चौथा विजेधर नाम बखानो ॥४॥

अर्थ—सेठ ने अपनी बात के अनुसार गुरु के पास जाकर अपने पुत्रों को सौंप दिया और अपने बड़प्पन को निभाया । उन पुत्रों के नाम नग, नगेन्द्र, लक्ष्मति और विजेधर थे ।

चौपाई

गुरु तसु काल मेष जसु दीना, मन गुन पंडित मया प्रवीना ।

होत सुकाल साधु आचारी, आये गुन-निधि उग्र विहारी ॥५॥

अर्थ—गुरु महाराज ने उन सबको तत्काल साधु वेश धारण करा दीक्षित कर दिया और वे सब भी अच्छी तरह पढ़ लिख कर प्रवीण पंडित बन गए । 'सुकाल' होते ही आचारवान् गुण निधि और उग्र विहारी साधु फिर वेश में लौट आए ।

चौपाई

मुनि कहें चलो शील शुद्ध मांही, निठुर मेषधर मानत नांही ।

मिल चिहूँ आत प्रवीण प्रतापी, अपनी मत चिहूँ साखा थापी ॥६॥

अर्थ—वेशान्तर से आये हुए मुनियों ने स्थानीय मुनियों को शुद्ध आचार पर चलने को कहा किन्तु उन मेषधारी निठुर मुनियों ने उनकी बात नहीं मानी । इसके बाद प्रवीण एवं प्रतापी उन चारों साधुओं ने अपने-अपने मत के अनुसार चार शाखाएँ स्थापित कीं ।

विशेष—जैन संघ में यहीं से शाखाएँ चालू हुईं और गच्छ भेद का अंगरेजों द्वारा, जो क्रमशः बढ़ते-बढ़ते जटिल हो गया ।

चौपाई

चन्द्र नागेन्द्र निरवृत्त विद्याधर, साख चतुर्थ मई अति विस्तर ।
सीत अम्बरी दिगम्बर दोई, चल्या तबते दड़मति होई ॥७॥

अर्थ—चन्द्र, नागेन्द्र, निर्बृत्त और विद्याधर इन चार शाखाओं में चौथे का बहुत विस्तार हुआ । श्वेताम्बर और दिगम्बर के भेद भी तभी से बूढ़ होकर चलने लगे ।

त्रोटक छंद

प्रतिमा जिन थापी पुजावन कूँ, जग के बहु लोक भ्रमावन कूँ ।
उर मांहि विमासन ऐसी करी, खलु है मत थापना वृद्धि खरी ॥१॥

अर्थ—उसी समय जग के लोगों को आकर्षित करने के लिये तथा पूजा पाने को जिन प्रतिमा की स्थापना की । उन्होंने मन में यह सोचा कि निश्चय इससे हमारे मत की वृद्धि होगी और लोग धर्म में स्थिर रहेंगे ।

त्रोटक छन्द

नर नारी उपासी हुसी अपना, इम जान करी प्रतिमा थपना ।
जिन पूजन को उपदेश दिये, बहु श्रावक हु अपनाय लिये ॥२॥

अर्थ—उन प्रतिमा-स्थापकों ने सोचा कि मूर्ति की उपासना करने वाले लोग हमारे मक्त होंगे, ऐसा जानकर प्रतिमा की स्थापना की और जिन-पूजन का उपदेश दिया तथा बहुत से श्रावकों को अपने मत की ओर कर लिये ।

विशेष—इस समय मूर्ति-पूजा का प्रचार, प्रसार और जोर बढ़ा ।

चौपाई

अपने अपने गछ ठहराई, पुनि श्राविक मन प्रीत बंधाई ।
ठाम ठाम देहरा कराये, उपासरा गुरु के मन माये ॥८॥

अर्थ—इसके बाद अपने-अपने गच्छ कायम करके फिर उसके प्रति श्रावकों के मन में प्रीति उत्पन्न की और जगह-जगह पर गृह-मन्दिर और गुरु की पसन्द के अनुकूल उपाश्रय बनवाये गये ।

चौपाई

श्रावक जन निज निज अनुरागे, महिमा पूजन करवा लागे ।
जात आठ से वर्ष बयांसी, प्रागट थये चैत के बासी ॥६॥

अर्थ—श्रावक जन अपने अपने गच्छ के अनुराग से महिमा-पूजा करने लगे । इस प्रकार वीर संवत् ८८२ वर्ष में बहुत से साधु चैत्यवासी होगये ।

विशेष—इस काल में चैत्यवासी अर्थात् मन्दिरो में रहने वाले साधुओं का प्राबल्य हुआ । पं० बेचरदास जी के अनुसार श्वेताम्बर संप्रदाय के स्पष्टतः पृथक् होने के बाद वीर संवत् ८८२ वें वर्ष में उनमें का विशेष भाग चैत्यवासी बन गया । —जैन साहित्य में विकार, पृ० ११६ (हिन्दी संस्करण) ।

चौपाई

नव से असी वर्ष सूत्र लिखाना, जसु कथा अब सुनो सयाना ।
बल्लभिपुर नयरे अमिरामा, मुनि देवडिढ खमासण नामा ॥१०॥

अर्थ—वीर संवत् ६८० में सूत्र लिपिबद्ध किये गये, चतुर पाठक उसकी कथा को अब सुने । सुन्दर बल्लभिपुर नगर में देवडिढ क्षमाश्रमण गणी नाम के आचार्य हुए ।

चौपाई

खम दम बहु समता रस भगिया, एक पूर्व ज्ञानी गुन दरिया ।
दिवस एक मुनि करत आहारा, सूंठ गांठिया श्रवन मभारा ॥११॥

अर्थ—देवडिढ गणी क्षमाश्रमण शान्त, दान्त और समता रस के सागर और एक पूर्व के ज्ञाता थे । वे एक दिन आहार करते सूंठ की गंठि वापरने को लाये थे । समयान्तर में काम लेने को उसे काल में रस छोड़ा ।

चौपाई

धर के भूल गए दिन बीता, करत आवश्यक आये चीता ।
तब मुनि नायक कीन विचारा, जासी सूत्र विछेद तिवारा ॥१२॥

अर्थ—आचार्य सूँठ को कान में रख कर भूल गए और दिन बीत गया । शाम को जब आवश्यक करते समय उस पर ध्यान गया तो मुनि नायक ने विचार किया कि यदि सूत्रों को लिपि बद्ध नहीं किया गया तो इसी प्रकार सूत्र-ज्ञान का भी विच्छेद हो जायगा ।

चौपाई

दिन २ बुद्धि अन्य मुनि देखा, लिखाताऽदल सूत्र असेखा ।

सतावीस पाट सुखकारी, चले वीर आज्ञा व्रत धारी ॥१३॥

अर्थ—देवर्द्धि गणी ने प्रति दिन होने वाली बद्धि की क्षीयता को देख कर सम्पूर्ण सूत्रों को ताड़ पत्रों पर लिखवाया । इस तरह सत्ताईस पाट तक सुखकारी रूपसे साधु भगवान् की आज्ञा में चलते रहे ।

विशेष—शास्त्रों का संलेखन देवर्द्धि गणी के ही समय में हुआ । उनसे पूर्व शास्त्र की परम्परा कण्ठस्थ चलती थी । यहाँ तक शुद्धाचार्य आचार्य परम्परा चलती रही ।

सोरठा

पछे केतला काल, व्रतधारी विरला रखा ।

प्रगटे बहुत विचाल, हिंसा धर्मी भेषधर ॥१॥

अर्थ—इसके बाद कितने ही समय तक विरले संयमी पुरुष रहे और फिर बीच में हिंसा-धर्मी, भेषधारी बहुत प्रगट हो गए ।

सवैय्या इक्तीसा

मंडारे सिद्धांत जोरे काव्य सिलोक धुई,

भाषा संस्कृत प्राकृत मन भाये जू ।

चौपाई कवित्त दूहा, गाथा छंद गीत बहु,

इत्यादि अनेक जोर करिके सुनाये जू ॥

लोप जिन-आज्ञा, हिंसा धरम की पुष्टि करे,

रात जागरण थाप, पुस्तक पुजाये जू ।

बजाये वाजिंत्र गीत, गवाये कहाये पूज,
पांव-मंडा कराये, सरस्स माल खाये जू ॥४॥

अर्थ—शिथिलाचारी साधुओं ने शास्त्रों को भंडारों में रख कर नयी रचना चालू की। वे काव्य, श्लोक, स्तुति, और भाषा की रचना मन पसन्द संस्कृत व प्राकृत भाषा में करने लगे। चौपाई, कवित्त, दोहा, गाथा, छंद, गीत आदि अनेक प्रकार की जोड़ कर लोगों को सुनाते, जिनेन्द्र देव की आज्ञा का लोप कर हिंसा धर्म की पुष्टि करते और रात में जागरण करवाते तथा पुस्तकों की पूजा करवाते, बाजा बजवाते, गीत गवाते, और पूज्य कहाते हुए पांव मंडाकर सरस माल खाते थे।

सवैया इकत्तीसा

शत्रुंजय महातम, रच के चलाये संघ,
विविध प्रकार तेला, विध समझाये जू।
चन्दनबाला को तेलो, जुर तेलो गोला तेलो,
माया तेलो समुद्र-डोहन मन लाये जू॥
गौतम पड़गो पंचमादि, तप उजवन लोम,
बस होय ऐसे तपसादि ठाये जू।
पूजन त्रिनेन्द्र ओले, न्हाए धोये छैल रहे,
तोरे फल फूल, दया दिल की घटाए जू॥५॥

अर्थ—‘शत्रुंजय-माहात्म्य’ आदि ग्रंथ रचकर लोगों को तीर्थ यात्रा के लिये संघ निकालने का उपदेश दिया और अनेक प्रकार के तेलों की विधि समझायी। यथा—चन्दनबाला का तेल, जुर तेल, गोला तेल, माया तेल। समुद्र-डोहन, गौतम पड़गा और पंचमी तप आदि के रूप से लोम वश उजमण कराये। जिनेन्द्र पूजा के निमित्त नहाना, धोना और छैल बने रहना तथा पूजा के लिये फल, फूल, वनस्पति आदि तोड़ने की व्यवस्था देकर हृदय के दया-भाव को घटा दिया।

विशेष :—भगवान् महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना करके जंगम तीर्थ का निर्माण किया—क्योंकि तीर्थ बहो है जिसके माध्यम से

साधक संसार-सागर से पार हो जाय । अन्य धर्मों की तरह जैन धर्म में ब्रह्म-पूजा और क्षेत्र-पूजा को भव-सागर पार होने का मार्ग नहीं माना है । वस्तुतः पर्वत, नदी, नाला आदि में तारक शक्ति नहीं है । अतः उनका यह मार्ग-दर्शन जैन धर्म की मान्यता के विपरीत है ।

चन्द्रायण

नवसत वाणव वरस, लवध नास्ति मई,
नवसत त्राणे वौथ छमछरी धुर थई ।

नवसत चाणव (?) करण लगे चवदस पत्नी,
सहस वरस लग ज्ञान रहे, पूरव अस्सी ॥४॥

अर्थ—वीर संवत् ६६२ के बाद लवियों का विच्छेद हो गया । ६६३ में भादवा सुदी चौथ को पहले पहल सम्बत्सरी की गई अर्थात् सम्बत्सरी पंचमी के बदले चौथ को की गई । ६६४ में चतुर्वशी को पत्नी पर्व मनाने लगे और भगवान् महावीर से एक हजार वर्ष तक एक पूर्व का ज्ञान रहा—बाद में उसका सर्वथा विच्छेद हो गया ।

दोहा

जा पीछे नव वरस छं, पूरव ज्ञान समस्त ।
रखो नहीं या भरत में, ज्यूं उद्योत रवि अस्त ॥१३॥

अर्थ—भगवान् महावीर के निर्वाण से एक हजार नव वर्ष बाद भरत क्षेत्र में पूर्वों का सम्पूर्ण ज्ञान विच्छेद हो गया, जैसे सूर्य के अस्त होने से प्रकाश नष्ट हो जाता है ।

चन्द्रायण

चवदह से चौसठ, वरसे बड़गछ हुआ ।
चौरासी गछ ताम, थये जुवा जुवा ॥
सोले से गुणवीस, हुयो पूनमियो ।
अमावस दिन चंद, उमायो जस लियो ॥५॥

अर्थ—वीर निर्वाण के बाद १४६४ वें वर्ष में बडगच्छ की स्थापना हुई। इसके बाद और चौरसी गच्छ बन गए। वीर निर्वाण के बाद १६२६ वें वर्ष में एक पुनमिया गच्छ उत्पन्न हुआ जिसने अमावस के दिन चन्द्र उगा कर यश प्राप्त किया।

विशेष—आचार्य चन्द्रप्रभ ने पुनम की पक्की नियत की। अतः पुनमिया गच्छ कहलाया। स्वर्गीय मुनि श्री मणिलाल जी वि० सं० ११४६ में इस गच्छ की उत्पत्ति मानते हैं। तपागच्छ पट्टावली में वि० सं० ११५६ में उत्पत्ति लिखा है।

चौपाई

सौला से अरु बरस चोपन, आंचलियो गछ की उत्पन्न।
सौला से सिचर छमछर, प्रगछो गच्छ तबही ते खरतर ॥१४॥
सतरह से पचावन साले, तपगच्छ प्रगट थयो तिहि काले।
गछ सर्व अष्ट थया तिहिं टाखे, जिन आज्ञा की बिहि न आखे ॥१५॥

अर्थ—वीर निर्वाण के बाद १६५४ वें वर्ष में आंचलिया गच्छ की स्थापना हुई और १६७० में खरतर गच्छ प्रकट हुआ। वीर निर्वाण के बाद १७५५ वें वर्ष में तपगच्छ की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार जैन संघ विभिन्न गच्छों में बंट गया। स्वयंज मोह से सब गच्छ अष्ट हो गये। सब भगवान की आज्ञा का पालन भूल गये।

विशेष :—धर्मसागर ने तपगच्छ पट्टावली में वि० सं० १२०४ में खरतर और १२१३ में आंचलिक मत उत्पन्न होना लिखा है। जगन्चन्द्र सूरि से वि० सं० १२८५ में तपागच्छ हुआ (तपागच्छ पट्टावलि के अनुसार)।

चौपाई

एक दिवस गछधारी विचारु, काढ़े सूत्र सम्मालन सारु।
चाख्या सूत्र उदेही बिलोका, तब ते करन लगे मन सोका ॥१६॥

अर्थ—एक दिन गच्छधारी यति ने विचारा और मण्डार में से सारे सूत्रों को बाहर निकाल कर संमालना प्रारंभ किया तो देखा कि सूत्रों को उबई चाट गई है और तब से वे मन में सोच करने लगे।

चौपाई

लिख अबरसर गुजरात मन्कारा, नगर अहमदाबाद सुदारा ।

ओसवाल बंसी जिह ठामें, वसत दफ्तरी लुंको नामें ॥१७॥

अर्थ—उस समय गुजरात प्रवेशान्तर्गत अहमदाबाद शहर में ओस-
वाल बंसीय लुंकाशाह नाम के दफ्तरी रहते थे ।

चौपाई

एक दिन लुंकोशाह हुलासे, गयो उपाश्रय गुरु ने पासे ।

कहे भिक्षु भावक सुन लीजे, कर उपकार सिद्धान्त लिखीजे ॥१८॥

अर्थ—एक दिन लुंकाशाह प्रसन्नता पूर्वक उपाश्रय में गुरुजी के पास
गए तो वहां साधु ने कहा कि—“भावक जी सिद्धान्त लिख कर उपकार
करो । यह संघ सेवा का काम है ।”

दोहा

सुन विरतन्त लूँके सकल, कीनो वचन प्रमाण ।

दशविकालिक प्रत प्रथम, ले पहुँते निज थान ॥१९॥

अर्थ—लुंकाशाह ने यति जी से सारा वृत्तान्त सुनकर कहा कि—
“आपकी आज्ञा शिरोधार्य है ।” और सबसे पहले दशविकालिक की प्रति
लेकर अपने घर चले आये ।

दोहा

बाँच वचन जिनराज के, उसमें कीन विचार ।

ए गछ धारी मौकले, दीसै अष्ट आचार ॥२०॥

अर्थ—प्रतिलिपि करते समय लुंकाशाह ने जिनराज के वचनों को
ध्यान से पढ़ा । पढ़ कर मन में विचार किया कि वर्तमान गच्छधारी
सभी साध्वाचार से अष्ट बिलाई बेते हैं ।

चौपाई

जदपि ए गछधारी अधरमी, तदपि करिये अति नरमी ।

जबलुं सकल सिद्धान्त न पाए, तबलुं इनके चलो सुहाए ॥२१॥

अर्थ—लौकाशाह ने लिखते समय विचार किया कि यद्यपि ये गच्छ-
धारी साधु अथर्वी हैं तथापि अभी इनके साथ नञ्जता से ही व्यवहार करना
चाहिये । जब तक शास्त्रों की पूरी प्रतियाँ प्राप्त नहीं हो जाती तब तक
इनके अनुकूल ही चलना चाहिये ।

चौपाई

इम विचार सब आलस छंटे, प्रत बेचड़ी लिखनी मंडे ।
बाँचत सुत्र महा सुख माने, तन मन बच करि अति हरखाने ॥२०॥

अर्थ—ऐसा विचार कर उन्होंने समस्त आलस्य का त्याग कर दो-
हो प्रतियाँ लिखनी प्रारम्भ कीं । वीतराग बाणी (सूत्र) को पढ़ कर
उन्होंने बड़ा सुख माना और तन, मन, बचन से अत्यन्त हर्षित हुए ।

चौपाई

प्रागटी कल्लुक मोटी पुन्याई, ताते वस्तु अपूर्व पाई ।
प्रथम अध्ययन कसो जिन उत्तम, धर्म अहिंसा तप सुध संजम ॥२१॥

अर्थ—अपने लेखन के संयोग को उन्होंने पूर्व जन्म का महान् पुण्यो-
दय माना तथा उसी के प्रभाव से तत्त्व-ज्ञान रूप अपूर्व वस्तु की प्राप्ति
को समझा । दशविकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की प्रथम गाथा में धर्म
का लक्षण बताते हुए भगवान् ने अहिंसा, संयम और तप को ही प्रधानता
दी है ।

विशेष :—दशविकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की प्रथम गाथा
इस प्रकार है :—

धम्मो मंगल सुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मो सयामणो ॥१॥

लौकाशाह यह पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्न हुए ।

चौपाई

ते कल्याण रूप भग त्यागे, देखो मूढ़ हिंसा धर्म लागे ।
इम लूकों मन बिसमय होई, लिख दशविकालिक प्रत दोई ॥२२॥

अर्थ—ये गण्डधारी साधु कल्याण रूप अहिंसा के मार्ग को त्याग कर, मृदुतावश हिस में धर्म मानने लगे हैं। इस प्रकार लोंकाशाह के मन में आश्चर्य हुआ। उन्होंने दशवैकालिक सूत्र की दो प्रतियाँ लिखीं।

चौपाई

एक निज गृह राखी सु प्रतापी, एक भेष धारिन कुं आपी।

पुनि २ लिखन काज प्रत न्याये, इक राखी इक लिख पहुँचाये ॥२३॥

अर्थ—उस प्रतापी लोंकाशाह ने उन लिखित दो प्रतियों में से एक अपने घर में रखी और दूसरी भेषधारी यति को दे दी। इसी तरह लिखने को अन्याय्य प्रति लाते रहे और एक अपने पास रख कर दूसरी यति को पहुँचाते रहे।

चौपाई

सूत्र बत्तीस सकल लिख लीना, ले परमारथ मये प्रवीना।

तेइवे मस्म काल नीसारियो, उमय सहस बरसे अतरियो ॥२४॥

अर्थ—इस प्रकार उन्होंने सम्पूर्ण बत्तीस सूत्रों को लिख लिया और परमार्थ के साथ-साथ शास्त्र-ज्ञान में प्रवीण भी बन गए। इसी समय मस्म ग्रह का योग भी समाप्त हुआ और वीर निर्वाण के दो हजार वर्ष भी पूरे होने को आये।

दोहा

बरस उमय सहस्र को, वरन्यो पेटो एह।

अब नृप विक्रम सुचन्यो, समत बरस सोलेह ॥२५॥

अर्थ—इस प्रकार दो हजार वर्ष काल का वर्णन किया गया। अब विक्रम संवत् सोलह सौ वर्ष का वर्णन करते हैं—

चौपाई

पनरे से इगतीसे बरपे. लूँकेसाह बरम सुब परखे।

दुर्लभ पंथ साधु को देख्यो, पंच महाव्रत रूप विसेख्यो ॥२५॥

अर्थ—संवत् १५३१ में धर्म प्राण लोकाशाह ने धर्म का शुद्ध स्वरूप समझ कर लोगों को समझाया कि साधु का धर्म-मार्ग अत्यन्त कठिन अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप पंच महाव्रत वाला है ।

चौपाई

सुमत पंचत्रय गुप्त आराधे, सतरे भेदे संजम साधे ।
पाप अठारे रंच न सेवे, निरवद भंवर मिच्छा मुनि लेवे ॥२६॥

अर्थ—मुनि धर्म की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि—पांच समिति और तीन गुप्ति का जो आराधन करते हैं, सत्रह प्रकार के संयम का पालन करते हैं, हिंसा आदि अठारह पापों का कभी सेवन नहीं करते और जो निरवद्य भंवर—मिच्छा को ग्रहण करते हैं, वे ही सच्चे मुनि हैं ।

चौपाई

दोष बयालिस टालत सारा, लेत गऊनी परे आहारा ।
नव विध ब्रह्मचर्य व्रत पाले, द्वादश विध तप कर तन गाले ॥२७॥

अर्थ—जो बयालीस दोषों को टाल कर गाय की तरह शुद्ध आहार पानी ग्रहण करते हैं, नव बाड़ सहित पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं तथा बारह प्रकार की तपस्या करके शरीर को कुश करते हैं ।

चौपाई

वरते शुद्ध इसे विवहारा, ते कहिये उत्तम अनगारा ।
ए मत हीन मेघ धर भूढ़ा, हिंसा धर्मी लोभ आरूढ़ा ॥२८॥

अर्थ—इस प्रकार जो शुद्ध व्यवहार का पालन करते हैं; उन्हें ही उत्तम साधु कहना चाहिये । आज के जो भक्ति बिहीन भूढ़ मेघ धारी हैं वे लोभाच्छादित होकर हिंसा में धर्म बताते हैं ।

चौपाई

जाते आंकी संगत छंडो, पोते सूत्र परूपण मंडो ।
इम आलोचे हृदय ते लूंको, धरम प्रबोध करे तज संको ॥२९॥

अर्थ—इसलिए इन मेघधारी साधुओं की संगति छोड़कर स्वयंमेव सूरजों के अनुसार धर्म की प्रकल्पना करने लगे। लोकाशाह ने मन में ऐसा विचार किया कि सन्नेह छोड़ कर अब धर्म का प्रचार करना चाहिये।

छन्द गजल

भवि जन परम धर्म प्रियास, ते सब आन लूँके पास।
सुन सुन धर्म आगम न्याय, विकसे मनई मन सुख पाय ॥१॥

अर्थ—जिन सांसारिक लोगों में सच्ची धर्म भावना थी वे सब अब लोकाशाह के पास आने लगे और उनसे आगम और न्याय संगत धर्म सुन कर मन ही मन प्रमुदित होने लगे।

छन्द गजल

अरहट बाल श्रावक ताम, जात्रा, करण चान्यो जाम।
खरचन धर्म काजे आय, ले सिंघ से ज्वाला साथ ॥२॥

अर्थ—अरहटवाड़ा के सेठ श्रावक लक्ष्मसींह ने तीर्थ यात्रा के लिये एक विशाल संघ निकाला। साथ में वाहन रूप में कई गाड़ियाँ और सेजबाल भी थे। धर्म के निमित्त द्रव्य खर्च करने की उनमें बड़ी उमंग थी।

छन्द गजल

वाटे मयो तेहवे मेंह, पाटन नगर ठवैं एह।
संघवि जाय लूँके पास, नित प्रति सुने खूब हुलास ॥३॥

अर्थ—रास्ते में प्रति वर्षा होने के कारण संघपति ने पाटन नगर में संघ ठहरा दिया और संघपति प्रतिदिन लोकाशाह के पास शास्त्र सुनने जाने लगे और सुन कर मन ही मन बड़े प्रसन्न होने लगे।

छन्द गजल

एक दिन मेख धारी जेह, सिंघ में हुता बोन्या तेह।
श्रावक सिंघ क्यूँ न चलाय, संघवि कहैं जसु समझाय ॥४॥

अर्थ—एक दिन संघ में रहे हुए भेषधारी यति ने संघपति से कहा कि—संघ को आगे क्यों नहीं बढ़ाते ? इस पर संघपति ने उनको समझा कर कहा—

छन्द गजल

वाटे मये हरी अंकुर, उपजे जीव चर धिर भूर ।
लीलण फूलणादिक जान, ठावे सिंघ करुना आन ॥५॥

अर्थ—महाराज ! वर्षा ऋतु के कारण मार्ग में हरियाली और कोमल नवांकुर पैदा हो गए हैं तथा पृथ्वी पर असंख्य चराचर जीव उत्पन्न हो गए हैं । पृथ्वी पर रंग-बिरंगी लीलण-फूलण भी हो गई है, जिससे संघ को आगे बढ़ाने से रोक रक्खा है ।

विशेष :—वर्षा ऋतु में जमीन जीव-संकुल बन जाती है, अतः ऐसे समय में अनावश्यक यातायात बजित है ।

छन्द गजल

सम्मल वचन करुणा आसु, जपे भेख धारी जासु ।
जिन धर्म काजे हिंसा होय, दोष न विचारो मति कोय ॥६॥

अर्थ—संघपति के करुणासिक्त वचन सुनकर भेखधारी बोले कि धर्म के काम में हिंसा भी हो, तो कोई दोष नहीं है ।

छन्द गजल

सिंघवी करें उत्तर बोल, ऐसी धरम में नहीं पोल ।
जिन धर्म दया युक्त अनूप, तुम तो बको अधर्म रूप ॥७॥

अर्थ—यति की बात सुन कर संघपति ने कहा कि जैन धर्म में ऐसी पोल नहीं है । जैन धर्म दया-युक्त एवं अनुपम धर्म है मुझे आश्चर्य है कि तुम उसे हिंसाकारी अधर्म रूप कहते हो !

विशेष :—जैन धर्म दया-प्रधान धर्म है, जिसकी तुलना अन्य कोई धर्म नहीं कर सकता । अतः धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा भी अधर्म रूप होगी—धर्म के लिए हिंसा की प्ररूपणा बकवास एवं अनर्थक विचार है ।

छन्द गजल

तुम उर नहीं करुणा लेस, सो अब लखी मोय असेस ।
सम्मल बचन ए लिंग धारी, पाछा गया भ्रष्ट आचारी ॥८॥

अर्थ—संघपति ने यति से कहा कि—तुम्हारे हृदय में करुणा का लेश भी नहीं है, जिसको कि अब मैंने अच्छी तरह देख लिया है । ए भेषधारी सम्मल कर बचन बोल । संघपति की यह बात सुन कर वह भेषधारी यति पीछे लौट गया ।

छन्द गजल

मिथवी जणा पैतालीस, पैते भयो आप मुनीस ।
सरबोजी अत्यन्त दयाल, भानु नूणजी जगमाल ॥९॥

अर्थ—लोकशाहा के उपदेश से प्रभावित होकर संघपति ने पैतालिस व्यक्तियों के साथ स्वयं मुनि-व्रत स्वीकार किया । उनमें भानजी, नूनजी, सरबोजी और जगमालजी अत्यन्त दयालु एवं विशिष्ट संत थे ।

छन्द गजल

चार प्रमुख पैतालीस, उत्तम पुरुष बिसवा बीम ।
जप तप क्रिया कर गुण धाम, जिन धर्म दीपाये अभिराम ॥१०॥

अर्थ—उन पैतालिसों में ये चार प्रमुख थे और जो शेष थे वे भी सच्चे अर्थों में निश्चय रूप से उत्तम पुरुष थे । उन्होंने जप, तप आदि क्रिया करके सम्पन्न प्रकार से गुण भंडार जिन धर्म को दीपाया ।

छन्द गजल

कर भव जीव कुं उपदेश, बाध्यो दया धर्म विशेष ।
चौविध सिंध जाकुं आन, प्रण में तरन तारन जान ॥११॥

अर्थ—सांसारिक लोगों को सदुपदेश देकर उन्होंने दया धर्म की विशेष वृद्धि की । चतुर्विध संघ उन्हें तरण-तारण जानकर उनकी सेवा में आता और उन्हें प्रणाम करता ।

छन्द गजल

अत उत्कृष्टताई जासु, देखी भेखबारी तासु ।

तप गछ विमल आनन्द सूर, पन से बतीसे पूर ॥१२॥

अर्थ—इन लोगों के अप, तप तथा उत्कृष्ट करणी को देख कर गच्छ-वासी भेखधारियों ने भी किया उद्धार का विचार किया । संवत् पन्द्रह सौ बत्तीस में तपागच्छ के आनन्द विमल सूर ने किया का उद्धार किया ।

छन्द गजल

तप कर भविक बहु मरमाय, हिंसा प्रतीती उपजाय ।

अपनो गछ बधारे अत्यन्त, दुष्टी मया परम कृतन्त ॥१३॥

अर्थ—तपस्या करके उन्होंने लोगों को बहुत मरमाया और हिंसा के आरंभ युक्त कामों में भी प्रीति उत्पन्न की । उन्होंने अपने गच्छ को खब बढ़ाने के लिये लोंकागच्छ के विरोध में पूर्ण द्वेष भाव फैलाया, प्रचार किया ।

कुण्डलिया

प्रबल परीषा मुनि प्रते, दुष्ट पणो तिण दीध ।

सो सम्यक् भावे सद्धा, किंचित क्रोध न कीध ॥

किंचित क्रोध न कीध, हटक मन न हुवा हारन ।

लूँके सुं व्रत लीध, कहे लूँका तिन कारण ॥

आठ पाट जिन आग्या, आराधी परम उछाहुँ ।

नाम कहूँ धर नेह, सील निरमल सुध साहुँ ॥२॥

अर्थ—सरबोजी आदि मुनिराजों को उन गच्छवासियों ने बड़े-बड़े कष्ट दिये पर मुनिराजों ने सम्यक् भाव से सब कुछ सहन किया और उन पर तनिक क्रोध नहीं किया न अपने मन के हर्ष को ही कम किया । उन मुनियों ने लोंकासाह से व्रत ग्रहण किये थे, अतः उस दिन से इस गच्छ का नाम लोंकागच्छ पड़ा । आठ पाट तक परम उत्साह से जिन आज्ञा की आराधना की । उन निर्मल स्नेहशील साधुओं के नाम इस प्रकार हैं—

छन्द हणुफाल

धुर जानजी मन धीर, मिक्खु मिदाजी गम्मीर ।

पुन नूनजी व्रत पाल, मुनि भीमजी जगमाल ॥४॥

अर्थ—१—ज्ञानजी (भाणाजी), २—मिक्खु मिदाजी ३—स्वामी नूनजी (नूनाजी) ४—मुनि भीमजी (भीमाजी), ५—मुनि जगमालजी—

छन्द हणुफाल

रिख सरवोजी रिख रूप, किल जीवजी रिखी गुन कूप ।

ए पाट उत्तम अष्ट, कर कठन तप तनु कष्ट ॥५॥

हुए अराधक जिन हुँत, पुरगिर वान पहुँत ।

ताप छै लूँका तेह, जड़ पड्या लादी जेह ॥६॥

अर्थ—६—रिख सरवोजी, ७—रूपजी और ८—जीवाजी । ये मुनि गुण धारण करने में कूप के समान थे । लोंकागच्छ के ये आठ पाट उत्तम हुए जिन्होंने शरीर को कष्ट देकर कठिन तप का पालन किया । आठ पाट तक जिनेन्द्र आज्ञा की आराधना करते हुए, पीछे लोंकागच्छ के ये साधु भी पति बनकर शिथिलाचारी हो गये ।

छन्द हणुफाल

आधा कर्मी थानक आहार, वय पात्र तज विवहार ।

भोगवन लागा भूर, पुनि करित संचय पूर ॥७॥

अर्थ—लोंकागच्छीय संत भी बाद में आधा कर्म स्थानक, आहार, वस्त्र, पात्र आदि बहुत से अकल्प को भोगने लगे तथा साध्वाचार को छोड़ दिया और पूर्ण संचय भी करने लगे ।

दोहा

तजी रीत मिच्छा तखी, जीमख न्हृतियां जाय ।

मूक कम्पविध मोकले, खवाड़े सो ले खाय ॥१७॥

अर्थ—अब उन्होंने साधु की भिक्षावृत्ति छोड़कर गृहस्थों के निमन्त्रण

पर भोजन के लिये जाना प्रारंभ कर दिया और साधु का कल्प छोड़कर जैसा गृहस्थ लोग उन्हें बनाकर खिलाते, वैसा ही खा लेते ।

विशेष—इस समय साधु की मर्यादा पूरी तरह से ढोली पड़ गयी थी । साधु लोग मित्रा वृत्ति से जीवन-निर्वाह छोड़कर निमग्न पर गुजर करने वाले बन गए । उन्हें जैसा गृहस्थ वर्ग खिलाते वैसा ही खा लेते । संक्षेप में वे राजसी सम्मान का उपभोग करने लगे ।

छप्पय

सतरे सय नव समय, वीरजी सूरत वासी ।
कोडी ध्वज तिनकाल, विभव संपन्न विलासी ॥
धन फुलां जसु धीय, उग्र भागी निन औले ।
महा गोत्र श्रीमाल, खलु लवजी तसु खोले ॥
अनुक्रमे नाम लवजी उचित, पोसाले गुरु पै पढ़े ।
सुध सूत्र अर्थ सुनता, श्रवन, वैरागे जसु मन बढ़े ॥५॥

अर्थ—विक्रम संवत् १७०६ में वीरजी बोहरा सूरत निवासी उस समय के कोटिध्वज वैभवशाली सेठ थे । उनकी पुत्री का नाम फूलाबाई था जो उग्रभागी वीरजी के यहां रहा करती थी । संतान नहीं होने से वीरजी ने श्रीमाल गोत्री लवजी को उसके गोद रक्खा । अनुक्रम से लवजी पोसाल में गुरु के पास पढ़ने जाते और योग्य रीति से अभ्यास करते । अनुक्रम से उनको सूत्रार्थ का अच्छा ज्ञान हो गया । सत्संग और शास्त्र-श्रवण से उनके मन में वैराग्य-भावना जागृत हुई ।

विशेष—वीरजी वैभव संपन्न श्रीमन्त थे । उनकी इकलौती पुत्री—जिसका सम्बन्ध उन्होंने किसी खानदानी लड़के के साथ किया था, संयोग वश कुछ ही काल बाद वह विधवा हो गई और उन्हीं के घर रहने लगी । वीरजी ने फूलाबाई के लिये लवजी को वत्सक पुत्र बनाया और गुरु के पास उन्हें पढ़ने-लिखने को भेजा । वहाँ सूत्र और उसके अर्थ को सुनते २ उनके मन पर वैराग्य का रंग चढ़ गया ।

छप्पय

प्रगट वीरजी पास चदे, आज्ञा दो व्रत की ।
 अखे वीरजी आज्ञा, मोरि पै लूँका मत की ॥
 जगजी' नामे जती, जसु आगल कर जोरे ।
 लवजी दीक्षा लीध, तटक जग बंधन तोरे ॥
 पढ़के सिद्धान्त सब ग्रन्थ पुनि, बोलचाल सीखे बहु ।
 उर मांहि धार आगम अरथ, साधु शील समझे सह ॥६॥

अर्थ—लवजी संयम धारण करने की आज्ञा लेने के लिए वीरजी के पास प्रत्यक्ष रूप से खड़े हुए और बोले कि मुझे आज्ञा दीजिये। इस पर वीरजी ने कहा—लूँका मत के जगजी नामक यति के पास यदि बीक्षा लो, तो मेरी आज्ञा है। यह सुनते ही लवजी उनके सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़े हो गए और क्षण भर में सांसारिक बन्धनों को तोड़ कर बीक्षा अंगीकार कर ली। बीक्षित होकर उन्होंने सम्पूर्ण सिद्धान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया और अनेक प्रकार के बोलचाल भी सीखे। हृदय में आगम का अर्थ धारण कर उन्होंने साधु आचार को भी भली भाँति समझ लिया।

छप्पय

एक दिवस गुरु अग्र विनय संजुत मृदुवानी ।
 दशविकालिक देख, छठे अध्ययन मनझानी ॥
 दृढ़ अष्टादस दोषग्रही, तिनकी दुय गाथा ।
 पूछे ते गुरु प्रतै नमो, तुम करुणा नाथा ॥
 जिनराज मुखे माख्यो जिसो, पालो सुध संजम प्रभु (प्रभो) ।
 नहीं टले दोष एही निपट, वृथा तज्यो किम घर विभू (विभो) ॥७॥

अर्थ—एक दिन लवजी ने गुरु के आगे विनययुक्त मृदुवाणी में निवेदन किया कि दशविकालिक के छठे अध्ययन के देखने से मन में छान-बीन हुई—वहाँ अठारह दोष-स्थान बतलाये हैं। उसकी दो गाथाओं में

१—ग्रन्थ पट्टावलिमें जगजी के स्थान पर वरजंगजी नाम मिलता है।

साधुओं के लिए जो व्यवहार बताया-बसा है—लवजी बिनय से नमस्कार कर पूछने लगे—हे करुणानाथ ! जिनराज ने श्री मुख से जैसा फरमाया वैसा शुद्ध, संयम आज पाला जाता है क्या ? यदि नहीं तो घर छोड़ने का क्या साम ?

विशेष :—यदि शास्त्रानुकूल साधु-मर्यादा का पालन नहीं हो तो घर छोड़ना व्यर्थ ही समझना चाहिए ।

छप्पय

गुरु बोले मृदु गिरा, पले जैसी पाली जै ।
 कठिन पांचवो काल वचन जिन केम बही जै ॥
 कहे लवजी छ' कखो, कृपा निधि मो हित कामी ।
 वरस सहस्र इक्कीस, शुद्ध रहसी धर्म स्वामी ॥
 गच्छ बोंसराय वरतो गुनी, हम चेलो तुम गुरु हिवें ।
 गुरु कहै मोहि छूटे न गच्छ, नरमी कर लवजी निवें ॥८॥

अर्थ—लवजी के निवेदन करने पर गुरुजी ने कोमल वाणी में कहा—जैसा पलता है वैसा तो संयम पालन करते हैं । बाकी कठिन पंचम-काल में जिन-वचन के अनुसार चलना कैसे संभव हो ? इस पर लवजी ने फिर कहा—हे कृपानिधान, मेरे हितकामी प्रभो ! अभी तो २१ हजार वर्ष तक शुद्ध संयम-धर्म रहेगा । गुरुदेव ! गच्छ को छोड़कर संयम मार्ग में चलो । इस प्रकार हम शिष्य और आप गुरु बने रहें । इस पर गुरु ने कहा—लवजी ! मुझसे गच्छ नहीं छोड़ा जाता । लवजी ने नरमी धारण कर नमन किया ।

छप्पय

हमकुं आग्या होय, प्रागट शुद्ध संजम पालूँ ।
 वरज अठारह बोल, टेव असंजम टालूँ ।
 इम कही गच्छ तज अमै, निकसे मृग मां जिम नाहर ।
 दुरस वचन सुन दीय, जती निकसे संग जाहर ।

गच्छ हूँत तीन निकस्या गुनी, धोमण, सखियो, लवजी थिरू' ।
जिन वचन अराधन जुगत सु', स्फुट तिन न दीक्षा लीष फिरू ॥६॥

अर्थ—लवजी ने गुरु से कहा—यदि आप गच्छ नहीं छोड़ सकते तो हमको (स्पष्ट, शुद्ध संयम-पालन की) आज्ञा दीजिए । हम अठारह बोधों को टाल कर शुद्ध संयम का प्रगट पालन करें और असंयम की टेव को दूर करें । यह कह कर उन्होंने गच्छ छोड़ा और मृग-मण्डल में नाहर की तरह निर्भय हो निकल पड़े । उनके वुस्स्त वचन को सुनकर दो यति और भी उनके साथ निकल पड़े । इस प्रकार गच्छ में से धोमण-जी, सखियाजी और लवजी तीन स्थिर गुणी जन निकल पड़े और जिन-वचन आराधन की यक्ति से उन तीनों ने पुनः संयम दीक्षा ग्रहण की ।

दोहा

सतरे से चरदे समै, निरमल दीक्ष नवीन ।

लो लवजी गच्छ लोप के, हुआ असंजम हीन ॥१८॥

अर्थ—विक्रम संवत् १७१४ में पूर्व गच्छ परम्परा को छोड़ कर, लवजी ने नवीन निर्दोष दीक्षा धारण की और अपने जीवन को असंयम रहित बनाया ।

विशेष :—श्रुति सम्प्रदाय के इतिहास में सं० १६६२ को उनके गच्छ त्याग का उल्लेख है । इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न पट्टावलियों में भिन्न-भिन्न लेख मिलते हैं ।

छप्पय

व्रत आदर सुमवार, मुनि एक हूँदे मांहि ,

धरियो निरचल ध्यान, अचल एकंत उझांही ॥

देखत मुनि दीदार, मली मुद्रा मन भावै ,

दरसन कर कर दुनी, सकल गुन जान सरावै ।

भव जीव करन जांकी भाति, भिम्या देख गच्छ मुं दीया ,

मन देख धार अपने मुखे, हूँका कहवा हूँदिया ॥१०॥

अर्थ—शुभ समय में नवीन दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् मुनि लवजी एक गिरे-पड़े मकान में ठहरे और वहां एकान्त में अवल एवं उत्साह-भाव से निश्चल ध्यान में जम गये । लोग उनकी शांत, सौम्य एवं गंभीर मुख-मुद्रा देखते और देख-देख कर सारी दुनियां उनके गुणों की सराहना करती । उनकी भक्ति करने भव-जीवों को एकत्र होते देख गच्छवासी मन में द्वेष करने लगे और अपने मुँह से धूँढ़िया-धूँढ़िया कहने लगे ।

छप्पय

विपुल नगर पुर विचर, घना भवि जन मग घाले ,
सूत्र न्याय समभाय, पाप हिंसा कृत पाले ।
दीक्षा खूब दीपाय, कला विज्ञान प्रकाशी ।
मुनी सोमजी शाह, विकमि कालुपुर वासी ।
कुलवन्त शीघ्र लवजी कनै, गेह त्याग दीक्षा गही ।
कर बहु आतापना काउसग, दढ़ता सुं काया दही ॥११॥

अर्थ—फिर लवजी ऋषि ने बहुत से नगर और गांवों में विचर कर बहुत से लोगो को धर्म मार्ग पर लगाया और सूत्र सिद्धान्त की युक्ति से उन्हें हिंसाजन्य पाप से बचाया । इस प्रकार धर्म, कला और ज्ञान के प्रकाश से इन्होंने दीक्षा को खूब दीपाया । कालुपुर वासी शाह सोमजी ने लवजी की वाणी सुनी तो बहुत प्रसन्न हुए और उस कुलवन्त ने घर छोड़ कर शीघ्र ही उनके पास दीक्षा ग्रहण कर ली । दीक्षा के बाद बहुत आतापना और कायोत्सर्ग करके दढ़ता से उन्होंने अपने शरीर और विकारों का दहन किया ।

छप्पय

हरिदास, पेमजी, कान, गिरधर चारु रिख ।
निकमै गच्छ वर जंग, सोमजी तणा हुआ सिख ॥
अभीपाल, श्रीपाल, धर्मसीह, हरिदास पुनि ।
जीवौ-शंकर मण जाण, केसु, हरिदास लघु मुनि ॥

समर्थ, तोड़-गोधो-मोहन, सदानन्द संख ए सहं ।

सिख मया इत्यादिक सोमके, वोसराय गच्छ कुं बहुं ॥१२॥

अर्थ—हरिदास, प्रेमजी, कानजी और गिरधरजी ये चारों ऋषि वरजंगजी के गच्छ को छोड़कर, सोमजी के पास दीक्षित हुए । अमीपाल जी, श्रीपालजी, धर्मसीजी, दूसरे हरिदासजी, जीवोजी, शंकरजी, केसुजी, लघु हरिदासजी, समर्थजी, मोहनजी, तोड़ोजी, गोधाजी, सदानन्दजी और संखजी आदि ये सब अपने-अपने गच्छ को छोड़ कर सोमजी के शिष्य बन गये ।

छप्पय

गुजराती धर्मदास, जात छिया जसु जाणो ।

सरधा पोतिया बंध, कान' रिख पै समझाणो ।

ले दीक्षा निज-मतै, सुद्व मारग संमाये ।

सेवट कर संथार, सुरग लोकें जु सिधाये ।

जसु सिख निन्नाणु उत्तम जती, धन जामे दीपत धनो ।

रिद्व त्याग भयो ममता रहित, सुत मूता वाधा तणो ॥१३॥

अर्थ—धर्मदास गुजराती जो जात के छिया थे, पोतिया बंध की भ्रष्टा में ऋषि कानजी के पास बोध पाये स्वयं अपने मन से दीक्षा लेकर शुद्ध धर्म मार्ग पर तत्पर हुए और अन्त में संथारा ग्रहण करके स्वर्ग लोक सिधारे । उनके निन्यानवे शिष्य उत्तम प्रति थे जिनमें सबसे अधिक दीप्तिमान धन्नाजी हुए, जिन्होंने धन वैभव की ममता छोड़ कर दीक्षा ग्रहण की । वे वाधा मु'था के पुत्र थे ।

विशेष :—आचार्य धर्मदासजी जैन धर्म के महान् प्रचारक संत हुए । मारवाड़, मेवाड़, मालवा तथा सौराष्ट्र आदि प्रान्तों में विचरने वाले अधिकांश संत-संतियों के वे ही मूल पुरुष माने जाते हैं । अहमदाबाद के पास सरखेज नामक ग्राम में उनका जन्म हुआ था । उनके जमाने में पोतियाबंध आबकों की परम्परा प्रचलित थी, जो मस्तक पर एक सफेद कपड़ा बांधे रहते और आबक धर्म की करणी करते थे । लोगों को

धार्मिक शिक्षण देना तथा शास्त्र सुनावा उनका काम था। उनकी मान्यता थी कि इस पंचम काल में कोई पंच महाव्रतधारी साधु नहीं हो सकता। धर्मदासजी ने इन्हीं लोगों के पास रहकर धर्म की जानकारी की थी। शास्त्र का वाचन करते उनको ज्ञात हुआ कि भगवान् महावीर का शासन पंचम आरे की समाप्ति तक चलेगा और उसमें साधु-साध्वी भी रहेंगे। अतः उन्होंने निश्चय किया कि अभी श्रद्धा-विमुख होना ठीक नहीं है। इसके लिए उन्होंने उस समय विचरण करने वाले धर्मसिंहजी म० एवं कानजी ऋषि जी से विचार विमर्श किया और पोतिया बंध की मान्यता त्याग कर सं० १७१६ में अहमदाबाद की बादशाह बाड़ी में स्वयं साधु दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा-धारण के समय वे मात्र १६ वर्ष के थे। परन्तु वृद्धता से ज्ञान, ध्यान और तपः साधना करते हुए वे विहार करने लगे। एक बार विहार करते हुए वे भारवाड़ के सांचोर नामक गांव में पधारे। वहां के एक श्रीमन्त के पुत्र धन्ना जी उनके वराम्यमय उपदेश से प्रभावित होकर उनके पास दीक्षित हो गए। दीक्षा लेते ही उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक पूर्ण शास्त्राध्यय नहीं करूंगा तब तक एक वस्त्र, एक पात्र तथा एकान्तर उपवास करता रहूंगा और इस नियम का आठ वर्षों तक पालन करते रहे। सं० १७५६ के वर्ष धार में एक शिष्य के संघारे पर, उसकी जगह संघारा सेवन कर पू० धर्मदास जी महाराज परलोकवासी बन गए।

छप्पय

मंडन-कुल मुहणोत, नाम बूधर निकलंकी ।
 वसता सोजत वास, धने जी पास धन्नकी ।
 तज नन्दन अरु त्रिया, ग्रही दीक्षा गरवाई ।
 सहो दुषह उपमर्ग, एह कीधी इधकाई ।
 रिख लेन आतापन रेनुकी, सिकता में लुटता सदा ।
 विचरंत ग्राम कालु बिषै, उपजी अलजाणी अदा ॥१४॥

अर्थ—मुणोत कुल के मंडन सोजत वासी श्री बूधरजी ने जिनके नाम पर कोई कलंक नहीं था—धन्नाजी के उपदेश से प्रभावित होकर धन, दारा और पुत्र आदि छोड़ कर कठिन साधु दीक्षा ग्रहण कर ली,

झोर धर्म मार्ग के दुस्सह उपसर्गों को सहन किया। यह खास अधिकाई रही। एक बार बिचरते हुए कालू ग्राम पधारे। वहाँ रेत में आत्तापना लेने ऋषि बालू में सबा लेटा करते। संयोग वश उस समय उन्हें अन-जानी पीड़ा उत्पन्न हो गई।

छन्द पद्धरी

कालू नजीक सरिता एकंत, तिहाँ जाय मुनि सिकता तपंत ।

नरनार सकल तप गुन निहार, अरु करे जासु महिमा अपार ॥१॥

अर्थ—श्री भूधरजी म० कालू के निकट नदी के एकांत स्थान में जाकर बोपहर की जलती हुई रेत में, तपस्या करते। उनकी इस कठोर तप-साधना को देखकर सभी स्त्री-पुरुष उनकी अपरम्पार महिमा का गुणगान करते।

विशेष—तपस्वियों का तप प्रभाव वास्तव में अभिनन्दनीय होता है। मनुष्य की कौन कहे, देवता भी ऐसे को नमस्कार करते हैं। कहा भी है—
“देवा वि तं नमसंति, जस्य धम्मे सयामगो” ।

छन्द पद्धरी

तब मुनि एक अनमती अतीत, उर आन दोख कीनी अनीत ।

ते वाह सोट मुनि कुं त्रिकुंठ, छिप गयो लार भई छूट ॥२॥

अर्थ—उनकी तपस्या की चर्चा सुनकर एक अन्यमती अतीत वहाँ पहुंचा और मन में द्वेष लाकर अनीति का काम कर बैठा। उसने मुनि के मस्तक पर सोट-लट्ठ मारा और स्वयं छिप गया। खबर होते ही लोगों ने उसका पीछा किया।

छन्द पद्धरी

तत्काल पकर जसु दैन त्रास, दड़ करी डकर मिल राजदास ।

वर मुनि हिरदय करुना विचार, मम हेत याहि कुं देहि मार ॥३॥

अर्थ—तत्काल पकड़ कर उसको राज पुरुषों ने मिल, बंड देने को मजबूत जकड़ा। कहा जाता है कि एक कड़ाव के नीचे उसे बबवा दिया, किन्तु परम्परा से जब मुनि ने यह सुना तो उनके मन में करुणा के विचार हो आये। सोचा कि मेरे कारण उस बेचारे को मार पड़ेगी।

विशेष—चोट खाकर मुनि श्री पानी के पास आए और खून को साफ कर सिर पर पट्टी बांधी और फिर गाँव पहुँचे । मुनि श्री के हृदय में मारने वाले के प्रति तनिक भी रोष नहीं था । किन्तु किसी ने उसको मारते देख लिया, उसने अधिकारी को सूचित कर उसको पकड़ मंगवाया और कष्ट देना प्रारंभ कर दिया । इस पर मुनि श्री ने प्रतिज्ञा की कि जब तक वह कष्ट-मुक्त नहीं होगा तब तक मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा ।

छन्द पद्धरी

इम जान छुड़ायो तेह अनीत, हृद करी खिम्या तज अहित हित ।
प्रगमी सिरपे उत्कृष्टी पीर, सम भाव सही हुयकै सधी ॥४॥

अर्थ—इस प्रकार उस अनीत को कष्ट में जान छड़ा दिया । हित-अहित भूल कर क्षमा की हृद करदी । उनके सिर पर प्रबल पीड़ा उत्पन्न हुई फिर भी धैर्य धारण कर मुनि श्री ने समभाव से सब सहन किया ।

विशेष—उत्पीड़क की पीड़ा से द्रवित हो उठना और उसे कष्ट-मुक्त बनाना, वस्तुतः क्षमा का आदर्श उदाहरण है कहा भी है—‘अवगुण ऊपर गुण करे, ते नर बिरला ढीठ ।’ इसका असर अपराधी के हृदय पर होता भी है और वह ऐसे महात्मा के चरणों में झुक जाता है । उस पीड़क ने भी उनके चरणों में झुक कर क्षमा मांगी और आगे से ऐसा न करने की बड़ प्रतिज्ञा की ।

छन्द पद्धरी

सिख भये बहुत जाके समीप, दुनियाँ माँही इधका चार दीप ।
बड़ सिख नराण, रघुपति' विनीत, जयमल, कुशल परमाद जीत ॥५॥

अर्थ—उनके पास अनेक शिष्य हुए, उनमें चार अधिक प्रभाव-शाली थे । बड़े शिष्य श्री नाराणजी थे । अन्य तीन शिष्यों में श्री रघुपतिजी गुरु के बड़े विनीत रहे और मुनि श्री जयमलजी तथा मुनि श्री कुशलाजी महाराज प्रभाव-विजयी थे ।

विशेष :—आचार्य श्री घन्ना जी महाराज का अन्तिम चातुर्मास मेड़ता नगर में था । वहाँ शारीरिक क्षीणता देखकर वि० सं० १७८४ में

एक दिन का संघारा करके वे स्वर्गवासी बने। उन्हीं के पट्टधर आचार्य भूधरजी महाराज हुए। उनका कुल संयम-जीवन ५७ वर्ष का था।

प्राचीन मण्डारों का निरीक्षण करते हुए आचार्य श्री भूधरजी महाराज के नौ शिष्यों के नाम प्राप्त हुए हैं। उनके शिष्यों के सम्बन्ध में निम्न उक्ति प्रसिद्ध है—

भूधर के सिख दीपता, चारो चातुर्वेद।

धन, रघुपति ने जेतसी, जयमल ने कुशलेश ॥

इस उक्ति में जेतसी का नाम विशेष मिलता है। वे एक बड़े प्रभावशाली संत हुए हैं। वे जोधपुर के पास “सुरपुरा” गांव के ठाकुर थे। एक दिन वे शिकार के लिए जा रहे थे। बाजार में आचार्य श्री भूधरजी का प्रभावशाली प्रवचन था। मुनि श्री के प्रवचन को सुनकर पाप-कर्मों से उनका हृदय कांप उठा और वे मन ही मन सोचने लगे कि मनि श्री जीव-हत्या करने में भयंकर पाप बताते हैं और मैंने तो अपने जीवन में कई जीवों की हत्या की है। मुझे इस भयंकर पाप से कैसे मुक्ति मिल सकती है, यह सोच कर वे मुनि श्री के चरणों में पहुंचे और हिंसादिक त्याग कर आचार्य श्री के शिष्य बन गए।

यहां श्री नाराणजी, रघुपति, जयमल और कुशलाजी ये चार प्रमुख शिष्य बतलाये हैं, जिनका परिवार आगे चला।

छप्पय

मुनि जाय मेढ़ते, चरम अवसर चौमासे।

तपत आसाढ़ी तीव्र, पानी रंचक नहीं पासे।

विच नरान जल बिना, थया असगत अतिथि कै।

अंबू लेवा अरथ, अखिल मुनि अग्र उच कै।

मेढ़ते जाय धिरिया मुनि, तत खिणलै अंबू तितै।

उत्कृष्ट परिसो उपनो, जेज परी मगमें जितै ॥१५॥

अर्थ—एक समय आचार्य श्री भूधरजी शिष्य मण्डली सहित अन्तिम चातुर्मास करने को मेढ़ता पधार रहे थे। आषाढ़ की प्रचण्ड गर्मी पड़ रही थी, पास में रंच भर भी पानी नहीं रहा। अतः साथी सन्तों में

माराधन नामक मुनि जल के बिना प्यास से चलने में अशक्त हो गये । तब दूसरे सन्त पानी लेने को आगे बढ़े और मेड़ता जाकर तत्काल बीछे लौटे । वे पानी लेकर आये तब तक मार्ग के विलम्ब से मुनि का परीषह उत्कृष्ट हो गया ।

विशेष :—जैन संतों के लिए जल और आहार ग्रहण का भी एक नियम होता है । एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाते हुए दो कोस से अधिक दूरी पर पूर्व गृहीत आहार-पानी खाने व पीने के काम में नहीं लिया जाता । जलामाव से एक मुनि नहीं चल सके, तब दूसरे साधु आये मेड़ता जाकर पानी लाये ।

छप्पय

मुनि लारे मग मांह, नैन जल कूप निहारियो ।
 पैन चल्या परणाम, ध्यान जिनको उर धारथो ।
 कर अणसण एकंत, त्याग ए देह औदारिक ।
 धन नरान मुनि धीर, लही सुरगत सुखकारिक ।
 जल लेन गया मुनिबर जिके, अबिलोके जहां आयके ।
 मुनि क्रियो इसो पंडित मरण, ध्रुव परमात्म ध्यायके ॥१६॥

अर्थ—पीछे मुनि ने मार्ग में कूप के पानी को आंखों से देखा पर परिणाम चलायमान नहीं हुए । उन्होंने हृदय में जिनेन्द्र का ध्यान धारण करके एकान्त स्थान में अनशन पूर्वक इस औदारिक शरीर को छोड़ कर सुखकारी स्वर्ग लोक को प्राप्त किया । वे धैर्यशाली नाराण मुनि धन्य हैं । इधर जल के लिए गये हुए मुनिबर जब वापस आकर देखते हैं तो विदित हुआ कि मुनि ने मगवात का ध्यान करके पण्डित मरण प्राप्त कर लिया है ।

विशेष :—असह्य तृषा की वशा में सामने कूप देख कर भी सच्चित्त जल के कारण मुनि ने जल नहीं लिया, किन्तु प्राणोत्सर्ग कर दिया । धन्य है धर्माराधन की यह परम्परा और त्याग का यह उदात्त आदर्श ।

दोहा

मुनि भूधरजी मेड़ते, चरम क्रियो चौमास ।
 पाँचां वासा पारणे, पद सुर लखो प्रकाश ॥१६॥

अर्थ—मुनि भूधरजी ने मेड़ता में यह अन्तिम चातुर्मास किया और पांच उपवास के पारणों में सुख पद को प्राप्त किया ।

विशेष :—वि० सं० १८०४ की विजया दशमी में पांच की तपस्या के पारणों में भूधरजी महाराज मेड़ता नगर में स्वर्गवासी हो गये । उनके तीन बड़े प्रभावशाली शिष्य हुए । जिनकी तीन शाखाएं प्रचलित हुईं । यथा—पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज की परम्परा, पूज्य श्री जयमल्लजी महाराज की परम्परा और पूज्य श्री कुशलाजी महाराज की परम्परा ।

छन्द भूफाल

जासु सिख नाम रुवनाथ बड़ जानिय,
विमल गुनवंत जेमल्ल बखानिय ।
तिसरा मुनि कुशलेरा रीयां तणुं,
वंस चंगेरिया जासु सुहावणुं ॥१॥

अर्थ—भूधरजी के बड़े शिष्य रघुनाथजी थे । दूसरे विमल गुणों वाले जय मल्लजी थे और तीसरे रीयां के शोभन चंगेरिया गोत्रीय मुनि कुशलेश जी थे ।

विशेष—मुनि कुशलाजी पीपाड़ समीपवर्ती सेठों की रीयां गांव के वासी थे । कमी रीयां में ओसवालों की अच्छी बस्ती थी । आज भी यहाँ के निवासी अमरावती, हिंगणघाट, अहमदनगर आदि नगरों में व्यापार के निमित्त बसे हुए हैं । सम्प्रति मुनि कुशलाजी के वंशज अहमद नगर के समीपवर्ती ग्राम सोनई में निवास करते हैं ।

छन्द भूफाल

अंब कानु पिता लाधजी एहवा,
जनमिया पुत्र जसु कुशलजी जेहवा ।
तात आयुर्बला अंत तन त्यागिया,
लूखमन कुसलजी धंध जग लागिया ॥२॥

अर्थ—माता कानु तथा पिता लाधजी ने इन्हीं कुशलसी जैसे पुत्र को जन्म दिया । आयु-बल की कमी से पिता ने इनके बचपन में ही शरीर

त्याग दिया । तब कुशलजी रुख मन उदासीन भाव से जग के बंधों में लग गए ।

छन्द भंफाल

परशिया सुंदरी पाय जोवन पयो,
एक सुत हेमजी कूख जसु उपनो ।
आयु पूरन करयो सुंदरी ए तले,
चितवे कुसल रे जीव अब चेतले ॥३॥

अर्थ—तनुवाई पाकर उन्होंने एक सुन्दरी से विवाह किया जिससे हेमजी नाम का एक पुत्र उसके कूख से उत्पन्न हुआ । सहसा उनकी पत्नी आयु पूर्ण कर चल बसी । अब कुशलजी ने मन में सोचा—रे जीव ! अब चेतजा—आत्मोद्धार कर ले ।

छन्द भंफाल

सुपियो पुत्र माता मशी सोचके,
आपके जीव को श्रेय आलोच के ।
खीनता मोहकी भई मन में खरी,
पंच सहस्र दौलत छती परिहरी ॥४॥

अर्थ—उन्होंने अपने जीवन का श्रेय विचार कर पुत्र को अपनी माताजी के पास सौंप दिया । उनके मन में मोह की क्षीणता हो गयी थी—इसलिए वे पांच हजार की सम्पदा और घर परिवार छोड़कर बीक्षा के लिए कटिबद्ध हो गये ।

विशेष—बचपन में पिता चल बसे और जबानी में पत्नी खली गई, इससे उनके मन में संसार की अनित्यता का सही बिंश्र लिख गया बेराग्य-भाव जगा और वे पुत्र एवं सम्पत्ति का मोह छोड़ कर साधु बनने को तैयार हो गये ।

छन्द भंफाल

मांग चारित्र की आज्ञा निज मात पे,
वेप साधु लियो आय गुरु व्रात पे ।

निरजरा काज मुनि कबहु सूता नहीं,
लोक में व्रत छे उग्र शोभा लही ॥५॥

अर्थ—दीक्षा लेने के लिए माता से आज्ञा प्राप्त करके वे गुरु (आचार्य श्री भूषरजी) के पास गये और साधु वेष धारण कर लिया। कर्म-निर्जरा के लिए वे कभी सोये नहीं। ग्रहनिश धर्म-जागरणा में लगे रहे। कठोर व्रत लेकर उन्होंने समाज में बड़ी शोभा प्राप्त की।

छन्द भंफाल

साधु तीना तणां विस्तरे सांवठा,
के तपी के जपी के बुधा उत्कटो ।
दोय कुशलेश के कहूं सिख दीपता,
जोग्य गुमनेस दुरगेस अब जीपता ॥६॥

अर्थ—तीनों का विशाल साधु समुदाय बहुत फैला। उनमें कई तपी, कई जपी और कई उत्कट विद्वान् हुए। कुशलाजी म० के दो शिष्य श्री गुमानचन्द्रजी और दुर्गादासजी प्रभावशाली हुए। वे दोनों पाप बंध में विजय मिलाने को योग्य थे।

सोरठा

जाहरपुर जोधान, मांझी अखजी मेसरी ।
थिरवासी तिहां थान, लोहो इधकी लायकी ॥७॥

अर्थ—जोधपुर एक प्रसिद्ध नगर है जिसमें लोह्या गोत्रीय अखजी (अखेराजजी) नाम के एक माहेश्वरी सेठ थे। वे वहाँ के स्थिरवासी और लायकी से अधिक प्रख्यात थे।

छन्द हनुफाल

तसु गेह चैना नाम, वर सीलवती वाम ।
जसु कूख जनमें आन, गुनवंत पुत्र गुमान ॥८॥

अर्थ—उनके घर में अष्ट शील वाली चैना नाम की भार्या थी, जिसकी कुक्षि से गुणवान् पुत्र गुमानजी का जन्म हुआ।

छन्द हनुफाल

केतले काल विख्यात, धित करी पूरन मात ।

जसु फूल घालन गंग, ले तात कूँ निज संग ॥६॥

अर्थ—कुछ वर्षों के बाद उनकी मातृश्री आयु पूर्ण कर चल बसी । उसके फूलों (अस्थियाँ) को गंगा में प्रवाहित करने के लिए वे पिता को संग लेकर गये ।

छन्द हनुफाल

सुत पिता दोहु निदान, पहुँता मंदाकिनी थान ।

तन माझ गंग मझार, पुनि फूल जल में डार ॥१०॥

अर्थ—पुत्र और पिता दोनों गंगा के किनारे पहुँचे और गंगा में शरीर को माँज कर फिर उन फूलों को जल में बिसर्जित कर दिया ।

छन्द हनुफाल

कर मगत सारु दान, साचवि सकल विधान ।

माग परे पाछा जासु, मेड़ते आये आंसु ॥११॥

अर्थ—वहाँ सम्पूर्ण विधान के साथ, शक्ति भर दान करके दोनों पीछे अपने रास्ते चले और शीघ्र मेड़ते आ पहुँचे ।

विशेष—गंगा में अस्थि-विसर्जन करना तथा उस अवसर पर दान देना जैन संस्कृति की परम्परा के अनुकूल नहीं है । क्योंकि जिन धर्मानुसार स्वकर्मनुसार-सुगति, कुगति मानी गई है ।

दोहा

तठे सिख कुशलेस के, कियो हुतो संथार !

ते महिमा सुणके तिण्हे, दीठो मुनि दीदार ॥२०॥

अर्थ—उस समय मेड़ता नगर में आचार्य कुशलाजी म० के एक शिष्य ने संथार किया । संथारे की उस महिमा को सुनकर वे दोनों मुनि के दर्शन करने वहाँ गए ।

दोहा

रह दिवस पनरे तिहां, नित आवत मुनि पास ।

सुनता सुनता सीखिया, वीर धुई धर प्यास ॥२१॥

अर्थ—वे दोनों वहाँ पन्द्रह दिन रहे और नित्य मुनिजी के पास छाते-जाते । मन में चाह होने के कारण उन्होंने वहाँ सुनते २ वीर स्तुति का पाठ रुचि से सीख लिया ।

दोहा

बुध उत्कृष्टी देख के, दियो मुनि उपदेश ।

ते सुणने बेरागिया, भेट्या गुरु कुशलेश ॥२२॥

अर्थ—मुनि श्री ने उनकी उत्कृष्ट बुद्धि देखकर सद्बुपदेश दिया, जिसे सुनकर उनके मन में वैराग्य-भावना जगी और पूज्य कुशलाजी के शरण में आ गये ।

दोहा

अष्टादश अष्टादशे, बरस तणी ए बात ।

पिता सहित गृह त्याग के, ग्रही किया अवदात ॥२३॥

अर्थ—विक्रम संवत् १८१८ की यह बात है । गुमानचन्दजी ने पिता सहित घर का प्रपञ्च छोड़ कर श्री कुशलाजी के पास निर्दोष सधु क्रिया स्वीकार की ।

छप्पय

ले संजम गुण पात्र, पढ़न उद्यम आदरियो ।

पढ़ व्याकरण प्रसिद्ध, ज्ञान अक्खर उर धरियो ॥

सुध वतीस सिद्धंत, अरथ संजुक्त विचारा ।

भाषा काव्य सिलोक, सीखे मुनि विविध प्रकारा ॥

पट् द्रव्य रूप ओलख खलु, नय निक्षेप नव तत्व को ।

कर निर्णय ज्ञाता भये, समझ सरूप निज सत्त्व को ॥१७॥

अर्थ—गुण पात्र रूप संयम ग्रहण कर उन्होंने पढ़ने के लिए उद्यम किया और प्रसिद्ध सारस्वत व्याकरण पढ़ कर उसका अक्षर-अक्षर ज्ञान हृदय में धारण किया। साथ ही साथ अर्थ सहित शुद्ध रूप से बत्तीस आगम सिद्धांत तथा काव्य, भाषा, श्लोक आदि विविध प्रकार के प्रकरण भी सीखे। नैय, निक्षेप सहित नव तत्त्व एवं षट् द्रव्यों को भली भांति जान कर वे सकल शास्त्र के ज्ञाता हुए। उन्होंने अपने आत्म-बल एवं आत्म-स्वरूप को भली भांति समझ लिया।

छप्पय

गोलेचा शुभ गोत, वसे सालरिया ग्रामे ।
 दयावंत दुरगेस, जनम लीघो तिह ठामे ।
 सेवाराम सुतात, मात सेवा सुखकारी ।
 छोड़ सकल को मोह, मये उत्तम ब्रह्मचारी ।
 भेटिया पूज कुशलेश कूं, बोध बीज समकित लही ।
 समत अठारे बीसे वरस, दुर्ग मुनि दीक्षा ग्रही ॥१८॥

अर्थ—सालरिया ग्राम में गोलेछा गोत्रीय लोगों का वास था, वहीं दयावान् दुर्गेश ने जन्म लिया। उनके पिता का नाम सेवाराम तथा सुखकारी माता का नाम सेवावे था। वे सबका मोह छोड़ कर उत्तम ब्रह्मचारी बन गये और कुशलेश जैसे गुरु को प्राप्त कर, बोध बीज सम्यक्त्व का लाभ किया। संवत् १८२० वर्ष में दुर्गाबास जी ने मुनि दीक्षा धारण की।

विशेष :—राजस्थान में सोजत के पास सालरिया ग्राम है जहां दुर्गाबास जी का जन्म हुआ था। उन्होंने बचपन में ही भीष्म पितामह की तरह ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा लेली और १८२० में मेवाड़ स्थित उंटाला ग्राम में कुशलाजी महाराज के पास श्रमण दीक्षा ग्रहण की।

सवैय्या छन्द

वर्ष अष्टादश सय चालीसे, महानगर नागौर भंकार ।
 अखसख करथो कुशल मुनि उत्तम, तनु तज लखो देव अवतार ।

पूटे पूज गुमान प्रतापिक, बधती बुद्ध तथे विस्तार ।
विचरे ग्राम नगर पुर पाटण, समझाये भविजन संसार ॥१॥

अर्थ—संवत् १८४० के वर्ष महानगर नागौर में मुनि श्रेष्ठ कुशलाजी महाराज ने अनशन कर अपना शरीर छोड़ा और देव अवतार को प्राप्त किया । उनके पीछे उनके पाट पर प्रतापी पूज्य गुमानचन्द्रजी महाराज प्रतिष्ठित हुए । उन्होंने अपनी बुद्धि के विस्तार से, नगर, पुर, पाटन में विचरते हुए सांसारिक लोगों को प्रतिबोध दिया ।

विशेष :—कुशलाजी ने नागौर में सं० ३४ से ४० वर्ष पर्यन्त स्थिर वास किया । उनके दस शिष्य थे—दामोजी, तेजोजी, पांचोजी, नाथोजी, गोयन्दजी, अख्यराजजी, गुमानचन्द्रजी, दुर्गादासजी, टीकमजी और सूजो जी । इनमें अधिक प्रख्यात पूज्य गुमानचन्द्र जी तथा पूज्य दुर्गादास जी महाराज हुए । सूजोजी की कुछ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ मण्डारों में मिलती हैं । कुशलाजी के पश्चात् उनके पाट पर गुमानचन्द्रजी महाराज प्रतिष्ठित हुए ।

छप्पय

शाह गंग आवगी, वंस निरमल बड़ जाती ।

त्रिया गुलावां तासु, वसे नागौर विख्याती ।

तसु नंदन रतनेस, रहे सुखसु' तिह थानक ।

पिता गंग परलोक, काल कर गए अचानक ।

प्रापते चतुर्दश वर्ष में, समझ लही रतनेश सब ।

सुन वान गुमान की, सवन सु', जग्यो हृदय वैराग जब ॥१६॥

अर्थ—उज्ज्वल आवगी वंश में बड़जात्या गंगाराम जी शाह नागौर में विख्यात होगये । उनकी पत्नी का नाम गुलाबबाई था । उनका पुत्र रतनेश सुख पूर्वक वहीं रहता था । अचानक उसके पिता गंगारामजी की मृत्यु हो गई । चौबह वर्ष की अवस्था में रतनेश ने अच्छी समझ पा ली थी । तत्र विराजित पूज्य गुमानचन्द्र जी महाराज की बाणी सुन कर उसके हृदय में वैराग्य-भावना जग उठी ।

विशेष :—रतनचन्द जी गंगारामजी के अपने पुत्र नहीं किन्तु बत्तक पुत्र थे । उनका जन्म डूँडार देश स्थित कुड गांव में हुआ था ।

छप्पय

गुरु आगल कर जोर, कहे ले सूं मम दीक्षा ।
 मात न दे आदेश, पिता बड़ पे ले शिखा ।
 गुरु सुं कर आलोच, सहर हुती निसरिया ।
 पांच तथा दिन सात, करी भिक्षाचरी क्रिया ।
 गुरुदेव समझ अवसर इसो, लार मेल लिखमेसकू ।
 मंडोर ग्राम आवा तले, दी दीक्षा रतनेशकू ॥२०॥

अर्थ—वैराग्य—मात्र जगने पर रतनजी ने गुरु के सम्मुख हाथ जोड़ कर कहा कि मैं दीक्षा लूंगा, पर माता मुझे आज्ञा नहीं देती है। बड़े बाप की शिक्षा और अनुमति लेकर दीक्षा ले सकता हूं। इस प्रकार गुरु जी से विचार विमर्श कर वे नागौर शहर से निकल गये और पांच—सात दिन तक भिक्षाचर्या से वृत्ति चलाई। गुरुदेव ने रतनेश को प्रबल भावना और ऐसा अवसर समझ कर पीछे लक्ष्मीचन्द्रजी महाराज को भेजा। इन्होंने मण्डोर नगर में आश्रम वृक्ष के नीचे उन्हें मुनि दीक्षा की प्रतिज्ञा ग्रहण करवा दी।

विशेष :—जब रतनचन्द्रजी को अपनी माता से दीक्षा लेने की आज्ञा न मिली, तब वे अपने बड़े बाप नाथूरामजी से आज्ञा लेकर जोधपुर जाने के संकल्प से नागौर से निकल पड़े और रास्ते में भिक्षाचरी करते मण्डोर पहुंच गये। वहां श्री लक्ष्मीचन्द्रजी महाराज ने (जिन्हें पीछे से गुमानचन्द्रजी महाराज ने भेजा था) पहुंचने पर भाव दीक्षित रतनेशजी को व्यवहार दीक्षा से दीक्षित किया।

दोहा

अष्टादश अड़तालसे, सुध पंचम वैशाख ।

रतन भये मुनिवर रुचिर, लाम मुगति अभिलाख ॥२४॥

अर्थ—वि० सं० १८४८ की वैशाख शुक्ला पंचमी को मुक्ति लाम की अभिलाषा से रतनजी दीक्षित होकर उत्तम मुनि बन गए।

छप्पय

तिहांथी कीन बिहार, नगर जोधाणे आये ।
 तिहां मिलिया दुरगेश, जासु सब बात सुनाये ॥
 सुन बौल्या दुरगेश, लार जननी तुम आसी ।
 इहां थी करो बिहार, कलह उत्कण्ठो थासी ॥
 सुविचार एम मैहार दिश, विचार गए तत् खिण गुनी ।
 विद्या अभ्यास करवो विशुद्ध, मांज्यो रतन महा मुनी ॥२१॥

अर्थ—वहां से (नव दीक्षित मुनि को साथ ले) बिहार कर मुनि श्री जोधाणे (जोधपुर) पधारे । वहां दुर्गादासजी महाराज से भेंट हुई । उन्हें सारा वृत्तान्त कह सुनाया । उसे सुनकर पूज्य श्री दुर्गादासजी महाराज बोले—मुने ! पीछे से तुम्हारी माता आयेगी । अतः यहां से बिहार कर दो अन्यथा बड़ा कलह उत्पन्न होगा । इस प्रकार दुर्गादासजी महाराज से विचार कर, वे तत्क्षण मेवाड़ की ओर बिहार कर गए और वहां रतन महामुनि ने विशुद्ध विद्याभ्यास करना आरम्भ कर दिया ।

छप्पय

कर लारो तत्काल, जननी आई जोधाणे ।
 विजैसिंध महाराज, राज करता तिह ठाणे ।
 अमराही अवलोक, दोर फांसो गह लीधो ।
 पूछ विंगत पृथ्वीस, हुकम कामेस्या कीधो ।
 सिधा लिखाय मेली सही, जेतारण सोजत जठे ।
 मुनि गया मुलक तज, पर मुलक कुण जोवे लामे कठे ॥२२॥

अर्थ—रतनचन्द्रजी को माता भी नागौर से पीछा कर तत्काल जोधपुर आ पहुँची । उस समय वहाँ विजयसिंहजी महाराजों राज्य करते थे । संयोगवश उस दिन बरबार की सवारी निकली, जिसे देखकर वह दौड़ पड़ी और सवारी के फाँसे को पकड़ लिया । महाराजों ने उससे सब हाल पूछा और अपने कर्मचारियों को हुक्म दिया और सनदें और आज्ञा पत्र लिखकर जता-

रण, सोजत आदि परगनों में मिजवा दिये। किन्तु मुनि श्री तो मारवाड़ छोड़कर दूसरे राज्य में चले गए थे। वहाँ कौन जाये और कैसे मिले ?

छप्पय

मोह तथे बस मात, देख दूजाइ साधु ।
बोली मुख गालियाँ, उपजावी असमाधु ॥
गुरु गुमान पिण गया, देश मेवाड़ मंभारा ।
मिलिया गुरु सिख तठे, साधु दुरगादिक सारा ॥
चउमास तीन कीधा उठे, मालव अरु मेवाड़ में ।
इथ आय चउथ चतुमास मुनि, प्रथम कियो पीपाड़ में ॥२३॥

अर्थ—रतनचन्द्रजी के नहीं मिलने से मोहबश उनकी माता दूसरे साधुओं को देखकर मुंह से गालियाँ देती और असमाधि उत्पन्न करती। इस बीच गुरु गुमानचन्द्रजी म० श्री बिहार करते २ मेवाड़ की ओर पधारे, जहाँ दुर्गादासजी आदि सकल साधुओं के मिलने से गुरु-शिष्य का मधुर मिलन संपन्न हुआ। वहाँ मालवा और मेवाड़ में उन्होंने तीन चातुर्मास किये। इधर आकर चौथा चातुर्मास मुनि श्री ने पहले पहल पीपाड़ में किया।

छप्पय

पुन पंचम चउमास, कियो पाली मुनि नायक ।
तेहवे श्री रतनेश, मये पोते अति ज्ञायक ॥
जननी पिण जाखियो, काम गृह का सब मूकी ।
आई तुरंत चलाय, मुनि पै भगरन ठुकी ॥
रतनेश हेत उपदेश कर, समझावी नित मात कुं ।
ते कहै नगीने आवज्यो, दरस देन कुल न्यात कुं ॥२४॥

अर्थ—फिर मुनि नायक श्री गुमानचन्द्रजी ने पंचम चातुर्मास पाली में किया। उस समय तक रतनचन्द्रजीम० स्वयं अष्टवै सिद्धान्त के ज्ञाता बन चुके थे। उनकी माता ने भी जब यह बात सुनी तो वह घर का सारा काम-काज छोड़कर शीघ्र ही पाली पहुंची और मुनि श्री से भगड़ने लगी।

मुनि रतनेश ने हेतु और उपदेश देकर अपनी माता को समझाया । इस पर वह गुरुदेव से बोली कि अपनी जात-बिरादरी वालों को बर्सान देने के लिए एक बार नागौर पधारें ।

दोहा

मुनि नागौर पधारिया, बहुत हुबो उपकार ।

सज्जन परिजन दरस कर, हरखया सहु नर नार ॥२५॥

अर्थ—माता की विनती मानकर, मुनि श्री रतनचंद्रजी अपने गुरु के संग नागौर पधारें—जिससे लोगों का महान् उपकार हुआ । नगर के सभी सज्जन एवं बन्धु मुनि श्री के दर्शन कर बड़े हर्षित हुए ।

छप्पय

ताराचन्द गुमन के, सिख तपसी बैरागी ।

गिय त्याग पारणो, कियो छठ २ बड़मागी ॥

वरस पचासे जेह, काल कर मुरगत उपनो ।

गुर गुमान कुं आय, दियो तिण राते मुपनो ॥

गुरुदेव आप मोटा गुनी, मम विनति चित दीजिए ।

वत्थ पात्र आहार थानक चिहुँ, आधाकमीं न लीजिए ॥२५॥

अर्थ—पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म० के परम बैरागी तथा उग्र तपस्वी ताराचन्दजी नाम के एक शिष्य थे, जो बड़े भाग्यशाली थे । वे बेले बेले की तपस्या के साथ पारणा में पांच गिय का त्याग रखते थे । विक्रम संवत् १८५० में वे काल करके स्वर्गवासी हुए और उसी रात गुरु गुमानचन्द्रजी म० को स्वप्न दिया कि 'हे गुरुदेव ! आप बड़े गुणवान् हैं अतः विनती पर ध्यान दें और आधाकमीं वस्त्र, पात्र, आहार और स्थानक का उपयोग नहीं करावें ।

छप्पय

जाग मुनि परमात, मये विस्मय मन भारी ।

सकल सिखांसु चरच, नवी दीक्षा रुचधारी ॥

गण साक्षां प्रति कथो, वस्तु आधाकर्म स्यात्तो ।

ते बोद्धा नहि निभे, दोष लागे तो लागो ॥

सुन वचन एह टोला तणो, तोड़ आहार विचरे जुवा ।

मिल साध चतुर्दश एकठा, हरख सुगत सांमा हुआ ॥२६॥

अर्थ—स्वप्न दर्शन के बाद प्रातः काल जागृत होने पर मुनि श्री के मन में बड़ा विस्मय हुआ । उन्होंने अपने सभी शिष्यों के साथ चर्चा करके नयी वीक्षा का विचार किया तथा गण के साधुओं से आधाकर्म वस्तु छोड़ने की बात कही । पर उन्होंने कहा कि दोष लगे तो लगे किन्तु आधाकर्म का त्याग निभने वाला नहीं है । समुदाय के साधुओं को ऐसी बात सुनकर श्री गुमानचन्द्रजी ने पारस्परिक आहार सम्बन्ध तोड़ लिया और अलग विचरने लगे । फिर चौदह साधु एकत्र मिलकर प्रसन्नतापूर्वक मुक्ति मार्ग के सम्मुख हुए । मुक्ति मार्ग में आगे आने वाले मुनियों के नाम इस प्रकार हैं—

छप्पथ

गुरु गुमान^१ दुरगेश^२, तृतीय गोयंदमल^३ नामी ।

सूरजमल^४ लिखमैस^५, पेम^६ दोलतमल^७ स्वामी ।

रतनचन्द^८ किसनस^९, दलीचन्द^{१०} संजम खुरा ।

मोटरमल^{११} अमरस^{१२}, रायचन्द^{१३} गुलजी^{१४} खुरा ।

मुनि सकल एह उत्तम महा, वधिया सुघ वैराग में ।

चौपने वर्ष दीक्षा नवी ली, बड़लूरे बाग में ॥२७॥

अर्थ—१—श्री गुमानचन्द्रजी महाराज, २—मुनि श्री दुर्गादासजी महाराज, ३—मुनि श्री गोयन्दमलजी महाराज, ४—मुनि श्री सूरजमलजी महाराज, ५—मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी महाराज, ६—मुनि श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज, ७—मुनि श्री दोलतरामजी महाराज, ८—मुनि श्री रतनचन्द्रजी महाराज, ९—मुनि श्री किशनचन्द्रजी महाराज, १०—मुनि श्री दलीचन्द्रजी महाराज, ११—मुनि श्री मोटरमलजी महाराज, १२—मुनि श्री अमरचन्द्रजी महाराज, १३—मुनि श्री रायचन्द्रजी महाराज, १४—मुनि श्री गुलजी महाराज ।

आचार्य- श्री जयमल जी महाराज के स्वर्गवास के बाद वि० सं० १८५४ में, उपर्युक्त चौदह साधुओं ने बड़लू (भारवाड़) में मिलकर २१ बोलों की मर्यादा की और संयमाचार को सुदृढ़ बनाकर पुनः नयी दीक्षा ग्रहण की ।

सवैया इकतीस

आरम्भ सहित मोल, लियो भोग लावे भाड़े ।
थानक उपासरो, सद्योष ऐसो त्यागै है ॥
वस्त्र पात्र सूत्र दस्ता, हिंगलू रोगान ऊन ।
मोल लीवी इत्यादि, लेवे की चाय मागे है ॥
धोवन उपन जल, लेवो नहीं नित पिंड ।
कलाल के गृह को, उदक नहीं मांगे है ॥
मिसरू प्रमुख पुट्टा, बटका न राखे मुनि ।
रेशमी रंगीली कोर, धोतियां सुं आगे है ॥६॥

अर्थ—इक्कीस बोलों की मर्यादा इस प्रकार है :—साधुओं को चाहिए कि वे अपने लिए आरम्भ कर बनाये हुए, खरीद किए हुए, भोग लावे रखे हुए तथा भाड़े वाले सद्योष स्थानक या उपाश्रय का त्याग करें । वस्त्र, पात्र, सूत्र, दस्ता, हिंगलू, रोगन और ऊन इत्यादि मोल लाये हुए पदार्थ की चाह नहीं करें । धोवन, उष्ण जल, और आहार भी प्रतिदिन एक ही गृहस्थ के घर से नहीं लें, न कलाल के घर से पानी मांगें । मिसरू आदि से युक्त रंगीन पुट्टा और बटका भी मुनि अपने पास नहीं रखें, न रेशमी और रंगीन कोर की धोती का ही व्यवहार करें ।

सवैया इकतीस

बहु मोला थिरमा धूसादि, वत्थ लेवे नाह,
मेण अलसेल तेल, राखे नहीं रात रा ।
जीमण आरंभ जठे, सैं दिन वा दूजे दिन,
वेरण आहार मुनि, जावे न से पातरा ।

भरजादा उप्रंत वस्त्र-पात्र को न रखे लेश,
टोपसी पीयन पाणी, नेम लाल भातरा ।
करत पलेवणा दुवगत, मंडोपगरण,
आवते दिन रवि, उदय प्रमातरा ॥७॥

अर्थ—बहुमूल्य पिरमा, घूसादि वस्तु नहीं लें, और मेण धलसी का तेल आदि रात को अपने पास न रखें । जिस घर में जीमण का आरम्भ हो उसके यहां उस दिन या दूसरे दिन भी, आहार के लिए मुनि पात्र लेकर नहीं जायें । भर्यादा के उपरान्त वस्त्र, पात्र आदि लेशमात्र भी नहीं रखें । पानी पीने के लिए टोपसी भी नहीं रखें, न लाल की रोटी लें । दोनों समय (सूर्योदय और संध्या के समय) मण्डोपकरण की प्रतिलेखना-संमार्जन करें ।

सवैया इकतीसा

चौमासे उतार, मिगसर वद एकमसू,
इधका न रहे सुखे, करत विहार जू ।
थानक में आय कोउ, भावक प्रचारे जाके,
गृह जाय लावे नहीं, किंचित आहार जू ।
बड़ा ने कक्षो बिना, वा पूछियां बिना कदापि,
साधवी कुं पानो वत्थ, देवे न लिगार जू ।
आपनो जनाय न दिरावे, किनही कूं दाम,
संवर बिना न साने, पास संसार जू ॥८॥

अर्थ—चातुर्मास के उतरने पर मिगसर वद एकम से अधिक उस गांव में समाधि पूर्वक नहीं रहें, वहां से विहार कर दें । स्थानक में आकर कोई भावुक भक्त आहारादि की प्रार्थना करे तो उसके घर जाकर कुछ भी आहार नहीं लावें । बड़े संतों को कहे अथवा पूछे बिना साध्वी को शास्त्र का पन्ना, वस्त्र आदि कुछ भी न दें । किसी को अपना बताकर गृहस्थ से रुपये-पैसे नहीं बिलाना और न संवर किए बिना किसी गृहस्थ को रात में अपने यहां सोने दें ।

दोहा

ए इकवीसुं बोल इम, वरते सुध विवहार ।
 गण श्री पूज गुमान को, सब गण में श्रीयकार ॥ २६ ॥
 अष्टादश शत अठवने, पुर मेड़ते प्रधान ।
 कातिक तिथ आठम किसन, गुन निध पूज गुमान ॥ २७ ॥
 चार पहर संधार सुं, ललित देव पद लीध ।
 अल्प जनम अंतर अपि, सिव जासी हुय सिद्ध ॥ २८ ॥

अर्थ—इस प्रकार इन इक्कीस बोल की बर्यादा से शुद्ध व्यवहार निभाते हुए पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी का गण उस समय के सब गणों में श्रेष्ठ समझा जाने लगा । विक्रम संवत् १८५८, कातिक कृष्णा अष्टमी तिथि को गुणनिधि पूज्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज ने मेड़ता नगर में चार प्रहर का संधारा पाल कर सुन्दर देव पद प्राप्त किया, वहां से अल्प-जन्म के अन्तर से शिव पद प्राप्त कर सिद्ध होंगे ।

दोहा

पाट विराजे पूज के, मुनि दुरग महाराज ।
 भविक जीव तारन भनी, जे सुविशाल जहाज ॥ २९ ॥

अर्थ—पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज के पाट पर मुनि श्री दुर्गा-दास जी महाराज विराजमान हुए । वे सांसारिक जनों के तारने के लिए एक बड़े जहाज के समान थे ।

विशेषः—श्री गुमानचन्द्र जी महाराज अच्छे कवि और सुन्दर लिपिकार थे । उनके द्वारा रचित “मगवान् ऋषभ देव का चरित” प्रसिद्ध है, जिसमें मगवान् के तेरह भवों का वर्णन है । उन्होंने अपने जीवन-काल में अनेक शास्त्र, ग्रन्थ, चौपाई तथा फुटकर पत्रों का आलेखन किया । उनकी लेखन कला सुन्दर, स्पष्ट एवं सुवाच्य थी । उनके द्वारा लिखी हुई कई हस्तलिखित प्रतियां अभी उपाध्याय श्री हस्तीमल जी महाराज के पास विद्यमान हैं तथा कुछ संग्रहालय में भी सुरक्षित हैं, जिनका

ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्व है। उनके १६ शिष्य थे, जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

- १—मुनि श्री वर्द्धमानजी महाराज ।
- २—मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज ।
- ३—मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज ।
- ४—मुनि श्री दौलतरामजी महाराज ।
- ५—मुनि श्री हीरजी महाराज ।
- ६—मुनि श्री ताराचन्द जी महाराज ।
- ७—मुनि श्री साहिब रामजी महाराज ।
- ८—मुनि श्री बलीचन्दजी महाराज ।
- ९—मुनि श्री अमरचन्दजी महाराज ।
- १०—मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज ।
- ११—मुनि श्री गुलाबचन्द जी महाराज ।
- १२—मुनि श्री मोटो जी महाराज ।
- १३—मुनि श्री स्वामीदास जी महाराज ।
- १४—मुनि श्री रायचन्द जी महाराज ।
- १५—मुनि श्री मोतीचन्द जी महाराज ।
- १६—मुनि श्री प्रतापचन्द जी महाराज ।

छप्पय

स्वयं प्रकर का साध, चलत आज्ञा अनुसारे ।
 प्रबल तेज परताप, विचर जिन माग विस्तारे ।
 चरम कियो चउमास, जोग्य स्थानक जोघाणे ।
 संमत अठारे साग, बरस नयांसिय ठाणे ।
 संधार पहर आठे सरध, क्रोधादिक परहर कुकल ।
 दुरगेश लख्यो पद देव को, श्रावण एकादसि शुक्ल ॥२८॥

अर्थ—पूज्य श्री दुर्गादास जी महाराज के अनुसासन में संत और सती वर्ग स्वयं चलने लगे। उनका तेज और प्रताप प्रबल था। उन्होंने गाँव नगरों में विचर कर जैन मार्ग का विस्तार किया। अस्मिन् चातुर्मास जोधपुर नगर के योग्य स्थानक में हुआ और वहाँ सं० १८८२ में शारी-

रिक स्थिति क्षीण देखकर क्रोध आदि की आकुलता छोड़कर, आठ प्रहर का संवारा पूर्ण कर, आचमन शुक्ला एकावशी की ओ दुर्गादासजी ने देव-पद प्राप्त किया ।

छप्पय

तिथि हिज वरस तमाम, भये चौविध संघ मेलो ।
जो वण काज जहान, मंझी लोकन को मेलो ॥
मिगसर मास मझार, सुकल तेरस दिन सखरे ।
कर उक्खव सुखकार, उचित मुहुरत लख अखरे ॥
थाविया पूज रतनेश थिर, सब गन मांहि सिरोमनि ।
ओढ़ाय दीध चादर उचित, मध्य जीव तारन मनी ॥२६॥

अर्थ—पूज्य दुर्गादासजी के स्वर्गवास के बाद उसी वर्ष समस्त चतु-विध संघ एकत्र हुआ । आचार्य पद को देखने दूर २ से सारे लोक आये जिससे लोगों का मेला लग गया । और मिगसर शुक्ल तेरस का शुभ मुहूर्त देखकर सुखकारी आचार्य पद महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें गण शिरोमणि रतनचन्द्रजी म० को सव्य जीवों के हितार्थ आचार्य पद पर स्थापन कर आचार्य की चादर ओढ़ाई ।

छप्पय

दे उत्तम उपदेश, रेस संसय नहीं राखत ।
सुख अमृत सम मिष्ट, मले वाचक मृदु मापत ॥
रस उपजत सुन राग, सुष्ठु सुर गिरा सुहावे ।
उन्मग वाला अटक, अवसर मारग आवे ॥
रजपूत विप्र कायथ रजू, सुन बखान बर्दत सही ।
तारीफ उकत मेलन तथी, कब सगला जन री कही ॥३०॥

अर्थ—पूज्य रतनचन्द्रजी उत्तम उपदेश देकर मन में रंज भर भी संशय नहीं रखते थे । उनका मुख अमृत के समान मधुर वचन से भरा था । वे एक सुवाक्क और-मृदुभाषी थे, उनकी सुहानी बेबोपम शोभन वाणी सुन-

कर श्रोता के मन में रस का संवार होता था, जिससे कुमारंगामी भी एक कर अवश्य मार्ग पर आ जाते । राजपूत, ब्राह्मण, कायस्थ आदि सब आते और उनका व्याख्यान सुनकर युक्ति मिलाने की तारीफ करते । उन्हें सर्व धेष्ठ मानकर स्वयं उनकी स्तुति करते थे ।

विशेष—विविध कवियों ने पूज्य रत्नचंद्रजी म० की स्तुति में, जो पद लिखे हैं, वे आज भी सुरक्षित हैं । उन सबका एक जगह संकलन करने से एक ग्रन्थ सा ग्रन्थ बन सकता है । भक्त कवि सिम्भूनाथजी ने उनकी स्तुति में सर्वाधिक पदों की रचना की है ।

छप्पय

गादी धर गंभीर, धीर उत्तम व्रतधारी ।
पर उपगारी पुरुष, विज्ञवर उग्र विहारी ॥
शीलवंत सतवंत, संत समता के सागर ।
निगमागम सुध न्याय, अतुल प्रज्ञा गुन आगर ॥
उद्योत करण जिनधर्म अधिक, मानस तनु धार्यो मुनि ।
साक्षात जोग मुद्रा सहित, देख देख हरसे दुनी ॥३१॥

अर्थ—पूर्वाचार्य की गद्दी को धारण करने वाले आचार्य रत्नचंद्रजी म० गंभीर, धीर, संयमी, परोपकारी, विशेषज्ञ, उग्र विहारी, शीलवंत, सत्यवंत, समता के सागर, निगमागम के अनुकूल न्यायी और अतुल प्रज्ञा गुण के आकर संत थे । उन्होंने जैन धर्म का विशेष उद्योतन करने के लिए मनुष्य का तन धारण किया । उनको योग मुद्रा में देखकर सांसारिक भक्त जन अत्यधिक हर्षित होते थे ।

छप्पय

ब्रह्मचरज नववाड़, सुध पालत मन स्वामी ।
काटे चार कषाय, करम तोरन हित कामी ॥
पाला महाव्रत पंच, जूथ इन्द्रिय पण जीपे ।
आराधे आचार, दून दिन दिन व्रत (व्रत) दीपे ॥
प्रवचन अष्ट रतनेश प्रभु, सुमत गुपति धारे सुचत ।
षट्तीस गुने सोमत खलु, आचारज पद अति उचत ॥३२॥

अर्थ—वे गण के स्वामी पूज्य श्री नववाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। उन्होंने कर्म बन्धन को तोड़ने के लिए चारकषायों को मन से काट दिया था। पांच महाव्रतों का पालन करते हुए पांच इन्द्रियों के यूथ-समूह को जीत लिया था। साध्वाचार को आराधना करते हुए वे प्रतिदिन दुगुने बेदीप्यमान हो रहे थे। वे (श्री रत्नचंद्रजी म०) अष्टविध प्रवचन भाता जो पंच समिति और ३ गुप्ति रूप है—को धारण करते हुए छत्तीस गुणों से आचार्य पद पर बहुत ही योग्य रूप से सुशोभित होते थे।

छप्पय

रहो पूज रतनेश, चिरकाले तन चंगा ।
 हाजर सिख हमीर, सदा सोहत है संग ॥
 जग में गुरु सिख जोरि, निरख भविजन जुग नेणा ।
 पासे चित्त प्रसन्नता, बधे सुख सुन मृदु वैना ॥
 रिख वृंद पूज रतनेश के, बड़ साखा जिम विस्तरो ।
 पदबंद विनेचंद इम पढ़े, विपुल काल मुने विचरो ॥३३॥

अर्थ—अन्त में इस पट्टावली के रचयिता बिनयचन्दजी अपनी शुभ कामना प्रकट करते हुए कहते हैं—हे रत्नचन्द्र महाराज ! आप नीरोग शरीर से चिरकाल दीर्घायु रहें। उनके संग में बिनयवान् शिष्य हमीरमल जी सदा सुशोभित होते हैं। जग में उस गुरु शिष्य की जोड़ी को, अपनी दोनों आँखों से देखकर, भावुक जन चित्त में प्रसन्नता अनुभव करते और मृदु मनोहर वचन सुनकर सुख पाते हैं। पूज्य श्री रत्नचंद्रजी म० का शिष्य समुदाय बट शाला की तरह चतुर्विध फैले। इस प्रकार बिनयचंद्र चरणों में वंदन कर कहते हैं—हे मुनि, आप दीर्घकाल तक धर्मवृद्धि करते हुए संसार में विचरते रहें।



(२)

प्राचीन पट्टावली

[इस पट्टावली में सुद्धर्मा स्वामी से लेकर देवर्षि सभा-
अभ्यन्ता तक के पट्टधर आचार्यों का परिचय देते हुए आगम-
लेखन, लोकागच्छ की उत्पत्ति व विभिन्न गच्छ-भेदों का वर्णन
दिया गया है। तदनन्तर श्रीलक्ष्मी, धरमसी और सोमजी
की पारस्परिक चर्चा-वार्ता का उल्लेख करते हुए सर्व श्री
अभीपालजी, श्रीपालजी, प्रेमजी, हरजी, जीवोजी, लालचन्दजी,
हरिदासजी, गोधोजी, फरसरायजी, गिरधरजी, आशकचन्दजी
और काहनजी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।]

हिवड़ पाटावली

ॐ श्री जेसलमेर ना भंडार माहिला पुस्तक कढाबि जोया तिणां माहि
इसी बिगत निखलि। समण भगवंत श्री महावीर देव न बांदि नै नमसकार
करि न भुधर्म इंद्र हात जोडि नै पुछौ—अहो भगवंत तुमारि जनम रास
उपर असम ग्रह बठों छे। तेहनि २ बोय हजार बरस नि धित छे। तिषार
पछ श्री भगवंत बोल्या—हे सकंठ असम ग्रह नै प्रतापे समण निग्रंथनि तथा
चतुर्विध सिधनि उव २ पुजा न हुबै। इंद्र कहै—स्वामि १ घडि आनि
पाछि करो। भगवंत कहय—बात हूइ, हूव, होसि नहि। भगवंत कह २
बोय हजार बरस गया असम ग्रह उतरयां साथ साधवि निग्रंथनि उवे २
पुजा होसै।

चौथे द्वार याकता ८६ पववाडा। एतल तिन बरस साढा आठ
महिना रह एतर पाबापुरि नगरिने विष काति बढ १५ अमावसनि रात
भगवंत श्री महावीर मोक्ष पुहुता। तिण रात्रे १८ रा देसना राजा पोसा

किष्वा । तिण रात्रे गौतम स्वामि न केवल ग्यानि उपनो । ६२ बाणव
बरस नो आउषो । ५० बरस घरहवास । ३० बरस छबमस्त । १२ बरस
केवल प्रजाय पालि एवं सर्व ६२ बरष नो । भगवंत पछ १२ बरषे मोक्ष
पहुंता । बिजे पाटे श्री सुधर्म स्वामि हुवा । ५० बरष घरहवास । ४२
बरष छबमस्त । ८ बरष केवल प्रजाय पालि भगवंत पछ २० बरषे मोक्ष
पहुंता । तिज पाट जंबु सामीनो आउषो ८० बरष नो । ते मषे १६
बरष घरहवास । २० बरष छबमस्त । ४४ केवल प्र० । भगवंत
पछ ६४ वर्षे मोक्ष पहुंता । जंबु सामी मोक्ष पहुंता पछ १० वस
बोल बीछेव गया । केवल ग्यानि १, मन पजव २, प्रमभव ३, आहा-
रिक लबध ४, जिनकलपी ५, पुलाक लबध ६, वपक सेण ७, जया-
प्यात ८, परिहार बिसूष ९, सूक्षम संपराय १० । एवं १० विछेव गया ।
भगवंत पछ २७ पाट विबहार सुध हुवा ते कह छे । तिन तो पहलि
लिषा छे ॥

चोथे पाटे प्रभवसामी ८५ बरष नो आउषो । ३० बरषे घरहवास ।
३२ बरस गुरां साथे बीचरषा २३ बरष आचार्यपण बिचरषा । भगवंत
पछे ७० वर्षे देवलोके । पांचम पाटे सिजंभवसामी । ६२ बरष नो आउषो ।
२८ बरष घरहवास । ११ बरष गुरू पासेर । २३ बरष आचार्य थइ
बीचरषा । भगवंत पछे ६० बरषे देवलोके । छठे पाट जसोमद्र सामी ।
६६ बरष नो आउषो । २२ घरहवास । २४ बरष गुरू पासे । ५० बरषे
आचार्य । भगवंत पछ १३८ वर्षे देवलोके । सातम पाटे संभुत विजय
सामी । ६० बरष नो आउषो । ४२ बरष घरहवास । ४० बरस गुरू पासे ।
८ बरष आचार्य पदवि । भगवंत पछे १५६ वर्षे देवलोके । आठम पाट
मद्रबाहु सामी । ७६ बरष नो आउषो । ४५ बरष घरहवास । १७ बरष
गुरू पासे । १४ बरष आचार्य । भगवंत पछे १७० वर्षे देवलोके । नवम
पाटे धूलमद्र सामी । ६६ बरष नो आउषो । ३० बरष घरहवास । २४
गुरू पासे । ४५ आ० । भगवंत पछे २१५ वर्षे देवलोके । दसम पाटे
आर्जगीरी सामी । १०० बरष नो आउषो । ३० घरहवास । ४० वर्ष
गुरू पासे । ३० बरष आचार्य पदवि । भगवंत पछे २४५ वर्षे देवलोके ।

द्वितिक वसम पाटें बहुल सामी । ३५ वरषे प्रवरत्या । जगबंत पछ २८० वर्षे बेचलोके । त्रीतीय वसम पाटें सुहसति आचार्य जाणवा । इग्यारम पाटें सामद्य नाम आचार्य । ते ५२ वरस परवरत्या । द्वितिक इग्यारम पाटें सुयडिवुधि जाणवा । बारम पाटे श्री संहिल आचार्य । ते ४४ वरष परवत्या । द्वितिक बारम पाट इद्रदिन सामी । जाणवा । तेरम पाट सुमूद्र नामे आचार्य हवा । ते ३० वरष परवत्या । द्वितिक तेरम पाट आर्जदिन सामी जाणवा । चवदम पाट श्री मंगू आचार्य ते ४८ वर्षे प्रवत्या । द्वितिक चवदम पाटे श्री वय सामी जाणवा । पनरम पाट श्री वडूर सामी ते ५४ वरस प्रवत्या । द्वितिक पनरम पाटें वजरसामी जाणवा । सोलम पाट नंदगुप्त आचार्य ते ८३ वरष प्रवत्या । द्वितिक सोलम पाट आर्जरोह सामी जाणवा । सतरम पाट वयरसामी आचार्य ते ९३ वरस प्रवत्या । द्वितिक सतरम पाट पुसगीरि जाणवा । आठारम पाट आरजरिषि आचार्य ते ३४ वरष प्रवत्या । द्वितिक आठारम पाट पुसमित्र तथा फगूमित्र जाणवा । अगूणविसम पाट नंदिलपमण आचार्य ते ९० वरस प्रवत्या । द्वितिक उगणीसम पाट धरणगीरि सामी जाणवा । विसम पाट नंदषेण आचार्य ते ६ वरस प्रवत्या । द्वितिक विसम पाट सिवभूति सामी जाणवा ।

इकविसम पाट नागहमति आचार्य ते ३४ वरष प्रवत्या । द्वितिक इकविसम पाट आर्ज भद्रसामी जाणवा । वाविसम पाट रेवति नषत्र आचार्य ते २७ वरष प्रवत्या । द्वितिक वाविसम पाट आर्ज नषत्र जाणवा । तेविसम पाट दीवग नामे आचार्य ते १२ वरस प्रवत्या । द्वितिक तेविसम पाट आर्ज रवित सामी जाणवा । चोइविसम पाट वंदिल आचार्य ते ५५ वरष प्रवत्या । द्वितिक चोइविसम पाट नागसामी जाणवा । पचविसम पाट वमासमण आचार्य ते ६ वरस प्रवत्या । द्वितिक पचविसम पाट हिलविसनू सामी जाणवा । छविसम पाट

नागजन आचार्य ते २७ वरस प्रव्रत्या । द्वितिव छविसम पाट सदलसामी
जाणवा । भगवंत पछ ६७५ वरखे देवलोके । सताविसम पाट देवदि
षमासमण हुवा । ते भगवंत पछ ६७६ वरखे जाणवा । १८ वरख
आचारज पदवि थया । तेहकन पुर्वा रो ग्यान होतो ते मुढइ ग्यान
छो । तव गाथा । बलहिपुरमि नयरे । देवदिय मुह समणा । संघेण
आगम लिहा । नवसय असिये विरा ॥१॥

देवदि षमासमण एकदा प्रसताव सूँठ नो गाँठियो कांन भघ घरघो
हूंतो ते बिसर गया । काल अति क्रम्यो पछ संभालियो । तिवार जाण्यो
बूध ह्णिण पडि । सूत्र बिसर जासि । तिणा सू सूत्र लिखना सुरू किया ।
६८० मा वरख थो लेइ ६६३ वरख ताइ आप लिख्या, उँराकने सू
लिखाव्यां । पछ ६३ तथा ६४ मै काल किधो । ए सताविस पाट सुध
आचार विवहार जाणवा ।

बलि भगवति सतक २० मे उदेसे ८ मे भगवंत न गोतम सांमि
पुछा किनी—देवागुपिया ! तुमारो तिर्थ केतला काल चालसि । हे
गोतम ! मांहांरो तिरथ २१००० हजार वरख लग चालसि । बले गोतम
सांमी पुछ्यो—अहो देवाणेपोया ! पूर्व नो ग्यान केतलें काल लगे
चालसि । अहो गोतम ! १ हजार वरस रहसी कहेए ॥ भगवंत पछ १२
वरख पछें गोतम मोक्ष । भग । पछ । २० वर्ष सुधर्म मोक्ष । भग ।
पछ । ६४ वर्षे जम्बू मोक्ष । भग । पछ ८० वरखे प्रभवदेव देवदेलोके ।
भग । पछ । १७० वरखे भद्रबाहू हुवा । भग । पछ २१४ वरखे अवत्त-
वादि तिजी नीनव हुवो । तेहनदेव नी संका पडि । भग । पछ २१५
वरखे धूलभद्र हुवा । भग । पछ २२० वरखे सून्यवादि विणेकवादि हुवा ।
भग । पछ २२८ वरखे क्रियावादि हुवो । ५ नीनव एक समे बोय क्रिया
मांति । भग । पछ ३३५ वरखे प्रथम कालका आचार्य हुभा । भग ।
पछ ४५२ वरखे कालकाचार्य सरसति बहिन नै काज प्रथमसेन राजा
संघातें संप्राम किधो । भग । पछ ४७० वरखे विक्रमावित राजा जिन-
मारगो हुवो । बरणा—बरणी ठहराइ । भग । पछ ५४४ वरखे छठो
निनव निर्जोव नो थाप कहवो । भग । पछ ५८४ वरखे बेरसामी हुवा ।
भग । पछ ५८४ वरखे गोष्ठमालि सातमो निनव हुवो । तिण क्रम बंध
जिम छे । तिम न मान्यो ।

ए माहि विजो, तिजो, खोथो, पांचवो मिछाहुकड दिजो । प्रथम, छटो, सातमो एणे न दिधो । ए सात ७ निनव जाणवा । भग । पछ । ६०६ वरषे साहमल तिण दिगंबर मत किधो । ए ८ मो नीनव जाणवा । गुरुवादिक पछे बडि दिधी सौ बांधी राखी । पछ मूपती किनी । एक महपती साहमल न दिधी । गुसो षाड न कपडो छोडो उध । कोइ ती असि कह । भग । पछ ६२० वरषे ४ साषा हुइ । तेहनो विसतार कह छै ।

कोइ कह ६८० वरषे पछ हुई १२ बरसी दूकाल पड्यो । तिण करि अन मिलवो दोहीलो हूवो । तिवार घणा साध आचारि हुंता ते संथारो करि देवलोग पुंहुता । श्री विर निरवांणं त आठ पाट लग चोवद पुरब रहंए जावत । १००० बरस पाछ पुरवनो ग्यांन बिछेद गयो । जग माहि विजो अंधारो हूवो । ते पछ वारा कालि मधे केतलायक साधू कायर हुवा यका लिंगधारि मिष्टाचारि रह्या । ते कंदमूल फूल फल पानडादिक षाड रह्या । दिक्षण तिसम बोधमति कान फडावि, दांडो साहि न चाल छै । बिन कान फाड्यो देव तो कूटि मारइ । दिसण दीसम सुमक्ष जाणी नै लिंगधारि कूमत केलवि । दिसण दिसमै गया । तिहा बोधमति नो राजा प्रतिबोध्यो । जंन नि प्रतिमा सथापि । कान फडावि, दांडो साहि चालबा लागा । पाछ १ साहकार बहु रिध नो धणी । बहु परिवार नो धणी । घणा नै देइ नै धाय । तिवा अन्न षटो । षावणहारा घणा । अनै द्रव्य साटै अन मिले नहि । षावतां २ छेहलै अवसर अग्ये अल्प रहेए । सेठ विचारयो-सरम रहति दिसै नहि । सत्री पीण बोलि-गरमै माफक छै । तिवार सेठ कह्यो-षूण ष चूण हूवतो कांम चलावो । ते कहै-कांम चालै नहि । थोडो छतो सोहि न राब करो । ते मधे बिष गोलि नै पो लेस्यां । इसो बीचार करि नै असत्रि विष बांटै छै ।

एतला माहि लिंग धारि साधू नै बेस गोचरि आख्यां । तिवार सेठ कहै-बोडिसि राबडि एहनै बहिरावो । सेठ न उदास देखी नै पुछ्यो-आज चिता किय । सेठ सरब बात कही । ते बात सुणी न साधु कहेए-हु गुरु कनै जांड । तेतलै राब म बिष घालो मत । जइ गुरु कनै जाय सब बात कहि । गुरु सुणी नै सेठ समपे आख्या । सेठ बंदना करि कहेए सरब नो मरवो बिस छै । गुरु कहै-सब मरतां नै उबारी । यतो सूं आपो । तिवार सेठ कह-मांगो ते दिजय । तिवार गुरु कहै-तुमारै बेटा घणा छ ते माहि थो ४ आपिय । सेठ कहै-बिधा । तिवारे गुरु कहै-एम करो । दोहरा

સોહરા ૭ બીહાડા કાઢો । શ્રાવણ પછી ૭ દીન ન ધાનનિ જાહાજ શ્રાવણી । સુકાલ હોસિ । સેઠ પ્રમાણ ફિધિ । સર્વ વાત મીલિ । સોલ સુધીયા બયા । ૪ ચેલા પડ્યા । પ્રવિણ મયા । ચારુ ચેલા ચ્યાર મત ન્યારા ૨ થાપ્યા । વાર વરસિ વૂકાલ ઉતરયા । સુકાલ થયો । તિવારે લિંગધારિ આપણ દેસ ગામ નગર શ્રાધ્યા । આપ આપણા શ્રાવણ આગલે હમ કહે—મગવંત મોષ પહુંતા । તે માટ મગવંત નિ પ્રતિમા કરાવો । જિમ આપણ ન મગવંત સાંમરદ્દ તે માટ ઘણા લામ નો કારણ થાસે । તે શ્રાવણ લિંગધારિ નો ઉપદેસ સાંમલિનદ્દ ચેદતાલા દેહરા ઉપસરા સહિત દ્વકરવ્યા તથા લિંગધારિ જદ્દ-તાલા દેહરાનિ પુજા કરાવિ । તિહા પ્રતિમા નિ પ્રતિષ્ઠતા કરાવી । કની ૨ પ્રતમા થાપી । દેહરા કેરાવ્યા ના ફલ નફા દેખાડયા । પોતાનિ મત કલ્પનાય નવી ૨ જોડાં કિનિ ।

ગાથા

જિણ મવણ સ અઠા માર વહંતિ જે ગૂણા ।

તે ગૂણ મરિઉંછં । બીયંગ છંતિ અમર મવણાયં ॥૧॥

ઇત્યાદિક અનેક પ્રકારે હિંસા ધર્મ ને વિષ ગાઢા બંધાણા વલે પ્રંપાય કેતલાએક જૈની રાજા હંતા તેહને લિંગધારિ પ્રતામાનિ ગાઢિ આસતા ગઢ મે ગાલિ હંસાધર્મ પુરુષ્યો । ધર્મ ને કારણ હિંસા કરતો માહા નફો નિપજે તથા મગવંત ના દેહરા ન વિષે પ્રતમાનિ પ્રતિષ્ઠતા કરવિ, નર્વંગિ પુજા કર તેહના નફા નો પાર નથિ । પછી લિંગધારિ નો ઉપદેસ શ્રાવણ જૈનિ રાજા સંમાલિ ને ગાંમ, નગર, ડૂંગર, પરવત, પાહાડ, સેત્રૂંજો, ગિરનારાદિક પરવત ને વિષ ઠામે ૨ જાયગાં ૨ જેદ્દન ના દેહરા કરાવ્યાં । અંસૂયાદિક દેસ ને વિષે ડજલા આરાસ પાંચાંનિ ધાન છે । ઇહાંથિ કારિગર મોકલિ ને મૂરતિ કોરિ મગાવી । પછે વાંહણ ના વાંહાણ મરયા શ્રાવણા લાગા । તિવારે લિંગધારિ શ્રાવણાં ને ઉપદેસ દિનો જે દેસ પાંચ પ્રભૂનિ પ્રતિષ્ઠતા કરાવિ ન મનષ જનમ સફલ કરો । વિન પ્રઠતા કરાવ્યાં શ્રાવણસૂં પછી સરાવગાં લિંગધારિ નો ઉપદેસ સાંમલિ ને જગન તો એકે, બી, ત્રિણ, ચાર, પાંચ, દસ, પચાસ, સો, પાંચય, હજાર, બે હજાર, પાંચ હજાર, દસ હજાર, જેહન જેતલિ સંપતિ જેહન સેતલી એકક દેહરા ન વિષે લેદ્દન લગાવા માંડયા । રિષભદેવ શ્રાવણે દ્વન જોદ્દસ તિરથકરના નામ દિધા । પ્રતષ્ઠા કરાવિ । જગ, હોમ, જાત્રા, પુજામાનિ ફિલો । લાયા ગાંમ દ્રવ્ય ધરવ્યાં । તિવારે

पछे लिंगधारि आवकां प्रते परूपणा करिजे भाबु, गिरनार, अष्टापदादिक नि संघ काडि नै जात्रा जावानो माहा नफो छै ।

गाहा

संघाइयाण कजे चूलिजा चकवटि मविजि ए ति ।
एल विइ जूं यो लधि पुलाउमूणि यवो ॥१॥
संघाइयाण कजे चूनिजा चकवटि मवि ।
न चूरि जइ मूणी यवो ॥ तेहुंति अणंत संसारे ॥२॥
जयथि कर फरिसां अंतरियं कारणै वि उपने ।
अरहादि करे जस यं । तं गथं मूल गृमं ॥३॥

इत्यादिक अनेक प्रकारइ पोताने छांद । मत कलपनाइ नबी जोड करि न हंसा रूप धर्म विषाडघो । तिण लिंग धारि सिधांत ना पांना हुता ते भंडार म राख्वां ते पछे लिंगधारिय पोता २ नै छांद नवि जोड करि । प्रकरण, रास, तावन, सजाय, प्रमजोत, असतूति, प्राकृत काव्ये छंद, सिलोक, गाथा, सेतरूजा माहातम संतोध इतिदिक पोतानि मत कलपनाइ हंस्या धरम परूप्यो तथा गुरुनि पूजा करावि उई । पोथी पुजबी गोतम पडगो पुरबे । वमासमणें बहरबो । गुरु नो सामेलो करबो गुरुनो समाइउं करबो । गाजत वाजत इ चोवटा सणगारि नगर माहि गांम माहि लेइ आवइ । पाट पाथरणा पथराबो संघ पुजा करावि । संमछरि पांचम रि चोथ करि । पाथी चवदसे करि । चोमासो चवदसे थाप्यो । इत्यादिक गणा बोल सूत्र विरुध परूपणा करि । इम रुढ मारग चालता केतलो काल अतीकमी गयो । हिबं भगवंत श्री माहाबिर देव भूगते पहुंचता पछे ४७० बरस लगें भगवंत नो साको चाल्यो । तिवार पछे बिर त्रिकमादित नो साको चाल्यो ।

समत १५ रा स ३१ सो आय्यो । तिवार असमग्रह नी बे हजार बरस नी थोत पुरि थइ । तिवार ते लिंगधारि आपणा गछ ना समुदाय बांधि आपणा आवक आविका किधा । ते भेषधारि मन म विचार किनो ते पुसतक भंडार माहि छ । तेहनि संभाल जोइया । ते पानां देखी न बाहिर काड ए जोया ते तो पाना उबेहि बांदा । तिवार विचारयो जे

पांना उपर थी—बिजा पांना लिवाय तो बारू' कहतां मला । तिवार लूको म्हतो आवककार कून हूंतो ते एकदा प्रसताबें लिंगधारि पासे उपासर आयो हूंतो । तिवार लिंगधारिय कहो । साहाजि एक जिन-मारग नो काम छे । ते कहो—सू' छे । तिवार ते लिंगधारि बोल्या—सिधांत ना पांना उवेही वादा छे ते भ्रमहेन नवा लिपी आपो तो बारू' तुमहेन घणो किलाण नो कारण छे । तुमहेन घणा उपधरि पुरव छो । घणो लाभ थासि । इम कहधां थकां लूकं म्हेतो प्रमाण किनो ।

तिवार ते लिंगधारिय एक दसबिकाल ना पांना घाप्यां । ते लूको म्हतो वांचि म एहवो विचार कीधो । उ ते तिरथकर नो मारग तो ए दसबिकालक सूत्र माहि मोख नो मारग कहेए छे ते माटे हिवडा कहि तो मान नहि । ते माट दसबिकालक नि बोवडो पडत उतारिने जोयो । तर प्रथम अघे न दया धरम, तप, संजम, धरम कहो छे । अने साधू ५२ अनाचिरण, ४२ दोष टालणहार कहए । ध्रिविधे २ छे काय ना पालणाहार कहए । १८ बोल मोंहिलो १ बोल सेंवतो बोल थको मधू कहिजे बले निरवढ वचन बोलवो । गूणवत गुरू नो विनो करवो कहए । ते वांचि न प्रति हरष्यो । मन माहि विचारयो—भगवंत ना वचन जोतां तो मेख धारि मोखनो पंथ दया धरम आचार सादनो ढांकि न हंसा धरम नि परूपण करे छे । पोत भोकला पड्या छे । ते माटे हीवडां मानसि नहि । तिवारे पछे ते लूक मूहतो पोता पोता नै । घरे सूत्र सिधांतनि परूपणा मांडि । तिवार घणा जिव मब जिव सांमलवा जावा लागे । घणा लोक नै दया धरम रुचवा लागो ।

तिण काल अरहटवाडा ना वाणीया ते संघ काडिने सेजवाला लेइ न जात्रा निकलाहंता तेहन वाट जातां मावट हूइ । तिवार तेहज गांम माहि लूको मूहतो वस छे । दया धरमनि बात परूपणा कर छे । ते गांम मखे संघ नो पडाव थयो । तिवार पछे संघविय धवर पडी । लूको मुहतो सिधांत वांच छे । ते अपूर्व वाणी छे । एहवो जाणी न संघवि घणा २ लोक संगतें संमलवा आख्यां । तिवार लूको मूहता पास दया धरम, साधू श्रावग नो धरम सांमलि न संघवि ना मन माहि दया धरम रुच्यो । तिवार केतला एक दिन संमलवा गया । तिवार संघ माहि संघवि ना गुरु हूता । तेण जाण्यो जो लूका मूहता पास संघवि संमला जाय छे । ते माट मेखधारि संघवि न कहेए । जे संघ जूडावो । लोक वरांचि तुट हुबै छे । तिवार

संघवि बोल्या—वाट माहि गाजविज सेह का जोग सु मिलण फूलच वेइन्नि, तेइं द्वि, इत्यादि अजंयणा घणी छे । तिवार संघवि ना गुरु बोल्या—सोहेजि घरम ना काम मांहि हुसा गिणचा नहि । तिवार संघवि बिचारघो जे लूका मूहता कन सांभल्या हूता ते मेघधारि अणाचारि छु कार्यानि अणूकपा रहित छे । तेहवा दिठा तर जबाब बिनो । तिवार बेघधारि जवि रिसावि न पाछा बली गया । ते सिघवि न सिघांत सांभलतां बइराग उपनो ।

तिण पैतालिस जणासु समत १५ रा स ३१ से समंछरे संघवि सहित ४५ इ सुइ संजम लिनो । तेहना नांम सरबोजि ॥१॥ भागूजि ॥२॥ जगमालजि नूणजि प्रभूष ४५ जाणवा । सूष दया धरम परुषणा किधि । तिवारें घणा भव जिव दया धरम मै समजवा लागा । घणा भव जिव समजि नै दया धरम आदरघो । तिवारे ते मेघधारि घेव भराणा बका लूका लूका एहवो नांम दिधो । एछें मेघधारिय बिचारघो—लोक घणा लूका थइ जासि तो आपणी महिमा गट जासि । इम जाणी न क्रिया उधार किनो । तपसा करि न पारण राष घोलि न पीव । तेहना नांम समत १५ रा स ३२ से तपां क्रिया उधार किनो । ते आरांढ विमलसूरि हिस्यां धरम परुषि । घणा जिवां ने सिंकित किधा । तिणथ वल्ले तपा घणा थया । समत् १६०२ आंचलियां क्रिया उधार किधो । समत् १६०५ वरतरा क्रिया उधार किनो । इम घणा निखलि न प्रतमानि गाढि परुषणा करि । तपसा करि न हुंसा धरम परुषो । अनेक कण्ट आतापना करबा लागा । तपीया २ एहवो नांम प्रसिध थयो ।

पछ लूका हूता ते सू' सताहूया । तिवारें ते जतियां ना आवाग साध माहापुरवां नै उपसर्ग दिधा ते पीण माहापुरवां वम्यां । तिवार नगर न विष अंसुरा ना राजा हूया । मलेछ अनारज दीस छे । तिणे प्रतमा जिनमतनि जोइ न हात पग भांगि नांघ्यां । पछ जिहां २ अंसुर ना राजा हूता तिहां २ प्रतमा नै धरति मांहे उतारि । तिवार रुपो साहा पाटण नो वासि । तेह न बघाण सुणव करि न बइराग उपनो । संजम सेइ निवल्यां । ते रूपरिषी थया । ते लूकांनो पहिलो पाट ॥१॥

तिवार पछ सूरत ना वासि जिवो साहा संसार पक्ष म पुन प्रकृति घणी हूति । तिणे जिवो साहा घणो धन छोड रूपरिष पासे संजम सिधे । ते रूप रिष ना सिध थया । ते जिव रिष बाक्यां । एवे पाट ॥२॥ लूका

ना सूध जाणीय छइ । कोइ बांछनांतर । इममि कह छइ । प्रथम पाट तो जाणसिजि ॥१॥ तत् पाट भदाजि ॥२॥ नूँखजी ॥३॥ भिमजी ॥४॥ जगमालजि ॥५॥ सरवोजि ॥६॥ रूपरिपजि ॥७॥ जिव रिपजि ॥८॥ इत्यादिक आठ पाट थापना हूइ । आठ पाट ताँइ विवहार सूध जाणी य छै ।

तिवार पछ लूँका संथानक बोध सेववा लागी । आहार न बिनति सूँ जावा लागी । वसतर पातर नी मरजावा लोपि न बाबरवा लागी । जोतकनि मत भाषवा लागी । आचार गोचार मै ढिला पड्या । तिवार पछै समत् १७०५ नो आयो कोइ कहै समत् १७०६ नो कि साल आइ । तिवारे सूरत नगर ना वासि बोहोरो विरजि साहा श्रीमाल लूँका लोकाम कोडिषज कहावता हूँता । तेहनि बेटि फूलबाइ तेहनो बेटो लहूजि थोले आयो । पालवा न लिनो छै । तेहनि तिव बूध जाणी न लूँका न उपाश भणवा मेल्यो । तेह लहूजि न सिद्धांत भणावा लागी । तिवारै लहूजि घणा सिद्धांत भणता थकां बेइराण उपनो । लहूजि नो चित उदास बेढ्यो । बेइरागवंत जाणी न सिद्धांत भणावो बंध किधो । तिवार लहूजि साहा बिचारयो—ते जति सेति ना घणा बि रिषो बज्जांगजि पासे आइ न इम कहए । सांमो भ्रमहन भणावो क्यूँ नी । तिवार रिषी बज्जांग कह्यो—तेहने भणाव पिण तुमनै बेइराग उपजतो । दिषां भ्रमारे पासे लेबि । एहबो करार करो तो भणावां । तिवार लहूजि साहा कहए—सांमो दिक्षा लेसूँ तो आपके पासे लेसूँ । इम करार करि न भणावा लागी । सरव सिधंत नि बांछणी दिधो । जूगत सहीत अरथ भणाव्यां । लहूजि साहा सिधांत माहि प्रविण हूवा । जबाव साल म पवरदार हूवा ।

तिवारै फूलबाइ लूँका ना जति न पास आइ न मान सहित घणो बरव्ये दिनो । तिवार साधू नो मारग नो आचार गोचार मालम पडवा माड्यो । पछ लहूजि साहा न बइराग उपनो । साधू नो आचार गोचार मालम पडवा लागि । हिवडा तो साधू मरजावा लोपी बाबर छै । वसतर, पातर, जोतकनि मत भाष छै । वसतर, पातर, पोथी धिजि नै पइसो, टको राख छइ । तिवारै बिरजि बोहारा पासे संजम सेवानि आगन्यां मांग बानो बिचार किनो । तिवार लहूजि बिचार किनो—जे आचार गोचार

तपाविक करि साधू पहीलां तो सब होता । तेहवा हिवडां तो नथी । ते माटे लहूँजि साहा सिद्धांत उपर उपजोग दिखो । जे साधू न आचार्य, उपाय ध्यानि, आग्यांय प्रव्रत्या जोइये । अनइ साधवी नै आचार्य नो, उपाधायनि, गुरुं नि ए अनंती आग्याय प्रवति जोइय । ते माटे साधू बरति होय जिहां जाउ । खबर मंगाउ । ए सूत्रनि रित छइ । वंभाएत बेस, धर्मवावाद, पाटण, घाहानपुर, सोरठ, मेवाड़, मारवाड़, दिल्ली, आगरो, लाहोर, संगते इत्यादिक खबर मंगावि । तिहां गांम नगर न विषै कोइ साधपणा नो नांमै जगन्ये त्रिद्वि एक ३।२।१ कोइ धरावतो न थो । ते माटे जांरौ सगला एक जणो जायाइ साथ या आचार गोचार सू दिला पढ्यां भोकला थया । तिवार लहूँजि साहा जिण अवसर बिरजि बोहरा नै घणी हेत जूगत सूं पक्षपणा करि नै आगन्यां आसरि । हीरवा मै गालि । तिवार बिरजि बोहोरो बोल्थो—तुमहे लूँकां ना गछ माहि संजम लेबो तो आग्यां धापुं ।

तिवारे लहूँजि साहा विचारयो—जे हीवडां तो अवसर इसोइ दिस छै । कारण सब साधुनि खबर लागि नही जित्ता अवसर । एहेबोज छै । इम विचार न ऋषि वज्रांग पासे आब्या । आबि न इम कहै—सांमि मूज नै दिष्यां नो भाव छै । ते माटे हूं दिष्या लेउ तो माहार तुमार बे वरख नो करार करो । तेहनि चिट्ठि लिखावि लनि । तिवार लूँका ना जति विचारयो—जे अमा मै आब्या । पछै किहां जासि । इम करार करि न पछै पाछा बिरजि बोहरा पास आब्यां । उछव सहित मोट मंडांण करि लहूँजि साहा ऋषी वज्रांग पासे दिष्या लनि । ऋषी लहूँजि थया । तिवार पछै ऋष लहूँजि वज्रांग पासे सिद्धांत नां घणा भरथ भण्यां । पंडत थया । तिवार पोता न गुरुं नै २ दोय वरख पछै एकांत पुछेए ।

गाथा—वस अटुयठांणायं ॥ इत्यादिक बे २ गाथा कहि साधू नो आचार तो ए दिस छै । जिण रित साधू नो आचार कहए छै । तिम हिवडां पाल छ क नहि । तिवार ऋषि वज्रांग बोल्यां—जे आज आरो पंचमो छै । जेहवो पलै तेहवो पालीय । तिवार ऋषि लहूँजि बोल ७५ नो सिधांत माहि थो काढि देषाड्यां । धापणा गछनि समाचारि माहि आचार गोचार नो केरफार गणो छै । तिवार रिषी वज्रांग जि म कहि—भगवंत नो मारग तो २१ हजार वरख ताइ चालसि । ते माटे हिवडा इत्तू कहो छो । तुमे लूँकां नो गछ बोसीराबो परो । तुमे हमारा गुरुं । हमे तुमारा बेला । तिवार वज्रांगजि कहइ—अमहे गछ छूट नहि । तिवारे लहूँजि रिष लूँकां

नो गछ बोसराइ निकल्या । तहनै साथे रिष थोमजि ॥१॥ रिष सची-
 योजी ॥२॥ ए त्रतिन संगते लुकानो गछ बोसराबि न निकल्या । तिवारे
 तिनूइ बिहार सूरतबंदर थो करि नै बंभायत बंदर घाव्या । पिठ न बर-
 वाजक पासेनि लुकान उतरघां ।

तिहां कपासिनो सेठियो सांभलवा आयो । तिवार इसबिकालक
 ना १० मा भिल्लू अघेननि गाथा कहो । ते सांभलि न बहराग उपनो ।
 धन छ साधूनो अवतार । यहवा साधू सांभीजि धाज दिन होसि । तिवारै
 लहूंजि रिष बोल्या—सेठजि एहवा साधू पहलि हूंतां ते तो मोकला थया
 ढिला पड्या । मोह पासे बंधाणा । ते माटे मांहरा मनोरथ बरत छै ।
 सो सेठजि तुमारो साज हूं बतो । एहबो साधूपणो हूं इंगिकार कछ ।
 तिवारे कपासिनो सेठियो बोल्थो—सांभि अमेह थकि निपजसे ते माहि
 पाछि नही वेड । ते सांभल न रिष लहूंजि जंगल माहि गया । तिहां
 पुरब सांभमा उभा रही । बे हात जोडि अरिहंत सिध न नमसकार करि
 पंच माहावरत नो उचार किनो । तिन साध फेरि तो संजम लिनो । चारि
 तर अंगिकार किधो । पछ नारसर तलाब ना मारग मांहि पाणी नि
 परब पालि हूंति तिहां आय्यां मांनि उतरघा ।

पछ घणा बाइ भाया सहिर ना साधूनि बबर सांभलि नै घरम
 कथा संभलवा न आयी । तिहां बाइयक पांणो नो बिडा सहित उमि थकि
 सांभले । तिहां जिन मारग मां समजवा लागी । तिवारै लहूंजि अणगार
 नि बाइ भाइ घणी प्रसंस्या करइ । ते बात बिरजि पासे चालि गइ ।
 सांभलि नइ कोपानल हूंया । मांहरा गछ माहि लहूंजि भेद पड्यो । ते
 माटे सूरत थकि बंभायत ना हाकम उपर कागल लिब्यो । जे लहूंजि सेवडे
 कूं बंभायत सैं निकाल वेणा । पछ हाकम लहूंजि अणगार न तेडाव्या ।
 तिहां बठा सजाय, ध्यान करवा लागी । अनइ जिव तूज न अपुबं लाभ
 नो ठिकाणो आय्यो छइ । तिहां बठा थकां एक बे त्रिन उपवास हुंवा ।

तिवार दासि जावता आवतां बेचीनइ बेगम न अरज करि—एक
 सेवडे कूं नवाब नइ रोका हइ । सारा दिन पढंए करता है । बाता—पिता
 नही । ते दासी नी बात सांभलि न बेगम कोपाइमान हइ । पछ नवाब
 न बे हात जोडि न अरज करि—अब तुमारा धांणा बराब हूवा । हजरथ
 न पूवाहि फकिरा के उपर नजर गालि उंन क्या तुमारि तकसिर किबि

सों नै स परि फकिरू कूँ रोक छोडा है । दो दिन तिण दिन होय गया ।
 पाता-पीता नहि । सारा दिन पडघाँइ करता है । साहिब सूँ ध्यान
 लगाता है । अब तुमारा धानां धराव हवा । अछां चो हे तो तुमनै
 फकिरा कि बे दवा घालि अन सुष साहिबि बोलत चाहे तो सताबि छोड
 दो । एहवो बचन सांमलिन हाकम बर्लागर हवो । पछै हाकम आबिनै
 लहुजि अणगार न पगे लागो—हे देवान् साहिब मेरि तकसिर नही । भूज
 कूँ सेठजि का कहिन आव्या है । मेरी तकसिर माफ किज्यो । तुम
 दुसरि ठामे जाउं । मो साहिब का भूलाम हूं । दुवा दीजियो । इम कहि
 न हाकम वे हाकम वे हात जोडि न पगे लागो ।

पछ लहुजि अणगार विहार करि नै कलोदरोइ आव्या । तिवारै
 धमायत ना बाइ माइ घणा एकठां मलि न आव्या । बनणा करि न
 हरषोत हवा । तिवार लहुजि अणगार चितव्यो । जे भगवंतइ सूत्र मां कह्ये
 छइ ते राजानि नेश्राय सजम पलइ ॥ १ ॥ गाथापति नी नेश्राभ
 सज० ॥ २ ॥ सेजार नि० ॥ ३ ॥ टोला नि० ॥ ४ ॥ इत्यादिक
 घणा नि नेश्राय संजम पालइ । ते माटे कोइयक मोटो क मल ते राजादिक
 समजइ तो जिन मारगनि सुघ परूपणा थाइ । ते माट धंभायत नो हाकम
 सूरत नो मेल्यो सेठ ना हाता मां । सूरत नो हाकम अहमदावाद नो मेल्यो
 सेठन ना हाथ मां । ते माटे कोइक पुन्यावंत पूरख समजइ तो जिन-
 मारग नो घणो उद्योत होइ । एहवो विचारि न अहमदावाद मनै विहार
 कीनो । तिहां घणा लोकउं सबाल जु बहरि समज्यां । तिण करि घणो
 जिन मार्ग नि महिमा बघो । तेह बड़टारो अहमदावाद मै गोचरि फीरतां
 लूंकानो धर्ममि जति मल्यो । लहुजि अणगार संगते केतलियक आचार
 गोचार नि पूछा किनी । पडउतर हवो । तिवार लहुजि अणगार
 धरमसि न उपदेस दिनो—तुमे एहवा जाणपणा नइ पाड्या छो तो गछ
 मांहि काइ पाडे रहा छो । तिवारे धरमसि बोल्यो—अबसर होसि तिहां
 रइ जाणसि । तिहां घणा लोक बहराग पांम्या । जिण मारग सांचो करि
 जाणवा लाग ।

तिवारै गछ वासि लहुजि अणगार न घणा उपसरग दिधा । ते
 महापुरुष धम्या । तीहां काल नि मरजावा पुरि थइ । पछ अहमदावाद
 थकि सूरत बंदर न विहार करयो । घणा भव जिवां नै गांम नगर न विष
 समजावता थका घणो बितराग देव न मारगनि परूपणा करि । तीवारै

लूकां नि सांमगरि बाला लहुजि अणगार न घणा परिता दिधा । ते माहापुरष सुभं परिणामे अहि आस्यां । तिवार विचारयो—जे विरजि वोहरो समजतो जितिनो वळ पातलो पडइ । इम घणां नै सुलभ बोध पमाडता थका सूरत न नजिक आया । तिवार पहीलां अहमदाबाद ना आबगां विरजि वोहुरा उपरइ कागल लिखो हुंतो जे लहुजि अणगार माहापुरष सूरत नो वीहार करचो छइ । घणा उत्तम गूणवंत फणी छइ । घणा तरण तारण साधू छइ । ते माट एहवा साधुनि निरदोष वसत्र, पात्र, संथानक, आहार, पांणी नी सार संभाल करसि । तेह न माहा करम निरजरा थसि । घणा गूणवंत साधू छइ । तिरथकर नाम गोत्र बांधवा ठिकाणो दिस छइ । ते माट सेठजि तो घणा जिण भारग ना जाण छै । घणा डाहा छइ । हमारा सिरवार छइ । नायक छो । ते माट लहुजि अणगार आया हुवतो । अमारि वति १०८ वार बंदना करज्यो । पछ अहमदाबाद नि विनती करज्यो । माहापुरष तुम बिना आवक रूप वाडि सुकाय छै । घणो कसें कहिय ।

तिवार पछ थोडा दिन नै अंतरै सूरत वन्दर आव्या । सथानक नि आग्यां मांगि न उतरथां । पहिलि विहेलि गोचरि विरजि वोहुरानि पासि गया । तिवारे विरजि वोहुरो बोल्या—लहुजि सारि वाट भ्रम पुंजता २ आया सो कहि कारण । तब लहुजि अणगार बोल्यां—बाहिर आगां सु निजर न वल पुहच छ । जोइन चालू छ । घरढंए क्यां मै नजर नो वल पोहचछतो नथी । ते माटे पुजि न चालू छ । जाउ घर मां आहार पांणी वोहूँ घणो घरनि वाइ भाइ सांमलवा लागा । घणा लोक समजवा लागा । पछ चोमासो पुरो थयां ।

पछ विहार किनो । गांम नगर विचरतां पंभायत आया । पछ मासकलप करि न अमदाबाद नो विहार किनो । तिहां अहमदाबाद ना लोग घणा सांमलवा आव्यां । तेह वडटांणे धरमसि ॥१॥ अमीपालजि ॥२॥ प्रभूष घणा जति कूँयेरजि ना गछ थकी फेरि संजम लेइ निकल्यां । धरमसि रिष जू बड संथानक परूपणा करवा मांडी । तिवार लोकां मां भिन पडवा मांडचो । तिवार लहुजि अणगार धरमसि रिष ने संथानके चालि गया । जाइ नै कहए—आपण विहू एकठा विचरिय । तिवार अमीपालजि बोल्यां—घणो रुडो विचारो । तिहां धरमसि रिष पगे लागो नहि । तिवारै लहुजि अणगार विचारयो—उह्नो मछवासि नि पनाय

दिसइ छइ । पछइ सर्वांनक आया । लोक लहूजि अणगार पासे जाइ
 धरमसि रिष पासे जाइ तुमारे माहो मांहि सूं फेर छैं । तिवार धरमसि
 रिष बोल्या—एहन अमहे एक छैं । लोकां मां पूरि पडवा मांडयो । पछें
 केतला बिहाई फेरि न गया । जाइ न श्रीपालजि न कहए—तुमेहे कहो तो
 हू पने लागू । धरमसि रिष घणा मणनहार छइ । तिवार अमीपालजि
 बोल्या—सांभी धरमसि रिष करता हूं घणो मणनहार छों । चालिस हजार
 गरंभ भूड छइ । ते माट मणनहार जाणी न पगे लागो । तो माहार पगे
 लागो पिण जिण मारगनि रित नहि रहे । तिवार धरमसि हिया मांहि
 समझ्यो । समजि नै कू बूंधो केलबी धरमसि पोताना जति प्रति कहिवा
 लागो । पोथी तो श्री ग्रह मांहि ठहर छैं । ते माट पोथी बोसिरावि न
 फेरि संजम लिजे तिवारें जति भोला थका तियो हूं मणी । पछ पोथी
 बोसिरावि नै फेरि संजम लिनो । तिवार धरमसि रिष लहूजि रिष न
 कहिवा लागो । आज तो पोथी सहीत माहावरत धरतां नथी । ते माटे
 अमहे पोथी बोसीरावि न फेरि संजम लिनो । तुमहे पीण पोथी बोसीरा-
 विदो । तिवारें लहूजि रिष बोल्या—अमार तो पांनो नो आधार छैं ।
 पाना बेची धरवा नथी । ते परीग्रहे मांहि ठर सेइ । तुंमारी बात तो
 म जांणो । इम कहि न जूबी पळंपणा मांडी । पछ लहूजि अणगारं
 बिचारू । एवि न मल नाय मारग अनंता । तिथंकर नो तेह भांजवा
 नो कामि थयो ।

तिहांथि लहूजि अणगार बिहार करयो । केतलक काल बलि । तिहां
 आव्या । अहमंवाबाद नगर कालूपुर नो वासि बरजत विसा पोरवाल,
 उंबर बरस २३ तेइस नै आसर । केतलोक काल आबगपणो पालि नइ रिष
 लहूजि पासे विक्षा लिधि । रिष सोमजि थयो । घणा लोकां मै जस-
 व्याप्यो । तिवार धरमसि रिष पासइ पुजारा लोक चरचा नै आव । तिहां
 मूडाथि कहेए मान नहि । सिद्धांत नो पाठ दिषाडतो कबूल करइ । सजाय
 पिण अटक मूडथि बिसरवा मांड्यो । पोथी बिन सिधाववा लागो ।
 सिष न कहइ । आपण पोथी लिजे । सोमजि रिष न पुछि न तिवार सिष
 बोल्थो—स्वामि आपण पोथी मूकितराइ । तेह न कह्यो । हूंतो हिवडां
 तेहने मोटाइ वोंछो । लेवि होइ तो आपणी मेलइ सियो । तिहां पोथि
 आच्छि लिथो । पछ लहूजि अणगार विचारउ जे वंदनानि धात्र एतलि
 कलबकल कर छैं । मणों धरो पिण जाणपणो कबो छैं । हूं इहाथि बिहार
 कळ । जू वि पळंपणाइ लेक समजता नथि ।

तिहावि बिहार करधो । घणा गाम नगर नइ बिबइ, घणा भव जिव न बिबइ, धरम समजवतां थका लहुंजि अणगार बूराहांनपुर आव्या । घणा बाइ भायां सांभलवा आव्या । घणो जिन मारग नो उछोत हुबो । घणा लोक समज्या । घणा भव जिव समजतां थकां लूकांनि मानता पातलि पडि । लूकां ना जति धेक पडि बज्यो । पछ मासकलप पुरो थयो । तिवार इबल-पुर आव्या । घणा लोक सहर ना गाडि जोडी ने सांभलवा आव्या । ते बात लूका ना जति जाण्यो । तिवार बिचारधो जेय आपणो मानता घटा-इस्ये पछ लूका ना जति बिष घालि न लाडू किनो । करि न इबलपुरि मै रंगारिन छीपण ने आप्यो । आपीन इम कह्यो—बाइ अमाहारा हात नो तो लेवइ नहि । अनै अमहार एहवा माहापुरष नो जोग किहां मिलै । ते माटे काले छठ नो पारणो छै । तू मार आंगण आगल थइ न निकलइ । तिवारे तुमहे इम कहिजो ए माहापुरष इम पधारो । आहार जोग छै । इम कहि न लाडू बोहराज्यो । पछे तुमेंने पुछै तिवारे तुमे इम कहिज्यो—माहापुरष माहार लाहांणा नो आव्यो छै । अमे नही घाउ अन तुमन आपुं । ते माहि कांइ घोट छै माहा नफा नो कारण छै । इम कहि न बहराव्यो ।

तिवार थानक आवि न छठनो पारण कीधो । पछ थोडिक बार मां किलमना थइ । तिवार सोमजि अणगार न कहवा लाग्ता—मूज न किला-मना घणो थइ छै । इम कहो न सूतां । पछे थोडिसिक बार मां उठिबठा थया । इम कहो ते माहारा जिव म वथा छइ । एतलीक बार आउषा नो मूजन बिसवास नथो । इम कहि न सागारि संधारो किधो । पछ देवलोक पूंहता । तिवारे इबलपुर ना आवग सहीरम जणायउ । आवग सहर ना विसमय पाव्यां । हिवाडां वषांण सांभलि न आया हुंता । एतलिवार म कहो हुंबो । तिवार पवर सांभलि न वोडघां आव्या । आवि न देवतो आउषा नि थीति समाप्ति पुरि थइ । पछ सोमजि अणगार न हकिगत पुछि । तिवार सोमजि अणगार इम कह्यो—अमूकि बाइ न इहांथि आहार ल्यावि न पारणो किधो । पछ आउषानि बिति समाप्ति पुरि थइ । तिवार ते आवक जाइ न पुछधो । ते रंगारि बाइ सांचो बोलि—मूजन तो जति लाडू आपि गयो । हुंतो ते बहिराव्यो । ते बात सांभलि न आवग आव्या कोषायमान हुवा । हव अनेक आय उपाय करइ तो सांमी पाछा नहि आवइ । ते माटे समता राखो । धरम छते । मला मनसू आदरस्ये ते तरसै ।

ते रंगारिन थोड दिनान गलत कोढ़ उपनो । पछे सोमजि अणगार

मासकल्प पुरो करि न सहस्रम चोमासो आया । घणो जिणमारग नो उव्वेत हुवो । लोकां माहि लियधारिनो घणो धवजस हुवो । तिहां घणा वाइ मामा आवग ना वत धारणां । समकित पांम्या । घणो वितराग ना मारग नि महिमा बघी । पछ बू हानपुर थी चोमासो पुरो करि न सोमजी अणगार विहार करघो ।

एकदा सोमजि अ० नै एहवो विचार उपनो जे लहंजि रिष बडा हंता धरमसी रिष छोटा हंता धरमसि रिष बंदना न करि हव । हूं जाइ न धरम रिष न पगे लागूं । ए बिनय मूल छ । तिवार पहिला अग्रमंदावाव थी लहंजि रिष विहार करघो । तिवार पछ धरम रिष भणवानें । अहं-कार भिन मार्ग बिबध परुपणा करि जे । इम कहइ जिव मारो मर नहि ते समदरष्टि । इम कह जिव मारघो मरते मिथ्यादंष्ट । १॥ जे इम कहे साधपणो निश्चय कह ते समदंष्टि । साधपणो बिबहार थी कह ते मिथ्या-दरष्टि ॥२॥ जे समाइक आठ भांगे नि निपजे ते मीथ्यां दंष्टि ॥३॥ इत्यादिक । सिधांत निरित मूकि नै पोता न मर्त टोलो जूवो पाडवा नइ बिपरित परुपणा करि पोतानि परषदा काठि करि ।

पछ केतलाइक वरस न आंतरइ सोमजि अ० विहार करता अग्रमंदा-वाव मां धरमासि रिष न स्थानक आगन्यां मांगी नै भेला उतरघा । धर-मसि रिष न बंदना नमसकार करि न साता पुछि सेवा भगत करवा लाग । तिवार धरमसि रिष कहइ—आपण आहार पांणी भेला करिय । तिवार सोमजी अ० कहइ । अमे नै कोइयक वसतुनि संख्या उपनि सांमलि छै ते पुछि नै आपण वेऊ आहार पांणी भेलो करस्यूं । पछ आहार पांणि आप आपणी भेलस्यावो न करघो ।

तिवारे सोमजि आख्यानि षवर सांमलि नै आवग आवगा बंदना करवा आख्यां । बंदना करि न सेवा भगति करवा लाग । घणा आवग एकठा मिलि न आउवा आ थी चरचा काठि । तिहां सोमजि अ० भगोति सूत्र ना ७२ अलावा निहत १ निकाचित २ आउवा कर्म आ थी दिवाडघां । वले समवायंग सूत्र मां आउवा क० नि आकर्षा दिवाडि । वले पनवणा सूत्र में आउवा कर्म नो रसनो जम दिवाडघो । वले अंतगढ़ सूत्र मां आउवा करमनि सथिति भेदी न कालकार सें इत्यादिक घणा सूत्रां ना पाठ दिवाडघां । तिवारे आवग नि संका भागि । वले समाइक आसरी चरचा काठि ।

तिवार भगवति सूत्र मां ४६ भांगा मां ॥ २३ आंक इ समायक नो सवरूप देषाडधों । वे करण ने ३ जोग थो छै । अतित काल अनंता तिर्यकर देषाडधों । वरतमान काले संध्याता देषाड छै । आगमे काल अनंता देषासि । बिकरण थो करण वध नहि ३ जोग थि जोग वध नहि । एवि बवाद सूत्र कह्यो छै । ते भांग समायक करि नै तिर्यकर नि आगन्या ना अराधेक अनंता थया, थाइछ, थासेइ । ८ भांग समायक करबोए निनवनो वचन छै । ८ भांग समायक करि नै अनंतानि गोव मां रलिया । संध्याता रल छै । अनंता रल सै । ए अनाहंत वचन अछतापणा माटे ।

तिवारै श्रावग वचन सांमलि नै संख्या में पड्यां । पछ बीज दिन आवि नै धरमसि रिष परत कहै—भगवंत श्री माहावीर देव नै एक लाख गुणसठ हजार श्रावग थया । ते मधे कोइ बि ८ भांगेइ समायक करि तेहबो पाठ अमहे नै काडि देषावो । वले आलींभिया नगरि ना, तुंगिया नगरि नां, सावथि नगरि ना इत्यादिक घणा श्रावग एकठा मीलि ने ८ भांग पोसो समाइक करधा होइ । तेह पाठ अमहेन काडि देषाडो । आणंदाविक दस श्रावक न भगवंत उपदेस दिधो होइ ते पाठे अमहेन काडि वसवो । तिवारे धरमसि रिष सोच में पड्यां । पछ धरमसि रिष नो सिष बोल्यो—श्रावकां प्रते तूमहे काचो पांणि पिबो जांणो । असत्री सेवो जांणो । तुमहे सिद्धांत कि बात कांड जाणो । तूमहे गुरु नि असाथना थो बिहतां नथि । गुरु कहै सोइ रुडो कह सै । इम बिचारो जे पुज घणा पिडत छै ।

पछ श्रावग जाण्यो कूहाडि नै हातो मिल्यो । श्रावग बंदना मूकि न उठ्यां । वलि धरमसि रिष कह आहार पांणी भेलो करिय । तिवार सोमजि अ० कहै अमाहार कोइक बसतू पुछवि छै । तिवार धरमसि रिष नो चेलो बोल्यो—सांभी पुछवि होय तो हिवडां पूछो । तिवार सोमजि कहे—आपण ३२ सूत्र ४५ आगनि स्थापना ते मांहिथि एहबो पाठ काडि दो जे आउषो घटयो मान नही ते समद्वष्टि ॥१॥ मानै ते मिथ्यांदरष्टि ॥१॥ सामाइक ८ भांगा मान ते समद्वष्टि । ६ भांगा मिथ्यांदरष्टि ॥२॥ एहनो पाठ अमन काडि वतावो ॥ तिवार अमिपालजि बोल्यां—एहनो पाठ सिधांत मांहि कोइ न थो । तिवार सोमजि अ० कहइ—दोष ठहरावो । तिवार धर्मरिष बिचार में पड्यो—जो दोष ठहराड तो प्रायश्चित मां संजम तणायों जाइ छै । लोका मां अपकिरत थाय छै । ते माटे बिचारि रहए । पछ घणी रात्र सूधि चरचा बात थइ । पछै प्रमाते पडीलेहणा करो । कमर

बांधी । सोमजि अ० कह—एतलो उदम करघो ते सगलो पलिमत थयो । में तूमहे न बंदना करि ते मांहरि निरथक गइ । इम कहि बिज थांनक उतरथा । धरमसि रिष न घणा भावग पण बंदना मूक । पछे धरमसि रिष ना गुरु भाइ अमीपालजि, श्रीपालजि, माहो मांही बिचारघो । बिचार करी नै धरमसि रिष न कह्यो—सामी एक बचन मागूं । आपो तो सोमजि अरणगर ने तेडिल्यांउ । तिवार धरमसि रिष बोल्यां—स्यूं कहो छो । पछे अमिपालजि बोल्यां—सामी सोमजि अ० कह छै ते माटे सिधांत मांहि कहिए ते नहि मिलइ । ते माटे तुमहे अतित काल नि परपणा नो मिछांमि-बुकडं वेवो । हवइ आगइ परपणा करणी नहि । एतलो मूजन कहो तो हूं सोमजि अ० ने ते मिल्यांउ । तुमारि सोभा थासिइ । धरमसि रिष बोल्यां—एहवो मूरख कूण होसि । थूकि न गलसेंइ ।

तिहां अमिपालजि, श्रीपालजि हियामां समज्यां । पछे धरमसि रिष न बोसराबि नैं सोमजि अ० नैं बंदना करि नैं कहिवा लाग्वा—सामी अन्है धरमसि रिष नो सांग बोसराब्यो । तिवार सोमजि अ० कहे—मलो तुमने जांणपणो लाधो जे तुमहे षोडि बसतूं छांडि वेगला थया । तिवार अमिपालजि, श्रीपालजि कहवा लाग्वा—सामी अमहे तूमारो सेबग सिख । तूमे अमारो गुरु । तिवार सोमजि अ० बोल्या—ए जिनमार्ग नि रित छ । तूमहेने न्याय मारग प्रगम्यो छैं । तिवार अमिपालजि, श्रीपालजि निकल्या । तिवार घणा भावकइ धरमसि रिष न षोटा जांण्यां । घणो अपजस हूंवो । भावणां मां फुटाफुट थइ ।

तिवार गुजराति लोक लिधो । बोलमेहल नहि । अमाहारा गुरु कहते धरो । बले कूरजि ना गछ थो निकल्या रिष पेमजि लोहडो, रिष हरजि बडो । ए २ धरमसि रिष ना गुरु भाइ । धरमसि रिष न छोडि ने संजम लेइ न सोमजि अ० ने अंगिकार करि बिचरधां । बले मारवाड मां नागोरि लूंका नो गछ बोसराबि न जवोजि फेर संजम लेइ न सोमजि अ० नि आग्यां प्रवत्या । बले मारवाड मां मेडता मांथी विसा पोरवाल लाल-चंदजि जिवाजि पास संजम लिधो । मणी न प्रबिरण थया । पछे जिबोजि कह्यो—तूमे जावो । गुजरात म सोमजि रिषनि आगन्यां मांनि ल्यावो । तिवार लालचंदजि साथे संघाते बिहार किनो । सोमजि अ० ने आबि बंदना नमसकार करि बिचरधां । तिवारे पछे लाहुर मां उतराबि लूंको नो गछ

बोसरावि हरिदासजि निकल्या । फेरि संजम सिनो । वबर सांभलि जे गुजरात मां साव सांभलि प्रवत छै । ते माटे हू जाइ न माहापुरव नि आगन्या मां प्रवरतुं । ए जिन मारग नि रित छ । इम कहि न गुंजरात नो बिहार किनो । तिहां पहीला धर्मसि रिष न सधानक आवि उतरधा । केतलाक दिन तिहां रया । पछ सोमजि अ० सधानक आवि उतरधा ।

तिवार लोक बिचार किनो जे पारसी न वेस पुरा छै । तथा ब्याकरण ना जांण छा सिधांत ना पारगांमी छै । बरति टिकां भासा बूरएनिर जूगति ना जांण छै । ए पारखो करसि । ते आपखें बोल । पछ माहोभाहि बेहूनि आचार गोचार नि प्राषां करि न कहवा लाग । तुमहे गछ छांडघो पिए गछ नि छड़ छांडी नही । ते माटे ३ पात्रा ना ३ टांकरां लाकडाना राखो छो । ते मायो नो संधानक सेवो छो । इत्यादिक घरा बोल नो आचार गोचार मां फेर दिसाडि नै धर्मसि रिष न बोसरावि नै सोमजि अ० नि आगन्या अंगिकार करि । सांमी तूमहे हमारा गुरु हू तुमारो सिष । इम करि बिचरधां ।

पछ धरमसि रिष नो आवग आवगा मइ अपजस हूवो । हरिदासजि पुज सरिषां को भगनहार न थी । एहवा गुणवंत पुरख छांडि गया तो जांणीयछ । कोइक अवगुण भरघो छइ ॥१॥ तथा बलि धरमसि रिष नि परपरा छै । जे साव न लखवो नहि । लूकापुरि मांघि भाया बाइ आव बेइने घरा आवग आवगा धर्मसि रिषनि आरज्यांन सधानक बंदना करवा गया । आरज्यां सरागि आवता जांणी न लखवानो संमान संकेलवा मांडघो । एतलें उताल करतां साहि डूलि तेणें पछेबडि बरबांणी । पछ पछेबडि मंसलवा लागि । तिवार हात कालो हूवो । लोक बंदना करि उभा रही कहवा लाग—आरज्यांजि आज तो साहि घरी पलासि दिस छै । तिवार आरज्यां सरमाणी थइ ।

बाइयाबाइ नागोरि लूकांना जति पास ३० सूत्र भण्णा । एकदा मध्यांन भाइया बाइ मोटो सोनि आव बेइने घरा आवग आवगा प्रश्न पुछवा गया । तिवार धरमसि रिष जति न सधानक के आंगण बिसारि न लखता हुंता । जति कामे बलगे । आवग आवगा उपर जाइ उभा रहधां । बंदना करि कहवा लाग—सांमी अं काइ कर्म करो छो । तिवार मोटो सोनि कहै, सोमजि अ० तो लिख छ । तेह परूपण कर छइ । तने सवो

छो धर्म परूपण करो नथी । ते माटे तुमहे भाया नो सथानक सेवो छौ । भाया छ ते मिथ्यात नो मूल छै । तिवार भाइ बाई यह कहवा लागो—
जे अम्है नागोरि लूकां नो गछ बोसोराइ नै तूमारि सेवा भगति करि तेहनो फल अम्हे न लागो भति । इम कहि न आवग आवग विगर बंदना उठि गया ।

एनि सच बादिनो मत थपानों तथा गौधोजि गछ छांदि न फेरुं
संजम लेवि नोसरधां । ते पीण सोमजि अ० नि आगन्यां म प्रव्रतवा
लागा । तेहना सिध फरसरांमजि ते पीण सोमजि अ० न आवि बंदना
नमसकार करी नै सेवा भगति करवा लागो । आज अहमनें मोटि जात्रा
हुइ । आहार पांणी भेला करधा । पछै सोमजि अ० नो आगन्यां लेइनें
बिहार किनो ।

अमीपालजि श्रीपालजि नैं सोमजि अ० दलि, आगरा नो बिहार
करायो तथा धरधरजि, मांणकचन्दजि एवे केटिबंछ एक यात्रया मांथि
निकल्यां । पोताने भेल संजम लेइनें प्रव्रतवा लागो । धरधरजि रिष
सोमजि अ० ने पास आवि ने घणा सिधांत भण्यां । व्याकरण साधि ।
आगन्यां लेइन बिहार किनो । पछै काहानेजि अणगार नैं पीण बिहार
करायो । तिहां रिष मईणकुचंदजि पीण काहानजि रीष सु आवि मिल्यां ।
आहार पांणी भेलो किनो । आगन्यां लेइ न बिहार किनो । ए विनय
मूल मार्ग नि रित कहौ । एतले साधइ सो । टोलो टोलो बंदना कहौ
नथी । अने वडां साधा ने बंदना नमसकार करवैं तथा बंदना नमसकार
करावैं छै । तथा अतमान काले एहवि परूपणा कर छै । जे माथ
बडेरा करि न बिचरडं एतो सूत्र नि रत छै । ए विनए मूल मार्ग नि
रित कहि ।

श्री महावीर मोक्ष ॥ पहुतां जिए पाछलो विरतंत लिखीए छइ ।
१२ वरसे गौतम मोक्ष । २० वरस पछै सुधरम मोक्ष । ६४ वरस पछै
जंबू सामी मोक्ष । ६८ वरस पछै प्रभावो सामी देवलोकें गया । १७०
वरस पछै भद्रबाहु हुवा । २१४ वरस अन्नगतषादि हुवो । २१५ वरस
पछै यूलभद्र हुवा । २२० वरस पछै स्पृन्धवादि चौबो निनब हुयो ।
२२८ वरस पछै एक सम बै किमं मानि ते निनब हुवो । ३३५ वरस पछै

कालका आचारज हुआ । ४५३ वरस पछ कालकाचारज सरसति बेहेन हुइ । ४७० वरस पछ विर बिक्रमावित राजा जैनधरमी हुयो । ते जातनि बरणा बरणी करी । ५५४ वरस पछे । छठो निनव हुबो । तिरासियो ५८४ वरस पछे बरसांमी हुया । ६०६ वरस पछे गोष्टमालि डिगंवर मत निकल्यो । ६२० वरस पछे ४ सांवा निकलि खंवा १. नागंबर २, नरबद ३, वरवता ४ । ८८९ वरस पछे धरम घाते बेहरा मंडांया । ९०४ वरस पछ विदा मंत्र ना प्रभाव उछा हुवा । ९८० वरस पछ पुस्तक लिध्यां तथा बांक्वा सागा । ९९३ वरस पछे कालकाचारज समछरि ५ म नि तो उयापि अनै ४ थ नि थापि । ९९४ वरस पछ चववस थापि पावि उयापि । १००० वरस पछ पुर्व नो म्यांन बीछेव गयो । १००८ वरस पछ पोसाल उपासरा मंडायां । १४६४ वरस पछ बड गछ हुयो । १६२९ वरस पछ पुर्नेमिया गछ हुयो । १६५४ वरस पछ आंचलियो गछ हुवो । १६७० वरस पछ घरतर गछ हुवो । १७२० वरस पछ आक मोया गछ हुवो । १७५५ वरस पछ तपागछ पोसालधि निकल्यो । २०२३ वरस पछ लूका निकल्यां । दया धरम थाप्यो । २०६५ वरस पछे रुवि मत हुवो ।

ए जेसलमेर ना भंडार मांथि ए पाटावलि निकलिछई ।

॥ इति पटावलि संपूरणं ॥



(३)

पूज्य जीवराजजी की पट्टावली

[इस पट्टावली में गौतम स्वामी से लेकर नाथूरायजी तक के ७० पट्टधर आचार्यों का नामोल्लेख है। तदनन्तर जीवराजजी से सम्बन्धित धनजी, हरजी, फरसरायजी तथा गिरधरजी की परम्परा के तत्कालीन आचार्यों के नाम दिये हैं। संवत् १५६६ में पीपाड़ नगर में तेजराजजी के ६ शिष्यों—अभीपालजी, भयपालजी, हरजी, जीवराजजी, गिरधरजी, हरोजी—के गच्छ छोड़ने के उल्लेख के साथ इस पट्टावली का समापन हुआ है। संवत् १८८९ में पोष वद ७ को ऋषि प्रज्जलाल ने इसे लिपिवद्ध किया।]

..... यवजी बरयंगजी रे गछ थी नीकल्या संवत् १५३१ वर्ष लवजी १, सोमजी २, अमीचम्बजी, जोगराजजी, जीवराजजी, लोजी इण पाट दुंठया नाम स्थाप्यो संवत्.....

१—श्री विर गौतम वर्ष १२
निर्वाण

२—सुधर्मा स्वामी वर्ष २०

३—जम्बू स्वामी वर्ष ६४

४—श्री सयंभव स्वामी वर्ष ७५

५—जसोमन्न वर्ष १४८

६—संभुतवीजें वर्ष १५६

७—मद्रवाहु वर्ष १७०

८—युलमन्न वर्ष २१५

९—धाय महागौरी वर्ष २४५

१०—बलसोहाचार्य वर्ष २८०

११—श्री शांताचार्य वर्ष ३३२

१२—सामाचार्य वर्ष ३७२

१३—सांडलाचार्य वर्ष ४०६

- १४—जिनघर्म सुरी वर्ष ४५४
 १५—आर्यसमुद्र वर्ष ५०८
 १६—निबल (नंदिल) वर्ष ५०८
 १७—नागहस्त वर्ष ६४४
 १८—रेवती वर्ष ११८ (७१८)
 १९—धंदील वर्ष ७७०
 २०—सिंहग (णि) वर्ष ८१८
 २१—सिमंत वर्ष ८४८
 २२—नागजुष वर्ष ८७५
 २३—गोविंद वर्ष ८७७
 २४—भुतनंदी वर्ष ९४२
 २५—लोहत्याग (लोहित्य) ९४८
 २६—दोषगणी (दूष्य) ९७५
 २७—देवद्विगुणी वर्ष ९८०

 २८—विरमद्र
 २९—संकर मद्र
 ३०—जसमद्र
 ३१—वीरसेण
 ३२—नरीयामसेण
 ३३—जससेण
 ३४—हरषसेण
 ३५—जसेण
 ३६—जगमाल
 ३७—देवरिक्ष
 ३८—मिमसि रिष
 ३९—कर्मसी रोष
 ४०—राजरीष
 ४१—देवसेण
 ४२—संकरसेण
 ४३—लक्ष्मीलाम
 ४४—रामश्रृष
 ४५—पद्म श्रृष
 ४६—हरिसम
 ४७—.....
 ४८—उमरग श्रृष
 ४९—जषेण (जयसेण)
 ५०—बीजा श्रृष
 ५१—देवचन्द्र
 ५२—सूरसेण
 ५३—महासिध
 ५४—महसेण
 ५५—जराज (जैराज)
 ५६—गजसेण
 ५७—मित्रसेण
 ५८—विर्जसिंह (विजयसिंह)
 ५९—सिवराज
 ६०—लालजी
 ६१—ज्ञानजी
 ६२—भुना श्रृष (भानु श्रृष)
 ६३—रूपरिष
 ६४—जीवा श्रृष
 ६५—तेजराज
 कुंवरजी
 ६६—जीवराजजी
 ६७—धनराजजी
 ६८—विसनाजी
 ६९—मंनजी
 ७०—नाथुरामजी

(१)

१—जीवराजजी

२—धनजी

३—रामजी जी

४—धर्मरसिधजी

५—सुलसीदासजी

(२)

१—जीवराजजी

२—लालचन्दजी

३—दीपचन्दजी

४—सामीदासजी

५—रूपचन्दजी

(३)

१—धनजी जी

२—बालचन्दजी

३—सितलजी

४—देवचन्दजी

५—हीरचन्दजी

(४)

१—धनजी जी

२—स्यामाजी

३—मुकटरामजी

४—हरकिशोरजी

५—नैरासुधजी

(५)

१—हरजी जी

२—गुलाबजी

३—फरस रामजी

४—खेतसी जी

५—खीमसी जी

(६)

१—फरस रामजी

२—लोकमलजी

३—महारामजी

४—बोलतरामजी

(७)

१—गीरधरजी

२—दयालजी

३—पीथोजी

४—रोडजी

पिपाड नगरे तेजराज जी सीव्य ६ गछ छोडी नोकल्या । १—धर्म-
पाल जी, २—मयपाल जी, ३—हरजी, ४—जीवराज, ५—गीरधर,
६—हरोजी ए साधु संवत् १५६६ वर्षे गछ वसराय नइ नोकल्या तो वाट
संपूर्णः लिखी व्रजस्यस की संवत् १८८६ रा मीती पोह वव ७ ।

संभात पट्टावली

[इस पट्टावली में शुद्धभा स्वाभी से लेकर देवर्द्धि समा-
प्त्य तक २७ पाठ का उल्लेख करके आगम-लेखन के प्रसंग
का वर्णन किया गया है। तदनन्तर तत्कालीन शासन में
प्राप्त शिषिवाचार का चित्रण करते हुए लोकागच्छ की उत्पत्ति,
विभिन्न गच्छ-भेद और श्री लवजी ऋषि आदि के क्रियोद्धार
का वृत्तान्त है। सर्व श्री लवजी, योमनजी, भाखाजजी, हरजी,
अभीपालजी, सोमजी, जीवोजी, लालचन्दजी, हरदासजी,
काहनजी, गिरधरजी, भाखाकचन्दजी, फूलभाभजी—इन तेरह
ऋषियों के नामोल्लेख के साथ इस पट्टावली का समापन हुआ
है। संवत् १८३४ में इसे लिपिबद्ध किया गया।]

पाठवलिक्षते

श्री माहावीर नोक्ष गया पच्छ। सतावीस पाठ आचारी ऊपाते
(हूपाते) लोषीये छे। १ पेले पाटे सौधर्म सांमी २ पाटे जंबू सांमी
३ पाटे प्रभूयो ४ पाटे श्री जंभव सांमी ५ पाटे जसोमद्र ६ पाटे संभू-
तिजे आ० ७ पाटे मद्रवाऊ सांमी ८ पाटे कुल मडद्र ९ पाटे सुहस्ती
नमि १० पाटे बोलनामे (बलिस्तह) ११ पाटे सौम नमस आ० १२
पटे सुंढील नामे १३ पाटे सुमद्र नामा १४ पटे मंगु नामे १५
पाटे जीतधर नामा आ० १६ पाटे मद्रगुप्त नामा १७ पटे वैंय सांमी

१८ पाटे आर्य ऋषि नामे १९ पाट बुमख नामे ऋषि २० पाटे नदी ल वंमख नामे २१ पाटे नागहस्ती नाम २२ पाटे बई (१८६) नवत्र नामा आ० २३ पाटे दूवगणी नामा आ० २४ पाटे बंडील नामा २५ पाटे पेमसमख नामे २६ पाटे वनागार्जण नामे २७ पाटे देवदी वर्मख नामे आचार्य २७ ॥

श्री भगती सूत्र मध्ये बीसमें सतके आठमें उबेसं श्री माहावीर देव ने श्री गौतमे पुछो—देवानुं पीयाणं । तीर्थं केटला काल लगे चालसे । तीवारे भगवंत माणुं—हे गौतम भ्रमाहार तीर्थ एकबीस हजार बरस लगे चालसइ । वली गौतमे पुछो—देवाणुपीयाणं पुबं नुं ज्ञान केटला काल लगे चालसइ । ताते भगवंत कहे—हे गौतम एक हजार बर्स लगे चालसं ।

देवगणी आचार्य भगवंत ने २७ साताबीस मे पाटे हुया । तीवारे भगवंत ने निर्वाण पोहोतां ६८० हुयाछें । देवगणि आचार्य एकदा प्रस्तावे ने सुंठि न गांठियो थावा लावां ते बसरी गयो । थातां काल अति कमी गयो । पछे सांमस्यो ते बार पछी देवगणी आचार्य विचार स्युं जेहवे काईक बुध हीणी थई । ते माटे सुत्र मुख यकी बीसरसैं । ते माटे सुत्र पुस्तकें लपुंउं । तेतले भगवंत पाछि ८६० बर्स पुस्तकारुंड हुउ । तिहा लगे सुध मार्ग चाल्यो ।

तीवार पछी बार बरसी दुकाल पड्डउं । तीवारे घरणा आवास साथे संथारा करघा । आत्मा नां कार्य सारघा । केटलाएक काल थया । ते मोकला थया । लिंगधारी थया । दुकाल उतरा सुगाल थयो । तिवार पछी ते लिंगधारी इं अप आपणा आवक आगले इम कह्यो—जे श्री भगवंत तो मोक्ष पोंतो । ते माटे भगवंत नी प्रतिमा करावो । जिम आपणणे भगवंत सा भरइ जिणे घरणां लाम ना कारण थसइ । तिबारे ते आवके लिंगधारी नां वचन उपदेस सांमलीने देहरां, चेतालां तथा उपाथा तथा चेतालांन पुजा प्रतिष्ठा कराबी । ताहां गाम नगरे देहरा, चेतालां, उपाथा हुया ।

श्री माहावीर देव भुगते पोहोता पछे ४७० नै बर्स लगे भगवंत नो साध्यें चालो । तीवार पछी बीकमांवीत नो साथो चालो । पछे संभत पतरा १५३१ आय्यो । तिबारे जे हजार बरस नो मस्य प्ररहेनी छीती

पूरी बई । तिबार इ लिंगवारी ये आप आपणा गछना समुदाय बांणी । आप आपणा आवक कीधा । तेणे लिंगवारीये सिद्धा पुस्तक हुता ते भंडार माहि राखण पोताने छांवे नवी जोडि प्रकरण तथा रास तथा कव्य, छंद, श्लोक, गाथा तथा सित्रंजा माहातिम तथा पोतानी मती कल्याणाइ हंसा धर्म परुणु । गुरुनी पुजा पोषी पुजावी । जोतम पड्युं वमासण बिहरना गुरुनि समेलो करवो । गुरु ने सामईयो करवो । गाजति वाजति चउटां सणागारी गाम नगर मांहे लेइ आवि । पाट पावणा पथरावे । संघ पूजा करावे छइ इत्यादिक सूत्र बिरुध परुपणा करी । ते भंडार महिलां पानां हुतां ते ऊवेइ बाधा । ते पानां जोवा में बाहिर काढां छे हुता । तिबारि बीचार रा पाना लवीये तोबार ।

तिबारे लूकुं मेहेतु आवक कारकूण हुतो । ते एकदा प्रस्तावे उपाधे लिंगवारी पासि आप्यो हुतो । तिबारि ते लिंगवारीये इम कह्युं । एक जिन मार्ग छनो काम छे । तेहे सुछे । तीबारि लिंगवारी बोल्यां—जे सीधांतनां पाना उवेई बाधां छेति नवा लवी आपों तो वारं नी वारे । ते जतीये एक दशवकालिक नी प्रत आप्यो । ते लूके मिहिते बांकी नी बीचासुं जे तीर्थक नो मार्ग कतो १ दशकालिक माहि छे । दया धर्म ने साधुं नो मार्ग कहउ छे । तिम जोईये तो वेषवारीये दया धर्म ने साधुं नो मार्ग आचार ढांकीने हंसाधर्म नि परुपणा करी छइ । पोते मोकला पम्पा छे । तेहने हबडां कहिये पण माने नही । ते माट दसवकालिक नो दोवडी प्रत उतारी । एक प्रत पोते रावी । एक उणाने बीधी । एम करतां सुत्र सघलां नी प्रत दोवडी उतारी । एके की पोते रावी अकेकी उणाने बीधी । पछे ते लूके मिहिते पोते घरे सूत्र सीधांतनी परुपणा मांडी । तिबारे घणा भव्य जीव सांभलवा लागे । घणा जीवने दया धर्म रुचवा लागो ।

तेण काले भरटवाडा ना बाणीया संघ कडी ने सजवालां लेईनइ जात्रा नीकल्या छइ । घाटमां माबबुवेयुं । तिबारे जे गाम माहि लूकी मिहितो दया धर्म नी परुपणा करइ ते गाम मध्ये संघ नो पडाव थयो । तिबारइ संघबीई ववर जाणी जे लूकुं मिहितो सीधांत वाछइ । त अपूर्व बांणी छिए हवुं जाणी ने संघवी घरणा एक लोक संघाति सांभलवा आप्यो । तिबारे ते दया धर्म तथा सासनुं मार्ग सांभली ने संघवी नां मन माहिए मार्ग रुच्यो । तिबारि पछे केतलाएक दिन सांभलवा थयो । तिबारे संघ मांहि संघवीनां गुद हुता । तेणे जांणुं जे लूका मिहितो पासे सांभलवा

जाये छई । ते नाटे ते संघबी पातें आध्या । संघबी ने कहा—ज संघ जोडो वो लोक घरबीने सांरमाहुं बाय छे । तिबारे संघबी बोली—जे बाटे अजयबा छे । बादि बूडबल प्रमुख जीव पडा छे । तिबारे तेहना धुर बोली—साहाबी धर्म ना काम माहि हेसा गरिये नही । तिबारे संघबीने मन महि जानु जेहवा में लूका भेसो समीपें सांमलाछें । वेधबारी धणाचारी, छे कायानी अनुकंपारहित, तेहबाज बीसे छे । तिबार पछि ते बंधबारी पाछा बसी गया । तिबारे ते संघबीने सीध्यांत सांमलतां बिहराग उपनो । ४५ अजयसु संमत १५३१ । संवखरे पस्ताली जरा सुं संजम लीधू । साध सखी १, साध मानो २, साध नुंखो ३, साध जगमालि ४, प्रमुख पस्तालीस जरा साध मोलोने दया धर्म परपवा लागा । तिबारे धरा भव-जीव दया धर्म समझवा लागा । तिबारइ प्रबाबीयो ये लूका एहवुं नाम बीधुं । तिबारे लंगधारीय केटले एकइ श्रीवाडधार करी नीकला । तेहनुं नाम तपा धराणां । तेरे प्रतमानी परपरा करी ने हंसाधर्म परपुं । अनेक कष्ट करवा लागा । लूका धरा घाता ताते सांसता हुयां । ते जती तथा तेहना आवक तथा पुजाराबिक दया धर्म मार्गी ने साधने उपसर्ग धरा बीधां । तिबारे माहापुरसे परीसा सह्या ।

तिबार पुछे रूपो सांहा, पाटणा ना वासी संजम लेईने निकल्यां । ते रूपो रष बया । ए लूकानुं पहेलु पाट थयुं १ । तिबार पछे सूरत ना वासी, जीवो साह संसार पछि पुंन्य प्रतीया हुता । तिणि रूपअष पासइ बसा लोधी । ते जीव रक्ष थाया २ तेवेवहार थी सुधा जीणीइ छइ । तिबारि पछी स्थानके बोध सेववा लागा । आहार नी केनतीइ जावा लागा । अने वस्त्र पात्र नी ५ अजावा प्लोपी बेचरवा लागा । एतावता व आवादे बीला पडधां ।

तिबार पछी संवत् १७ नुं आसो आध्या । तिबारे सूरत नगर नो वासी, बीरजी हाया, बसा भीमाली, लोकमाहि कोडिधर हुते । तेहनी बेठी फूलबाई नाम जतो । तेरे लऊजी साने पासबा सीधा हुता । ते लऊजी सा लूका ने पासे नगवा मेहेला । ते लऊजी सा सीधांत धनो मध्या । तिबारे लऊसा न बिईराग धरलो उपनो । बिबारे । बाहोर बीरजी हाया ते संयम तेबानी आजा ना मांणी ते बारेल बजैसा बेरागी ई साधनु आचार गोचारनी परपरा बधी संमलसी । तिबारे बीहुरी बीरजी केहेवा

साथो—जै तुम लूकाना मछ माहि बधा लो तो अम्यांनो धाधुं । तिवारइ लऊजी साहे विचार कीधो—जे हबला अवसर एहबुछे । एहबो जालीने साहा लऊजीइ । अवि वरजांग पासे बधा लीधी । रबी लऊजी थया । तिवार पछि अवि वरजांग पासे धरां सोघांत अघं संसकरादिक भरा । धरा पंडित थया । तिवारे पोसाना गुरुं नि एकात नूछो जे साधनुं आचार छई तिम पालीये छइ कि नहीं । तिवारइ वरजांग अवी बोलो—आज पंचम धारो छइ । तिवारि अवि लऊजीबें कहूँ—सांसी मयवंत नुं मार्ग एक-बीस हजार बरस लगइ चालते मालि लूकानो गछ मोसराबी ने कीकजो तो तुम्हे अम्हारा गुरु हु तमारो सिध । तिवारे अवि वरजांग कहि—अम्हे लो न निकल्या इ । तिवारि अवि लऊजी साधनुं संघाते गछ बोसराब्यो । साधनुं निकला अवि लऊजी १ अवि थोभरा २ अवि सधोयो ३ इ अवि साध फरि संजम लेई धरा नाम नगर देखि बिचारा । ताहां बितराय देव नां मार्ग नी परपरा धरा करी । तिवारे धरा लोक समझ । तिवारे लोके दुंढोया एहवुं नाम दीधुं ।

तिवारि अमदाबाद नगर ना वासी, कालुपरा ना वासी साहा सोमजी इं केटलोएक काल रहीने अवि लऊजी पासे बधा लीधी । अवि सोमजी नाम दीधो । बरसे २३ दशा लीधी अने बरस २७ ने माज ने संजम पालुं । ते मध्ये धरा सूर्यनी बाठनी अतापना लीधी । धरा काउंसंग, आसरा, लप, जप कीधां । धरा साथ साथो नो परवार थयो । तस पाटे सुरतनां वासी अवि थी कान्हूजीइ बरस २३ ने धावे बधा लीधी । बरस २७ ने माज ने बधा पालि । बवांगत बम्मा । तस पाछे अवि थी रल छोडजी छ । गलि पल अमदाबाद नगर उधकापुर ना वासी । अवि थी सोमजी नो परवार अवि हरदासजी अवि में प्रेवजी प्रभु धरा जाला ।

वरजांगजी ना गछइ थकी नीकलः अवी लवजी १ प्रभु : । अवि कुरजी ना गछ थकी नीकला-अवि अमीपालजी १, अवि धर्मसी २, अवि हरजी ३, श्रीपालजी ४, अवी जीवो ५, अवि सोहोडो हरजी ६ प्रभु । केसवजी ना गछ थकी नीकलः अवि

सहजी १, ऋष्यी सोमजी २, ऋष्यी कानजी ३, ऋष्यी रण-
छोडजी ४, तस पाटे ऋष्यी ताराचंद जी ५, तस पाटे ऋष्यी
मीठाजी ६, तस पाटे ऋषी तीजोकरचंदजी ७, तस पाटे बाहालाजी
पूजजी ८ । इम वणोइ प्रवार थयो । ऋष्यी कुयरजी ना गछ थकि
नीकला छइ ।

॥ ३३ ॥ श्री माहावीर मोक्ष पोहता पछे १२ वर्से गोतम
सांभी मोक्ष गया १, श्री बीर पछे २० वर्से सुधर्म सामी मोक्ष पोतो २,
श्री बीर पछे ६४ वर्से जंबू सांभी मोक्षइ ३, बीर पछे ६८ वर्से
जंमसांव सांभी हुया ४, श्री बीर पछे १७० वर्से भद्रबाहुं ५ । बीर
पछे २१४ वर्षे अशगतवादी तीजे निनव थयो ६ । श्री बीर पछे २१५
वरसे धूलभद्र हुया ७, बीर श्री २२० वर्से सुनवादी ए सर्वे अनमतो
जाणवा ८ नीव ८ ।

एक समे बे कीयां मनि २२८ वर्से पांचमो नीनव हुयो । बीर श्री
३३५ वर्से प्रथम कालका आचार्य हुयो ९, श्री बीर श्री ४५३ वरसे
बीजो कालका आचार्य सरसती बेहेनो बालणहार १०, बीर श्री ४७०
वरसे राजा विक्रमादीत हुयो ११, बीर श्री ५५४ वर्से छगे निनव तिरा
सीषो थयो १२, बीर श्री ५८४ वरसे वेरसांभी थया सठोगिया १३, श्री
बीर पछे ५९४ वर्से सातमो निनव गोष्टमहिल थयो १४, बीर श्री
६०९ वर्से बिगंबर मत जापो सहेव्समक्षत्रीये १५, बीर पछे ६२० वर्से चार
साधा नीकली इन्द्र १, चन्द्र २, नागेन्द्र ३, बाद्याघर ४, चन्द्र १ नागेन्द्र
२ बिता हुया: बिद्या घर नामो तबासी थाप्या १६, बीर पछे ६०४ वर्से
बिद्या मंत्र बीछेद गया १७, बीर श्री ६८० वर्से सिधांत पुस्तके चढउ
१८ । हवे गछ प्रंपरा सबीये छइ ।

॥ ३४ ॥ समण भंगवंत माहावीर ने बंदना नमस्कार करीने संकंड्र
पुछे छइ—तभारी रासे भस्म ग्रह बे हजार वरसनो बेसे छे । तेथि सुंथा
सइ । भगवंत कहिजे—समण निप्रथो ना उदे उदे पूजा नहीं आय । ए बे

हजार बरसे मम्म ग्रह उतरा पछे निग्रन्थोनी उवे उवे पूजा थासे । पछे ब्रह्मवंत मोष पोहोता पछे : गोतम ने केवल ज्ञान उपनुं ते पोतम नु आयु क्षो । बानु बरस ने । ५० बर्से ग्रह जास । ३० बर्से छबमंस्त । १२ बर्ष केवल ग्यान, सर्वयाडं बानु बर्सनु ६२ । पछे सुवर्म सांमी नो । याउषो १०० नो । ५० बर्से घरमां । ४२ बर्से छबमंस्त । ८ बर्से केवल । सर्व आयु १०० बर्सनु । तीजे पाटे जम्बू सांमी नो आउषो । १०० सर्व-मनो । १६ बर्से धरि । ४० रे बर्से छबमंस्ता । ४४ बर्से केवल । सर्व सोउ बर्ष नुं । ए जगंतर सोमी जाणवी । भगवंत मोक्षा पोता पछे ६४ बर्से केवल पर बरतुं : जव मोक्ष गया पछे दश बोल बिछेद गया ते कहि छै । एक तो मनपरजवग्यान १, प्रम अविग्यान २, पुलांगनिउ ३, आहारक सरीर ४, उपसंमसेणि ५, धपक् सेंग ६, जिनकलपी साध ७, परिहार बिसउधि चारित्र ८, सुक्ष्म संपराय चारित्र ९, जयाधायत चारित्र १० ।

श्री माहावीर सांमी मोक्ष पोता पछे १२ बर्से गोतम मोक्ष पोता १, बीर प्रभू मोक्ष पोता पछे सुधर्मा सांमी २० बर्से मोक्ष पोहुता २, श्री बीर मोक्ष पोता पछे ६४ बर्से जंबू सांमी मोक्ष पोता ३, श्री बीर केवल पांमां पछे । १४ बर्से जमांली कडेमरणे कडइं प्रथम नीवन्ह थयो । एक बचन नो लोपणहर १, बीर केवल पांमा पछे १६ बर्से छेहले प्रवेसे जाव माने ने थाप्यो । ए बी.जो नीन्हव थयो २, बीर पछ ७५ बरसे प्रभूयो सांमी देवलोके पोता ४५ पछे सी । माहावीर पछे अठाणु ६८ बर्से शियंभ सांमी हुवां ५, श्री बीर पछइ १६६ बर्से श्री असोभद्र सांमी हुया ५, श्री माहावीर पछे १५६ बर्से संभृत त्रिजय आर्य हुआ ६, वर पछे १७० भद्रबाहु सांमी थया ७, बीर पछे २१४ बर्से अलगतवादी तीजो ननव थये । बीर पछे २१५ बर्से भूलभद्र हुआ ८, बीर पछे २२० बर्से सुन्यवादी जोषो नीनव हुये । ए सर्व अनमंती जाणवा । बीर पछे २२८ बर्से एक समे वे क्रिया माने पांचमे नीनव थयो ।

बीर पछे २४५ बर्से महागौरी आचार्य थया ९, बीर पछइ २८० बर्से श्री बलिहसीह आचार्य हुया १०, बीर पछे ३३२ बर्से श्री स्वांति

आचार्य ऊँको ११, बीर पछे ३३५ वसैं प्रथम कालका आचार्य हुया; निगोब जीब व्याख्यात भवनीतस पर दुइटासः बीर पछे ४५३ वसैं बीको कालका आचार्य सरस्वतीती बहेन नो बांलनहा गर्वज नील वैष्णव । बीर पछे ३७६ वसैं श्री झांमा आचार्य हुया १२, बीर पछे ४६ वसैं श्री सांडिल आचार्य हुया १३, बीर पछे ४५४ वसैं श्री जाति धर्म आचार्य हुया १४, बीर पछे ४७० वसैं राजा बीर विक्रमादित राजा हुयो । तीने नातनो वर्ण करघो । तीने नातनो वर्णा-वर्ण करघो सो । बीर पछे ५०८ वसैं श्री सुमूद्र आचार्य हुया १५, श्री बीर पछे ५५४ वसैं छठो नीनब हुयो नो जीबनो भजावनो बापक । बसे सिरासियो । बीर पछे ५८४ वसैं वेर सांमी या, बीर पछे ५८५ सातम निनब हुयो गोष्टमाहिल नाखें कर्म कवचनी परेमाने छे पण धीरनीर बत्त । नां माने । बीर पछे ५६ वसैं श्री निदिल आचार्य थया १६, बीर पछे ६०६ वसैं विगंबरमता नीकल्यो सहेसमल धत्री श्री ब्राह्मण बेटा थकी नीकल्यो । श्री बीर वठो ६ सैं २० वसैं : च्यार सीध्या नीकली : इंद्र १ चंद्र २ नांगंद्र ३ बीजे बांवर ४ छ । चंद्र १ नांगंद्र २ बिजे बाबर ३ बिबीता हुया । चंद्र १ नांगंद्र २ ए बेनी प्रबती : बिजे बाबर ना ३ मेतबासी थाप्पां । श्री बीर पछे ६८४ श्री वसैं श्री नागहस्ती आचार्य १७, बीर पछे ७६८ वसैं श्री रेवत आचार्य १८ । बीर पछे ७८० वसैं सीहगिरि आचार्य १९, बीर पछे ८१४ चांडव वसैं साहगीण आचार्य हुया २०, बीर पछे ८४८ वसैं श्री हेमंत आ० २१, बीर पछे ८७५ वसैं नागाजुन आचार्य २२, बीर पछे ८८२ वसैं जोइतबासी ते धर्म पाते देहरा मंडाव्यां । बीर पछे ८८७ वसैं श्री गोवंद आचार्य हुयो २३, बीर पछे ९०४ वसैं विद्या मंत्र ग्य प्रभाव उछा थया बिछेव थया २४, बीर पछे ९४२ वसैं श्री भूर्दिन आचार्य, श्री बीर पछे ९४८ वसैं लोहित्या गणि आ० २५, श्री बीर पछे ९७५ वसैं श्री दुष्यगणि आ० २६, श्री बीर पछे ९८० वसैं श्री देवगणि आचार्य हुया २७ ।

नवसैं नें घेसीमें वसैं ९८० वसैं पुस्तकावद्ध हुयो सिचां, जवज्याः ।

वांछण तरे ६६३ वर्से पंचरुणा पर्व पांचम थी चौथ थापांणी। कालका आचाय थापी। श्री बीर पछे ६६४ वर्से कालका आचार्य चौड'वसे पापी थापी। सुरी मावना बु थोमासी चड'वस थइ। बीर पछे १००० वर्से पुर्व नुं जान विछगयुं। श्री बीर थी १००८ वर्से पोसाल मंडाणी। बीर पछे १४६४ वर्से बड गछाना घणा गछ ८४ छ गछ थाया। बीर पछे १६२६ वर्से पुंनमियो गछ थाया। श्री बीर थी १६५४ वर्से आचलीया गछ थयो। श्री बीर थी १६७० वर्से परतर गछ थायो। बीर थी १७२० आगमीया गछ थयो ॥ बीर थी १७५५ वर्से तप्या गछ नीकलो। बीरावाल माहातमा माहिथी नकला तेणे घणा बोल फरवा ने हव जटांणे बारो कडुयामती नीकला छे।

बीर पछे २०००२३ वर्से जिनमती हुया। परवाबोई लोका कहरा। बीर थी २०६५ वर्से रक्षो मती हुया। एहवे टांने कडुया मीती थया। इस हुडाउप्सप्पीणी कालने मैले मत थया छे। ते माहिं श्री सीधांते मगवंत ने वचने चाले तसूचे आचार प्रवर्ते ते धना दया धर्म मार्ग परये ते सत्य जाणवुं। छ कायना जीव आत्मा समान करी पाले। श्री तीर्थकर ना वचन संत्यक माने तेहज धर्म तेज दया तेज मोक्ष छे ते जाणजो जीछ। साध पेहिला हुता ने ह्वणा छे। तेहनां नाम लवीये छइ। ऋष्य श्री लवजी १, ऋष श्री योमनजी २, रिष श्री माणजजी शरष्य ३, श्री हरजी ४, अमीपालजी ५, सोमजी ६, जीबोजी ७, लालचंबजी ८, हरबासजी ९, काहानजी १०, गर-वरजी ११, माणकचंबजी १२, रष फूसमामजी १३। ए तेरइ नेइ बंदणा करइ। साध सरथई। आहार पांणी धापे निरजरा जाणइं। वर सहमाईये। बंदणा करे नमस्तकार करो तेहवा साधने ए म्हारइ परमाण छइ। इति पाठावली संपूर्ण संवत् १८३४ वर्षे शु. ० ॥

(५)

गुजरात पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली पूज्य श्री धर्मदास जी के शिष्य भूल-
चंदजी स्वामी (जिनका विहार-क्षेत्र मुख्यतः गुजरात रहा है)
की परम्परा से सम्बन्धित है । इसमें ४२ आचार्यों का—
१-धर्मदासजी, २-भूलचंदजी, ३-बाहूजी, ४-इच्छाजी, ५-
हीराजी, ६-काहनजी, ७-अजराभरजी, ८-तलकसीजी,
९-रघुजी, १०-....., ११-नागजी, देवराजजी, १२-
तेजपालजी, १३-नरसीजी, १४-भोटा भोनसी, १५-भोटा
देवजी, १६-केसवजी, १७-रुधनाथजी, १८-भानजी, १९-
करमसी, २०-हरजी, २१-संधजी, २२-कर्मचंदजी, २३-
भोनसी, २४-रायभलजी, २५-लघु हरजी, २६-गोवर्धन स्वामी,
२७-हरिहर स्वामी, २८-भोटा भूलजी, २९-कुवरजी, ३०-
हरचंदजी, ३१-जठाजी, ३२-हंसराजजी, ३३-अवधलजी,
भूलजी लघु रत्नसी साधोजी, ३४-रायचंदजी, ३५-दामाजी
तपसी, ३६-धर्मसीजी, ३७-भारभलजी, ३८-देवजी, ३९-
दामाजी स्वामी, ४०-रायचंदजी, ४१-गोपालजी, ४२-हीरोजा
के—पट्ट-क्रम से जन्म-स्थान, गोत्र, दीक्षा, स्वर्गवास आदि के
उल्लेख के साथ परिचय दिया गया है ।]

प्रथम श्री महावीर स्वामीनी ८ मी पाटे मद्रबाहुस्वामी थया १४ पूर्वाहुत पाहुडा ग्रन्थ मध्ये छे ।

१-श्री गुर्जर लंडे ग्रहीमदाबाबस्य सामीप्ये सरखेज ग्रामे, जीवन पटेल तेहना पुत्र थावक नावसार धर्मदासजी, सूत्र नीरयाबलीका नो बर्ग श्रीजो, अध्ययन बीजो सांमलीने जण १७ संघाते संवत् १७१६ ना आग्निन सुब ११ बीने, पहोर चोबे, बीजय मुहूर्त, मूल नक्षत्रे स्वहस्ते पातिसाह बाडी में, बीसा ग्रहीने जैन मारग उज्जवालसे गयो धर्म बोध से ध्यार बीसों मां चतुर्विध संघ थापसे, जुम प्रधान पाट ६२ में थासे इति वृद्ध वाक्यं ।

२-तत्पट्टे पूज्य मूलचन्द्रजी स्वामी बसा भीमाली, ग्रमदाबाबना सं १७५३ मां बीसा लीधी । सर्वायु ८१ वर्षनो, सं १८०२ में बीगवंत ग्रमदाबाबे । ३-तत्पट्टे पूज्य बाहुजी स्वामी ज्ञाति बालंब, ग्रहमदाबाबना, संवत् १७७५ मां बीसा, सर्वायु ६६ वर्ष । सं १८१४ देवगत सूरत बंदीरे प्राप्तः । ४- इच्छाजी स्वामी सीढपरना ने गम, माता बालम बाई, पीता जीवराज संघबी, बेन इच्छा संघाते सं १७८२ ना आसोज सुब १० सुत्रे बी० लीधी । सं० १७६६ ना फागन सुब ७ में जन्म, ज्ञाति बीसा पोरवाड । सं १८३३ मां देवगत लिबडी मध्ये, सर्वायु ६७ वर्ष ।

५-हीराजी स्वामी ज्ञाते कयडवा, कनबी गुजरातना, सं १८०४ मां बीसा, सं १८४२ देवगत. घोराजी ग्रामे, ७४ वर्षनो । ६-काहुजी स्वामी ज्ञाते भावसार, बडबाणना, सं० १८१२ मां बीसा हलबर्मा, सं १८५४ मां देवगत सायलां मां, सर्वायु ५४ वर्षनो । ७- अजरामरजी स्वामी ज्ञाते बीसा ओसबाल, पवानाना, सं १८०६ मां जन्म, सं १८१६ मां बीसा, माता कंकुबाई साथे लीधी । गोंडल मध्ये, महासुब ५ गुरुवारे । गोत्र मोरा, पीता मानिकचंबजी साहजी, सं० १८७० ना थावन बड १ मे देवगत, लीबडी में, सर्वायु ६१ वर्षे । ८- तलकसीजी स्वामी बीसा भीमाली, धरोलना, संवत् १८३७ मां बीसा भुजनगर मध्ये हस्ती होडे लीधी । सं० १८८२ देवगत लीबडी मध्ये ।

९-रवजी स्वामी बसा भीमाली, कुंतीबाण नां, सं० १८३८ पोस

सुब ६ नी बीक्षा, सं० १८७० मां पोस सुद १० देवगत, लींबडी मध्ये ।
 १०—..... ११—नागजी स्वामी तथा देवराजजी स्वामी बीसा ओस-
 बाल, कांडाकराना । गोत्र डोढीया, सं० १८४१ ना फागन सुद ५ गुस्वारे
 बीक्षा, रापर मध्ये । सं० १८७६ ना भासो वद १ में देवगत, लींबडी मध्ये,
 देवराजजी स्वामी । १२—तेजपालजी स्वामी बीसा ओसबाल, देसल-
 पुरना, संवत् १८४६ ना वैशाख सुद ५ नी बीक्षा । सं० १८६१ ना पोस
 सुद ४ सनीवारे दिन पोहर चढते देवगत, लींबडी मध्ये, अर्द्धि ज्ञान युक्त ।
 १३—नरसी स्वामी बीसा ओसबाल, देशलपुरना, सं० १८४६ बीक्षा, सं०
 १८६६ ना भाद्रव वद १४ ना देवगत, थानगढमां । १४—मोटा मोनसी
 स्वामी बीसा ओसबाल, देसलपरना, सं० १८४६ ना कार्तिक वद १३ नी
 बीक्षा । सं० १८८७ ना प्रथम वैशाख वद १० सुत्रे देवगत, मोजीवड मध्ये
 पाय्या । १५—मोटा देवजी सामी बीसा श्रीमाली, वाकानेर ना सं०
 १८५० ना चैत्र वद ६ नी बीक्षा, सं० १८८७ प्रथम वैशाख वद ४ सने
 देवगत, जेतपरे । १६—कैसवजी सामी बीसा श्रीमाली, मानकुवाना, सं०
 १८५४ मां बीक्षा भागपर मां, सं० १८७० भाद्रपद वद १४ ना देवगत, मुंढ्रा
 बंदर मध्ये । १७—रुघनाथजी स्वामी भावसार, वढवानना, सं० १८५५
 ना वैशाख सुद ११ नी बीक्षा वढवाण मां, १८७६ संथारो कर्षो वढवाण मां,
 तेमां अवध उपनो पेलो देवलोकें उपजवो बीठो, देवराजजी स्वामी ने सम-
 तामा बीठा बुंढवानो प्रछा नो उतर नहीं मटे सारे दर्शन नहीं थाय दीन
 २ घडी ।

१८—भानजी स्वामी बीसा श्रीमाली, वाकानेरना, सं० १८५५ ना
 वैशाख सुदी ११ नी बीक्षा वढवाण मां, संवत् १८८७ वैशाख पेलो सुद १३
 देवलोक, राभोदमां ।

१९—करमशी सामी भावक भावसार, सुरतना, १८५६ बीक्षा
 लींबडी मां, १९०६ मां देवलोक वढवाण मां, अनसन बिराधी ने उपसर्ग
 वशात् । २०—हरजी स्वामी बीसा ओसबाल, कांडागराना, १८५७ प्रथम
 जेष्ठ सुद ११ नी बीक्षा कांडागरामा । २१—संघजी स्वामी वसा श्रीमाली,
 झोडूना, १८५६ ना जेष्ठ वद १२ नी बीक्षा । १८८३ मा देवगत, धोराजी

मध्ये । २२-कर्मचंदजी स्वामी बीसा ओसवाल, देसलपुरना, १८६० मां
 बीका रापर मां । १८७० देवगत पाम्या । २३-मीनेसी स्वामी लघु
 बीसा ओसवाल, आसंमीयाना, १८६० में बीका कंडोरडे । १८६८ मां
 देवगत, लोंबडी मध्ये । २४-रायमलजी स्वांमी बीसा ओसवाल,
 लाखरना, १८६१ नी रापरमां बीका, १९०२ मां देवगत, लोंबडी मध्ये
 कालिक वर्षी ४ । २५-लघुहरजी स्वामी बीसा ओसवाल, लाखरना,
 १८६१ फागन सुद ४ नी बीका लोंबडी मध्ये लीघी । २६-गुरु गोवर्धन
 स्वामी भावक भावसार, मुरतना, १८६१ ना वैशाख सुद ११ नी बीका
 लोंबडी मध्ये । १८८७ ना भागसर सुद २ बीने ६५ दिन नो संयारो,
 सायला मां सिद्धो अजवाले । गाड चार माहे थयो । २७-हरिख स्वामी
 भावसार, मुरतना, १८६१ मां बीका लोंबडी मां । २८-मोटा मूलजी
 स्वामी बसा श्रीमाली, मोरवीना, १८६३ ना फागन वद ११ नी बीका
 मोरवी मां । १९०४ मां देवगत, अहमदाबाद मां सावन वद ११ । २९-
 कुवरजी मामी १८६५ ना भागसर छठमी बीका, बीसा श्रीमाली, बढवान ना
 बीका लोंबडी मां ।

३०-हरचंदजी सामी वशा श्रीमाली, मेयाणाना, १८६६ ना भागसर
 सुद ५ नी बीका लोंबडी मा । १९१४ पोष सुद छठ मा देवलोक, लोंबडी ।
 ३१-जेठाजी स्वामी धोल ना, कोगरी, १८६६ ना वैशाख वद ९ नी
 बीका बढवान मां, देवगत पाणोसणे । ३२-हंसराजजी स्वामी तथा
 अमेचंदजी स्वामी, पितु पुत्र, बीसा ओसवाल, आसंमीया ना, १८६७ ना
 पोष सुद ६ नी बीका रापरमां देवराजजी स्वामी पासे लीघी, देवलोक
 अंजार । ३३-अवचलजी मूलजी लघु रतनसी लाधोजी १८६९ ना
 कालिवद १३ नी बीका, लोंबडी मां । ३४-रायचंदजी मालवी, रतलाम
 ना ओसवाल, १८६७ ना फागन वदी २ बीने बीका अजरामरजी सामी
 पासे लोंबडी मां । ३५-दामाजी तपसी भावसार, घोराजी ना, १८६७ नी
 बीका लोंबडी मां । ३६-धर्मशीजी बसा श्रीमाली, बीलरवा ना, १८६८

ની શીશા લીંબડી માં । ૩૭—મારમલજી ચોસા ઓસવાલ, રતાડીયા ના,
 ૧૮૬૭ ની શીશા, ૧૮૭....માં દેવલોક, જેતપુર । ૩૮—પૂજ્ય શ્રી ૭ દેવજી
 સ્વામી ખુવાળા, વાકાનેર ના, ૧૮૭૦ માં શીશા, રાપર માં દેવરાજજી
 સ્વામી પાસે લીધી, ૧૦ વર્ષ ની વયમાં; ૫૦ વર્ષ પ્રવ્રજ્યા પાલી । સર્વાયુ
 વર્ષ ૬૦ નો, ૧૯૨૦ ના જેઠ શુબ ૮ ના પ્રમાણે દેવગત પામ્યા, લીંબડી
 મધ્યે । ૩૯—દમાજી સ્વામી હસા શીમાલી, કુલડીયાં ના । ૪૦—રાય-
 ચંદજી સેઠીયા, રાપર ના । ૪૧—ગોપાલજી સ્વામી મોટા ઓસવાલ,
 પાલી ના, ૧૮૭૪ મા શીશા, ૧૯૧૩ માં દેવગત લીંબડી માં જેઠ વદી ૧ ।
 ૪૨—હીરોજી સ્વામી ।

॥ इति पटावलि संपूरणं ॥



(६)

भूधरजी की पट्टावली

[इस पट्टावली में भगवान महावीर स्वामी, गौतम स्वामी, बुधमा स्वामी, अम्बू स्वामी, प्रभव स्वामी तथा २७वें पट्टधर देवर्षि क्षत्राश्रमशा के उल्लेख के बाद विभिन्न गच्छ भेदों का वर्णन करते हुए लोकागच्छ की उत्पत्ति का वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है। तदनन्तर लवजी, सोमजी, धर्मदासजी, धनजी, भूधरजी, (स्वर्गदास-सं० १८०४) और तत्कालीन आचार्य रुधनाथ जी तक का संक्षिप्त पट्ट-परिचय दिया गया है ।]

॥ ॐ नमः सिद्धं ॥ भ्रमण नः श्री माहावीर नै वंशजा करी नै शक्रेषु पुत्र्यो—जे सुम्हारी रासैं मसमग्रह बि हजार वर्ष नो स्थिति नो बसैं छैं। ते बकी स्युं चास्यैं। तिवारइ पछे श्री भगवंत बोल्या—ए मस्मग्रह बेठा पछे साध निर्गर्थ को उबै २ पूजा नही पाइ। ए बे हजार बरसनी स्थिति तो मस्मग्रह उतरया पछी साध निर्गर्थनी उबै २ पूजा हुस्यैं। जौबा झाराना तीन बरस नै साढ़ा घाठ मास नो छेला बाकतां बीर निर्वाण पोहतां। तिवारै पछे गौतम स्वामी १२ वर्ष केबली पर्याय पाली, सर्व झाउवो ६२ वर्ष नो पाली मोष पहुंता।

पछे सुधर्म स्वामी २० वर्ष ए केबली नी, ३० वर्ष विद्या, १०० वर्ष सर्वाड। पछे जंबू केवल पछे उपमां बकां ४४ वर्ष परवर्जा। भगवंत पछे ६४ वर्ष मोष पोहता, ए पुगंतर भूमिका जागिनी। जंबू पछे १० बाना

विछेद गया मन पर्यवज्ञान १, परम अविध २, पुलागनि यद्दो ३, आहारिक शरीर ४, उपसम ध्वेण ५, अपक ध्वेण ६, जिण कलपी साध ७, परिहार चारित्र ८, सूक्ष्म सं० ९, यथाध्यात चा० १०, ए विछेद गया । तीजे पाटे प्रमव स्वामी । इम पाछे कहता त्यां मांहिला २७ पाटे देवढी वमाश्रमण जाणवा । भगवंती सूत्र मध्ये २० सुत्त वंधवं, आग्नें उवेंसें गोतम पूछो— ए भगवंतें कह्यो साध साधवी श्रावक श्राविका रूप तीर्थ २१ हजार वरस लागि रहिस्ती । १००० वरस पूर्वानो ग्मान रहिस्ती । कछे देवढी वमाश्रमण आ० एकदा सूठ नो गांढीयों ल्याया हुंता । ते बाबा बोसरी गया । काल अतीक्रमी गयो । पछे चींता आव्यो । तिवारे विचारघों । बुध होण थायै छै, सूत्र मुख थकी बोसरी जास्यै तो धर्म किम चालस्यै । इम जाणो धर्म वृधनि मते ६८० वरसे पुस्तकारूढ ते पुस्तक उपर सूत्र चढायो । २७ पाट लमें सुध मार्ग चाल्यो ।

तिवारें पछे बारें वरसो दुकाल पड्यो । तिवारें घणा साधां संभारो करघो, आपणा कार्य सारधां । केतलाएक कायर यथा ते मोकसा पम्था । मेघबारी थया । दुकाल उतरधा पछे सुगल थया । तिवारें पछे ते लिंगधारीयें आपणा श्रावक आगल इम कह्यो— जे भगवंत तो मोष पोहता ते माटें भगवंतरी प्रतिमा करावौ जिम भगवत सांभरें जै थकी घणो लाभ थास्यै । तिवारें श्रावक लिंगधारी रों वचन मांनी देहरा उपभा घणा कराव्या । ठाम ठाम गांम नगर में पूजा प्रतिष्ठा घणी थई । जिन मुक्त पोहतां पछे ४७० वर्ष पछे भगवत नो साको बयो । तिवार पछे वीर विक्रमादित नो साको थयो । ५८४ वरसे पांचसो निनव गोष्टमाइल भगवंत पछे साध मांहेथो टलो नै विपरीत वरूपणा कीधी । निन्हव हुयो । ६०६ विगंवर धर्म नीकस्यो, तिन्हव हुयो । भगवंत ना वचन उभाय्या । नबाधंख बांध्या । ८८२ हे हरांनी थापना घणी थई । १००० पूर्व रो ग्यान रह्यो । पछे विछेद गयो । १००८ वरसे पोसाल महांणी । १४६४ बड गछा हुआ । गछ बोरासो बयांणी । पछे १६२६ पुनमीया, १६५४ आंचलीया, १६७० धरतरगछ, १७२० आसमीया । १७५५ तथ गछ पोसालमाहि घर आप आपणा श्रावक कीधा, गछना समुदाय कीधा । ते सिद्धांतना पाना हुता ते भंडारा में राख्या अने पोताने छावै घणी विपरीत जोड कीधी । ते जीव चितवें मन देहरे जाइउ । आस लणो कल सिंहने थाव । इत्यादिक सकाय जवन, चौपी, काभ्य, छंद, श्लोक, गायन, लेखना बाह्यत,

केलानी मत कल्पनाई हिंसा मइ धर्म प्रख्याँ । गुरुनी पूजा बोधी पूजाको
गोतम पडिगी, घमा श्रमण बोहरवा गुरु नै समेलीं करिबों । गाजावाजा
करी नगर माहि ल्यावणों । जर तेला करवा । गोला तेला, चंबण वाला ना
तेला, सभब डोवणा तेला, पंचमाजि उजमणा इत्यादि । घणी सूत्र विपरीत
परुपणा कीधी । पछे भंडारवा साख्खीना पत्र उदेइ पाघ्रा ते बाहिर काठ्यां
विचारघो । ए लिखण तो भला ।

पछे कोइ काल साध जे विरला विचारघा छ । अने इहां विरह
थयो दीसे छे । वेष धारीए लंका मूहती थावक कारकून छे ते उपाधे
आव्यों । तिवारें लिग धारीयां कह्यो जिन मार्ग नो काम छे । पाना
उदेही पाघा छे ते लिषाअें तो वारु । तिवारें लंके मूहते कह्यो-ते ल्योवों ।
तिवारे एक दतबेकाजरु नो प्रत, आयो । १५३१ सावत तिवारें भटनग्रह
उतरघों हुंतों । तिवारें लंके मूहते प्रत वाची विचारघो । श्री तीर्थ कर
तो बशवेंकालिक माहितो धर्म अहिंसा, तें दया, संयम, तप, धर्म कह्यो
छे । अने साधु ५२ अणाचार टालवा, ४२ दोष टालने आहार लंणों ।
त्रि विधे छकायनी दया पालवी । १८ दोष मांहिलो एक ही सेवें ते
साध पणा सु भिष्ट कह्यो । टाले ते साधवली भाषा विचारो नै निर्वद्ध
बोलवा आचार दृढ पालवों । गुणवंत गुरु नौ विनय करवों कह्यो छे ।
अने मिछूनां गुणकेहता ते वाची अतंत हिवें हव्यों । अपूर्व वक्त थाइ
इम विचारघों-बीर वचन जोतां ए' वेष धारी दीसे छे । दया धर्मनइ
साधनो आचार डांकी नै रहना हिंस धर्म नी परुपणा करइ छे । पीतें
मोऊला कया छे ते माटें एहनो हिमारु कहना ठीक नही । २५ उलटा
पड़े ते माटें बेवडो प्रत उतारीये । तो वारु, इम चींतवो सगलो बेवडो
प्रंत उतारी । ते-एको की आप राषी एके की तेहन बीधी । लंके मूहते
पोते घरे सूत्रनी परुपणा कीधी । तिवारें घणा भव्य जीब सांभलवा
लागा । घणा हलूकर्मो जीवने दया धर्म रहिवा लागों ते काले अरटवाडां
न बांधोया, ते संघ कगडीवें से जवाला गारा प्रभुष लेइ जात्रो नोकल्या
छे । बाटें भामटों हव्यों ।

तिवारें जे गाम माहि लंको मूहती दया धर्मनी परुपणा करे छे ।
ते-गाम भवे संघनो पडाव बंधों । तिवारें संघवीए खबर जाणी । जे
लंको मूहतो सिद्धीत बांधे छे । ते अपूर्व बांधी छे । इसे जाणी नै संघवी

घणा लोकां संघाते सांमलबा आख्या । तिवारे लंका मूंहता पासें बया
 धर्म तथा साधनो आचार धर्म सांमली नें संघबी ना मन मांही स्त्रियों ।
 तिवारें केतलाएक बिहाडा सांमलबा गया । तिवारें संघ मांही लिम
 भारी हुंता तेरां जाण्यो । जे लंका मूंहता पासें सूत्र सांमलबा जाएछें ।
 ते माटे संघबी पासें आया । संघबी ने कह्यो संघ आघो बलाबी ।
 लोक माहूयाए छें । तिवारें संघबी बोल्या-बाटें अजयणाछें । बाटें
 चूडेल प्रमुख घणा जीव थया छें । तेहणा रुपै तिवारें । ते गुरु बोल्या-
 साहजी धर्म ना काम मांहीं हिंसा नहीं । तिवारें संघबी मन
 मांही बिचार्यो जे हवा मे लंका मूंहता पासें सांमल्या छें । मेवधारी
 अनाचारी, छकायनी अनुकंपा रहित तेहबाज बीसैं छें । तिवारें तें जती
 पाछा गया । संघबी नें सिद्धांत सांमलतां बैराग उपनी । पैतालीस जणां
 सु संबत १५३१ संजम लीखो ।

साध सरवो १, साध भाणु २, साधु नुणु ३, साध जगमाल ४,
 प्रमुख ४५ साधरें मिलीनैं बया धर्म परपबा लागे । तिवारें घणा नव्य
 जीव बया धर्म आदर्यो । लू'का लू'का एहबो नाम लोकें दीयो । पछे
 वेध धारीए लोक घणा लू'का थया जा स्ये नें आपणो महिमा घटस्ये ।
 इम जाणो क्रिया उधार कीयो । १५३२ तथा क्रिया उधार कीयो ।
 आणंद विमल सूर हिंसा धरम परपी, घणा लोकां नें हिंसा धर्म प्रतमानी
 परपणा करी । तेपी बलीनया घणा बयाः । सं १६०२ आंचलीया
 कि २, सां १६०५ परतर क्रियानुधार करी कष्ट कीधा । हिंसा धर्म
 भाण्यो । घणा लोक लू'का हुंता था ते सुंसता पाम्या पछें । ते जतीयां
 जतीयां ना आबकां घणा साधा आबकां नें उपसर्ग दीधा । तेपिण उतम
 पुरुषां सम भावै सहना । बया धर्म थकी न चल्या ।

तिवारें पछे रूपो साह पाटण नों बासी, तिरों संजम लीखी । ए
 पहिलो पाट थयो । पछें सूरत नो बासी, साह जीवों पुन प्रकतीया हूभा ।
 तेजो रुपरिष कने दिण्या लीखी । ते व्यवहार सुख जाणबा । तथा पछें
 धानक सबोध सेवबा लागे । आहारनी बीनतीये जाबा लागे । बस्त्र, पात्र
 मर्यादा लोपी । आचारें डीला पम्या । पछें सं १७ नें आधे, सूरत ना

बासी. बोहरा बीरजी साहा, श्रीमाली बसा, लोकमें कोडीधज कहोजता । तेहनी बेटी फूलबाई तेरों लवजी साह नै पालबा लीधा हूँता । ते लवजी साहनै लंका नै उपाश्वे सिद्धांत बाच्या, बेराग उपनौ । आचारनी खबर पडी । बोहरो बीरजी कहै-लूँका नै गछ माहै ल्यौ तो आग्या बेड । तिबारइ अबसर जाणीं रिष वरजांग पास दिव्या लीघी । घणा सिद्धांत २०२३ लूँवगजि २०६५ अर्थ मथ्या । पोताना गुरु नै एकांत पूछौ । बस अध्य गणाय इत्यादिक हतौ आचार साधनौ छै तिम गुरु कह्यौ आज पांचमों आरो छै । तिवारे कह्यो २१ हजार बस लगै तीर्थ चालस्यै । तम्हे हिवडां स्युं कहनो छौ । अम्हे तो आत्म उधार करस्यै । तम्हे पणि गछ छोडी । ते कहै-छूट नही, तर रिष लरजी १. रीष भाण्यो २, सवीयो ३, ए तीनें गछ छोडी, फेर दिव्या लीघी । गांम नगराबिकें विचरी, घणा जीवन दया धर्म सुध धर्म पमाम्यो । लोके दूँडीया एहबौ नाम दीघो ।

पछे अमदाबाद कालूपुर ना साह सोमजी २३ वरसमे, ४७ वरस दिव्या पाली । ताड ताप सहना । काउसप्र कीषा । घणो पिरवार साधनो थ्यौ । पछे हरीदासजी १, पेमजी २, कानिजी ३. गिरधरजी ४, गछ लूँकामासुं निकल्या । वरसींगजी रा सुः कंवरजी रा सुं निकल्या ते कही ये छै— अमीपालजी १, धर्मसाहजी २, हरजीजी ३, श्रीपालजी ४, जीबौजी ५, इम घणा नीकल्या, दिव्या लीघी बली समर्थ जी १, टोमजी २, मोहणजी ३, सदानंदजी ४, वेदांजी ५, संघजी ६, आवि मणा गछ छोडी दिव्या लेई जिण धर्म दीपायौ ।

अने गुजरातका बासी धर्मदासजी पोतीयाबंध था ते पोतीबौ छोडी दिव्या लीघी । गछ छोडी नै आपणै मैलै घणां दिव्या लीघी । तिम धर्मदासजी पिरा आपनै मैलै दिव्या लीघी । घणा साधारों पिरवार हुषों । घणा बेरागी साधू हुषा । घणां जणां पोतीबौ छोडी साधपणो लीघी, जिणमारग दीपायौ । चिलत सिध नै ठामे आप धर्मदासजी धार नगर मै चौमासो मै संथारो कीबौ । चढतें परणामे ज्यांरा साध घणा गुजरात मै विचरता हुषा । साध धनोजी मालबाडो साबौर दिसी, तिणरा कामदार

वागा मूहता ना बेंटा । तिरां घणा हजारारी ममता छोडो, सगाइ छोडें नै पोतीयाबंध थया । पोतीयो छोडो नै धर्मदासजी कर्न बिध्यालेइमारवाड में बिचरधा । छतपुरी उबरात विगं ए त्याग कीयो । रात्रै बेंठा रहता घणा कालताइ एकंतर कीधा । पछे ६ मास बेलै २ पारणो करतां कह्यो-गोडा उतर दीयो दीसे छै । तरै साध बोल्या-स्वामी बेलो २ करोइज छौ । तरै पूज बोल्या—अब तो थामो धान धाम्रै तो धनो धान धाम्रै । बि दिनरो संभारो आयो ।

ज्यारै पाट पूज बुधरजी सामी नागपुरना वासी, पूं जातरा मूह-
णोत सजन पछे सोजत में थकां अस्थी नै बेटी घणो धन छोडो बिध्या लीधो । घणो तपसाडा तापना अभिग्रह कीधा । घणा जीवां नै प्रतवो धीया, दिध्या बीधो । जेणा रं तीन बहु परवार सिव्य हुआ-ते रुवनाथजी १, जैमलजी २, कुसलोजी ३ पंच महा व्रत धारी । नव विध ब्रह्मचारो, विसुद आहारी, उग्र बिहारी, छ कायना प्रतिपाल, सर्व जीवां ना दयाल, बहु सास्त्र संभाल कि बहुना गुण माल इत्या मोटा पुरस छै । तिरां पिरा घणो उछो जिरामार्ग नो कीधो । अने पुज्य बुधरजी घरमें थकां सुसकीधोथो संव १७१७, दिध्या १८०४ फा० सु १५ पछे संभारो धारयो थो । ते आगूंच मंडतं जोमासइ पांच २ नै छ छ पारणो करता । आसोज सुद १० परमाते पारणो लेइ गया संभारो करयो । साधां पिरा वा चारु धवी वै बार सावधान मन में जाणीयै । पछे ज्यारै पाट पूज्य रुवनाथजी नगर सोजत ना वासी । पाछली राते आगला पाछला भव जोवतां न सूर्ज तरै माता सां बडा उपर धरणो ते वरए एतलै । सं १७८२ बुध० पधारधा लोक जातां बेधो गया । समण्या तरै माता साधां कर्न जावनौ सूं सक रायो । तो पिण धर्म उपर गैरातें आवै १७ वरस व समण्या भोड करी पछे सं १७८७ वरस २२ में माता बेटा बेहु जणा बिध्या लीधो । घणा नव्य जीवानें जिनमार्ग आण्यो । पोतीय बंधनै सम-
तेरै पंथो नवा निनब उग्रा । तेह सूं बार २ घणो गांमे चरचा करी । मिध्यात उथापा, जिन धर्म नै दीपा, समान दुर्ग तप पुतानें आधार भूत घणां ना मिध्यात सल भेटए

(७)

मरुधर पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली में मध्यवर्ती विभिन्न घटनाओं का यथा प्रसंग वर्णन करते हुए भगवान् महावीर से लेकर तत्कालीन प्रमुख भूमि श्री सोमगुप्त जी महाराज (संवत् १९५७) तक के ८४ पट्टधरों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । देवर्द्ध सम्राज्यमत्त तक के २७ पाठों का वर्णन अन्य पट्टावलिओं के अनुसार ही है । बाद के २८ से लेकर ८४ तक के पट्टधर आचार्यों के नाम इस प्रकार हैं—२८-वीरभद्र, २९-संकरसेन, ३०-जसोभद्र, ३१-वीरसेन, ३२-वीरजस, ३३-जयसेन, ३४-हरिषेण, ३५-जयसेन, ३६-जगमाल, ३७-देवरिख, ३८-भोभरिख, ३९-किशनरिख, ४०-राजरिख, ४१-देवसेन, ४२-शंकरसेन, ४३-लक्ष्मीवल्लभ, ४४-राभरिख, ४५-पदमनाभ, ४६-हरिशरभ, ४७-कलशप्रभु, ४८-उमसेरिख, ४९-जपषेण, ५०-विजयारिख, ५१-दवरिख, ५२-सूरसेन, ५३-माहासूरसेन, ५४-माहासेण, ५५-जीवराज, ५६-गजसेन, ५७-भंभसेन, ५८-विजयसिंह, ५९-शिवराज, ६०-लालजी, ६१-ग्यानरिख, ६२-नानगजी, ६३-रूपजी, ६४-जीवराजजी, ६५-बड़ा वीरजी, ६६-लघु वीरसिधजी, ६७-जसवतजी, ६८-रूपसिधजी, ६९-दामोदरजी, ७०-धनराजजी, ७१-

चितामखाजी, ७२-खेमकराजी, ७३-धरमसिधजी, ७४-नगराजजी, ७५-जीवराजजी, ७६-धर्मदासजी, ७७-धनराजजी, ७८-शुद्धराजी, ७९-रुधनाथजी, ८०-जीवशचंदजी, ८१-तिलोकचंदजी, ८२-धनराजजी, ८३-दोलतराजजी, ८४-सोभाग्यमलजी ।

इस पट्टावली को सोभाग्यमलजी के शिष्य अमरचंद जी ने संवत् १९५७ आक्ख शुक्ला पृथिभा, शुक्लवार को पीपाड़ में लिपिबद्ध किया था । पट्टावली के अन्त में पूज्य श्री रुधनाथजी महाराज के शासनवर्ती १०५ भुनियों, तिलोकचंदजी, सोभाग्यमलजी व धनराजजी महाराज के विभिन्न शिष्यों तथा वर्तमान में प्रचलित स्थानकवासी परम्परा की सम्प्रदायों का नामोल्लेख मात्र है ।]

॥ ॐ नमः सिद्धं अथ पटावली लीयते ॥

श्री जेसलमेर ना भंडार मांहे थी पुस्तक तारपत्रां मी लध्याना, तीण मुजब ए पटावली परपरा ना पाटांनपाट उतारीया छे । तेनी बीगतः । चौथा धाराना पचोत्र बरष साडा आठ मास बाकी रह्या जब देवानंदा ग्रामणी ने माहा पुन्यने उबये गरम मांहे भगवंत आइने उपना ते गरम ने बयासी बीबस हुवा पछे तयांसी बीन नी रात्री हरणगमेची बेवताए क्षत्रीय कुडलपुर नगरना राजा सीधारथ तेहनी पटराणी ग्रीसला रानी ना उबर मां ते गरम मुष्यो । उपरला सधला बीबस गणतां बरा बरस वा नव मास बदीत हुवा पछे चैत्र सुबी तेरस ने सोमबारनी रात्रीए माता ग्रीसला ने पेदे कुवर प्रसव्यो जनम मोंछव नो वरण जंझुपनची जाणवो । रांणी ग्रीसला ने पेदे गरम रह्यां पछी तेहना घरमां धनधान आबेन सरबनी वृषी हुइ तेथी कुवर नु नाम वरधमान बोघोः ॥ बीजु माहावीर नाम पारवा नु कारण प्रसीध छे के वरधमान कुवर बाल श्रीरा करता हुता । ते सने तेमना बल नी परीक्षा करवा साब एक बलवान बेवता आव्यो । ते बेवता ने अने

वरधर्मानए बेने माहोमोहे जूध थयो । ते सभे वरधर्मान कवर तीण देवता नं बांधी लीनो । ते देवता ने माहा महनेत इंद्र तेने छोड़ाव्यो । ते दिवसथी माहा बलवान जांणीने ते कुवरनुं माहावीर ए नाम स्थाप्यो । तेहनो जनम कास्यप गोत्र ने, इक्षाग कुल मां थयो हतो ।

वरधर्मान कुवर सात वरष जाजेरा थया । तीबारे सुभ महुरत सुभ लगन मां सीधारथ राजा वरधर्मान कुवरने कलाचारज नी पासे पढवा मेल्याः तीन समय कलाचारज वरधर्मान कुवर ने प्रथम ॐ नमो सीधं तथा भले तथा क को तथा वाराषडी प्रारभ करावी । तीन समय पहेला देवलोक नो इंद्र सूधरमी समाने विषे सीगासण उपर बेठा हुवा चोरासी हजार समानीक देवता मुख आगले बेठा हे । तीन लाख छतीस हजार आतमरवी देवता, च्यार लोग-पाल, तेन्नीस गुरु स्थानीक । और पीण असंख्याता देवता का परवार सूः इंद्र समा मां बेठा । तीन समये सकंद्र माहाराजनो आसन कंय्यो । ते वारे अवध ग्यांन दीयो—जंबु दीपना भरत क्षेत्रमें क्षत्री कुंडलपुर नगर में वरधर्मान कुंवर ने कलाचारज पडावता देव्या । ते वारे इंद्र ने बडो अचरज उतपन हुवो ॥ ए अणग्यांनी पुरवनेः ए अंग्योनी सू भणावै छैः, तीबारे इंद्र माहाराज ब्राह्मण नुरुप करीने लोकामें भगवंतनी महोमा वतावा ने क्षत्री कुंडलपुर नगरमां आबीने कलाचारज ने प्रश्न पुछता हुवा ॐ नमो सीधं तथा भले क को एहनो अरथ कीम छै । ए ब्राह्मण नो वचन कलाचारज सुणी ने मन में प्रश्न नो जबाब देवीने असकत हुवोः । पछे वरधर्मान कुवर नो सरब अरथ समजाव्यो । तीबारे कलाआचारज वरधर्मान कुंवर ने पगे पड्यो । इंद्रपण आवी पगे पडाने गुणग्राम करया । इंद्र आपणो ठामे गयो । पछी कलाचारज ने बहु द्रव्य आपीने वरधर्मान कुवर पोछा घरे गया ।

वरधर्मान कवर सत्तरे वरषना हुवा जब विवाह हुवो । समर वीर राजानी यसोदा पुत्रि साथे पांणी ग्रहण कराव्यो । तेहनो आउखो नेउ वरसनो हुतो । वरधर्मान कवर तीस वरष गृहस्थाश्रम मां रह्यो । पछी संसार अधीर ने असार जांणीने त्याग करी न दीव्या धारण करी । ते ब्रह्मते समण भगवंत एबु नांन आय्यो । जे दीने भगवंत दीव्या लीनी ते बेने भगवंत ने खोखो ग्यांन उपनो । दीव्या लीयां रे बाब साडी बारा वरष ने एक पय सूधी छवमस्त रह्याः । छवमस्त पणा मां अनेक परीसाहा उतपन हुवा ।

सम प्रणामे सद्धा । अनेकांत तप करीने अपरमावपणे रहूनि केवल ग्यांन उत्तपन हुवो । केवल प्रज्या साडा गुणतीस वरष मे एक पयनणो पाली ने चोथा आराने अंते त्रण वरष साडा आठमास बाकी रह्या त्र पावा पुरीमां चरम....सो बीर प्रभू नो हुवो ।

अमण भगवंत श्री माहावीर सांमीने अंत समीपे एकवार शकंड देवद्वंद्व राजा बंदणा करीने प्रभू पत्ये कहेवा ग्या के हो भगवंत—तमारा जनम नक्षत्रे मत्स्य नामे ग्रह श्रीसमो बेहजार वरनी स्थीती नो बेठो छे: । तेथी करी तेनो प्रभाव कांड थासे । तिवारे श्री भगवंत बोल्या के हे शकेंद्र—मत्समग्रह बसवा थी बेहजार वरष में जेन धरमनी पुजा प्रतिष्ठा कम रहेसे न तीवारे पछे जेन मत ना साधु साधवीनी उदय उदय पुजा सतकार कम थासे । ए सग पडानी साव छै: । पावापुरी मां चरम चोमासो विर परभु नो हुतो । कातो वद अमावस नि आधी रातना माहावीर सामी निरवाण पोहोता । तीन समय अनेक मछर तथा डासांदीक नी उत्तपती बोलत हुइ । तिवारे सकेंद्र तथा अठारे देश का राजा गोतम सांमी प्रत्ये प्रश्न करता हुवा—के बीर प्रभू का निरवाण समये खूदरी तथा दुष्ट जीव की उत्तपती बोहोत हुई तेनू सू कारण । तेना उत्रमां गोतम स्वांमी सरव चतुरविध संघ प्रत्ये वांणी बावर्ता हुवा—के पंचमा काल में साधु साधवी आददेन चतुरविध सघने अनेक तरेहनी परीसा उपजावनहार मीध्याती खूदरी जीव समान घणा होसी । श्री भगवंत मोक्ष पधारीयां पीछे लारली डोढ पोहोर रात्री रही ते समय गौतम स्वांमीने केवल ग्यांन उपनी । भगवतना मुख आगल अगीयारे गणधर हुता । ते बुवादशांगी चउदे पुरवना धरणहार हुता । पहिला इंद्रभूती नामे । एहनो आउखो बाण वरसनो । बीजो अग्निभूती नामे एहनो आउखो छीमंत्र वरसनो । तीजा वायु भूति नामे एहनो आउखो: सीत्र वरसनो । ए तीन गणधर सगा भाइ हुता । एह गोतम गोत्री ना हुता । चोथा विकट स्वांमी नामे एहनो आउखे असी वरस नो । एहनो मारवाइ गोत्र हुतो: । पांचमा सूधरमा नामे गणधर । एहनो आउ० । एहनो गोत्र अग्नी वेस हुतो । ए पांच गणधरां ने पांच २ से शीष्य हुता । छठा मंडी पुत्र नाम । एहनो आउखो: ८३ वरसनो । वासिष्ठ गोतर हुता । सातमा मोरी पुत्र नामे । एहनो आउ पचोणु वरसनो,

कासब गोत्र हुतो । ए दोउ गणधराने साडात्रण सेह शीष्य हुता । आठमा अक्रमपित नामे । एहनो आउषो हटत्र वरस नो, गोत्र हुता । नवम अचलात नामे । एहनो आउषो बोहत्र वरस नो, हारिरया गोत्र हुतो । ए बे गणधर ने त्रणसे शीष्य हुता । दसमा मेतारज नामे । एहनो आउषो बाष्ट वरसनो, कोडिन गोत्र हुतो । अने अगीयारमा श्री प्रभुवा नामे । एहनो आउषो चालिस वरसनो, कोडिन गोत्र हुतो । दसमा अने अगीयार मा ए दोय गणधर ने त्रण त्रण से सीस हुता । सरब एकात्र अगीयारे गणधर ने शीष्य चमालीसे हुता । पेहेला अने पांचमा गणधर टालने, नव गणधर राजग्रही नगरीमा पाटुगमन संयारो एक भासनो करी ने मोक्ष पधारीया । इन्द्रभूतो नामे गोबर गाम ना वासी हुताः । तेमना पीतानो नाम वसुभूति हुतो । अने मातानो नाम पृथ्विसेना हुतो । गोतम स्वामी पचास वरष गूढाश्रम मां रहुया दिव्या लीनी पछे त्रीस वरष छरमष्ट रह्या । बारे वरस केवल प्रज्या पाली । माहावीर स्वांमीना निरवाण पछे बारे वर्ष पछी राजग्री नगरी मां निरवाण पोहोत्या । गोतम आउषो बोणु वरसनो हुतो ।

माहावीर स्वांमी ने पाट प्रथम पाट सुधरम स्वांमी वेठा । ए पहलो पाठ हुवो । सुधरमा स्वांमी कोलक गांममां जनम्या हुता । तेह गूढाश्रम मां पचास वरष रही ने दव्या लीघी । बेतालीस वरष दिव्या लीघां बाढ छवमष्ट रह्या । पछी अठ वरष केवल परज्या पाली । सरब सो वरष नो आउषो सुधरमा स्वांमी नो हुवो । वीर प्रभू पछी बीश वरषे नीरवाण थया ॥२॥ सुधर मा स्वांमी ने पाट जंबू स्वांमी वेठा, ए दुसरा पाटवो ॥ जंबू स्वांमी राजगरी नगरी ना वासी, काशप गोत्र ना शेठ रोषम वतने धारणी ना कुवर हुता । ते जंबू कुवर सोल वरष तो गृहस्थाश्रम मां रह्या । पछी सुधरमां स्वांमी पासे दीव्या लीनी । दीक्षा लीघां पछी बीश वरष छवमस्त रह्या ने चमालीस वरष केवल प्रज्या पाली । सरब आउषो जंबू स्वांमी नो असी वरष नो हुवो । विर निरवाण हुवां पोछे चोष्ट वरष लगी केवल ग्यान मरत क्षेत्र मां रह्यौ ने जब स्वांमी मोक्ष पधारीया ते बीन पीछे भरत्र क्षेत्र मां दश बोल बीछेद हुवा तेनी बीगत ॥१॥ केवलग्यान ॥२॥ मन प्रजब ग्यान ॥३॥ परम अवध्याग्यान ॥४॥ पुलाग लबध ॥५॥ आहारीक लबधि ॥६॥ उपसमसेण वपक सेण ॥७॥ जीन कल्पी ॥८॥ परीहार विमुच ॥९॥ सूक्ष्म संप्राय ॥१०॥ जयग्यात । ए तीन

चारीत्र एवं वश बोल बीछेइ गया भरत्र घेत्रमां ॥३॥ जंजू स्वामी ने पाट प्रमत्ता स्वामी बेठा, ए तीसरा पाटवि ॥ प्रमत्ता स्वामी ते कात्यायान गोत्र ना हुता । तेहनो तीस वरष गृहस्थाश्रम मां रह्या । चमालीस वरष समान प्रज्या पाली । अने इग्यारे वरष आचारज पदे रह्या । तेहनो सरब आउषो पंच्यासी वरष नो हुबो । बीर पछी पीचंत्र वरषे देवगत हुवा ॥७५॥४॥ प्रमत्ता स्वामी ने पाट सीजंमत्र स्वामी बेठा, ए चोथा पाटवी ॥४॥ सिजंमत्र स्वामी ते राजगृही नगरी ना रहेवासी, अने वातसयन गोत्री ना हुता । अठावीस वरष गृहस्था मां रह्या । अमीयारे वरष समान प्रवरज्या पाली । अने तेवीस वरष आचारज पदे रह्या । एवं चोतीस वरष बीध्या प्रज्या पाली । तेमनो सरबर आउषो बासठ वरस नो हुबो । बीरना नीरबाण पछे अठानु वरष स्वरग पद पांम्या ॥६८॥५॥ सिजंमत्र स्वामी न पाट जसोमद्र स्वामी बेठा ॥५॥ जसोमद्र सांभी, हस्त नागपुर ना रहबोसी हुता । ते अनोतू गयायन) गोत्रना हुता । बावीश वरष गृहस्थावास मे रह्या । चउदा वरष समान्य प्रवरज्या पाली ने पचास वरष आचारज पदे रह्या । एणी रीते चोष्ट वरषे बीध्या पाली । तेमनो आउषो छियासी वरस नो हुबो । बीरना नीरबाण पछी एक सो ने अडतालीस वरसे स्वरग पद पांम्या । तेमना सीष्य बे हुता । तीणांरा नाम संभूत विजय १ अने मद्रबाहु ॥२॥१४८॥५॥ जसोमद्र स्वामी ने पाट (संभूत विजय स्वामी ने पाट) संभूत विजय स्वामी बेठा ॥ ए छटा पाटवी ॥६॥ संभूत विजय स्वामी ते राजगृही नगरी नां रवासी हुता । तेहनो मांटर गोत्र हुतो । ते बेतालीस वरष गृहस्थावास मे रह्याने । चालीस वरष समान प्रवरज्या पाली ने अठ वरष आचारज पद रह्या ने एवं अडतालीस वरष बीध्या पाली । तेमनो सरब आउषो नेउ वरषनो हुबो । बीर नीरबाण हुवां पछी एक सो ने छपन वरषे स्वरग पद पांम्या ॥१५६॥७॥ संभूत विजय ने पाट मद्र बाहु सांभी बेठा, ए सातमा पाटवी ॥७॥

मद्रबाहु स्वामी ते प्राचीन गोत्र ना हुता । ते पताली वरष गृहस्थाश्रम मां रह्या । सतरे वरष समान्य प्रज्या पालीमां पीछे चउदे वरष आचारज पदे रह्या: एवं इकतीस वरष बीध्या पाली । तेमनो आयुषो छियंत्र वरषनो हुबो । बीरना नीरबाण पिछे एकसो सीत्र वरषे स्वरग पद

पांम्या ॥१७०॥ भद्रबाहु स्वामीनी वारानी हकीकत । चंद्रगुप्त राजाने
 सोले सूपनां नो निरणय । भद्र बाहु स्वामी एक रोयोन पंचम काल नो
 स्वरूप बधो बतायो । तेनी साध व्यवहार सूत्र नी चुलका मा छे । बंध
 गुप्त राजाने प्रतिबोध बीधो न तेमने बीध्या बीबी । ते राजा बीध्या पाली
 स्वरग पद पांम्या । बिरना नीरबांण पछे । एकसो सीतर बवं ताहि ।
 मंडलीक तथा माहा मंडलीक राजा भ्रावदेन बीध्या लीनी । त्यारे बाब
 राजा नी बीध्या बंध हुइ । भद्रबाहु स्वामी चउदे पुरवना जाणकार हुता ।
 भद्र बाहु स्वामी ना वषतमां एह पली..... काली पडी बारे वरष
 नो माहा मोहोंटो कुकाल पड्यो हुतो । तीन समये घणा साध साधवी ने
 लुध्या नो परीसा घणो हुवा ना जोगथी अनेक सासत्र अणवानो उदम बग्यो
 नहि । तेथो घणा सास्त्र विसरजन हुवा । घणी बीछा बिछेद हुइ । तेमां
 साधु साधवी श्रावक श्राविका ने पण संकट घणो पडीयो हुतो । ते बुकालना
 समय मां पाडलीपुर सेहेरने बिषे श्रावक संघ एकठो थयो । अने अघेन
 उदेसीदीक भेलवा मांडीया । पण तेमांना कतेलाक मोल्या नहीं । तेथी
 च्यार संग मोलने बिचार करियो । पोछे इम बोलता हुवा के नेपाल देसमां
 भद्रबाहु स्वामी चउदे पुरबीक साधु छे । त परथी तेमने बोलाववा सार
 बे साधु ने मोकल्या । ते साधु वां त्यांजइ ने भद्र बाहु ने बे हाथ जोडी ने ।
 बंधणा करीने कहवा लागाः क पाडली पुर सहरे मां आपन संघ बोलावे
 छे । तीवारे पोते ध्यान घरी कहा-के बारे वरषनो माहाकाल छे । हमणां
 हु आवीश नही । विण सरब देस मां सूषसाता हुसी । अ आवसू ने सुम
 असुमना अरथ ना नीरणो करसू । ए वीचन सूणो ने साधू पोछा गया ।
 तीवारे पछे बारे वरस नो काल बडीत हुवो । सारा देसने सूषसाता हुइ ।
 अ पोछे भद्रबाहु स्वामी पाडलीपुर मा पधारीयां । च्यार सीध एकठो
 करीने । साधु साधवी अघेन उदेसा विसरजन हुवा । ती के सरब सूष कराया
 ॥८॥ भद्र बाहु स्वामी ने पाट धूल भद्र स्वामी बैठा ए आठमा
 पाटवि ॥८॥

धूल भद्र स्वामी ते पाडलीपुरना वासी हुताः । ते गौतम गोत्री ना
 हुताः तेमना पीतानो नाम सकडाल हुतो । ते श्री संभूतविजय नां सीध
 हुता । तीस वरष गृहस्थाश्रम मां रह्या । चौविस वरष समान प्रवरज्या
 पालीः । पतालीस वरष आचार्य पद रयाः एणी रीते गुणत्र वरस बीध्या
 पाली, सरब आठवा नीनांणु वरसनो हुवो । बिरना नीरबांण पछे दोयस

ने पनरे स्वरग पद पांम्या ॥ २१५ ॥ ६ ॥ बलमद्र स्वांमी ने पाट
 आरज माहागीरी स्वांमी वेठा, एनवम पाटवी ॥ ६ ॥ आरज माहागारी
 स्वांमी । तेह्नों बासोष्ट गोत्र हुतो । तीस वरख गृहस्थाश्रम मां रया
 ने चालीस वरख समान प्रवरज्या पाली ने । पोछे त्रीस वरस आचारज
 पद रया न सरब सीतवर्ष दीध्या पाली । तेमनो सरब सो वरख नो आउषो
 हुतो । विरना नीरवाण पछे दोयसे ने पताली वरस स्वरग पद पांम्या
 ॥ २४५ ॥ १० ॥ आरज माहागीरी स्वांमी न पाट बलासीह स्वांमी पाट
 वेठा ए बसमा पाटवी ॥ १० ॥ बलसीह स्वांमी ते व्याघ्रपात गोत्र हुता ।
 ते एकतीस वरख गृहस्थाश्रम मा रह्या ने तीस वरस समान्य प्रवज्या पाली
 ने । पंतीस वरख आचारज पदे रह्या ने पंष्ट वरख दीक्षा पाली एवं सरब
 आयुषो छिन्न वरखनो । वीरना नीरवाण पछे दोय से ने असी वरखे स्वरग
 पद पांम्या ॥ २८० ॥ ११ ॥ बलसीह स्वांमी न पाट सोवन स्वांमी एह नो
 दुजो नांम सुहस्ती छै तै पाट वेठा ॥ ए इग्यारमा पाटवी ॥ ११ ॥ सोवन
 स्वांमी ते बाइस वरस गृहस्थाश्रम मां रया ने छतिस वरस समान्य प्रज्या
 पाली । अने बावन वरस आचारज पद रया । सरब अटोयासी वरस दीध्या
 पाली न सारब आउषो एक सो बस वरसनो । विरना निरवाण पछे । तीन
 से बतीस वरखे स्वरग पद पांमीया ॥ ३३२ ॥ १२ ॥ सोवन स्वांमी ने पाट
 स्यामा आचारय स्वांमी, एह नो दुजो नांम विरख सीह स्वांमी, तीस रो
 नांम इन्द्रन स्वांमी पाट वेठा ॥ ए बारमा पाटवी ॥ १२ ॥ स्यामा आचार्य
 स्वांमी तीस वरख गृहस्थाश्रम मा रह्या ने अठतालीस वरस समान
 प्रज्या पाली । पोछे छमाली वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या वोणु
 वरस पाली । तेमनो सरब आउषो सवा से वरसनो । विरना नीरवाण पछे
 तिनसे छियंत्र वरसे स्वरग पदे पांम्या ॥ ३७६ ॥ १३ ॥ स्याम आचारय
 स्वांमी न पाट सडिलाचारज तथा एह दुजो नांम अरजदीन स्वांमी पाट
 वेठा ॥ ए तेरमा पाटवी ॥ १३ ॥ आरज दीन स्वांमी तेह्नों गोतम गोत्र
 हुतोः । ते पचास वरस गृहस्थाश्रम मां रया ने बाबीस वरस समान्या
 प्रवज्या पाली । पोछे तेतीस वरस आचारज पद रया, सरब पचावन वरस
 दीध्या पाली । तेह्नों आउषो सरब एक सो पांच वरस नो । वीरना
 नीरवाण पछे व्यारसे नव वरसां स्वरग पद पांम्या ॥ ४०६ ॥ १४ ॥ आरज-
 दीन स्वांमी न पाट जीतधर स्वांमी पाट वेठा ए ॥ १४ ॥ पाटवी ॥ जितधर

स्वामी ते नव वरस गृहस्था आश्रम मां रह्या ने अठारे वरस समान प्रवरज्या पाली । ने पतालीस वरस आचारज पद रया । एवं तेष्ट वरस दीध्या पाली । तेमनो सरब आउषो बहोत्र वरसनो । बीरना नीरवाण पछे च्यारसे चोपन वरसे स्वरगवास पांम्या ॥४५४॥१५॥ जीतधर स्वामी ने पाट अरज समुद्र स्वामी पाट बठाए १५ मा पाटबो ॥ अरज समुद्र स्वामी ते सोले वरस गृहस्था आश्रम मां रया ने सतावीस वरस समान प्रवरज्या पाली । पोछे चोपन वरस आचारज पद रया न इकीयासी वरस दीध्या पाली ने सरब आउषो सतांणु वरसनो । बीरना नीरवाण पछे पांचसे न आठ वरसां देव गत हुवां ॥५०८॥१६॥ अरज समुद्र स्वामी ने पाट नंबिला आचारय स्वामी एहनो दुजो नांम वैर स्वामी पाट वेठा ए सोलमा पाटबो ॥ बहर स्वामी नूवन गांम मां जन्म्या हुता । तेहनो गोतम गोत्र हुतो । ते नव वरस गृहस्था आश्रम मा रया । तीन वरस समान प्रवरज्या पाली पछे । तयासी वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या छीयासी वरस पाली । सरब आउषो पचांणु वरसनो । बीरना नीरवाण पछे पांच से इकाणु वरसे देवगत हुवा ॥५६१॥

अथ वैर सांमीनि कथा लीषंतो । जंबुदीपना भरत क्षेत्र मां नूववन गाम हुतो । तीहां धन गृही नामा सेठ हुतो । तीणरे सुनंदा नामे अस्त्री हुतो । ते अस्त्रि ने आसा हुती । ते समे धनन गृही नामे सेठ दीध्या लेने गुरु साथे बिहार कीधो । पोछे ते अस्त्री ने पुत्र हुवो । तेहनो नांम मनदिला नांम कुवर दीधो । ते कवर भास ६ नो थया । तीवारे कुवर ने जाति समरण ग्यांन उपनो । तीवारे आपणो पुरव भव संभाल्यो । तिवारे बालक वोहत रुदन करिवा मांडयो । ते रुदन करी माताने बोत दुष बेवे । माता दुष सू बोत काइ होगइ । तिवारे गांमानुगांम बिचरता माहाराज आरज दीन पधारिया । पोछे गोचरी बजते धनगोरी मुनि ने आग्या दीनी के तंमे गोचरी जावो । त्रे तमने सचीत तथा अचित्त बोहोरावे ते लेता आबजे । तिवारे धनगोरी मुनी वचन प्रमाण करीयो ने गोचरी पधारीया । ते गोचरी करते करते जीन घरसे आपनी कल्पा हुता । तिण घरे आप आया । सुनंदा ए पोताना पती मुनी ने ओलवतां बोत रीस चढो । पेली तो बालक सूपीजी हती ने पोताना पती ने वेषी ने मोह करम सू रीस बोत चढीने । तेने बसते बालक ने पात्रा मां बोरायो । ते लेइन गुरु

पासे आबीने सुप्यो । तेबारे बालक रोहतो रही गयो ने संतोष पाम्या । ते बालक ने सुनंदा नामे मोटी आबका ने सुप्यो । तीन पाली पोसी मोटो कीयो । ते बालक नु नाम बहरीलाया तीनसु बहेर नाम दीयो । ते बालक नव बरसनी बयो । जीणी ने माता सुनंदा ए ते पाछो लेवा जधरो करीयो । समसत संघ मलीने कहु के ए बालक ने बेराबीया तेथी ते दीप्या लेसी । तमारो नथी ।

बो जणा लडते लडते राज मे गया । ते राजाने विचार करीयो के ए न्याय कह तो आपणे नुकसान नो कारण छै । राजा ए उतपात बुधी करीने । बालक बेहर कुवर पासे नीचे मुजब न्याव कराव्यो ।

राजा एक कानी भोगा पात्रा लाबी धराय दीना ने एक कानी एक कन्याने सणगार कराय उमी राखी । बेहर कुवर ने राजा हुकम दीयो के—नुमारी इच्छया, भोगा पात्रा लेबानी होय तो साधपणो लेवो परसे, ने जो तमारी इच्छया कन्या लेनी की होयतो संसार मी रवो पडसे । ए बोय बचन राजाना सांभलीने बेह कुवर एक बम उठीयो ने भोगा पात्रा ने गृहण करीयाः । तिवारे राजाए तेनी माताने समजावि कए । छोकरो तो संजम लेसी । ए समजावो माता ने घरे भुकी । ते बालक नो भोछव मोहटे मंडाण करीने । चतुरविध संघ तथा राजा भीलने दीक्ष्या बीराबी ॥ बेर स्वांमी ने पाट नागहस्ति आचारज पाट बेठा एहनो बुरो नाम वज्रसेन स्वांमी ॥ पाट बेठा ए सतरमा पाटवी ॥१७॥ वजरसेन स्वांमी, ते कोसीस गोत्र ना हुता, ने बस बरस गृहस्थ आश्रम मां रया ने सोले बरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे तेरांगु बरस आचारज पद रया । सरब दीप्या एक सो नव बरस दीप्या पाली ने सरब आउवो एक सो ने उगणीस बरस नो । बिरना निरबांण पछै । छसेन चोरासी बरसे स्वरग पद पाम्या ॥६८४॥ हुवा ॥

वजरसेन स्वांमी ना बारा मे जेज काम हुवा तेहनी हकीकत लीयंते ॥ बिरना नीरबांण सू छ से न नव भरसां (बरसां) पीछे डीगंबर मत नीकल्यो । तेहनी हकीकत आगे आबसी । बीरना निरबांण सू छ सो नबीस बरसां सू बारा काली परी । ए बूजो बारा काली जांणवी । बारा बरब मां बीलकुल बरसाब हुबो नहि । धरा लोक आकुल व्याकुल थया । जेम उछे पाणी मे माछला टलबले तेम धन पांणी बिगर भाणस टलबलवा लागे । एहवा बबतमें धरा साधु साधवि ने सुजतो आर पांणी नो आचार्य

ने साधु ने सांसा परीया । तीण सभे माहापुरष आतमा भरखी । कीरीयापात्र ने सुजतो आहार पांणी नो जोग देव्यो नहि । तिबारे सात से हने चोरासी साधु जुबा जुबा ठीकाणा संधारो करो देवलोक हुवा ने भ्राधक हुवा, केइ कथर बया । ते तिणां सूं संधारो थयो नहोः । परीसोहो धम्यो नहि । जाबायी मोकला पडीया । केइ माहापुरष स्मरथवान हुता ते बधत दश पुरबनी बिद्या थी बेबी ने बारा कालीनी हव छोडी । प्रवेश कांणी बिहार कोषोः । ते बध्या ने जे बाकी रह्या ते भीष्ट हुवा । लुध्या धमी शक्या नहि, सुजतो अन पांणी मोले नहो । कदाच मोले ता मिथ्यारी रस्ता मां खोसी लेवेः । साधु ने आहार हाथ लाग सके नहि । तिबारे साधु साकरी डांगां हाथमां राखवा सरु करीने । कटलाक साधु ए नबी जूत्तो करी । इण मुजब हाथ मे मुखपती राखनी सरु कीनी ने । भोगानी डांडी छोटी राखने उधाने छाने राखवा लाग । एक पचेवरी महि डांडी बांधवा लाग । उपर बुजी पीछेवरी उदवा लाग न आहारनी जोली पीछेवरी माह राखने हाथने आंटा देवा लाग । पातरान तथा लोटने मटकीने डोरां बांधवा लाग । माये पचेवरी उठव लाग । ए आदेन अनेक नबी जुगत करवा लाग । आहार ने निमतेः आधाकरमी असूजतो आहार आवदे न सरब वस्तु दोषीली भोगवा लाग । तीण सभे साधु ने सुजतो आहार पांणी मोले नहि । तीणसु बुबी हुवा तेथो संसार मे पेट मराइ करवा लाग । आप आपना नामना मुकामे रह्या । जंत्र मंत्र ओषध वेधद जोतक करवा लाग । लाग-धारी बेस थया ते छतां पेट पुर आहार ना सांसा परीया ने लोकाना संकट नो पार न रह्यो । गरीब ने श्रीमंत सरीषो दुष परीयो । पैसा धरचतां पण अन न मोले ।

तेबा समय मां जितशत्रू राजा नी राजग्रहि नगरी मां एक जोनबत आवक बसतो हुतो । तेहना घरमां तेहनी थी (स्त्री) नु नाम इभोरी हुतो । सीयल करी सोभायमान हुतो । तेहना घरमां पुत्र पुत्री नो पीरवार बहु हुतो ने तेहना घरमां द्रव्य बहु हुतो । दुकाल ने लीधे तेहना घरमां अन नो टोटो बहु परीयो । अने कुटुंब परवार बहु पीरा पामबा लाग । तीबारे सेठाणी सेठ परते कहवा लागी क घरमे अन बोहत कम रयो छे । ए बचन सूजीने सेठ कहवा लाग अले जित्रे काम चलाबो । द्रव्य साथ अन न मोले सरम हँजसो अबसर देव्यो नहि । सेठ दलगीर होकर इम कहवा लाया के राबरी करीने महि जहर धाली ने सगला पीने सूयरो । इसो बोचार करीने

सेठ जहर मंगाइ ने बांटवा लाया । तीन समय एक भेषधारी आहार लेबचने आयो । सेठ कहे कछु राब इए ने देवो । अरे भेषधारी बोलीया के तमे सू बोटे (बाटो) । अरे सरब हकीकत कहि । तरे भेषधारी कयो के म गुरु के पास जाइ करके पीछो घ्राउ जित्रे तुमे धवो । इतरो कहि ने गुरु पास आकी ने बोल्यो । सरब समाचार कया । गुरु सुण न बिचार करियो । आपखे तो आचार मे ढीला छो ने । आपखे बुधमलीन होय गइ । इण बातरी तो वजर स्वामी न खबर होसे के उवे पुरबधारी छेः । इसो बीचार कर भेषधारी वज्र स्वामी के पास आयने सरब हकीकत कहि । ए बात सुणने वज्र स्वामी सूरत ग्यान सू देव ने सेठ ने घर आया । ते वजर स्वामी ने देव न आवक आविका अत्यंत राजी थया । अने चितवीत अने पात्र ए त्रणे परी पुरण थया । एवो जाणी ने पेली राबरी सूध हती ते पुरण भाव थी मुनि ने अरपण करी । ती बरे मुनिअ बोल्यो के तमे सू दुखी उदासी मां केम छो ने आ वाटका मां कांइ घोली छो । तिवारे आवक इम कहवा लागो के । अन वगर अमारा थी रहेवातो नथी । अने दुकाल नो संकट सहातू नथी । ब्रह्म खरचता पण अनाज मलतो नथी । ने माहामेहनते लाष रुपी-यानो सवासेर अनाज मीलीयो छं । ते माट जीववा करतां मरबु मलु । एम धारी मरबानी तयारी माटे बिष खावा नी तयारी करी छे । पछे मुनिअर आ बात सांभली, दया अपनी तेथी सेठ प्रत्य इम बोल्यो—एतला अबारु मरो छी तो तूमाने सराने जीवाउ । मने कांइ देसां । पाछो सेठ बोल्यो । तुमे कहो सोइ देसां । जदी बोल्यो तुमारे बेटा घणा छेः । ते माहेषी च्यार बेटा अमने देज्यो । सेठ कहे तुमे लेजो, पण जीवता राषो । गुरु कहे दोए सोरा सात दीन काढो । आजथी सात दीन पछे । उत्र दीस थी बंलायत माहेसू धाननी जाजां आवसी । देसमा सूकाल सुं पुरण होसीः । सेठ वचन प्रमाण करीगो । ते सात दीन बीत्यां पछी । आठमें दीन उत्तर दिशमां सू अनेरी बीलायत मां सू जीहांजां मां जवार आदबेन अनेक जातना ध्यान आध्या । शेर जवारी ना सेर मोती लीघा । ए रीते भाव थइने सरब धान विक गयो । काल नीकलीने परम सुगल थयो । अरज देसनो धन हिरो पनो मांणक मोती जवरात आदबईने बीलायती लोक धान आपिने । धन सू जाजां मरी ने लेइ गया । भरत वेत्र अरज देसमां मगधा आदबेन देसमां अनेक कला आहूती तीकां ने नांकर करीने पोता ने देश ले गयाः । तेथी आपणा देशमां धन नो टोटो बोत हुबो । तेथी कला जाती रहि । संपुरण सुगल हुबो । सरब देस मां सारी बातनो आनंद थयो ।

जबि शेठजी ने इकवीस बेटा हुता । सारा पुत्रां ने घहणा कपरा
 पहरावी ने जोनवत सेठ आपरे साथे लेइने वजरसेन स्वांमी कने आया ।
 इम बोल्या । ए मां थी च्यार पुत्र आछा होय सो आपल्यो । तिवारे वज्ज-
 सेन स्वांमी च्यार पुत्र लीधा । ते पुत्र ना नाम । १ नगजी २ नागोदरजी
 ३ नदमति ४ वियज्ञधर । च्यार पुत्रां ने दीव्या आपी । थोडी मुदत
 मां अनेक सास्त्र ने बिधे कुसल थया । पछे वज्जसेन स्वांमी सुभ क्रीया करी-
 सलेषणा संधारो करी देवलोक थया । वज्जसेन स्वांमी ना च्यार सीस हुता
 तीणरी च्यार साखा हुइ । तेहना नाम । १ नंगीइ साषा । २ चंद्र साषा
 । ३ निवृत साषा । ४ विद्याधर साषा । इन साषाओं से पहिलि वारे
 वरसनों: तथा सात वरसनों काल पडोयो । तिसके बाव यह शाषा निकली: ।
 ओर परदेसा में साधु हुता । तिके पाछा आयाने अवे डीला परीया । तेहने
 उपदेस दीयो । तिके हलू करमी हुता । तीके पाछा संजम ले सूध हुवा ।
 च्यार साषां मां सू दोय तो दीगंबर म मीलीया । दोय तो सीतंबर म रह्या ।
 जे सूध न हुवा तीके आचार मे डीला परीया । ते आपणी अजीवका नीमते
 नवीन मत चलायो । तीवारे लींघधारी आपणा आपणा आवक मत मां
 कीधा ने आवक ने एम कहवा लागा के श्री भगवंत बोक्ष पोहोता । ते
 माटे भगवंत नी प्रतमा तथा मंदीर करावां के आपणे भगवंत ने स्मरीय
 ने भगवंत नो नाम याव आवसे । एवी कल्पना लोक नाम तमा घाली ।
 घणो लोंम वतायो । तिवारे आवक लोंका लीगधारी ना उपदेस सांभली
 वचन मांनी ने भगवंत ना निरवांण सू छसे हने बयासी वरषे प्रतमा थपाणी ।
 विक्रम राजा ना समत सू चोके ने बारारे वरसे वैशाख सूव तीज ने बीन
 प्रतमा थपाणी । ते दीवस थि छतीस वरस सूधी एतले बारा वरस सू लेने
 अडतालीस री साल सूधी कागल उपर भगवंतनी तसबीर राषी ने पुजन
 करतां । ने तेमां केसर्ना छांटां नाषतां । तेथी तसबीर नो आकार ढकवा
 लागोय छे ।

लीगधारी रत्न गुरुए विचार करीयो के आपणो ओ मत चालसे
 नही । छतीस वरस सूधी कागल उपर तसबीर पुजांणी: । ते बीन थी
 काष्ट नी भगवंतनी प्रतमा करावी । समत चोकोने अडतालीस ना साहा-
 सुब ७ सातम थी काष्ट नी प्रतमा पुजणी सरु हुइ । सो गुरु पचस वरस
 तांइ पुजांणी । फेर लीगधारी गुरु ने विचार कीयो के काष्ट नी प्रतमाने

न्यीत्य नवरात्र बायी लीला तथा झाली रहे । तेथी लीलण कुंलण निगोव झाववा लागी । तथा लीलीने लीळे उवेइ लागवा मांडी । तेथी बीचार करीयो के झो मत चाले नहि । तबीस-वत चोके न सताण बारे वरस चैत सुब १० ने बीन मंदीरनी थापना पाषाणनी तथा धातुनी प्रतमा सरु कीनी । बेहरा तथा चेाला उंपासरा घणा कराव्या । पण लोक नवामतने लीळे घणा झावे नहि । तेथी प्रभावना तथा सांमी वत्सल करवा मांड्या । तथा भोज कांकने झनेके ग्रेहना नाटक करावा मांड्याः । तीबारे केटलाक लोक तो नाटक देखवा वास्ते केटला प्रभावना लेवा मांटे तथा केटलाक झावा वास्ते मतडाली लीळा । झनेक तरहनी पुंजा सरु हुइ । गांम २ मे नगर २ मे घणा बेरासर करावा उपवेस दीयो । घणा मोटा सेठीयां ने जोतक नीमत मंत्र जंत्र ना परचा बताबीने पोताना श्रावक कीधा । हिंस्या मां घर्मेनी परुपणा कीधी ने संग कडावाने झनेक जातनी सावज करणी सरु करि न, झसंजती नी पुजा ठेरावी नेः हंस्या धरम प्रगटीयो । झाठसेहने बयासी वरसे पंचम काल मे प्रगट भयो ॥१८॥

वजसेन स्वांमी ने पाट खेत गिरी स्वांमी पाटे बेटा ए—झगरमा पाटबी ॥१८॥ रेबंतगिरी स्वांमि झगतालीस वरस ग्रहस्था आश्रमा ना रह्या । पछे झटारे वरस समान परज्या लीने चोतीस वरस आचारज पब रह्या । ने सरब दीव्या बावन भरस पाली । सरब झाउवो तेराणु वरसनो हुवोः । बीरना नीरवांण पछे सातसेन झटारे वरसे देवलोक हुवा ॥७१८॥ १९॥ रेबंतगिरी स्वांमी ने पाट सीहगण स्वांमी पाट बेटा ॥ ए उगलीस मा पाटबी ॥१९॥ सीहगण स्वांमी ते पचिस वरस ग्रहस्था आश्रम मां रया । पीछे पनरा वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे बाष्ट वरस आचारज पवे रया । सरब दीव्या सीतंत्र वरस पाली । सरब झाउवो एकसोन बोय भरस नो । बीरना नीरवांण पछे सात सेन असी वरसे सूरग पब पांम्या ॥७८०॥ ॥२०॥ सीहगण स्वांमी ने पाट थंडिला आचारज पाट बेटा ए बीसमा पाटबी ॥२०॥ थंडिल आचारज ते बारे वरस ग्रहस्था-अम मां रया । पीछे संताबीस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे चौंतीस वरस आचारज पवे रया । सरब दीव्या झगष्ट वरस पाली, सरब झाउवो तीयोत्र वरस नो हुवोः । बीरना नीरवांण पछे झाटसे चउवे वरसे स्वरग पब पांम्या ॥८१४॥ ए २१॥ थंडिला आचारज ने पाट हेमवंत आचारज

पाट बैठे ए इकोसमा पाटबी ॥२१॥ हेमवंत आचारज ते इगतालीस वरस ग्रहस्था आश्रम मां रया । आठ वरस समान प्रवरज्या पाली । पछे चोतिस भरस आचारज पद रया । सरब दीध्या ब्यालीस भरस पाली । सरब आउषो तयासी भरस नो । बिरना नीरवांण पछे आठसे अठतालिस वरसे स्वरग पद पाया ॥८४८॥ ॥२२॥ हेमवंत आचारज ने पाट नामजिख स्वामी पाट बैठे ए बाविस मा पाटबी ॥२२॥ नामजिख आचारज ते उगणीस वरस ग्रहस्था आश्रम मां रया । पचिस वरस समान प्रवरज्या पाली । सताइस वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या बावन भरस पाली । सरब आउषो इकोत्र भरस नो । बिरना नीरवांण पछे आठसे पीचंत्र भरसे देवगत हुवा ॥८७॥ ॥२३॥ नामजिख आचारज रे पाट गोविन्दा आचारज पाट बैठे । ए तेइसमा पाटबी ॥२३॥ गोविन्दा आचारज ते इकतिस भरस ग्रहस्था आश्रम मां रह्या । सतरे वरस समान प्रवरज्या पाली । बारे वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या गुणतिस भरस पाली । सरब आउषो साठ वरस नो । बिरना नीरवांण पछे अटसे सत्यासी वरस स्वरगवास पांम्या ॥८८७॥ ॥२४॥ गोबदा आचारज रे पाट भूतिदीन आचारज पाट बैठे । ए चोविस मा पाटबी ॥२४॥ भूतिदीन आचारज ते अठतिस वरस ग्रहस्था आश्रम मां रया । उगणीस वरस समान प्रवरज्या पाली । सताबीस वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या छियालीस भरस पाली । सरब आउषो चोरासी भरस नो । बिरना नीरवांण पछे नवसे न चवडे भरसे देवगत हुवा ॥९१४॥ ॥२५॥ भूतिदीन आचारज रे पाट लोहगण आचारज पाट बैठे ए पचिसमा पाटबी ॥२५॥ लोहगण आचारज ते चोविस भरस ग्रहस्था आश्रम मां रया । पछे बावन वरस प्रवरज्या पाली । पछे अटाविस वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या असी भरस पाली । सरब आउषो एकसो च्यार भरसनो । बिरना नीरवांण पछे नवसे बबलिस वरस देवलोक हुवा ॥९४२॥ ए २६॥ आ लोहगण आचारज ने पाट दूससेन (दूष्यसेन) गणी आचारज पाट बैठे एहनो दूसरो नांव शूटील मुनिद्र आचारज पाट बैठे । ए छविसमा पाटबी ॥२६॥ दूससेन गणी आचारज ते पंतालिस भरस ग्रहस्थाश्रम मां रया । चोविस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे तेतीस वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या सतावन वरस

पाली । ने सरब आउवो एकसो ने दोय वरस नो । बिरना निरवाण पछे नवसेने पीचंत्र वरसे स्वरगवास पोहता ॥६७५॥ दुससेन गणी ने पाट देवाधी वमासमण पाट बेठा । ए सतावीस मा पाटवी ॥२७॥ देवढी गणो ते पनरेवरस ग्रहस्था आश्रव मां रया । पछे बावन वरस समान प्रवरज्या पाली । पछे बीतीस वरस आचारज पद रया । सरब बीठया छियासि वरस पाली । सरब आउवो एकसो न दोय वरसनो । बिरना नीरवाण पछे एक हजार ने नव वरसे देवलोक हुवा । सूत्र जिबाण तेहनी याव आ प्रमाणे उपरला सताविसमा पाटे आचारज देवद्विगणी थया । ते बिरना नीरवाण पछे ।

॥ गाथा ॥

वल्लहीपुर नयरे: देवदिय मुह सीसाण संघणे ।

पुछे आगम लिहिया: नवसे असीयाउ वीराउं ॥१॥

नवसेहने असी वरसे बलमीपुरमां सीधंत सूत्र लीषांना । त्यां सूधी एक पुरब नो ग्यान हुतो । तेहनी साध भगवतीसूत्र मधे बीसमे सतक आठमे उबेसे । श्री माहावीर भगवंत ने गोतम स्वांमीए पुछीयो क—हे भगवानं तमार नीरवाण पछि कीतना वरसे पुरब नो ग्यान क्यां सूधि रहसं ॥उत्र॥ भगवंत बोल्या—हे गोतम पुरब नो ग्यान एक हजार वरस सूधि रहे । भगवंतना निरवाण पछी नवसेहने असी वरस हुवा । ते देवाधी वमासमण आचारज एकदा प्रस्तावे सूठ नो गांठीयो लाव्या । आधमनी बसत चोविआर चुकावी ने गांठीओ खाम् । ते गांठीआ ने पोता न कांन मा राख्यो । प्रमादना जोगथी बाबणो विसर गया । बीन अष्ट होवानी देवसी परतीकमण करतां आब आयो । तीवारे ते गांठीयो परठी बीधो । पछी देवाधि गणी आचारज विचार कीधो के कांडक बुध हीणी थइ । तीवारे सूत्र मुख थकी बीसरसां ने ते विसरवा थो धरम नो बीछेव जवे । ते कारणे धरमबुधी होवांना नोमते बलमीपुरमे सूत्र लिषांया । आचारंगनो सातमो अध्यामं महाप्रम्या नामे । तेहना उहेसा १६ ते कांड कारण जाणी दिवढी लिमा समण लिख्यो नहि । ते बिछेयो । एठले भगवंत पछे नवसेहने असी वरसे पुस्तक लिखी जिया ते समत पांचे न बसा री साल में लीबाणा सूत्र ॥ अष्ट नीनवनी उत्पत्ती लीषंते ॥

महावीर स्वामी ने ग्यान उपनो पछे खबदे बरसे जमाखी उलटी परुषणा करवा मांडी । करेमाणं अकरे ए अथा नवीन स्थायी । १। महावीर पछे सोसे बरसे श्रीमगुप्त निनब थयो । ते एक प्रवेसी जीव भाप्यो । २। बीर पछी दोयसेने खबदे बरसे अवक्कावादी नामे नीनब थयो । ते सूत्र नमान ३ । बीर पछे दोयने बीस बरसे चोथो निनब सूत्रवादी । धरम पाप अने नरक स्वरग न मान तो एह नीनब ४ । बीर पछी दोय से न अटाबीस बरसे क्रीयावादी पांचमो नीनब थयो । एक समय मां दोय क्रीया मांनो । एवी रीते एक बीने बिहार करतां रस्तामां गंगा नदी मां पांणी बहेता मे नीकल्या ने पगां नी बगतली ठंडो बेणी । पछे ने आकासमे सूरजनी तप लागी । ते माथे एक समये वे परीसाहा उपज्या शीत अने ताप । एब नाम नमे एवो डोलो उत्तपन हुबो के एक समा मां दोय परीसा उपजे । एवी सरवा बेठी । पछे परुषणा करवा मां ते नीनब ५ । बीर पछे पांच सेहने चोपन बरसे रोहगुप्त तीरासी नाम नो निनब थयो । तिरणे तिजि रास थापी । तेनो अजीवनी अजिबनी रास बधारे थापी । ६। बीर पछे छसो न नव बरसे ने बीकम ना सबत एक ने उगणचालीस बरबे गोष्टमांहील नामनो सेसमल निनबे डोगबर मत थाप्यो ॥

॥ अथ दिगांबर मत की उत्पत्ती स्थेशरकन्धी साधुवां से है ते लिखंते ॥ श्री महावीर के निर्वाण पीछे नव ६०६ बर्स गये । तब सातमो महा निग्हव बहुत विसम्बादी शिवभूती बोटिक हुबो । रथवी पुर में दीपकोछांन आर्य कृष्णाचार्य समोसरे । तिन अवसरे एक राजा का शिवभूती नामें सहभ्रमल सूत्र राजा को बहोत प्यारा था । तिसने माता तथा स्त्रीसैं क्रोध कर श्री कृष्णा आचार्य पास दीक्षा लीधी । तब तिहासे और देसमें बिचरने लगें । फिर कितने क बरसां पछे रथबीर पुर में आये । तब राजा बंदनार्थ आय कर गुरां की आज्ञा सें शिवभूति को अपने घर लाया । पहिले विशेष राग करि के रतनकंबल दीधा । ते नेइ गुब पास आज्ञा दिखाया । गुरुने कह्य के यह वहु मोल का वस्त्र है । एह तुमको लेना जीव नहीं था । परन्तु अबतो तुम इसको अपने तरीर में धारण करो । आगे अंसा बस्त्र नही धारण करना । अंसा सुनते शिवभूति नमसा भाव सें घर लीया । कबी कबी पडिलेहुना करतां बेल कर खुसी होता

या । तब गुरु ने देखा के इसको रतनकंबल का ममता भाव होगया । तब गुरुने उसके बिना पुछे तिस रतनकंबल के खंड खंड कर साधवां को पम पुछने बास्ते बांटदी ए जब सिष्य बहोत फोष में हुया । परंत कुछ गुरुको केहू ने सबया । एक बासमें गुरुजी ने साधुवांके कल्प का व्याख्यान दिया । तिसमें ६ प्रकार के कल्प के साधु कहू बृहत्कल्प सूत्र से जान लेने ।

छविह्रा कप्पठिई पन्नता । तंजाहा समाइसं जय कप्पठिय
 ११। छे उवगणिय संजम कप्पठिए । १२। णिविसमाण कप्पठिई
 १३। निव्विडुकाईय कप्पठिय । १४। जिण कप्पठिई । १५। थेवर
 कप्पठिई ६ तिबेमी ।

इन छहों कल्पस्थिति की जुबो मर्याद है । जिसमें जिनकल्प का बर्णन करा की जिनकल्पी मुनी ८ प्रकार के होते है । तिनमें सैं सर्व उत्कृष्ट जिनकल्पपी मुनि के बो उपकरण हे । एक तो रजोहरण १। मुख पोतियं २ । जब सिष्य पुछने लगा की तुम घैसा मारग की जती क्यों नहीं करते । गुरुने कहाके जंबु स्वामी पछे १० बोल व्यवछेद होगये । यथा स्यात् चारित्र ११। सुषमं संप्राय चारित्र १२। परिहार बिभुद्धि चारित्र १३। परमावधिज्ञान १४। मनःपर्यायज्ञान १५। केवलज्ञान १६। जिन कल्प १७। पुलंका लवघी १८। आहारिक लवधि १९। उपसमसेण धपक सेण । १०। मुक्ति होवा १०, सो जिन कल्प मार्ग इस काल में नहीं । तब शिष्य ने कहा—क्यों नहीं । जो परलोकार्थी होय तो घैसा कठिन मारग धारण करे । सर्वथा परिग्रह रहित होय से ओष्ठ है । गुरुने उत्सर्ग अपवाद मार्ग बसाया । सिष्य प्रसें उक्त जो धरम उपकरण है से नही परिग्रह में, संजम निर्वाह धर्म है । तब सिष्य ने कहा के ये सब वस्त्रादि परिग्रह में है । गुरु ने कहा की—मुछा परिणाहो बुतो । ममत्व करे तो परिग्रह मे होय इत्यादि उपबेस माना नहीं । तब सिष्य ने कहा—तुमसे यह बुत फलता न ही, में पालूंगा । इस कह वस्त्र छोडी बीया । तिसकी बहन उतरा ने उनको बेस वस्त्र तब बीये । जब नगर में आहार के बास्ते आई तब एक यजिकावें उपर से वस्त्र गेरा तो उसका मन्मपणा दूर किया । भाई से कहा कि मुक्कको देवांगरा ने वस्त्र दिया है । जब भाई ने समज कर कहा के तु वस्त्र मे परंत इस कारण से स्त्री को मुक्त न होय । घैसा कथन

करा । तब शिवभूति के चेतने २ हुये कोटिन्ध १ । केष्टलीर २ । तब तिनकं सिष्य भूतिवल और पुष्पदंत ने श्रीमहावीर से ६६३ वर्ष पीछे ज्येष्ठ सुबी ५ के दिने ३ सास्त्र रचो । धवल नामा ग्रंथ ७०००० श्लोक प्रमाण, जय धवल नामा ग्रंथ ६०००० श्लोक कम हा । धवल नामा ग्रंथ ४०००० श्लोक । ए तीनो ग्रंथ करणाटक वेस की लिपी में लिखे गये । और शिवभूति के नग्न साधु बहोत से करणाटक वेसकी तरफ फिरते हैं । क्योंकि दक्षिण वेसमें शीत कम है । जब उनके मत की बृद्धि हो गई तब महावीर से १००० वर्ष पीछे इस मत के धारक आचार्यों के ४ नाम पर-सिद्ध किये नवीसेन वेवसिहने— जैसं पद्मनदि । १ । जिज्ञसेन । २ । योगिन्द्रदेव । ३ । विजयसिंह । ४ । इनके लगभग कुंदकुंद नेमचंद्र । विद्यानंदी । वसुनंदी आदि आचार्यों जब हुये तब तिनो श्वेतांबर की निष्ठा तथा हीनता करने बास्ते मुनी के आचार विवहार के अपने बुरी प्रमाणक छे क जिनबेण । क छे स्वकुं बृद्धि कर स्वमत कल्पित अपनेक ग्रंथ रचे । जिनसे श्वेतांबरों की कोई साधू न भनै । बहुत कठिन बूती बर्णन करी और विगांबरों ने अपने मन की उक्त से श्वेतांबर धर्म के प्रबलुणवाद करे । परंत सनातन धर्म श्वेतांबर का उत्सर्गापवाद मार्ग जाना नहीं । एकांतवादी होकर बहोत निष्ठा शास्त्रों में करी । सोइ इनके शास्त्र पर-सिध है जिसको संवेह होय वह वेस लेना । श्वेतांबर के शास्त्रों में इनके मत की कही निष्ठा नहीं । इस बास्ते निश्चं मालूम होता है कि श्वेतांबर मत में से विगांबर मत निकला । परंत इन विगांबर के ग्रंथकरताओं ने विगांबर मत के गुरु का विछंड कर दीया । क्योंकि एसी कठिन बूती पालने वाला भरत क्षेत्र के इस पांचमें आरे में हो नहीं सका । क्योंकि एसा संवेण अर्थात् बलघरक शरीर नही होता । और एसा तमें आरो का नहीं है । अब क्षेत्र काल नाथ की प्रपेक्षा नहीं जाणी । तब विगांबरों में कुंवाइ उत्पन्न भई । जब इनके ४ संघ हुये— काष्ठा संघ १ । मूलसंघ २ । मायुरसंघ ३ । गोप्य संघ । गो चमरी गायके बालों की पीछी काष्ठा संघ में रखते हैं । मायूर संघ में पीछी रखते नही और गोप्य संघ में और पीछी रखे और स्त्री को भी मोक्ष कहे हे । बस्की ३ में स्त्री मुक्त नहीं कहे । और गोप्य संघ वाले को धर्म लाभ कही । बाकी ३ धर्म बृद्धि कहे ।

अब इस पाँचवें आरमे इस मत के २० पंथी बार, १३ पंथी बा गुमान पंथी इत्यादि भेद बरतमान काल में बरत रहहें । तिनमें २० पंथी पुरान कहलाते हे बाकी दोनों नवीन कहलाते है ॥७॥

॥ तरेपंथ नी धर्म नी उतपती लीषंते ॥ बीरना निरवांज स्र बाइसे पिचियासी बरस गया तब आठमो मिषन नामे निनब हुबो । समत आठारन पनरारी साले पुज माहाराज श्री श्री रुगनाथजी स्वांमी ने शीष्य तेबीस हता । ते माहे सातमो सीऱ्य भीषन हुतो । तिवारे ते पुज्य माहाराज पासे ते बीध्या लेवा आब्यो । तीवारे अपलक्षण देवी ने पुज्य महाराज ना कह्यो । तिवारे पुज्य माहाराज ना शीष्य दूसरा नागजी स्वांमी हुता । तेमने पासे कालु गांममे समत आठारे सातरी साले बीध्या लीनी । भीषनजी पुज रुगनाथजी रो चेलो हुबो । आ बबर पुज्य रुगनाथजी माहाराज सांसली ने बहुसूरती पुरसा बिचार करीयो के पंचम कालमे ए मिषन मिध्यात गणो बधारसी । घणा जीवाने भीध्यात मांडवो बसे । पिण निश्चय नय मां मावो पवारथ कोइ टालवा समरथ नथी । समत आठारे तेरेनी सालमें भीषनजी ए जीनरी बने जिनपालनो । चोडालीयो नवो जोडीयो ने । ते पुज माहाराज ने बत्तायो । ते देवी ने पुज्य माहाराज फुरमायो के तेमां दब अबर परीयो छे ते अबर नीकाल दो । त्रे मिषनजी अहंकार आंणीने बोल्यो- के मारी जोडमा कुंण थोट काडे । एही मान आंणीयो पछे पुज्य माहाराज पासे समत आठारे तेरेनी साल नो चोमासो देस मेबार में राजनगर में करवानो आम्हां मांगो । त्रे पुज्य माहाराज फुरमायो के चोमासो करण रो अबसर नहि । पछे विण अग्या राजनगर मे चोमासो कीधो ।

ते चोमास मे एक बीन रे ससे पांणी बेहरी लाया । ते पांणी घणो उनो हुतो । ते उचारो रहि गयो । तेमां एक बैसुंदरी अचानक आवी परी । तिवारे नगजी स्वांमी ए कह्यो के तेने जतने काडो । पण पांणी घणो गरम हुतो । तेथी काढता पेहली तुरत बैसुंदरी पीरांण छोड्या । पछे नगजी स्वांमी कहो के पंचद्वीनी घात बड । तेतो बहु मोटो बोध गयो । तेनु प्रायचीत लो । त्रे भीषन बोल्यो मे एहने मारी नथी । तेनु आउवो छूटवाधी मरण पांम्यो । उबराजेबाबो कल जाती । आठारे पाब स्थानक ने सेबनहारने बचाबा में स्यो नफो छे । एही मान ने चडे अनारख बचन बोलवा लागो-

ने छोटी परंपरा करीके जीव मारतां ने बचावा नहि । चोमासो उतरीयो । पुज माहाराज पासे आया । तीबारे सरब बबर परीबाधी पुज माहाराज बीय बार परायचित् बीनो । पीण बील मांह सोभ हल छाडीयो नहि । तेथी पुज्य रगनाथजी माहाराज समत अठारे पनरारी सासे चेत सुद ६ ममीने बार अक्वार ने तेरा साधु ना परवार सू देस मारवारमें गाम बगडी सू ग्यारा कीबी । ते मांह थो दश साधु तो भीषन छोड़ने पाछ आया । वस सार्धामां सू छ साधू तो पुज्यजी माहाराज पासे आबीने प्राछत लेने सूच हुवा । ने माहाराज ने सांमल हुवा ने रूपचंदजी स्वामी ने जेठमलजी स्वामी ठाणे च्यार सू देस गुजरात तरफ बिहार करीयो । जुना २ भंडार मां सु पुसतक देखीं ने, बांकी ने ते मत छोटी जाणी ने समत अठारे ३६ नी सासमां तेरेपंथी नी सरदा मोसराइने पुज रगनाथजी महाराजनी अर्धा कायम करी । भियनजी पासे तीन साधू रया । जठा से तेरापथी नो मत चात्यो । ओर भद्रबाहु स्वामी ते सीधपावरीयो ग्रंथ बनायो । ते माकतो के पंचम कालमा पुज रगनाथजी नो चेलो मंथन हुसी अष्टमो निनव थासे ८ । बीजो । तीजो । चोथो । पांचमो । ए च्यार नीनव अंत समय सरधा मोसरावी ने माहावीर स्वामी ना वचन प्रमाण साचा सरध्याः । पहलो । छोटो । सातमो । अष्टमो । ए च्यार नीनव अंत समातक सरधा मोसरावी नही ने अनंत संसारी हुवा ।

पांचम नी छमछरी उथापीने चोथनी छमछरी थापी तेह नी व्याद ॥ प्रथम कालका आचारज भगवंत ना निरबांण पछे । तीनसे ने पतिस बरसां पछे पहला कालका आचारज थया । ने बीरना निरवाण मछी च्यारसेहने बावन बरसां पछे बीजा कालका आचारज थया । पांचमनी छमछरी उथापी चोथनी थापी तेहनी हकीकत । कालका आचारज पोतानी बेन जेनु नाम सरस्वती हतो । तीरो साधवी नी प्रज्या चारण करी । सरस्वतीजी साधवीजी बोत रूपवान हता । जेनो वरणव कर सकता नथी । सरस्वती साधवीजी गांमानुगांम बिचरता उजेथी नगरी पबारीया । ने उजेथी नगरीनो राजा गंधर्पसेन राजो हतो । ते सरस्वती साधवीने देखी ने मोहबित धाम्यो । ने साधवीने उचकायने आपणा मेहल मे बुलाय लीवी । अर बबर कालकाचार्य ने पडी । तीबारे कालका आचारज आबीने गंधर्पसेन ने मोहत सत्तजाव्यो । पिण ते समज्यो नहि ।

आपणी बेन ने छाडाबा लागा पण छूटि नहीं । कालका आचारज ने उत्तम विद्या याद हुति ने भेली विद्या बोल याद नहीं । तेथी भेली विद्या आमत उत्तम विद्या को जोर चालीयो नहीं । तीबारे कालका आचारज करणाटक बेश मे गया ने सात राजने प्रत्यबोध बेइ ने सात राजा ने जेनमत नी विद्या सीधाबी ने विद्या मां नीपुण हुवा । तीबारे सातबरस फेताने बेश पाछा आयाबानी तयारी कीनी । तीबारे सात राजा हाथ जोडी ने बोल्या । आप भमारा विद्या गुप्त छी । सो भमारा लायक काम करबाओ । तीबारे कालका आचारज कह्यु—के एक माह काम करो तो तमारी विद्या सफल होबे । तब ते राजा वचन कबूल करीया थी हुसम आप्यो—उजेणी नगरी ना राजा गंधरपसेन सु बुधकर भारी बेन मन सूप्रसत कराबो ।

तिबारे सात राजा लसकर लेइने कालका आचारज साथे बहिर हुवा ने उजेणी नगरी आबीने संप्राम मांडयो । तेमां भादबा सुद चोध आबी ने राजा ने कहरव्यो के भमारे पंचमी छमछरी छे । तीणसु लडाइ बंध राखो । ते वचन मानी ने संप्राम बंध राख्यो । पछे कालका आचारज विचार करियो के आपणे लडाइमां संजम जातो रह्यो तोहि पीण जेनमतनी सेली मे तो रह्यो छहिजे । पछे चोथनी छमछरी परकमी लेवी । एवो विचार करीने आपना परीवार मां चोथनि छमछरी करी । गंधरपसेन राजा निशंक रया तिवारे दगाथी पांचम ने बीन फौजलेइने बडोगया ने गंधरपसेन राजा ने मारीयो ने आपणी बेन ने छोडाबी पाछी लाव्या । पण सस्वतीनी सीयल धंडने न हुबो नहीं । कारणक गंधरपसेन राजा ए सर-स्वतीने चलाबीने अनेक उपाय कीवा । पीण सरस्वतीजी बल्या नहि । तेथी तेउ सीयल व्रत कायम रयो हुतो । चोथनी छमछरी भी कालकाआचारज ना केरायत मानी । केतलाक चोथनी मानी ने घणा जल्ले ते प्रमाण मांज—मांजा नहि ने तेथी एके मानी ने बीजे न मानी । तेथ चालतो हुबो बिरना नीरवाण पछी बसेह ने बीस बरबे लागधारी बीजी बारा काली मां थयो । तेमना रायतां ने बीर ना नीरवाण सुं नबसेन ने तेराणु बरसे । तथा समतने न्याय समत पांचे ते बीसनी साले तिसरा कालका आचार्य ने पांचम भी चोथनी छमछरी कायम करी । नबसे बोनु बरसे विद्या मंत्र लबबि बिछेव गइ । पीण छमछरी सूत्र ने आचारे जोस्तां असाइनी चोमासी सू बीन गुणपचास बीने छमछरी करबी । बगती सूत्रने चोमासी सू पाछला बीन गुणत्र तथा सीतर बीबसे छमछरी करबी । ए सीधांतां नो न्याय छे ।

बिरना निरबाण पछी नबसेहुने चोराणु वरषे पछी चउबसनी कायम करी
ने समत पांचे ने चोबीसमी सालमे पषी चउबसनी कायम करी ॥

॥ राजा विक्रम स्र वरणावरणी थपी तेहनी हकीकत लिखंते ॥
बिर प्रभू स्र च्यार से सितर वरसां पछे । पर दुष भंजन विक्रम राजा
यो । तानो सबत चलू करीयो । ते जेनधरमी हतो ने पर दुष भंजन केह
वरणो । तेरो वरणावरणी बाध्नी । वरणावरणि बाध्यवानो कारण एक
हेवाम छे । के तेना राजनगर मां वे शेठिया घणा रोधीबंत हुता । ते
माहे माहे पुत्रीनो संगपण करीयो पछी थोरा बीबसमां पुत्र ना बाप नोधन
हिराणो थयो । ए वधते निरधन लोकां ने उजेणी नगरी बाहिर बसता हुता
तेथी ते परण कोट बाहिर जइने बस्या । पिछे बीकरी ना ब्रष बिचार करीयो
के मारी पुत्री नीरधन रे गरे बेसू तो दुषी हुसी । अने नही परणावसू तो
ते राजा पासे पुकार जासे । ने राजा बिक्रम पर दुषन भंजन छे एटले
मने बीजे ठीकाणो परणाववा बेसे नहि । तीण स्र राजा बिक्रम न ए कन्या
परणावी देउ तो सधली पीरा टलजावे । एम धारी ने बिक्रम साथे पोताना
पुत्री परणावावाने ठराव करीयो । थोरा बीबसे लगन नो बीबसे मुकर
करी थापीयो । अने राजा बिक्रम ने परणावाने माट जान वनायने परणवा
चाह्या । तेथी उजेणी मां घवल मंगल होय रया छ । ए वारता सेठाणी
सांमली मारा वेटानी बहु राजा परे छ । एवो जाणी ने सेठाणी ने बहुत
दुष उतपन हुवो । रुदन करवा लागी । ए वारता राजा सांमली ने
बिक्रम ने बहुत सोक थयो अने पोताना प्रधान ने मोकल्यो ने । ते रुदन नो
कारण सेंठाणी ने पुछियो । तेनो उत्र न बीषो न जाजो रुदन करवा
लागी । तेथी परधाने बुलासा बिगर बिक्रम पासे गयो । अने सरब हकीकत
सूणीने पोते राजा बिक्रम बाइने जाय न कयो के कीण कारण तुमे रुदन करो
छे । स्र संकट छे जे होय तेमने कहो । हु राजा बिक्रम छ । सरब तारा
संकट टाल स्र । एवो वचन राजा ने सांमली ने ते बोली—हे प्रतिपाल
परदुषन ना भंजनहार राजा, तमे कीयां परणवा ने जावो । ते कन्या नो
संगपण मारा पुत्र ने साथे प्रथम करेलो छे । ते कन्याने आप परणवा ने
माटे भ्राज जावो छो । आपरी जान बेधी ने हु दुष कह छ । आपने परणावतां
मारा पुत्र ने कुण परणावे न मारो बंस भ्राज बीन बीछेव जासी । कारण
के ज्यारे राजा अन्याय करे तरे गरीबनी कीण सांमले । एवा वचन सेठाणी

ना सांजली ने राजा विक्रम बोल्हो—हे बाइ तू किसी फीकर करजं मति ।
ए कन्या तारा कुवरने अवि परणावसू ।

उसी बखत सेठना कवरने बोलाबी ने राजाना आभूषण सरब ते
सेठना पुत्र ने पेराव्या । सेठना पुत्र ने हस्ति ने होडे बेसारी ने ते सेठनी
बेटीने ते कवर ने परणाबी । राजा साथे जायने घन बोलत बोल आपी ने
सेठ मा कवर ने सूची करीयो । उण अवसरे राजा विक्रमे विचार करीयो
के हु जेनघरमी राजा छु । ने ए बात नी तो मने खबर परी तरे ए काम
नो बंदोवस्त मे कीधो । अब तो दीन दीन उतरतो समो आवे छे । सो
लोक मां बोल विषबाइ बधसे । घणा लोक दुषी होसी । तेथी राजाए
सरब रतने भीली करी । नीचे मुजब बंदोवस्त करीयो । आपणी आपणी
न्यातमे आपणा बेटा बेटा परणावना ओर न्यात मां परणावसे तेने राजा
बंड करस्ये । आपणा २ बेटा बेटा ना सगपण करने पीछे छोडसी ने दुजा
न परणावसी तो राजा बंड करसे ने बीजाने परणाववा देसे नही ।
जेनीं साथे सगपण करे तेने परणावणो । ए बंदोवस्त कीधो । वरणा-
वरणी नि मरजाबं बांधी । विर प्रभू निरवांण पधारीया तिण दीनथी
छ्यार सेहने सीतर बरसां सूधी तो राजा नंदीवरधन नो संबतर ह्यो । ने
नवीवरधन राजा नो समत उथापी ने बीक्रम राजा ए पोताना समत चेत
सुब एकमथी सह करीयो । ज्यां ज्यां आरज देस हुतो त्यां त्यां विक्रम नो
समत चाल्यो । समत कीण रीत सू सह कीनो । ए हकीकत घणो छे । पीण
बीस्तार गूथ घणो बधे तीणसू लीधीयो नही ।

देवधि वमासणने पाट विरमद्र स्वांभी पाठ बठाए, अठावीस मा
पाटबी ॥२८॥ वीरमद्र आचारज ते सतावीस बरस ग्रहस्थाभ्रम मां रह्या
पीछे तेवीस बरस समान प्रवरज्या पाली ने पचावन बरस आचारज पद
रह्या । सरब बीव्या इठंत्र बरस पाली । सरब आउधो एकसो पांच बरसनो ।
वीर नीरवांण सु १०६४ वर्ष पछे समत पांचे ने चोराणु वरसे देवगत हुवा ।
५६४ । विरमद्र ने पाट संकरसेन आचारज पाट बठाए गुणतिस मा
पाटबी ॥२९॥ संकरसेन आचारज ते वाबीस बरस ग्रहस्था आश्रव मां
रह्या ने तीवीस बरस समान प्रवरज्या पाली, पीछे तिस बरस आचारज
पद रह्या । सरब बीव्या तेपन बरस पाली । सरब आउधो पीचंत्र बरसनो ।
विर नीरवांण सु १०६४ वर्ष पछे समत छ केन चोबिसे बरसे देवगत

हुवा समत ६२४ ॥ संकरसेन आचारज ने पाट जसोमद्र स्वांमी पाट
 बैठा ए तिसमा पाटवी ॥३०॥ जसोमद्र आचारज ते सतावीस वरस ग्रहस्थ
 आश्रवमां रह्या । तेविस वरस समान प्रवरज्या पाली, पीछे बाविस वरस
 आचारज पद रया । सरब दीध्या पतालिस वरस पाली ने सरब
 आउषो बहुत्र वरस नो । बिर निरबाण सु १११६ वर्ष पछे समत छके
 नवर छियालिसे देवगत हुवा ॥ समत ६४६ ॥ जसोमद्र आचारज ने पाट
 बिरसेन आचारज पाट बैठा ए ३१ पाटवि ॥ बिरसेन आचारज ते
 पंतिस वरस ग्रहस्था आश्रव मा रह्या । पीछे इकतालीस वरस समान
 प्रवरज्या पाली पीछे सोले वरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या
 सतावन वरस पाली अने सरब आउषो बाणु वरसनो । बिर निरबाण सु
 ११३२ वर्ष पछे समत छके वरस बाण्टे देवलोक हुवा ॥स०॥६६२॥ बिर-
 सेन आचारज ने पाट बिरजस आचारज पाट बैठा ३२ पाटवी ॥ बिरजस
 आचारज तेपन रे वरस ग्रहस्थ आश्रव मां रह्या ने चबवे वरस समान्य
 प्रवरज्या पाली, पीछे सतरा वरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या इक-
 तीस वरस । आउषो छियालीस वरसनो बिर निरबाण सु ॥ ११४६ वर्ष
 पछे समत छ के वरस गुणीयासि ये देवलोक हुवा ॥स०॥६७६॥ बिरजस
 आचारज ने पाट बैठा जयसेन आचारज ॥ ३३ ॥ पाटवि ॥ जयसेन
 आचारज पतिस वरस ग्रहस्था आश्रव मां रह्या । पीछे चबवे वरस समान्य
 प्रवरज्या पाली, पीछे अटार वरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या
 बतिस वरस पाली । सरब आउषो सितष्ट वरसनो । बिर नीरबाण सु
 ११६७ वर्ष पछे समत छके न सताणु वरस देवलोक हुवा ॥स०॥६८७॥
 जयसेन आचारज ने पाट हरिषेण आचारज पाट बैठा ॥ ३४ मा पाटवि ॥
 हरिषेण आचारज ते अठतिस वरस ग्रहस्था आश्रव मां रह्या । सतविस
 वरस समान्य प्रवरज्या पाली, पीछे तिस वरस आचारज पद रह्या । सरब
 दीध्या सतावन वरस पाली ने सरब आउषो पचाणु वरसनो । बिर निर-
 बाण सु ११८७ वर्ष पछे समत सातने सतावीस नी साल देवलोक हुवा
 ॥स०॥७२७॥

हरिबल आचारज ने पाट बैठा जयसेन स्वांमी पाट बैठा ए
 ॥३५॥पाटवी॥ जयसेन आचारज ते बतिस वरस ग्रहस्था आश्रव मां रह्या
 ने तेइस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे बाविस वरस आचारज पद

रखा । सरब बीष्मा गुणपचास वरस पाली ने सरब आउखो इकीमासी वरसनो । बिर निरवाण सु १२२३ वर्ष पछे समत साते न तेपन रे वरस देवलोक हुवा ॥स०॥७५३॥ जयसेन आचारज ने पाट जगमाल स्वामी पाट बठा ॥ ए ३६ ॥ मा पाटवी ॥ जगमालजी आचारज ते सताबिस वरस ग्रहस्था आभव मां रह्या ने नव वरस समान प्रवरज्या पाली पीछे छ वरस आचारज पद रह्या एवं पनर वरस बीष्मा पाली । सरब आउखो बयालीस वरसनो । बिर निरवाण सु १२२६ वर्ष पछे समत सातेन गुणसाठ वरस देवलोक हुवा ॥स०॥७५६॥ जगमालजी आचारज ने पाट देव रीषजी स्वामी पाट बठा ॥ ए ३७ ॥ मा पाटवी ॥ देवरिषजी आचारज ते इगतालीस वरस ग्रहस्था भवमा रह्या ने गुणचालीस वरस समान प्रवरज्या पाली पीछे पांच वरस आचारज पद रह्या । सरब आउखो पीचियासी वरसनो । बिर बीरवाण सु १२३४ वर्ष पछे समत सातने चोष्ट वरसे देवलोक हुवा ॥स०॥७६४॥ देवरिषजी आचारज ने पाट भीम रीषजी स्वामी पाट बठा ॥ ३८ ॥ मा पाटवी ॥ भीम ऋषजी महाराज ते इकावन वरस ग्रहस्था आभव मा रह्या ने तेइस वरस समान प्रवरज्या पाली । पछे गुणतिस वरस आचारज पद रह्या । सरब बीष्मा वावन वरस पाली । सरब आउखो एकसो तीन वरसनो । बीर नीरवाण सु १२६३ वर्ष पछे समत साते ने तेराणु वरसे स्वरगवास पांम्यां ॥स०॥७६३॥ भीम रिषजी आचारज न पाट कीसन रिषजी स्वामी पाट बेठा ॥ ए ३९ मा पाटवी ॥ कीस्न ऋषीजी महाराज ते चोविस वरस संसारमा रह्या ने इकतिस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे इकीस वरस आचारज पद रह्या । सर्व वावन वरस बीष्मा पाली । सरब आउखो छियंत्र वरस नो । बिर नीरवाण सु १२८४ वर्ष पछे समत आठने बबडे वरसे देवलोक हुवा ॥स०॥८१४॥ कीस्न रिषजी आचारज न पाट राज रीषजी स्वामी पाट बेठा ॥ ए ४० ॥ मा पाटवी ॥ राज रीषजी माहाराज ते उगणीस वरस ग्रहस्थावास मां रह्या ने तेवीस वरस समान प्रवरज्या पाली, पीछे पनरे वरस आचारज पद रह्या । सरब बीष्मा अरतीस वरस पाली । सरब आउखो सतावन वरसनो । बिर नीरवाण सु १२९६ वर्ष पछे समत आठे न गुणतिसारे वरसे देवगती पांम्या ॥४०॥८२९॥

राज रीषजी आचारज ने पाट देवसेन स्वामी पाट बठा ॥ ए ४१
 मा पाटवी ॥ देवसेने आचारज ते अठावन वरस ग्रहस्थाबास मां रह्या ।
 पीछे बीस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे पचिस वरस आचारज पद
 रह्या । सरब दीव्या गुणपचास वरस पाली ने सरब आउषो एकसो न
 सात वरस नो । बिर नीरवाण सु १३२४ वर्ष पछे समत आटने चोपन
 वरस देवलोक हुता ॥स०॥८५४॥ देवसेन आचारज ने पाट संकर सेन
 स्वामी पाट बठा ॥ ए ४२ ॥ मा पाटवी ॥ संकर सेन आचारज ते पंता-
 लीस वरस ग्रहवास रह्या पीछे चालीस वरस समान प्रवरज्या पाली ।
 पीछे तिस वरस आचारज पद रह्या । सरब दीव्या सितर वरस पाली ।
 सरब आउषो एक सो पनर वरस नो । बिरना नीरवाण सु १३५४ वर्ष पछे
 समत आटे ने चोरासीये वरस देवलोक हुवा ॥स०॥८८४ संकर सेन आचा-
 रज ने पाट लक्ष्मी वलम स्वामी पाट बठा ए ४३ मा पाटवी ॥ लक्ष्मी
 वलम माहाराज ते गुणतिस वरस ग्रहस्थाबास मे रह्या पीछे तेतीस
 वरस समान्य प्रवरज्या पाली पीछे सतरे वरस आचारज पद रह्या ।
 सरब दीव्या चावन वरस पाली । सरब आउषो गुणीयासी वरस नो । बीर
 नीरवाण सु १३७१ वर्ष पछे समत नवेन एक रो साल देवलोक हुवा ॥
 स०॥ ६ एक रो साल ॥

लक्ष्मी वलम आचारज न पाट राम रीषजी स्वामी पाट बेठा ए
 ॥ ४४ ॥ मा पाटवी ॥ राम रीषजी माहाराज ते चोतीस वरस ग्रहस्था
 आश्रव मां रह्या ने तेतीस वरस समान प्रवरज्या पाली । पीछे इकतिस
 वरस आचारज पद रह्या । सरब दीव्या चोष्ट वरस पाली । सरब आउषो
 अटानु वरस नो । बिर नीरवाण सु १४०२ वर्ष पछे समत नव ने वतिस
 रो साले देवलोक हुवा ॥स०॥९३२॥ राम रीषजी आचारज ने पाट
 पदम नाम स्वामी पाट बेठा ए ४५ ॥ मा पाटवी ॥ पदम नाम आचारज
 महाराज तिस वरस ग्रहवास वस्यां पीछे तेतीस वरस समान्य प्रवरज्या
 पाली । पीछे वतिस वरस आचारज पद रह्या । सरब दीव्या पष्ट वरस
 पाली । सरब आउषो पचाणु वरस नो । बीर नीरवाण सु १४३४ वर्ष पछे
 समत नवने चोष्ट वरसे देवलोक हुवा ॥समत॥९६४॥ पदम ना आचारज
 ने पाट हरीशरम स्वामी पाट बेठा ॥ ४६ मा पाटवी ॥ हरीशरम आचा-
 रज ते इकीस वरस ग्रीहस्त पखे रह्या । ने तयालेस वरस समान प्रवरज्या

पाली पछे सताबीस वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या सित्र वरस पाली । सरब आउखो इकाणु वरसनो । बीर नीरबाण सु १४६१ वर्ष पछे समत नवने इकाणु वरस देवलोक हुवा ॥स०॥६६१॥ हरीशरम आचारज ने पाट कलश प्रभू स्वामी पाट बठा ए ४७ मा पाटवी ॥ कलश प्रभू आचारज ते छाष्ट वरस ग्रहस्था आश्रव मां रह्या नं अठाइस वरस समान्य प्रबज्या पाली पीछे तेरे वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या गुणचालीस वरस पाली । सरब आउखो एकसो पांच वरसनो । बीर नीरबाण सु १४७४ वर्ष पछे समत वसे न च्यार री साल देवलोक थया ॥ स० १० मे ४ ॥ कलश प्रभू आचारज न पाट उमण रीषजी स्वामी पाट बेठा ए ४८ मा पाटवी ॥ उमण रीषजी आचारज जी ते बयालीस वरस ग्रहस्थ पणे रया ने पचिस वरस समान्य प्रवरज्या पाली पछे बीस वरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या पंतालीस वरस पाली । सरब आउखो सिध्यासी वरसनो । बीर निरबाण सु १४६४ वर्ष पछे संमत वसे न चौबिस वरसे स्वरगवास पोहता ॥स०॥१०२४॥

उमण रीष आचारज न पाट जयीशु स्वामी पाट बठा ए ४६ मा पाटवी ॥ जयषीण आचारज ते पंतालीस वरस ग्रहस्थ पणे रहोने गुणतीस वरस समान प्रवरज्या पाली । पछे तिस वरस आचारज पणे रहीया । सरब दीध्या गुणसाट वरस पाली । सरब आउखो एकसो च्यार वरस नो । बीर नीरबाण सु १५२४ वर्ष पछे समत वसे न चोपन वरसे देवलोक हुवा ॥समत १०५४॥ जयषीण आचारज ते पाट विजेरीष स्वामी पाट बठा ए ५० मा पाटवी ॥ विजेरिष आचारज ते सोले वरस ग्रहस्थ पणे रया ने इकीस वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पंष्ट वरस आचारज पद रया । सरब दीध्या छियासी वरस पाली । सरबे आउखो एकसो दोय वरस नो । बीर नीरबाण सु १५८६ वर्ष पछे समत ११ ग्यारेन उगणी वरसे देवलोक हुवा ॥स० १११६॥ विजय रीषजी आचारज न पाट देव रीषजी स्वामी पाट बेठा ए ५१ मा पाटवी ॥ देवरीषजी आचारज ते दस वरस ग्रहस्था आश्रव मां रह्या ने पचिस वरस समान्य प्रवरज्या पाली पछे पचावन वरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या असी वरस पाली । सरब आउखो नेउ वरसनो । बीर नीरबाण सु १६४४ वर्ष पछे समत इग्यार ने छिमंत्र वरस देवलोक हुवा ॥स०॥११७४॥ देवरिषजी आचारज ने पाट ॥ सुरसेन स्वामी पाट

बेठा ए ५२ वा पाटवी ॥ सूरसेनजी आचारज ते बावीस वरस तो ग्रहस्था आश्व मां रह्या । ने इक्कीस वरस ते सामान्य प्रवरज्या पाली । पीछे चोष्ट वरस आचारज पद रह्या । सरब दीष्या पिचायासी वरस पाली । सरब आउषो एकसो सात वरस नो । बीर नीरवाण सु १७०८ वर्ष पछे समत बार ने अडतीस वरसे देवलोक हुवा ॥ स० ॥ १२३८ ॥ सूरसेन आचारज न पाट माहा सूरसेन स्वांमी पाट बेठा ए ५३ मा पाटवी ॥ माहा सूरसेन आचारज ते पचिस वरस ग्रहस्था आश्व मां रह्या न चौपन वरस सामान्य प्रवरज्या पाली पीछे तीस वरस आचारज पद रया । सरब दीष्या चोरासी वरस पाली । सरब आउषो एक सो नव वरसा नो । बीर नीरवाण सु १७३८ वर्ष पछे समत बार ने अरष्ट वरसे देवलोक हुवा ॥ समत १२६८ ॥ माहा सूरसेन्य आचारज ने पाट माहासेण आचारज पाट बठा ए ॥ ५४ ॥ मा पाटवी ॥ माहासेण आचारज ते इग्यार वरस ग्रहस्था आश्व मां रह्या ने छियंत्र वरस सामान्य प्रवरज्या पाली । पीछे बीस वरस आचारज पद रया । सरब दीष्या छिन्न वरस पाली । सरब आउषो एकसो सात वरस नो । बिरना नीरवाण सु १७५८ वर्ष पछे समत १२ बार ने इटोयासी ये वरस देवलोक हुवा ॥ समत १२८८ ॥

माहासेण आचारज न पाट जीवराजजी स्वांमी पाट बेठा ए ५५ वा पाटवी ॥ जिवराजजी आचारज ते तेर वरस ग्रहस्था आश्व मां रह्या ने छतीस वरस सामान्य प्रवरज्या पाली । पीछे इक्कीस वरस आचारज पदे रह्या । सरब दीष्या सतावन वरस पाली । सरब आउषो सीत्र वरसनो बीर नीरवाण सु ७७६ । वर्षे पछे समत तेरने नवे वरसे देवलोक हुवा ॥ समत ११३०६ ॥ जिवराजजी माहाराज ने पाट गजसेन स्वांमी पाट बेठा ए ५६ मा पाटवी ॥ गजसेन्य माहाराज ते तेबीस वरस ग्रहस्थाश्व मां रया ने पंतिस वरस सामान्य प्रवरज्य पाली । पीछे सताबीस वरस आचारज पदे रया । सरब दीष्या बाष्ट वरस पाली । सब आउषो पचियासी वरस नो । बिर नीरवाण सु १८०६ वर्ष पछे समत तेरने छतिस वरसे देवलोक हुवा ॥ समत १३३६ ॥ गजसेन आचारज न पाट मंत्रशेन स्वांमी पाट बठा ए ५७ मा पाटवी ॥ मंत्रसेन्य आचारज ते बावीस वरस ग्रहस्था आश्व मां रया । तीस वरस सामान्य प्रवरज्या पाली । पीछे छतीस वरस आचारज पद रया । सरब दीष्या छाष्ट वरस पाली । सरब आउषो इटोयासी वरसनो ।

वीर नीरवाण सु १८४२ वर्ष पछे समत तेरने बहोत्र वरसे देवलोक हुवा ॥समत॥१३७२॥ मंत्रसेन्य आचारज न पाट विजय सीह स्वामी पाट बठा ए ५८ मा पाटवी ॥

विजयसीह स्वामी विस बरस ते ग्रहस्थपरणे रया ने बस बरस समान्य प्रज्या पाली । पोछे इकोत्र वरस आचारज पद रया । सरब दीष्या इकीयासी बरस पाली । सरब आउषो एकसो एक बरस नो । बिर निरवाण सु १६१३ वर्ष पछे समत चवदेने तयालीस वरसे देवलोक हुवा ॥ समत १४४३ ॥ विजयसीह आचारज ने पाट शीवराजजी स्वामी पाट बठा ए ५६ मा पाटवी ॥ शीवराजजी आचारज ते अटारे बरस ग्रहस्था आश्रव मां रया ने तेर बरस समान्य प्रवरज्या पाली । पोछे छमालीस बरस आचारज पद रया । सरब दीष्या सतावन बरस पाली । सरब आउषो पोछत्र बरसनो । वीर नीरवाण सु १६५७ वर्ष पछे । समत चवदे न सितीयासिये वरसे देवलोक हुवा ॥ समत ॥ १४८७ ॥ सीवराजजी माहाराज ने पाट लालजी स्वामी पाट बठा ए ६० मा पाटवी ॥ लालजी आचारज ते अड-तीस बरस ग्रहस्था आश्रमां रया ने उगणीस बरस समान्य प्रवरज्या पाली पोछे तीस बरस आचारज पद रया । सरब दीष्या गुणपचास बरस पाली । सरब आउषो सित्यासी बरसनो हुवो । बिर नीरवाण सु १६८७ वर्ष पछे समत पनरे न सतरे देवलोक हुवा ॥ समत १५१७ ॥

लालजी सांमी ने पाट ग्यांन रीषजी पाटवी ॥ ग्यांन रीषजी आचारज ते सोले बरस संसार मे रही ने छमालीस बरस समान्य प्रवरज्या पालि । बिस बरस आचारज पद रया । सरब दीष्या चोष्ट बरस पाली । सरब आउषो असी बरस नो । वीर नीरवाण सु २००७ वर्ष पछे समत पनरे ने संतिस वरसे देवलोक हुवा ॥समत॥१५३७॥ ग्यांन रीषजी माहाराज ने पाट नानगजी स्वामी पाट बठा ए ॥ ६२ ॥ मा पाटवी । नानगजी स्वामी छाइस बरस संसार मे रया । संतिस बरस समान्य प्रवरज्या पाली पछे पचिस बरस आचारज पद रया । सरब दीष्या बाष्ट बरस पाली । सरब आउषो इटीयासी बरसनो । वीर नीरवाण सु २०३२ वर्ष पछे समत पनरने बाष्ट वरसे देवलोक हुवा ॥समत॥१५६२॥ नानगजी माहाराज ने पाट रूपजी स्वामी पाट बठा ए ६३ मा पाटवी ॥ रूपजी आचारज ते बतीस बरस ग्रहस्था आश्रव मां रया ने अठाइस बरस समान्य प्रवरजा

पाली । पीछे बिस बरस आचारज पद रह्या । सरब दीध्या—अठतालीस बरस पाली । सरब आउधो असी बरसनो । बीर नीरवाण सु २०५२ वर्ष पछे समत पनरे ने बयासी बरसे देवलोक हुवा ॥ स० १५८२ ॥ रूपजी आचारज जी ने पाट जीवराजजी स्वामी पाट बठा ए ६४ मा पाटवी ॥ जीवराजजी भाहाराज ते अठावीस बरस गृहस्थपणे रया ने पंस्ट बरस समान्य प्रवरजा पाली ने पांच बरस आचारजपणे रया । सरब दीध्या सीत्र बरस पाली । सरब आउधो अठाणु बरसनो । बीर नीरवाण सु २०५७ वर्ष पछे समत पनरे न सत्यासी ये देवलोक हुवा ॥ समत ॥ १५८७ ॥ जीवराजजी आचारज जी ने पाट बडा विरजी स्वामी पाट बठा ए ६५ मा पाटवी ॥ बडा बीरजी आचारजजी ते छाइस बरस गोरस्तपणे रया ने इगतालीस बरस समान्य प्रवरज्या पाली पीछे आठ बरस आचारज पद रया । सरब दीध्या गुणपचास बरस पाली । सरब आउधो पीचंत्र बरसनो । बीर नीरवाण सु २०६५ वर्ष पछे समत पनरे पचाणु बरसे देवलोक हुवा ॥ स० १५९५ ॥ बडा बीरजी आचारजजी रे पाट लघूवीर सीधजी स्वामी पाट बठा ए ॥ ६६ ॥ मा पाटवी ॥ लघूबिर सीधजी आचारजजी तीस बरस ग्रहस्थपणे रया । सीटष्ट बरस । समान्य प्रवरज्या पाली । पछे दस बरस आचारज पणे रह्या । सरब दीध्या सीतंत्र बरस पाली । सरब आउधो एकसो सात बरस नो । बीर निरवाण सु २०७५ वर्ष पछे समत १६०५ सोला न पांचरे बरसे देवलोक हुवा ॥ समत १६०५ ॥

लघूबीर सीध आचारज जी ने पाट जसवंतजी स्वामी पाट बठा ए ६७ मा पाटवी ॥ जसवंतजी आचारज जी ने इगतालीस बरस ग्रहस्थ पणे रह्योने तयालीस बरस समान्य प्रवरज्या पाली । पीछे इग्यार बरस आचारज पणे रह्यो । सरब दीध्या जोपन बरस पाली । सरब आउधो पचोणु बरसनो । बीर नीरवाण सु २०८६ वर्ष पछे समत सोले ने सोले बरस देवलोक हुवा ॥ समत १६१६ ॥ जसवंतजी आचारज जी ने पाट रूप सीध जी स्वामी पाट बठा ए ६८ मा पाटवी ॥ रूपसीध जी आचारज जी ने अठतीस बरस ग्रहस्थ पणे रह्योने बयालीस बरस समान्य प्रवरज्या पाली । पीछे बीस बरस आचारज पणे रह्योया । सरब दीध्या बाष्ट बरस पाली । सरब आउधो एक सो बरसनो । बिरना नीरवाण सु २१०६ वर्ष पछे समत सोले न छत्तीस बरस देव लोक हुवा ॥ समत १६३६ ॥ रूपसीध जी आचारज जी

ने पाट दामोदरजी स्वामी पाट बटा ए ६६ मा पाटवी ॥ दामोदरजी
 आचारज जी ते पंतालीस वरस संसार म रहीने सतरे वरस समान्य
 प्रवर्ज्या पालो । पोछे बीस वरस आचारज परे रहोया । सरब दीव्या सतीस
 वरस पाली । सरब आउषो बयासी वरस नो बीर नीरवाण सु २१२६ वर्ष
 पछे समत सोल ने छपन वरस देवलोक हुवा ॥ स १६५६ ॥ दामोदरजी
 आचारज जी ने पाट धन राजजी स्वामी पाट बटा ए ७० मा पाटवी ॥
 धन राजजी आचारज जि सतावीस वरस ग्रहस्थ परे रया ने अड़तालीस
 वरस समान्य प्रवरजोया पाली । पछे बावीस वरस आचारज परे रया ।
 सरब दीव्या सीत्र वरस पाली । सरब आउषो संताणु वरसनो बीर
 निरवाणसु २१४८ वर्ष पछे समत सोले ने इटंन वरसे देव लोक हुबो
 ॥ समत १६७८ ॥ धन राजजी आचारज जी ने बिता मणजी स्वामी
 पाट बटा ए ७१ मा पाटवी ॥ चीतामण जो आचारज जी ते चवडे वरस
 ग्रहस्थ परे रया ने इकावन वर्स समान्य प्रवरज्या पाली । पोछे पनर
 वरस आचारज परे रया । सरब दीव्या बाष्ट वरस पाली । सरब आउषो
 असी वरस नो । विर नीरवाणसु २१६३ वर्ष पछे समत सोले न तेराणु
 वरसे देव लोक हुवा ॥ समत १६६३ ॥ चितामणजी आचारज जी ने
 पाट पेमकरणीजी सांमी पाट बेटा ए ७२ मा पाटवी ॥ छेम करणजी
 आचारज ते पचिस वरस ग्रहस्थपरि रया, गुणीयासी वरस समान्य प्रवरज्या
 पाली । पोछे पांच वरस आचारज जो परे रया । सरब दीव्या चोरासी
 वरस पाली । सरब आउषो एक सो नव वरसनो । विर नीरवाणसु २१६८
 वर्ष पछे समत सोले न अठाणु वरसे देव लोक हुवा ॥ सन ११६६८ ॥

प्रमाणे उपरला गुणतिस मा पाट वाला ना बारा में । विर निरवाण
 पछे एक हजार इटीयासी वरसां पछे समत ६ के वरस १८ रे पोसाला
 मंडाणी । कुलगर माहातमानी पोसाला मांह थी गछ निकल्या । तेहनी
 बिगत ।

बीरना नीरवाण थी चवदसे चोष्ट वर्स से समत नवने चोरांणु
 वरसे बडग गछ हुबो । सोले से गुणतीसे वरसे पुनभ्यो गछ हुबो ।
 सोले से जोपन वरसे आंचन्यो गछ नीकल्यो । सोलेसे ने सीत्र वरसे
 बत्र गछ नीकल्यो । ते मांथी दस गछ निकल्या । सतरेसे न बीस वरसे

आगनीयौ गच्छ नीकल्यो । सतरेसेन वचावन वरसे पोखाला मांवी
तपोगच्छ निकल्यो । ते माहंवी तेरे गछनी कल्पाए आवदेने तयासी गछ
नी थापना हुइ । सरब गछनी उतपती नो बीसतार्करतां समास गणो
बध जावे तीणथी इहां लीधीयो नहि । जूदा जूदा मत निकलवानो कारण
माहावीर सांमी ना जनम रासे भसम ग्रह परीयो ते कारण थी आरज
वेसमां बारा काली च्यार परी ने छाट मोटा निनब थया । जतीयों ना गछ
चोरासी चाल्या । अनंता काल थी हुडा सरपणी ना जोग थी । पांचमा
आराना दूषम समये आवे तयारे असंजती पुजानो अछरो बसमो हुवो । ते
जोगे वांका अने जडपणा करीने म जीवना हिया मां मीध्यासी ओ ए घोबा
पाडीया । भसम ग्रह नो जोग बध्यो ।

तीवारे हंस्या में धर्म प्रगट थयो । सीधांत भंडार मां नाव्या ने
पोताने छावे विपरीत नवी जोरां कीधी । सजाय, सबन, रासने, चोपइ,
कथा, सीत्रजानुधार, सीलोक, काव्य, प्रकरण, व्याकरण, छंद, मंत्र-तंत्र,
पोता नो मती कल्पनी की । हंस्यामा धरम परप्यो । देवगुरुनी पुजा करवी ।
गोतम पडधो करवो खमासण वे रावणो । गुरांने सांमलो करावो । पगमडा
करावो, गाजे वाजे गीत ग्यांन करीने गांम मां प्रवेस करावो । जूरते लोकरा
वोग वालीया तेलो, चंदन बाला नो तेलो, समुद्र मोलण तेलो, बोली ते धर्म
नी पोल उघाडी । मुगतनी नीसनि गुरुने बेरावो । ग्यांन पचमी तप करीने
उजमणो करो । सग पुजन उजमणो करो । अजइस पधीनो उजमणो
करावो । तेलो पांच अटाइ उपरांत तप करे तेनो बरघोड़ो तथा उजमणो
करावो ने गुरुने पछे वडी द्रव्यावीक आपो । रात जागण करावो । पुस्तक
पोचावो ने कल्पसूत्र वचावो ने पुस्तक ना यांना जीलाबोने पुस्तक नी
पधारामणो करावो ने पजूसणां मे मुखपती नो टको गुरु ने देवो । वांजत्र
वजावो प्रभावना स्वांमी बछल करावो । शत्रूजा माहातमा रचावो ।
गीरनारजी नो पट करावो । नाइ थोइ छेल रही फल फुलावीक चडावो ।
इत्यावीक आवदेइने अनेक जीन वचन विपरीत परपथा कीधी । बोय हजार
बरसनो भसमग्रह हतो तीन स्र एवीप्रीत बात हुइ । अनेक सूष धरमनी उदय
उदय पुजा कम परी ।

भसमग्रह कवी उतरीयो तेहनी हकीकत कहे छै । भगवान माहाराज
जे बीने मुगत पधारीया ते बीन भसमग्रह नो प्रभाव बरतांथो । बीरनां

नीरवाण पाछे ध्यार सेहने सीतर बरसे पछे बिक्रम राजा ए समत जलाव्यो ने संवत पनरे न इयतीसे रा साल सूधी बिय हजार ने एक वर्ष हुबो । त्यां सुधी तो असंजतीना मतनी उदय उदय पूजा थई । हवे मस्मग्रह उतर-बाधी तेहनु जोर हटियो । तीबारे निरमल धर्म प्रगट हुबो ने उदय उदय पुजा खलू थइ । इण रीते समत पनरे ने पचीसे मां गुजरात बेस ने विषे अमंदाबाद मां ओसवाल बंस मां गीत बयतरी हुतो । लुका साहा मोटा सहुकार हुता । ते पेली तो सीरकार नं बयत्र नो काम करता हुता । ते सरकार ना काम मां पाप बोहत जाणी, पोते पाप जाणीने पातसाह नी रजा लेइ न बफत्र नो काम छोडीयो । पछी नांणावटी नो बोपार करणो सर कीनो । एक दीधस एक जवन तेमने डुकाने आव्यो । तेणे महेमुदी नाम ना सीकाना बो करा लीधां ते बो करानी छोडीमार ना पासे थो चिडीयो बेंचाती लीधी । ते हणवाने पोताने घर लेइ चाल्यो । ते परधी लुको साए बो अघरम बोपार जाणी बोपार उपरथी बेराग उपनो । तूरतज संबेग भात आणी नांणावटी नो बोपार करवा नो नीयम धारण करीयो । अने बने उपर पुरण भाव हुतो ।

एक बीनरे सने एक लीगधारि रतन सूरी फीरत अमंदाबाद आव्या । अमंदाबाद मां एक बडो उपासरो देख्यो । तेमा जुना पुस्तक नो भंडार देख्यो ने आवक ने बोलाधी ने पुस्तक बाहार कडाववाना कह्यु । आवक तमाम मलीने भंडार बोलाव्यो ने पुस्तक बाहार काडवा लागा । घणा पुस्तको मां शरबी आइ गइ ने घणा पुस्तक न उदइ बाधी । तेबारे सा लपमी साहा आवने मोटा २ शेठ हुता । तेमणे पुस्तक नो भंडार बराब बयोलो देखी लगी रहु वा शेठजीए तमाम आवकां ने तथा लीगधारी ने ए पुस्तक नवा लिखाववानो हुकम दीधो । कारण के ते लीखावतां तो जेन घरम कयाम रहेसीए । ए मोटो उपगार जाणी सारा आवके बचन प्रमाण कीधो ने घणा आवक बिचारी ने बोल्या के कोई आदमी घणो चतुर घणो हुसीयार हुवे ते तेने पुस्तक लीखवा नो आपो । उस बघत मोटा शेठिया रतनचंद माइ हुता । ते बोल्या के आपणी न्यात मां तथा जेनघरम मां जाणकर लुकोसा जात ना श्री श्रीमाल बीशा छै । तेना जेवो हुसीयार बीजो छ नही । तेथी तेना पासे सूत्र लखावो । त्यारे घणा आवक बोल्या लुको सेठ तो आपणा मां घणा बन वालो छै । ते पुस्तक लिख से नही ।

तीबारे अमीपल सेठ तथा लक्ष्मजी भाइ तथा रतनजी भाइ भाब देइने समस्त भावके विचारी ने कह्यु के संगतु काम तो संग करे से । एवो बीचार करीने सघसमसते लुकासा ने बोलाव्या । तीबारे लंका सा उपासरे आव्या । समस्त भावक ने जतीजी बोल्या—के जीन मारग नों काम छे । तब लूका मेतो बोल्या—क सू काम छे । तीबारे जबाब आपीयो—के आपणा धर्मना सासत्र बोल उवेइ बाधा छे ने पुस्तक जीरण होय गया छे ने आप लखसो तो मोटा उपगार नो कारण छे । तीबारे घरणो संधनो हठ करी तथा लूका मेता ने मान घणो देइने काम कराव्यो । तीबारे लुका मेता ए बीचार करीयो के मोटो कल्याण नो कारण छे । एक तो न्यात नो कहबी थी ने एक धर्म नो काम जाणी लकासा ए वचन प्रमाण कीयो ।

तीबारे भंडार मां थी दसवीकालीक सूत्र नी परत तीषवाने लूकाजी आपी । लूकाजी ए बांकी ने विचारीयो—के तिरथंर नो मारग तो दशबी कालक सूत्र मांहे छे । ते धर्म प्रमाण छे । धर्म मंगलीक छे । एवु बीजो धर्म नथी । धर्म ग्रहंस्या ते दया संजम तप एहमां धर्म कहो छे न साधु नै बावन अनाचार टालबा, छे कायनी दया पालबी, बेतालीस दोष टालबी न आहार पाणी लेबी । अष्टाद दोष मांहलो एक दोष सेवे तो साधपणा सू मिष्ट कह्यो, एता दोष टाले जीण ने साधू कह्यो । साधु ने भाषा विचारीने बोलबी । आचारबीष पालबी । गुणवंत गुहनी विनय करबी कह्यो न मुनि ना सताबीस गुण कया । एवा वचन दसवीकालक बांकी ने हिरदेय मां अत्यंत हरव्यो । अपुरब वसतू पाइ जांणी नै बीलमां विचार करयो के एतो जतो बीला पडोया छे । सीधांत देव्यां थी जाणीयो भगवंतनी बांणी वाली न जाबै । अन तीरा समये लूकाजी ए बीचार करीयो कोइ ठिकाणे उत्तम भुनिराज छे तेनी हवे खबर कराबी जोइए । एम नकी करीने हवे मसम ग्रहनी दोष टल्यो ने उवेइ पुजा यह । जोइ ए एह अवसर आव्यो तेथी भली बुध उपनी । लूका मेता ए विचारीयो के बीर वचन जोतां तांए मेवधारी दया धर्म साधनो आचार डांको ने होंस्या धम नी परपणा करे छे । ए तो छकाय जेवनी हिंस्या करबी । धर्म अरथे पख्ये छे । पोते मोकला पडीया छे । ते माटे आवाद एहने कहां मानसे नहिं तेथी कहबो ठीक नहिं रष । उलटो परे । ते मणो सघला प्रारतां बेवरी उत्तारी ने एक आपे रावा ने एक लीगधारी तेने देवे । तीबारे पछे घरणा सूत्र तो आप लख्या ने घणा सूत्र आपना घरसुं बांम देइने सीधो । तीबारे पछी लूका मेता ए घणा सूत्र नो धारणा करी ने यो

ते आपणों घरे सूत्र बाँचवा शरू कीया । तिवारे मोटा शेटीबा लिबमी साह्रा
रतनसीहजी आब बेने, घणा मध्य जीवो सांभलवा आबवा लागी । घणा,
हलु करमी मध्य जीवो ने दया धर्म रचु ।

ते समये सहर सीरोइ नो रहेवाशी, नगर शेठ नागजी मोतीचंद
जी, दलीचंदजी, शंभूजी आब देइने आपणो सरव परीवार घरनो लेइने
शहरनो लोकपण साथे मोकलो लीधो तथा सीरोइ पासे अरठ गांम नो पण
संघ साथे लेइने जात्रा सिधाचलनी करवा चाल्या । चलतां चालतां
अमंदाबाद आय्या । तीबारे वरसाद् घणो हुवो । तीण सू सिध नो पडाव
हूवो । तिवारे अमंदाबाद मां लुका सा मेहतो दया धर्म नी परुपणा करे छे ।
सघवी ने घवर परी के लुका मेहतो सीधांत बाचें छे । ते तो अपुरब नांणी
छे । एम जांणी ने संगवी घणा लोकां साथे सांभलवा आब्यो । तीबारे
लका मेहता पासे दया धर्म, साधनो, आवक नो आचार सांभली ने अत्यंत
हरव्यो । मारग रुव्यो । घणा बीन जातां ने हुवा । तीबारे संघ माहे संगवी
ना गुरु हुता । तेमने मनमां जांण्यो के लुका मेहता पासे सूत्र सांभलवा
जाय छे । ते माटे संगवी पासे आवी ने एम बोल्यो—के हे सघवी, संघ
आगल चलावो । लोक सहू घरची बीना दुषो थाय छे । तिवारे सघवी
बोल्यो के वरसाद बहु हुवो छे । तीण कारण वाट माहे अजयणा घणी छे ।
एकंदरी जाव पचंदरी बेदका प्रमुष घणा छे । लीलण फुलण घणी छे ।
ते चालण सू घणा जीव मारीया जासी । ते माटे हमणो ठवो । पछे रस्तो
सफा थयां चालसू । तीबारे गुरु बोल्यो—के संघवी धरम ना काम मा हंस्यो
गणीजे नहो । एवा लीगधारी ना वचन सांभली ने संगवी ए बीचारीयो के
ए तो कुगुरु छे । मे लका मेता पासे सांभल्यो छे । भेषधारी अणाचारी ने
छ कायनो अनुकंपा रहित भेषधारी बेधाय छे । तीबारे संगवी ए हुकम
करीयो के मारे तमारी संगत न कवी । तीबार संगवी ए भेषधारीने रजा
बीधी । ते संगवी ने सीधांत सांभलतां बेराग उपनो । समत पनरे ने इगतोसे
रा साल में शेठ सरवोजी, दयालजी, भांणजी, लुनजी, जुगमालजी
आबदेइ न पीस्तालीस जीणा ने बेराग भाव उपनो । आपणा कुंटबनी अग्या
लेइने लुकाजी प्रत्य बोल्यो के अमारे संतार त्यागन करवो, संजम धारणा
करवानो विचार प्रगट करीयो ।

तीबारे लुका मेता एवो कह्यु के हुतो गरिस्ता छु । विख्या तो मुनि
होय तो चेला करे । तिवारे लुकासा ए बीचार करीयो के सूत्र ओ भगवती

જીના સતક વિસમા નો, ઉદેસે આટ મે, ગોતમ સ્વામી એ પ્રશ્ન કીધો કે પંચમ કાલ મેં આપરો સાસન કોતના વરસ ચાલસેં । તિવારે મયબંત માહારાજ ગોતમ પ્રત્ય કહો કે મારો સાસન નિરંત્ર આંત્રા રહિત ફકોસ હજાર વરસ સુધી ચાલસ્યે । એવો સૂત્ર બાચન લૂકાજી એ વીચાર કીધો કે ઘોર પ્રભૂના સાધૂ હાલ મરત વેત્ર માં છે । સૂત્ર નો ઝનમાંન બેષતાં છે । ગ્યારે લુકા સા લામિ સાહા ને તથા અગ્રીપાલ તથા શ્રીપાલ આવ દેહને ઘણા શેઠ સહુકારને મેલા કરી । લુકાસા બોલાયા કે જૈન મારગ નો મોટો ડપમાર નો કારણ છે ને સૂત્રનો સમાસ બેષતો મરત વેત્ર માં સાધૂ છે । તેથી આપ મહનત કરોને ઘર કઢાવો તો મુનિરાજ ને અહીં બોલાવો । એ તો પોસ્તાલોસ જણા દોષ્યા લેસી । એહ થો સરવ આવક મલો ને સહુકરાં રૂપોયા ધરચિ ને દેશાં ન બેસ ઘર કરાવતાં સીંધનો હિદરાવદના જિલા માં ગ્યાંન રીષજી માહારાજ ફકવીસ ઠાળે સૂ બિચરે છે । એવી ઘર મોલી । તોવારે સીંધનો હિદરાવાદ સૂ અમંદાવાદ બોલાવતાં રસતા માં ઘણા પરીસા ઉત્પન હુવા । પળ સાહ સોહ આતમામરથો માહા પ્રાકરમ ના ઘણો, સાહાસોકપણો ધારો ને અમદાવાદ પધારોયા । તેમના સાંમા ઘણાજ વાટસૂ, જૈનમારગ નો ઉદીયોત કરી માહારાજ ને સેહરમા લાયા ને ગ્યાન રીષ જો માહારાજ નો વાંણી સાંમ લો । ઘણા જણા પ્રતિબોધ પામ્યા । સગવોજી, દયાલજી, માંનુજી, નૂનજી જાગમાલજી આવદેહ ને પોસ્તીલીસ જણા સમત પનરે ન ફગતીસે બેસાષ સુદ તેરસ ન વીવસે ગ્યાંન રીષજી મહારાજ ના ચેલા હુવા । મોટે મંડળે દોષ્યા લીધો । જૈન ધર્મ નો ઉદે પુજાં હુદ । અમદાવાદ માં ઘણા જિણા મીપ્યાત વોસરાયા ને દયા ધર્મ અંગીકાર કીધો ॥ ગ્યાંન રીષજી માહારાજ ફગલ્ટમા પાટવો છે ॥ ઔર પોળ બતીસની સાલે ગ્યાન રીષજી ને દોય ચેલા હુવા । તેહના નાંમ છોટા નાંનજી સ્વામી તે ગાંમ મીમપાલો ના વાસો તથા જાગમાલજી, જાતના સૂરાંણા એ આવદેન બહોત્ર ચેલા ગ્યાંન રીષજી મહારાજ રે હુવા । સમત પનરે ને અઢતાસ રી સાલ મીગસર સુદ પાંચમ ને દોને અમંદાવાદ ડબાલા લૂકાજી દફત્રી પોળ દીધ્યા લીધી ગ્યાન રીષજીના, ચેલા સૂત્રી સેન જી રે પાસે લૂકાજી દોષ્યા લીધો । પાંચ ચેલા લુકાંજી ને હુવા । લુકા નામ થપીયા ।

તોળરી યાદ—લુકાજી દોષ્યા લીની તિળરો પરબાર મળો બધીયો । તિળ રો નામ લુકા નાંમ થપીયો છે ઔર લૂકાજી ગુજરાત મારવાર ઔર

बीली तक पवारोया । ओर बीली माहे पातसांह आगल खरबा बयो । श्री पुजारी सू लूकाजी रे खरबा हुई करीने घणो मीध्यात हठाबी ने घणां भावक ने प्रतीबोध बीधो । एनी साध सूरतना सेठजी कल्याणजी मंशालीना भंडारमा पटावली संस्कृत मां छं । तेमां लूकाजी नी बीध्यानी हकीकत छं । तथा ग्यांन सागर जतीनी जोर नो ग्रंथ नाटक तेमां पण लूकाजी ए बीध्या लीधो नो लप्पू छे । देया धर्म नो उदीयोत घणो बयो । बेस बेस में गांव नगर में दया धर्म नी परुपणा घणो बयो । घणा ना मोह मीध्यात काढ़ीया । घणाने दया धरमां आणीया । एसो जेन मारग नी महिमा देखी ने पनरेसेह बतीसे नी साल मां साधुधानी महिमा आगले जतीयो नो जोर बहु कम परीयो । तीवारे जतीयो बीचार करीयो क आपणो मत हवे चालसी नहीं । तेथी पोता नो मत नीभावा बासते समत पनरे बतीसे मां आनंदवीमल चंदजी जतीए क्रिया उधार तप आदरीयो । समत १६०२ रो सालमां आंचल्या कीया उधार कीयो । समत १६०५ वर्षे खरबा क्रिया उधार कीधो । अने घणा लोंका ने हंस्या धरम मा घाल्या । प्रतमा नी परुपणा घणो कीधो । तेथी तपा घणा बध्या । तेथी तपाजी स्वांमी (द्वेष आणीने) ५ जगमालजी स्वांमी ६ सर्वोजी स्वांमी ७ रुपजी स्वांमी = जिवाजी स्वांमी ए घाट पाट उतम आचारी हुवा । ए घाटमां पाट उवाला जीवाजी स्वांमी ने सरीरे रोगादीक नी उतपती हुइ । ओषध रे बास्ते आनंद बीमल जती रे पासे गया । अ जाणीने ओषध रे बदले नाम थापन हुबो ।

लूकाजी ना घाट पाट सूख आचारी हुवा तेना नाम १ जानजी सांमी २ भीषमदासजी स्वांमी ३ नूनजी स्वांमी ४ भीम जरनी पुडो बीधो ते ओषध ने भरोसे ते पुडो जीवाजी स्वांमी ए बाधो । तीवारे शरीरमां जर प्रागम्यां न जहर जाणीयो त्रे संयारो कीधो ने देवगत हुवा । तीवारे लारे खला हुता ते जगत समत १६६७ ब० चौथी बरा काली परी । तीनमे लूकाजी ना नव मा पाट उवाला आचार में डीला परीया । जतीय जेवा हुवा । आधा करमी आहार धानक वस्त्र पात्र भोगववा लाग्यो , बोलाभे ते नगरे गोचरो जावे तेथी लूका गछनी थापना हुई । एह रीते चोरासी गछनी थापना हुइ । पोतीया बंधनी उतपती लिखंते, समत सोले ने पीचंतरनी सालमे बीरना निरबाण सू इकीसे पंतालिस बरस गयो, पोतिया बंध धर्म प्रगट बयो । पाट

सौत्र मे धनराज जी स्वांमी ना चेला, देस कीटीयावार, गांम राजकोट ना रबासी बीसा सीरमाली जसाजी नामे हुता । तीणने धनराज जी पासे दीष्या लीधी । बरष पांच दीष्या मां रह्या ने परीसहो बनी सकीया नहीं । तीवारे साधपणो छोड़ दीषो । तेथी लोकां मा मानता पीण तेहनी रहो नहीं । तेथी पोते पोतानाम तथा पोतीयाबंध आवक नो धर्म नबो परुप्यो ने उलटी परुपणा कीधी के पंचमा कालमें साधूपणो पले नहि ने साधु छे ते डांगी छे । साधपणा नी एकंत न धंव न कर दीधी और पीण घणी बातां उलटी परुपणा कर दीधी ने बोल्या के पंचमा काल मां आवक पणो पले छे ते जसाजी ए गांम गांम मे ए रीते परुपणा करवा मांडी । तिवारे जसाजी ने घणा चेला तथा चेलीया थडने आवक ना वत धारण कीधा । उनका चेला चेलीए संसार त्यागी ने भीष्याचारी रूपे आवक ने वेस, माये एक चोटी राबी ने पोतीया बांधता, ओघानी डांडी उधारी राखता नन सीतीयो उंगारे बांधता नही ने गोचरी करता । ए रीते मारग धारण कीयो । घणा बरष विचरीया ने तेनो मत गणा देसांम फेलाव हुयो । समत उगणीस ने पचीस नी सालमां पोतीया बंधनों मत विछद गयो ॥ इति ॥

सूरतना वासी वोहरा वीरजी, बशा सीरमाली, कोडीधज हुता । तेनी बेटी फुला बाई ए लवजी ने षोले लीया । ते लवजी ने लुका ने उपासरे भणवा मोकल्या । ते लवजी सीधांत सूरता । ते लवजी ने बेराग उतपन हुयो । साधुना आचारनी खबर पडी । त्रे वोहोरा वीरजी पासे दीष्या नी आग्या मांगी । तीवारे वीरजीए लका गछ मां दीक्षा ले तों आपु ने तमे साधु मुनिराज नी पास दीष्या लेवतो आग्या नही आपु । तिवारे लवजी बीजे ठोकाणानी दीष्या लेवा न घणी आजीजी करी, पण वीरजी वोहोराए आग्या दीधी नही । तेथी लवजी ए बीचार करीयो के हमणो एवो ज अवसर छे तो लुका गछ मां दीष्या लेहु । एवो नीश्रय करी ने ते व्रजंगजी जती पासे गया, ने कह्यु के स्वांमी मने दीष्या आपो । पण ते साथे तमारे उमारे एवो करार के तमारा शीष्य हुवां पीछे बे बरस लुका गछ मां रही सूर ने पछी मारो मन होसी ते गछ मां जसू । एह लवजी ना वचन सुणीने व्रजंगजी एम बोलता हुवा-तुमारी इछीया हुवे जीवक करजो । एम ठराव करीने वीरजी बोरानी आग्या लेरने दीष्या लीधी । समत १७१२ मां लवजी थया । घणा सूत्र सीधंत भणीने पंडीत थया ।

ते पक्षी वे बरसे पीताना गुहने एकतेलेइ ने पुछियो के तमे साधने आचार
 जीममछे तीम पाली छो के नही । तीवारे वजागजी बोल्या के आज पांचमो
 आरो छे तो भगवंत ना बचन प्रमाणे, संजम पले नहि । पले जसो पाली जे ।
 तिवारे रीष लवजी बोल्या के स्वांमी भंगवंत नो भारग तो इकीस हजार
 बरस लग भगवंतनो सासन चाल सी तुमे एम केम बोलो छो । आप लुका
 गछ छोडी ने नीकलो ने ए पीचंतर मा पाटवी जीव राजजी स्वांमीनी
 नेधाय तथा आ प्रमाण बीचरो तो तमे अमारा गुहने अने आपरा सीस ।
 तीवारे वरजंगजि जति बोल्या अमाराथी तो गछ छोडीस नहीं । तिवारे
 हाथ जोरी ने लवजी बोल्या-हे स्वांमी मन रजा हुवे ! तीवारे एक तो
 लवजी एक माणजी ने एक घौमजी ए ऋण जण गछ छोडीने स्वमत समत
 सतरेन चवदे नी सालमे बीध्या लीधी ।

वजंगजी ने बोत रीस चडी । गाम गाम में कागद बीधा के लवजी
 मराची न्यारो फंटी ने गयो छे । तेने जागा तथा आहार पांणी बीजो मती ।
 एवो वरजंगजी ए बंदोवसत कीधो । लवजी स्वांमी ए बीहार करीने एक
 गाम मा गया । तिवारे जायगा मुनी ने उतरवा देवे नही । तीवारे मुनी
 पडेली जायगा मां उतरीया त्यां तेमना ग्यांन ध्यांन संजम नी रीत देष कर
 घणा आबक आबिका तेमने पासे आबो सुघ बांणी सांमली ने साधुनो धर्म
 घणा जिणे अंगीकार करीयो । लवजी स्वांमी नी महिमा देषकर जती
 लोकां ने धेस उतपन हुवो । तीवारे बेसी लोक एम बोल्या-के लवजी स्वांमी
 ने दुढामां उतरीया देध्या । तिवारे दुढीया नाम तपा लोकां ए थापना
 कीयो । सबत सतरेने चउदाने बरसे पोस बढ तीजने बीवसे दुढिया कह
 बांणा । दुढीया नाम कानजी रीष नां सांधां रो नाम छे । बाबीस संपरदाय
 रा साधां नाम दुंढीया नहि छे । दुढीया नाम कहवाणा । ते बीन सू आज
 बीन सुधी समत उगणीसे ने तेपन रा आसोज सुब १० सूधी बोय से
 गुणबालीस बरस हुवा मटेरा चेतम तो तथा हंस्या धर्म कहेक साधाने हुवां ने
 तीन से बरस हुवा । इम कहे ए बात एकंत जुठ कहे छे । दुंढीया नाम
 कहवाणा तीणने बोयसे गुण बालीस बरस हुवा ।

॥ लवजी सांमी ने सीष थया तेना नाम लीधंते ॥ अमंदा
 मां कालुपुरना रहेबासी, पोरवाड, सोमजी तेबीस बरसनी उमरनो आबक
 हंतो । बहु बेरागथी सोमजी ए लवजी स्वांमी पासे बक्या लीधी । लवजी

स्वामी मीमांनुगोम बीचरता बिरानपुर आग्या । त्या सीधांत बांली सांम-
लवा घणा थावक थाविका आग्या ने मुनीनी बांणी सांमली ने ए जसहर
ना इन्द्रपुरना नामना बाहीरना पाडामां लवजी स्वामी पधारीया त्यां घणो
धर्म नो उपदेश हुवो । तेथी लुकागच्छना जतीयां बहु द्वेष करीयो ने
अमकी बाई रंगा रो मारफत जेरनी लाडवा बेराग्या । लाडु पाषाथी
लवजी स्वामी ने जेर उपनो । तोवारे जेर जांणीने संथारो करीने देवगत
हुवा । तेमना पाट सोमजी स्वामी हुवा । तेमना चेला हरीदासजी,
प्रेमजी, कांनजी, गीरधरजी, अमीपालजी, श्रीपालजी, हरीदासजी,
जीवाजी सेहरकरणीमलजी, केसुजी, हरीदासजी, समरथजी, गोदाजी,
मोहनजी, द्युदानंदजी, संखजी आबदेइने अनेक चेला सोमजी स्वामीना
हुवा । ए तमाम गछ छोडी ने चेला थया ॥ ए ध्यात कांनजी रोषनी
संप्रदाय छे ॥

धेमकरणजी आचारजजी ने पाट धर्मसिघजी स्वामी पाट बठा ए
७३ मा पाटवी ॥ धर्मसिघजी आचारजजी ते तेरवसं ग्रहस्थ पणो रया
न पचावन वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पछे चार वरस आचारज पणो
रया । सरब दीध्या गुणसाठ वरस । सरब आउषो बहोत्र वरसनो । बीरना
नीरवाण सू इकीसे बहोत्र वरस हुवा पछे समत सतरे न दोयरी साल देव-
लोक हुवा ॥स०॥१७०२॥ धर्मसिगजी आचारजजी ने पाट नगराज जी
स्वामी पाट बठा ए ७४ मा पाटवी ॥ नगराज जी आचारज जि छवीस
वरसा गृहस्थाश्रव पणो रहिने बाण्ट वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पोछे
छ वरस आचारज पणो रह्या । सरब दीध्या अष्ट वरस पाली । सरब
आउषो चोराणु वरस नो । बिरना निरवाण सू इकीसे इठत्र वरस हुवां
पछे समत सतरे न आट रो साल देवलोक हुवा ॥समत १७०८॥ नगराजजि
आचारजजि ने पाट जिवराजजी स्वामी पाट बठा ए ७५ मा पाटवी ॥
जिवराजजी आचारजजी बारे वरस संसार मे रहीने । पचीस वरस समान्य
प्रवरज्या पाली । पछे तेरे वरस आचारज पणो रया । सरब दीध्या तेष्ट
वरस पाली । सरब आउषो पोछत्र वरस नो । बीरना नीरवाण सू इकीसे
इकाणु वरस हुवा पछे समत सतरने इकीसे वरसे देवलोक हुवा ॥स०॥
१७२१ ॥

॥ अथ संवेगी धर्म नी थापना कीसे वरस हुइ ते कहे छे ॥
समत । १७ ने पनरा की साल मे गुजरात देसे गोल ग्राम मध्ये तिलोके
पीत वस्त्र कीषा । तिण दिन थी संवेगी कहाणा इत्यर्थ ।

जिवराजजी आचारजजि ने पाट धर्मदासजी स्वामी पाट बठा ए७६
मा पाठबी ॥ धर्मदासजी आचारजजि पनरे वरस संसार परे रया । पीछे
पांच वरस जाजेरा वारे व्रतधारी सरदा पोत्या बंध नी रहिने पनरे दीन
सामान्य प्रवरज्या पाली पीछे बावन वरस आचारज परे रया । सरब दीव्या
बावन्य वरसा जाजेरी पाली । सब आउषो बहोत्र वरस नो । वीरना नीर-
वाण स्र बाइसे तयालिस वरस हुवा पछे समत सतरे ने तीयोत्रे वरसे बेवलीक
हुवा धार नगर्मधे ॥स०॥१७७३॥

॥ धर्मदासजी माहाराजनी हकीकत लिपंते ॥ समत सतरन पन-
रीरी साल मां अमदाबाद पासे आवेला सरवेज गाम मां धर्मदासजी करीने
रहता हुता । तेमना पितानो नाम जीवण माइ करीने हुतो । ते तेमनी
न्यात मां मुख्य मालक हुता । ते जातना भावसार हुता । धर्म दासजी
बालपणा थोज बहु नाग्यवंत हुता । ते लुकाजती पासे सूत्र सिधात नो
अम्यास कीषो । अने जेन धर्म ने विष नोपुण थया । बहु सिधांत सूत्र भगवा
थी तेनो मन अथोर संसार उपर थी उठी गयो । ते समय पोतीया बंध
आवक ऐमचंद जी मिल्या । उन को उपदेस सांभली ने संसार त्यागी ने
प्रेमचंदजी ना चेला हुवा । उण के पास समत सतरे सोला रे वरसे सांवन
सुद तेरस दीने सरावक पणो धारण कीयो । वरष पांच आवक पणो पाल्यो ।
पछे उत्तम मुनी नी संगत स्र सरदा आइ । त्र पोत्या बंधनो सरदा मोसराइ ।
पीछे संजम लेणे की इछ्या हुइ ।

त्रे एवो विचार करी बीजा इकीस जीणा संघाती साथ लेइ ने प्रथम
ते लवजी अणगार पासे आब्या । अने धर्म चरचा चलाबी । तेहनी परपणा
मां सात बोलनो फर पड्यो । तीण स्र एहने पासे दीव्या न लेबी पछे ते
बरीयापुरी ना धर्मसि मुनी पासे आब्या ने चरचा चलाबी । तो परपणा
मां इकीस बोलनो फेर पड्यो । तिण स्र एहने पासे दीव्या न लेबी । पछे
जीवराज जी स्वामी स्र चरचा चलाबी गणी । जेजे प्रसन पुछा तेहना जबाब
सीधंत ने नाय बीना । त्रे धर्मदास जी दिल मां विचार करीयो क एह महा

मुनी पासे दीव्या लेणी मन जोग छे । एहवो बीचार करीने एक तो पोते भाप, इकिस जिणा बुजा, एवं बाबीस जीणां साथे भ्रमदाबाद बाहीर पात साही बाडीमां समत सतरे इकिसरी साले मास काती सूद पांचम ने जिव-राजजी स्वामी ने पासे दीव्या धारण करी धर्म दास जी माहाराज, धन-राजजी आबे दे इकीस जिणा पुज्य श्री धरम दास जी ना चेला हुवा काती सुब पांचम ने । पछे माहा पंडत श्री धर्मदासजी पहेले बीबसे गोचरी कुमार पाडा मां गया । आहार पाणी नो पुछ्यो-त्र एक कुमारे कह्यो रख्या छे । तिवारे धर्मदास जी माहाराज कह्यो के तमारा भाव होय तो बेराबो । एम कहियो तानो पात्रो धरीयो । तीवारे पेली बाइए पात्रा मा सुडले करी ने उचेथी राख नांथी । ते राख उडीने बाहीर पडी । थोडी घणी पातरा मां पडी । ते बेरी लाया ने पुज्य श्री जीव राजजी स्वामी आगल धरी । पछे गुरु माहाराज एम बोलता हुवा-हे सीस आज प्रथम गोचरी में आहार सू' मील्यो छे । तिवारे धर्मदासजी हात जोड़ी ने, इम बोलता हुवा-हे स्वामीजी माहाराज आज मने रख्या मील्यो नी बात कही ते सांभलिने श्री जीव-राज जी माहाराज सूरत ग्यान सू दीष्ट लगाय ने एम बोल्या-के हे सीस तुमे तो माहा भगवंत छो । जेम रख्या लीना घर नही तेम तमारा आवक बाइ भाइ बिना गांम रेसे नहीं ने पात्रा मां श्री उडीने राख बाहर पडी तेथी तमारे घणा सीष्या होसी । तमारा थो तुमारा बेलाना घणा जुदा जुदा शौंगारा थास्ये । एवो गुरु माहाराज नो वचन प्रमाण करी गोचरी गया तिहनी इरीयाबहि परकमोने पछे थोडी घणी पातरा मां पडी ते रख्या कपड़ा सू छ्वांणने उना पांणी मां नाबीने माहामुनीजी पीगया ।

धर्मदास जी दीक्षा लीधां पछी पनरे बिकसे समत १७ बरस २१ सा मीगसर बढ पांचम जीवराज स्वामी देवलोक हुवा ।। तेथी लोकां मां एबी बात बीस्तरी के धर्मदासजी ए स्वमते दीक्षा लीधी गुरु नही । ए बात लोक मां जुटी बीस्तरी छे । दुसरो कारण क धर्मदास जी माहाराज माहा भागसालो हुवा ने तेमना गुरु दीक्षा लीधि पछी पनरे बीबस रह्या ने धर्मदासजी नो प्रताप नाम करम सुरत बोट बध्यो । तेथी धर्मदासजी नो नाम प्रगट रह्यो छे । थोडी मुदत मां श्री धर्मदासजी ए सिधांत मारग ने अनुसारे जेन धर्म प्रवरतायो अने बेसो बेस बिचरी ने जेन धर्म नो माहिमा बधाइ । घणा आवक बेराग पांन्या ।

अल्पकाल मां जाहा मुनि धर्मदासजी ने नीनाणु सीस
 थाया तेहनां नाम ॥ १ ॥ धनराजी ॥ २ ॥ लालचन्द जी ॥ ३ ॥
 हरीदासजी ॥ ४ ॥ जीवाजी स्वामी ॥ ५ ॥ बडा पीरथी राज
 जी स्वामी ॥ ६ ॥ हरीदासजी सांमी ॥ ७ ॥ छोटा पीरथी राज
 जी स्वामी ॥ ८ ॥ मुलचंदजी स्वामी ॥ ९ ॥ ताराचंदजी स्वामी
 ॥ १० ॥ अमरसींगजी स्वामी ॥ ११ ॥ वेताजी स्वामी ॥ १२ ॥
 पदारथजी स्वामी ॥ १३ ॥ लोकपनजी स्वामी ॥ १४ ॥ भवानी-
 दासजी स्वामी ॥ १५ ॥ मल्लकचंदजी स्वामी ॥ १६ ॥ पुरसो-
 तमजी स्वामी ॥ १७ ॥ भुगटरायजी स्वामी ॥ १८ ॥ मनोरजी
 स्वामी ॥ १९ ॥ गुरु सायजी स्वामी ॥ २० ॥ समरथजी स्वामी
 ॥ २१ ॥ वागजी स्वामी ॥ समत सतरे बरसे इकीस री साल मास
 कातो सब पांचम ने एह इकीस जीणां री दीव्या एक दीन हुइ : धर्मदासजी
 रा चेला हुवा ।

॥ २२ ॥ भेलजी स्वामी ॥ २३ ॥ ललुजी स्वामी ॥ २४ ॥
 रणछोरजी स्वामी ॥ २५ ॥ लवजी स्वामी ॥ २६ ॥ वागजी
 स्वामी ॥ २७ ॥ अमरसींगजी स्वामी ॥ २८ ॥ बलदेवजी स्वामी
 ॥ २९ ॥ घोरघनजी स्वामी ॥ ३० ॥ राजमलजी स्वामी ॥ ३१ ॥
 मणीलालजी स्वामी ॥ ३२ ॥ मोहणजी स्वामी ॥ ३३ ॥ उत्तम-
 चंदजी स्वामी ॥ ३४ ॥ रंगलालजी स्वामी ॥ ३५ ॥ मोरसींग
 जी स्वामी ॥ ३६ ॥ बगसीरामजी स्वामी ॥ ३७ ॥ धर्मचन्दजी
 स्वामी ॥ ३८ ॥ दीपचंदजी स्वामी ॥ ३९ ॥ देवीचंदजी स्वामी
 ॥ ४० ॥ मालचंदजी स्वामी ॥ ४१ ॥ कीन्याणजी स्वामी
 ॥ ४२ ॥ जगभाणजी स्वामी ॥ ४३ ॥ रतीरामजी स्वामी
 ॥ ४४ ॥ न्यालचंदजी स्वामी ॥ ४५ ॥ केसरजी सांमी ॥ ४६ ॥
 मिलणजी स्वामी ॥ ४७ ॥ मनरूपजी स्वामी ॥ ४८ ॥ चंद्र-
 भाणजी स्वामी ॥ ४९ ॥ लिछमणजी स्वामी ॥ ५० ॥ जसरूप-

जी स्वामी ॥ ५१ ॥ गढामलजी स्वामी ॥ ५२ ॥ कुसालजी
 स्वामी ॥ ५३ ॥ केवलचंदजी स्वामी ॥ ५४ ॥ सीरदारमलजी
 स्वामी ॥ ५५ ॥ चौथमलजी स्वामी ॥ ५६ ॥ उदेसींगजी स्वामी
 ॥ ५७ ॥ वालकिस्नजी स्वामी ॥ ५८ ॥ सिवलालजी स्वामी
 ॥ ५९ ॥ जसींगजी स्वामी ॥ ६० ॥ जताजी स्वामी ॥ ६१ ॥
 हीरालालजी स्वामी ॥ ६२ ॥ प्रश्नचन्दजी स्वामी ॥ ६३ ॥
 किसनचन्दजी स्वामी ॥ ६४ ॥ जसरूपजी स्वामी ॥ ६५ ॥
 फुलचंदजी स्वामी ॥ ६६ ॥ फतेचंदजी स्वामी ॥ ६७ ॥ जेठ-
 मलजी स्वामी ॥ ६८ ॥ रुगलालजी स्वामी ॥ ६९ ॥ वारीलाल-
 जी स्वामी ॥ ७० ॥ कालीदासजी स्वामी ॥ ७१ ॥ कनीरामजी
 स्वामी ॥ ७२ ॥ अगरचंदजी स्वामी ॥ ७३ ॥ करणीदानजी स्वामी
 ॥ ७४ ॥ दानमलजी स्वामी ॥ ७५ ॥ हमीरमलजी स्वामी
 ॥ ७६ ॥ गेनमलजी स्वामी ॥ ७७ ॥ मंगलचंदजी स्वामी ॥ ७८ ॥
 नेणचंदजी स्वामी ॥ ७९ ॥ उंगरजी स्वामी ॥ ८० ॥ कालू-
 रामजी स्वामी ॥ ८१ ॥ सोमजी स्वामी ॥ ८२ ॥ बालुजी-
 स्वामी ॥ ८३ ॥ रायमाण जी स्वामी ॥ ८४ ॥ देवजी स्वामी
 ॥ ८५ ॥ अजरामलजी स्वामी ॥ ८६ ॥ सरजमलजी स्वामी
 ॥ ८७ ॥ वनेचंदजी स्वामी ॥ ८८ ॥ मारमलजी स्वामी ॥ ८९ ॥
 रामनाथजी स्वामी ॥ ९० ॥ लवजी स्वामी ॥ ९१ ॥ रतनचंद
 जी स्वामी ॥ ९२ ॥ वीरमाणजी स्वामी ॥ ९३ ॥ मेगराजजी
 स्वामी ॥ ९४ ॥ पुनमचंदजी स्वामी ॥ ९५ ॥ रणजीतसींगजी
 स्वामी ॥ ९६ ॥ खूबचंदजी स्वामी ॥ ९७ ॥ मानमलजी स्वामी
 ॥ ९८ ॥ हस्तीमलजी स्वामी ॥ ९९ ॥ खमिरमलजी स्वामी ।
 ए निनाणु चेला ॥ पुण्य श्री धर्मदासजी माहाराज रे हुषा ॥ तेहना नाम
 जाणवा । एम घणो परीवार यथे । निनाणु चेलाना तथा उणारा
 चेलाना । चेलानो परीवार बहुत बध्यो । जे मारवाड, मेवाड । मालवो ।

मौमाड । धानवेस । वीक्षण वेस । गुजरात । काठोयायाड । भाला-
वाड । कछ वेस । वागर वेस । सोरठ वेस । पंज्याब वेस । आबवेन
अनेक वेसा मां बिहार करीयो । त्रें जेन धर्मनी उदीयोत गणो हुवो ।
अय बाबिस समुदायनी थापना कोन से बरस हुइ ते कहै छै ।

पुज्य श्री धर्मदासजी माहाराज रे निर्माणु सीष हुता । ते माह
सू इकिस समुदाय थपांणी । वेस मालवो । सह्र धार नगर मथे । समत
सतरे बरस बहोत्रे चेत सुब तेरस बीने बाबिस समुदाय थपाणी
तेहना नाम लिख्यते ॥१॥ पुज्य श्री धर्मदासजी नो सींगारो ॥२॥ पुज्य
श्री धनराजजी नो सीगांडो ॥१॥ पुज्य श्री लालचंदजी नो सीघाडो
॥४॥ पुज्य श्री हरीदास जी नो सीघांडो ॥५॥ पुज्य श्री जीबाजी नो
सीघाडो ॥६॥ पुज्य श्री बडा पीरथीराजजी रो सीघाडो ॥७॥ पुज्य श्री
हरीदास जी नो सीघाडो ॥८॥ पुज्य श्री छोटा पीरथीराज जी नो
सीघाडो ॥९॥ पुज्य श्री मलुचन्द जी नो सीघाडो ॥१०॥ पुज्य श्री तारा-
चंद जी नो सीघाडो ॥११॥ पुज्य श्री प्रेमराज जी नो सीघाडो ॥१२॥
पुज्य श्री खेता जी नो सीघाडो ॥१३॥ पुज्य श्री पदारथ जी नो सीघाडो
॥१४॥ पुज्य श्री लोकपन जी नो सीघाडो ॥१५॥ पुज्य श्री मवानीदास जी
नो सीघाडो ॥१६॥ पुज्य श्री मलुकचन्द जी नो सीघाडो ॥१७॥ पुज्य श्री
पुरुसोतम जी नो सीघाडो ॥१८॥ पुज्य श्री मुगवरायजीनो सीघाडो ॥१९॥
पुज्य श्री मनोरजी नो सीघाडो ॥२०॥ पुज्य श्री गुरुसाह जी नो सीघाडो
॥२१॥ पुज्य श्री समरथ जी नो सीघाडो ॥२२॥ पुज्य श्री वाग जी नो
सीघाडो ॥ ए बाबिस समुदाय ना नाम जाणवी ॥ बडी समुदाय रो
नाम श्री धर्मदासीरा नाम रो थपांणी इकीस समुदाय नाम ॥ पुज्य श्री
धर्मदास जी ना चेलारा नाम रो थपांणी ए बाबिस सीघाडो ना नाम
जाणवा ॥

ए बाबिस संप्रदाय मांह सइकरां तथा हजारों साधु साध्वी हुवा ।
तेनो बरतारो अनेक देशमां धरमनो फेलाव थयो । पछे च्यार संप्रदाय फेर
थपांणी तेना नाम ॥१॥ मलुकचंदजी लाहोरीया ॥२॥ अंजरामल
जी स्वामी ॥३॥ श्री कानजी रीषजी नी ॥४॥ श्री धरमसीहजी नी
ए च्यार संप्रदाय ना नाम जाणवा । वेस मालवा मां नगर उजेणीमा ।
पुज्य श्री धर्मदास जी ना बरसन करवा । च्यार जीणा पधारीया तेहना
नाम-पुज्य श्री मलुकचंद जी । पुज्य श्री कानजी रीष । पुज्य श्री अजरामल

जी । पुज्य श्री धर्मसींह जी एह च्यारे मुनीए । पुज्य श्री धर्मदासजी ने कह्युं क आपतो बोल भागवान हुवा ने आपनो परवार बोल बघ्यो सो बावीस संगारा तो आगल छे ने च्यार भ्रमने सामल करी ने बावीस सांगाडा आपन करावो ते बषते पुज्य श्री धर्मदासजी ए फुरमाव्यो के बावीस सांगारा ना नाम तो जाहेरात मां थप गया सो भवे बावीस भेला करसु तथा फेर लारे होसी तिणने भेला करसु तो चतुरविध संघ ने मालूम परे नहीं तो चतुरविध संघ ना मनमां डावाडोल रहसी । इए भुवे बावीस सांगाडा तो कायम राखसां ओर आपरो पीण बहवार बोल आछो छतो ठीक एह दीवस थी च्यारे सांगारा पुज्य श्री धर्मदास जी नी नेसराय तो नहीं पीण नेसराय जे जेह दारह्या पुज्य श्री धर्मदासजी एम फुरमायो के ए च्यार सांगारा वाला साधू साध्वी माहा भागवान छे ।

धर्मदास जी आचारजजि ने पाठ ॥ धनराजजी स्वामीं पाठ देठा ए ७७ वा पाठवो ॥ धनराज जी आचार जी इकीस वरस संसार में रही ने इकावन वरस समांन्य प्रवरज्या पाली । पीछे इग्यारे वरस आचारज पणो रया । सरब दीण्या वाष्ट वरस पाली । सरब आउषो तयासी वरसनो । बीरना नीरवाण सू वाइ से चोपन वरस हुवा । समत सतरे ने चौरासी ये देवलोक हुवा ॥ समत १७८४ ॥

अथ श्री पुज्य श्री धनराजजी माहाराजजी री उतपत्ती लिपंते ॥ पुज्य श्री धर्मदास जी माहाराज ने निनाणु चेला थया । ते मां बडा चेला धनराजजी स्वामी हुवा । देस मारवाड, प्रगनो साचोर नो गांम, मालवाडो तिणरा कामदार मुता वागाजी, जातरा पोरवाड, तीणा रां बेटा घना जी नो जनम समत : सतरे एकारी साल आसोज सुद बीजे बसमी रो जनम हुबो । तिणां रे घरे हजारों रो धन छोडी सगाइ छोडी ने समत सतरे ने तेरा रे वरसे पेमचन्दजी कने पोतीयाबंघ उ बालां कने सरावण पणो धारण कीनो । तिणां रा चेला हुवा । पेमचन्दजी कने वरस आठ रे आसरे रह्या । पछे समत सतरे वरस इकीसे काती सुव पांचम ने पोत्या बंघ छोडीने पुज्य धर्मदास जी कने दिण्या लिधी ॥ मारवार मे घणा बिचरीया । एक धी राधी ने च्यार बिगे रा त्याग कीना । घणी तपस्या कीनी । घणा वरस तक रात रा आडो आसण कीनो नहीं । घणा काल ताइ एकअ कीधा । पछे घणा वरस मेरते थांणे बिराजीया रया । नव मास बेले २ पारणो करतां सरीर री संगती थकी देखी ने कयो क अब तो

सरीर उन्न दीयो दीसे छे । अ साध बोल्या के पुज्यजी महाराज आप तो बेले २ पारणो करो इज छे । अ पुज्यजी बोल्या—अबे तो धामो धान खाय तो धनो धान खाय । चोबिहार संधारो पछवीयो । दोय दीन रो संधारो आयो । समत सतरे चोरासीये आसोज सुब बिजेबसमी ने दोय गरी दीन छडीयां संधारो सीजीयो । सरब आउषो तयासी वरस नो हुबो ॥

धनराज जी आचारजजी ना पाट बुधरजी महाराज पाट बेठा ए ७८ वा पाटवी ॥ बुधरजी माहाराज पचास वरस संसार मे रही ने सात वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पीछे बीस वरस आचारजपरणे रया । सरब दीव्या सताइस वरस पाली । सरब आउषो सीतंत्र वरस नो हुबो । बिरना नीरवाणसु वाइसे छी मंत्र वरस हुवा । समत अठारन च्यार री साल देवलोक हुवा ॥ समत ॥ १८०४ ॥

पुज्य श्री धनराज जी रे पाट पुज्य श्री बुधर जी विराजीया समत सतरे चोरासीया रा काति वद ५ (पांचम) ने तेहनी ध्यात लीषंते ॥

पुज्य श्री बुधरजी माहाराज नागोर ना वासी, जातना मुरगोत । समत सतरे सताइस रा जेष्ट सूद इग्यारस रो जनम । पुज्य बुधरजी ना पीता माणकचंदजी पछे नागोर सू जायने सोजत मे रया थका । बुधरजी माहाराज अस्त्री बेटा घणो धन छोडीने समत सतरे ने सीतंतरा रा सांवण सूद छटे रे दीन दीव्या लीधी । बेले २ पारणो आदि घणो तपस्या अतापना लीधी । अमीगृह कीधा । नाना प्रकार ना घणा जीवान धर्म पमाडी ।

पुज्य श्री बुधरजी ने सीस नव थया तेहनां नाम लीषंते ॥ १ ॥ श्री रुगनाथजी ॥ २ ॥ श्री जतसीजी ॥ ३ ॥ श्री जमलजी ॥ ४ ॥ श्री कुमलो जी ॥ ५ ॥ श्री नारायणजी ॥ ६ ॥ श्रीरूप—चंदजी ॥ ७ ॥ श्री रतनचंदजी ॥ ८ ॥ श्री गोरधनजी ॥ ९ ॥ श्री जगरूपजी । ए नव चेला थवा । घणो उदीयोस कीयो धर्म नो, समत सतरे ने चोरासीये माहा सूद दसमे ने दीने बुधरजी माहाराज ने आचारज पद दीयो । श्री बुधरजी माहाराज समत अठारे ने चौकारा फागु सूद पुन्यम पछे तिन आहारना पचकाण घर मे थकां कीया थां । सो

अब समत अठारे ने चोकारा चोमसने पुज्य श्री बुधरजी माहाराज पांच उपवास नो पारणो करीयां पछे सरीर में खेब हुइ । अरे संथारो करीयो । संथारो दोय पोर रो आयो । समत अठार ने चोकारे वरसे आसोज सूब बिजेदसमी ने देवगत हुवा ॥

बुधरजी माहाराज ने पाट पुज्य रुगनाथजी माहाराज पाट बठा ए ७६ मा पाटवी ॥ रुगनाथजी माहाराज इकीस वरसने तीन मास जाजेरा संसार में रही ने सतरे वरस संमन्य प्रबरज्या पाली । पीछे बयालीस वरस आचारजपणे रया । सरब बीष्या गुणसाइ वरस पाली । सरब आउषो असी वरस नो हुबो । बीरना नीरवाण सू तेइसे ने सोले वरस हुवा । समत अठारे छीयालीसे देवलोक हुवा ॥ समत ॥ १८४६ ॥

पुज्य श्री बुधरजी ने पाट पुज्य श्री रुगनाथ जी माहाराज बिराजाया ॥ समत अठारे ने चोकार वरसे आचारज पद दोषो । जोधपुर मध्य ॥ पुज्य श्री रुगनाथजी सोजत ना वासी हुता जातना बरलावत हुता । पुज्य रुगनाथ जी ना पीता नो नाम..... समत सतरे छासटारा माहा सूब पांचम रो जनम । संसार पक्षमां अनेक सास्त्रना जाणकार हुवा । बेराग पाम्यां ने आतमाने तारवा माटे अनेक मत मतांज जोया, पण आतमा तिरे जेयो एकहि धरम देख्यो नहि । तिवारे सहर सोजत ने बाहिर एक चामुडा देवी नो मन्वीर हुतो । ते वषत मां चामुडा देवी नो प्रत्यक्ष परचा पडे । जेना जेना भाग मां जेबी प्राप्ती होय तेवी चामुंडाजी तेहनी आसा पुरण करे । तिवारे रुगनाथजी ए बिचार करीयो क अमारो तो संसारना सुखनी चायना नथी । एवो बिचार करीने चामुंडा ना मन्वीर रुगनाथजी जायने तेलो पचवीयो । ध्यान धरीने बेठा । तेलानी तीसरा बीन मी रातरा प्रतक्ष देवी आबीने, हाजर हुइ के तुं अण बीब थी भूषो केम बठो छं । जे इंछीया ते मांग ।

तिवारे रुगनाथजी माहाराज कह्य के अमारो कोई संसार ना सूषां नो चायना नथी । एक मारे तो जन्म मरण भेटवा नो छाया ना छ । एक भुगतनी भारगनो जहर छं । तेनो साबो भारग बतावो । तिवारे चामुंडाजी ए ग्यान मां देषोने कह्यो-के आज बीन उग शहर सू पुरख बीसे गांम बगरी के रस्ते पुज्य बुधरजी माहाराज गंगे सात थी आवसे । तेना तमे शीश हुजो सो तुमारी आतमानो कल्याण होय जासी । इतरा

समाचार देवीना सूरण ने बीन उगां पछे सांथी उठीने पाधरा देवीए बतोयो तीए रसते गया । आगे रस्तां मां पुज्य श्री बुधरजी माहाराज ना बरसन करती बषते मनमां संतोके आवी गयो । पुज्य श्री बुधरजी माहाराज शहरे मां पधारीया ने तेहनी भांणी सांमलीने समत सतरे न ब्यासीया ए पुज्य श्री बुधरजी नो चोमासो सोजत मां हुबो । त्र श्री रुग्नाथजी पुज्य श्री बुधरजी सू प्रश्न रुप चरचा बोत गणी कीनी । प्रस्न न उत्र देतांइ बीलमां साचि समजीक ए जेन धर्म साचो जांणीयो । ब्यासिया ना आसोज में श्री रुग्नाथजी पुज्य श्री बुधरजी माहाराज रे पासे प्रतिजोबाणा । उण बगत मे संतर वरस रा हुता । चोरासीये फागुण सुब इग्यारस ने श्री रुग्नाथजी शील व्रत धारण कीनो । पुज्य श्री बुधरजी कने समत सतरे न वरस सोत्यासीया रा जेठ वद बीज बुधवार ने सोजत में दिण्या, इकीस वरस ने तीन मास भाभेरा हुता रुग्नाथजी बीध्या लीधो, मोटे मंडाण सू पुज्य श्री बुधरजी कने श्री रुग्नाथजी माहाराज ने तेवीस चेला हुवा । पुज्य श्री बुधरजी माहाराज रे पाट पुज्य श्री रुग्नाथजी बठा समत अठार ने जोकारी साल ।

पुज्य माहाराज वडा अत सयंत(वंत) हुवा । घणा पाषड ने मीटावी ने पोत्याबंदनो तथा मींद्र आंमना रो धरम घणो हुतो ते मीध्यात मीटावी, गणा भवी जीव ने धर्म मे आंणीया । जेन मारग नो उद्योत गणो कीनो । पुज्य माहाराज री ने सराय मे साध साधवी गणा हुवा । समत अठारे ने चालीस मा पुज्य श्री रुग्नाथजी सून श्री जेमलजी माहाराज न्यारा हुवा, पौण पुज्य श्री रुग्नाथजी माहाराज बीराजीया रया जा तक श्री जेमलजी माहाराज पुज्य पदवी री चाद्रू उबी (ओडी) नही । पुज्य रुग्नाथजी माहाराज समत अठारे ने छियालीस रा माहा सुब ग्यारस बीन सहर मेडते देवलोक हुवा । प्रणाम सुध आलोवणानी बवणा करीने आत्म नो सुध करीने निरवाण पद हुवा । समत अठार ने चोपना रे वरस श्री गुमानचंदजी माहाराज न्यारा हुवा । समत अठारे इकोतरे चौथमलजी न्यारा हुवा । समत अठारे चोरासीये श्री भाहाचंदजी माहाराज न्यारा हुवा । समत अठारे पिच्यासीये श्री मांणकचंद जी माहाराज न्यारा हुवा ।

पुज्य रुग्नाथजी माहाराज ने पाट पुज्य जिवणचंदजी माहाराज पाट बेठा ए ८० मा पाटबी ॥ जिवणचंदजी माहाराज बिस वरस संसार

में रया पछे चोपन बरस संमन्य प्रज्या पाली । पीछे पनर बरस आचारज पणे रया । सरब दीष्या गुणंत्र बरस पाली । सरब आउषो निबियासी बरस नो हुषो । बिरना नीरवाण सूं तेइसे ने इगति बरस हुवा । समत अठार ने इगण्टे देवलोक हुवा ॥१८६१॥

पुज्य श्री जीवणचंद जी माहाराज री प्यात लिपंते ॥ देस मारवाड मे गढ जोधाणा रे पास गांम तांमडीया के रवासि, बोरा बसत पालजी के पुत्र जीवणचंद जी का जनम समत सतरे ने बहोत्र की साल त्रेसाष सूब तिज के दीन उत्तम लगन मे हुवा । बिस बरस गूहणश्रवमां रह्या । समत सतरे बोणवा रे बरसे आसाड सूद नम री दीष्या हुइ । पुज्य श्री रुगनाथजी रे पास दीष्या लीची । बडा शीष थया । पुज्य माहाराज ना विनेवंत भगतीवंत बहु हुवा दीयावंत । सताइस सीषंत कटे मूष पाठ सिषीयां । अठारे हजार जिनंद व्याकरण रा सीलोक कंठे कीना । कोस छंदनाय अलंकार स्वमत परमत रा अनेक सासत्र नां जाणकार हुता । गणा सासत्र नां पारगामी हुता ।

पुज्य श्री जीवणचंद जी माहाराज रे तेरे चेला हुवा तेहना नांम ॥ १ ॥ उरजनजी स्वांमी ॥ २ ॥ तीलोकचंदजी स्वांमी ॥ ३ ॥ माइदासजी स्वांमी ॥ ४ ॥ जचंदजी स्वांमी ॥ ५ ॥ राय मांण जी स्वांमी ॥ ६ ॥ फतेचंदजी स्वांमी ॥ ७ ॥ अनोपचंदजी स्वांमी ॥ ८ ॥ नवलमलजी स्वांमी ॥ ९ ॥ भिमराजजी स्वांमी ॥ १० ॥ जसरूपजी स्वांमी ॥ ११ ॥ धिरजमलजी स्वांमी ॥ १२ ॥ पेमराजजी स्वांमी ॥ १३ ॥ चौथमलजी स्वांमी ॥

उरजनजी स्वांमी रे चेला पांच हुवा तेहना नांम ॥ १ ॥ माइदासजी स्वांमी ॥ २ ॥ गंभीरमलजी स्वांमी ॥ ३ ॥ नथमलजी स्वांमी ॥ ४ ॥ संकरलालजी स्वांमी ॥ ५ ॥ केसरचंदजी स्वांमी ।

समत अठारे न छियालीस री साल पुज्य श्री रुगनाथजी माहाराज रे पाट पुज्य श्री जीवणचंदजी माहाराज बटा । च्यार सीग मीलने आचारज पद दीषो ।

पुज्य श्री जीवणचंदजी माहाराज ने तेरे चेला हुवा ते मां एक चेला

तुं नाम चोथमलजी हुता । पुज्य श्री हगनाथजी माहाराज ना चेला ने पुज्य श्री जीवणचंदजी ना गुरु भाइ श्री अमिचंदजी हुता । ते अमीचंदजी ने एकहि चेलो हुतो नहि ने अमीचंदजी माहाराज ने गांम बरलु ने असात रही । तीवारे पुज्य श्री जीवणचंद(द)जी ने त्यां बोल्याभ्या । पुज्य शाहेब ने अमीचंदजी ए कह्य कं चेलो आपरो मन आपो । मारी बंधगी करवा रे बासते । तिवारे पुज्य श्री जीवणचंदजी माहाराज आपरा चेला चोथमलजी ने अमीचंदजी ना चेला करीया । अमीचंदजी माहाराज तो बरलु मां देवलोक हुवा । चोथमलजी माहाराज माहा भागवान थया । तेमने चेला मोकला थया । आपरा नांम नो सिधाडो न्यारो थापन कीधो । पुज्य श्री जीवणचंदजी माहाराज माहा भागवान हुवा । समत अठारे न वरस इगष्टे भाद(व)ना वद तेरस न अलोवणानी वदणा करी संथारो कीधो ने पुज्य श्री जीवणचंद जी महाराज भादव सुद पुनम रो संथारो सोज्यो जतारण मध्ये । आउषो निबोयासि वरस नो हुवो ।

पुज्य जीवणचंद जो माहाराज रे पाट पुज्य तिलोकचंदजी माहाराज पाट बटा ए ८१ मा पाटवी ॥ तिलोकचंदजी माहाराज तेइस वरस संसार मे रया पछे चोतीस वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पछे अठार वरस आचारजपरणे रह्या । सरब दीव्या बावन वरस पाली । सरब अउषो पीछंत्र वरस नो हुवो, धीरना निरवांण सू तेइस ने गुण पचास वरस हुवा । समत अठारने गुणीयासीये देवलोक हुवा ॥ समत १८७६॥

॥ पुज्य श्री तिलोक चंदजी माहाराज जी प्यात लिपंते ॥ पुज्य श्री तिलोक चंदजी माहाराज जतारण ना बासी हुता । जातरा नाहटा हुता । पिता नो नांम अजवाजी । माता रो नांम विजयादे । जोके अंगजात पुत्र तिलोक चंदजी को जनम समत अठार न चोकानी सालनो जन्म हुतो । तेइस वरस संसार मे रया । समत अठारे न सताइसनी साले गांम घघराणा मां दीक्षा लीधी । बडा बुधिवंत हुता । सतरे सीधंत मुदे कीधा । घट सास्त्र जाणकार । स्वमत ना परमत ना अनेक सासत्र ना पारगांमी हुता । गणा खेत्र नवा नोकाल्या । गणा भव जिवांने उपदेस दे न मोध्यात मोसराय न गणां न समत धाराबी । सोले वरस सीयालानी १६ वरस उनालानी अतापना लीधी । छोथ भगवंत सू लेने बावन तांइ तपस्या कीधी । छूटगर तपस्या

रो थोकडा मोकला कीधा । समत अठारने इगडटारी साल पुज्य श्री जीवन चंदजी माहाराज रे पाट पुज्य श्री तिलोक चंदजी बिराजिया ।

पुज्य श्री तिलोक चंदजी माहाराज रे च्यार बेला हुवा तेहना नांम ॥१॥ पनराजजी स्वामी ॥२॥ जसराजजी स्वामी ॥३॥ नदरामजी स्वामी ॥४॥ हरवचंदजी स्वामी । समत अठारने गुणियासीरा आसोज वव चोय ने सोमवार न संथारो कीधो । हजार लोक वरसण करवा आव्या ने त्याग पचषांण षंद मोकला हुवा । ओर संथारो सीजवा ने दिन देवता पालवी लेइन आव्या । ते हजारों लोकां नजरे देखी । देवलोक शहर जतारण में हुवा । ते वषत निरवांण ओछव घणो जबर हुवो । पुज्य श्री तिलोक चंदजी ने स्मसाने ले गया । जठे सवाइमल जी छाजेर तेरा पंथी नी सरधानो पको आवक हुतो । तेणे मसकरी रुप बगतमल जी डागा प्रेत्य बोल्या के पुज्य श्री तिलोक चंदजी तो महा भागवान छे । जेनो उत्तम जग्या देखी ने बाध बेनो चहुजे । तिवारे उसी वषत सासन ना देवता ए जीणो जीणो पांणी नो छटकाव करीयो ने जग्या उत्तम हुइ जेथी तेरा पंथीनो आवकनी बात नीची गइ ने जेन भारग दीप्यो । महाराज नो डाघ (बाग) चंनण माहे हुवो । तीवारे पछी सवाइमलजी फेर मसकरी रुप बगत मलजी डाघ ने कह्यो के माहाराज नी भसमी ने नीच लोक हाथ लगाइसे ते आछी बात नही कारके भस्मी मां सोनो चांदी घणो छे । उणी बगते सासन ना देवता ए वरसाद करवा थी नदी आवी ते भस्मी लेगइ ने नीच लोक ना हाथ लगावणा पडीया नही । सो जेन धर्म नी बात उची रही । इसो परचो जांणी ने सवाइमलजी ए तेरेपंथी नी श्रधा वोसराइ ने पुज्य पनराजजी माहाराजनी गुरु आंमना धारण करी । पुज्य श्री तिलोक चंदजी माहाराज तेइस वरस संसार म रया पछे चोतिस वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पछे अठारे वरस आचारजपणो रह्या । सरब दीव्या बावन वरस पाली । सरब आउषो पीछंत्र वरस नो हुवो ।

॥ पुज्य तिलोक चंदजी माहाराज ने पाट पुज्य श्री पनराजजी माहाराज पाट बेठाए ८२ बा पाटवी ॥ पनराजजी माहाराज तेइस वरस संसार मे रया छे । नव वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पछे सताइस वरस आचारज पणे रया । सरब दीव्या छतिस वरस पाली । सरब आउषो गुण

सप्त वरस नो हुवो । वीरना निरवाण स्र तेइसेने छियंत्र वरस हुवा । समत उगणीसे ने छकानी साल देवलोक हुवा ॥ समत ॥ १६०६ ॥

पुज्य श्री पनराजजि माहाराजरी प्यात लिषंते ॥ बेस मारवाड गांम गोरी मे, बोरा करमचंब जी रो बहु नाम देवादेजी । तेहना अंगजात पुत्र पनराजजी रो जनम समत अठारे सेतालिस वरसे फागुण सुद १४ जन्म हुवो । तेइस वरस संसार में रया । समत अठारे ने सितर रि साले भाववा सुद अठम ने दीवसे दीध्या लीधी । समत अठारे ने गुणियासियारा काति बढ तेरस रे दीन चतुरविध सिग मीलने आचारज पवनी थापना कीधी । पुज्य श्री पनराजजी माहाराज ने माहा पंडीत बहुसुरती । अनेक सासत्र ना पारगांमी । समत उगणसे छकानी साल फागुण वद अमावस ने बिन गांम बलुदा मध्ये संघारो किधो । हजारों लोकां वरसण करवा आव्या । छप्पन गाम रा लोक वरसण करवा आव्या । त्याग वरत धंद पंचषाण वोत हुवा ने फागुण सुद चवदस ने दीन माहाराज देवलोक हुवा । माहाराज तेइस वरस संसार मे रया पछे नव वरस समान्य प्रवरज्या पाली । पछे सताइस वरस आचारज परे रया । सरब दीध्या छतिस वरस पालि । सरब आउषो गुणसाठ वरसनो हुवो ।

॥ पुज्य श्री पनराजजी महाराज ने पाट पुज्य श्री दोलतरामजी महाराज पाट बठा ए ८३ मां पाटबी ॥ दोलत रामजी महाराज बारे वरस संसार मे रया पछे नव वरस समान्य प्रवरज्या पाली । बीस वरस आचारज पव रया । सरब दीध्या गुणतीस वरस पाली । सरब आउषो इगतालीस वरस नो हुवो । वीरना निरवाण स्र तेइसेने छिन्न वरस हुवा । समत उगणीसने बाबीस री साल देव लोक हुवा ॥ समत १६२२ । वरस हुवा ॥

॥ पुज्य श्री दोलत रामजी माहाराज रि प्यात लिषंते ॥ बेस मारवाड मे सोजत नगरे साहा उंटर मलजी तेहनी असत्रि चंनणा बेजी । तेहना पुत्र मोती चंदजी दोलत रामजी । तेहनी जात दरला हुता । पुज्य श्री दोलत रामजी नो जनम समत अठारे पिचियासीर्य काति सुद ग्यारस नो जनम हुवो । समत अठारे सतोणवं बेशास सुद छठ दीन माता चंनण बेजी तेहना पुत्र एक तो मोती चंदजी, बुजो दोलत रामजी । ए तिन जिणां दीध्या सहर जतारण म हुइ । मोटे मडांण स्र माहा पंडित बारे सूत्र कंठे किना । एक लाष सोलोक कंठे कीना । स्वमतना परमतना अनेक सासत्र ना जाणकार हुता । पाषंडियाना मबना गालणहार माहा तपसी

वेरागी और तपस्या छोड़ भगत सू लेकर तेइस उपवास तांइ कीधा ।
अनेक तपस्याना थोकड़ा छड़ता बढता कीना । समत उगणिसे ने सांत नी
साल सहर जतारण मधे च्यार सोंग मीलने आचारज पद दीधो । पुण्य श्री
बोहोलत रामजी माहाराज ने तप जप नो उग्रम बोत कीधो । गजा बरस
तांइ बिचरीया । गणा भव जिबा ने मीध्यात छूटायने जैन घरम ने लाया ।
सबत गुणीस बाबिस नो साले शहर जतारण भां चरम चोमासो कीधो ।
पुण्य श्री बोलत रामजी माहाराज आपरा अंत समो आयो जाण ने तिन
दीन पेली अवसर आध्या ३ फुरमायो ते बबत सरीरमा कीचत मात्र असाता
हुता । आपनी पकी साबचेती थी आलोचना नोबवगा चतुर बिध संगनी
साथ थी संभारो कीधो । दीन तिन नो संभारो आध्या काति अब १० दीने
लारलो दोय धडी दीन रयो त्र देव लोक हुवा । काति अब इग्यारस नो
दाघ हुवो । तेनो निरवांण उछव अत्यंत जाबा गणो हुवो । पुण्य श्री
बोलत रामजी माहाराज बारे बरस संसार मे रया पछे नव बरस सामान्य
प्रवरज्या पालि । बीस बरस आचारज पणो रया । सरब दीध्या गुणतिस
बरस पाली । सरब आउधो इगतालीस बरस नो हुवो ।

पुण्य श्री बोलत रामजी ने पाट पुण्य श्री सोभागमलजी माहाराज
पाट विराजिया ए ८४ मा पाटवी ॥ बेस मारबाड सहर जेतारन मे साहा
बुदमलजी । तेहनी असत्री तीजांजी । तेहना अंगजात । सोभागमलजी
जातना लुणीया हुता । समत उगणीसे दसारी साल मा सावण सूब पांचम
नो जनम सोभागमलजी माहाराज नो । समत उगणीसे इकीसरा माहा
सूब पांचम री दीध्या, सहर गंगापुर मे हुइ । सोभागमलजी माहाराज^१

१—साद्वर्ल समही गाज पावंडी रह्या भाज,
चरण बंदत मुनि सोभाग चित धार है ।
जिवण तिलोक मुनि पंनराज बहुत गुणी,
बोलत बोलत वृधी करत अपार है ॥
छतिस गुणा के धार, बाणी हे अमृतसाव,
समजावे नरनार बिम्या चीत धार है ।
सटकाय रिछ पार, करे न तन की सार,
करणी

स्वमत परमत रा जाण अनेक सासत्र ना पारगांमी बोहत हुता । तेरा पंथी तथा समेगीयाची बरचा बोहत कीची । पाचंड ने घरी जग्याए वंडन करीया । ते आबेसमां मारबाड । मेबाड । मालवो । खान बेस दीक्षण बेस । पंड्याब विचरता गुजरात पधारीया । अमंदाबाद लीबडी । समत उगणीसे तेपन री साल मां अंतरे पधारीया । अमंदाबाद लिबडी आबदेन घणा गांभ मां अतापना लेता रहुं । हुजारा लोक बरसन करवा आवतां । तेथी स्वमती ने अनमती मां जेन मारण घणो दीप्यो ओर काठीआवाडधि पधारीने पालनपुर ठाणे च्यार सूं चोमासो हुबो । पुज्य माहाराज श्री सोभागमल जी स्वांमी, तपसीजी माहाराज श्री अमरचंदजी स्वांमी जी माहाराज । चंदनमलजी स्वांमी जी माहाराज । कुनखामलजी स्वांमी जी माहाराज । राजमलजी स्वांमी जी माहाराज । लालचंदजी स्वांमी अत्रे अमरचंद जी माहाराज । तपस्या मास चार कीना । जिररा विन एकसो इकिस उपवास करीया । तिणरो पारणो कातो बढ आठम रो हुबो । तिण पारणा उपर वंड लीलोतीरा तथ चोवीरा ना तथा शील बरत ना तथा काचा पांणी ना वंड त्याग जाव जिवना हुवा । एक सो पचीस जिणां रे हुवा ओर उवास तथा बेला तेला आवदे अनेक मोटी तपस्या पीण गणी हुइ । ओर अमेदांन तथा छूटगर त्याग वर पचवाण घणा हुवा । ओर पालनपुर ना हजुर निबाव श्री सेरमहमदपांजी आपरो पीरीवार लेने तथा उमराव सीरदार पलटण लेने मोटे मंडांण असबारी बणाय ने पुज्य माहाराज श्री सोभागमल जी तथा तपसीजी ना बरसन करवा आब्या ने त्याग । ५ । बरत धारण कीना तीण सू जेन धर्म नी महीमा गणी हुबी ।

॥ दूहा ॥

शशण नायक समरिये, बंछित फल दातार ।

तिथं थाप मुक्ते गया, वर्था जं जं कार ॥ १ ॥

पंचम गणधर पाटवि, प्रतक्ष जिन समान ।

इंद्राविक सेवन करे, बंढे सूर नर आन ॥ २ ॥

जेष्ठ शिष्य जंबु मलो, पाटांतर शिरदार ।

चोरासी अत्र कम सूं, दाव्या हे भ विचार ॥ ३ ॥

जेन दर्पण नामे भलो, अछवभूत रस अपार ।
मुनि सोभाग हम बदे, दर्शण को तार ॥ ४ ॥

सवैया ॥ ३१ ॥

मुर्धर मंडल मांय, कियो धर्म को उछाय;
पाषंड विडार, किवि मिथा तकौ बार है ।
चंद्र सम तप तेज, उदय भयो हे रवि;
समस्त वृत्त वेद, तारधा नर नार है ॥
मुनिव गावत गुण; नर नारो स्वायूण;
पूज रूप त गछ, सीसर सु धार है ।
करे अपार मोक्ष, सेति प्यार है ।
अनेक गुण हैं सार, कहेतां न लहूं पार ।
चर्णा की बलीहार, सोभाग चित धार है ॥ १ ॥

आसोज सूकल सार, तिथि पंचमी धार ।
कियो हे ग्रंथ त्यार, ज्ञान कुं विचार हे ।
उगणीसे सनचार, तेपन की साल बार ,
पालनपूर मडार, देश गुजर धार है ॥
केह ग्रंथ अनुसार, केह परंपरा धार;
सिधांत के आधार, कियो ग्रंथ को उधार है ।
नुनाधीक होय पंच प्रमेष्टी को साथ ही सैं,
सोभाग कहे मिथ्या दूकृत बारंबार है ॥ २ ॥

पूज्य श्री माहाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री रुगुनाथा जी
तथ पाट पूज्य जी माहाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री जिवलचंद्रजी
तथा पूज्य जी माहाराज श्री श्री १००८ श्री श्री दोलतरामजी तथ पाट
पूज्य जी माहाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री सोभागमल्लजी लिखते ॥
तत शीघ्र में अमरचंद्र मुरधर बेश सहर पीपाड मध्ये ॥ चोमातो कीनो ।
गणां तीन सुंतर ए परत लिखी छैं ॥ समत १६५७ शालीवाहनं शा
१८२२ हिजरी सन १३१७ इसवी सन १६०० सांमाण मास सूकल पक्षे ।

પુનમ થીવસે શુક્રવાર થીને ॥ એ પરત રિ નેસરાય પૂજ્ય શ્રી શ્રી ૧૦૮ શ્રી શ્રી સોમાગમલ જી તત શીવ અમરચંદ્રજી છે ॥ એ પરતનો નામ મીસલે જીળને અનંત સીધારી ધ્રાણ છે ॥ શ્રી ॥ સૂમ વસ્તુ ॥ કલ્પ ॥

પુજ્ય શ્રી રૂપનાથજી માહારાજ ની સંપ્રદાયમાં આજ તક મુનિરાજ હુવા તેહના નામ લીપ્યંતે ॥ ૧ ॥ જિવરાજજી સ્વામી ॥ ૨ ॥ ઘરમદાસ જી સ્વામી ॥ ૩ ॥ ઘનરાજ જી સ્વામી ॥ ૪ ॥ બુધર-જી સ્વામી ॥ ૫ ॥ રૂપનાથ જી સ્વામી ॥ ૬ ॥ જીવણચંદ જી સ્વામી ॥ ૭ ॥ તીલોકચંદ જી સ્વામી ॥ ૮ ॥ પનરાજજી સ્વામી ॥ ૯ ॥ દોલતરામ જી સ્વામી ॥ ૧૦ ॥ સોમાગમલ જી સ્વામી ॥ ૧૧ ॥ શ્રી જતસી જી સ્વામી ॥ ૧૨ ॥ શ્રી જમલ જી સ્વામી ॥ ૧૩ ॥ શ્રી કુસલો જી સ્વામી ॥ ૧૪ ॥ શ્રી નારાણ જી સાંમી ॥ ૧૫ ॥ શ્રી રૂપચંદજી સ્વામી ॥ ૧૬ ॥ શ્રી રતનચંદજી સ્વામી ॥ ૧૭ ॥ શ્રી ગોરધનજી સ્વામી ॥ ૧૮ ॥ શ્રી જગરૂપજી સ્વામી ॥ ૧૯ ॥ શ્રી લાલજી સ્વામી ॥ ૨૦ ॥ શ્રી જોગરાજ જી સ્વામી ॥ ૨૧ ॥ જીવરાજ જી સ્વામી ॥ ૨૨ ॥ ઠાકૂરસી જી સ્વામી ॥ ૨૩ ॥ કાંનજી સ્વામી ॥ ૨૪ ॥ કેસરજી સ્વામી ॥ ૨૫ ॥ નેમીચંદજી સ્વામી ॥ ૨૬ ॥ સુરજમલ જી સ્વામી ॥ ૨૭ ॥ જેઠ-મલજી સ્વામી ॥ ૨૮ ॥ થિરપાલ જી ॥ ૨૯ ॥ ફતેચંદ જી ॥ ૩૦ ॥ રૂપચંદજી સાંમી ॥ ૩૧ ॥ પુસાલાલજી સ્વામી ॥ ૩૨ ॥ હીરજી સ્વામી ॥ ૩૩ ॥ હીરાચંદ જી સ્વામી ॥ ૩૪ ॥ નાથોજી સ્વામી ॥ ૩૫ ॥ તેજસીજી સ્વામી ॥ ૩૬ ॥ નાથાજી દુજા સાંમી ॥ ૩૭ ॥ દેવીચંદ જી સ્વામી ॥ ૩૮ ॥ નગજી છોટા સાંમી ॥ ૩૯ ॥ અમીચંદજી સ્વામી ॥ ૪૦ ॥ રાયચંદજી સ્વામી ॥ ૪૧ ॥ અજવચંદજી સાંમી ॥ ૪૨ ॥ રામચંદજી સાંમી ॥ ૪૩ ॥ લિલ-મીચંદજી સાંમી ॥ ૪૪ ॥ ગુલાવચંદજી સાંમી ॥ ૪૫ ॥ દલી-ચંદજી સાંમી ॥ ૪૬ ॥ આસોજી સાંમી ॥ ૪૭ ॥ હેમજી સ્વામી

॥ ४८ ॥ साहमलजी सांभी ॥ ४९ ॥ नगजी सांभी ॥ ५० ॥
 सीरमलजी स्वांभी ॥ ५१ ॥ जेचंदजी स्वांभी ॥ ५२ ॥ कुसलो-
 जी सांभी ॥ ५३ ॥ गोकल जी सांभी ॥ ५४ ॥ देवीलाल जी
 सांभी ॥ ५५ ॥ उजदेव जी सांभी ॥ ५६ ॥ चांदोजी स्वांभी
 ॥ ५७ ॥ चंद्रमाणज सांभी ॥ ५८ ॥ जीतमलजी सांभी ॥ ५९ ॥
 तेजसी छोट सांभी ॥ ६० ॥ चंदोजी छोट ॥ ६१ ॥ जोतो-
 जी छोटा ॥ ६२ ॥ चौथमल जी सांभी ॥ ६३ ॥ माहावीग जी
 सांभी ॥ ६४ ॥ ठाकुरसी जी सांभी ॥ ६५ ॥ सतीदास जी
 ॥ ६६ ॥ सवाईमल जी ॥ ६७ ॥ हस्तीमलज सांभी ॥ ६८ ॥
 छोटा अमीचंदजी सांभी ॥ ६९ ॥ पेमराज जी सांभी ॥ ७० ॥
 नगराज जी स्वांभी ॥ ७१ ॥ तुलछिदास जी सांभी ॥ ७२ ॥
 मालजी सांभी ॥ ७३ ॥ वृधोजी सांभी ॥ ७४ ॥ कचरदास जी
 सांभी ॥ ७५ ॥ इ देजी सांभी ॥ ७६ ॥ दीपचंदजी सांभी
 ॥ ७७ ॥ रोडजी सांभी ॥ ७८ ॥ कीसन जी सांभी ॥ ७९ ॥
 धीरोजी सांभी ॥ ८० ॥ कानजी सांभी ॥ ८१ ॥ जेतसीजी बडा
 ॥ ८२ ॥ नेण सुखजी सांभी ॥ ८३ ॥ बैणो जी सांभी ॥ ८४ ॥
 नानाजी सांभी ॥ ८५ ॥ नाहनजी सांभी ॥ ८६ ॥ हंसराज जी
 सांभी ॥ ८७ ॥ लाधुराम जी सांभी ॥ ८८ ॥ तवतमलजी सांभी
 ॥ ८९ ॥ छोटा जेठमल जी सांभी ॥ ९० ॥ भीमजी सांभी ॥ ९१ ॥
 बडा जेठमलजी सांभी ॥ ९२ ॥

पुज्य श्री जीवणचंद जी माहाराज ने तेर चेला हुवा जेहना नाम
 कहै छै ॥ ९३ ॥ उरजन जी सांभी ॥ ९३ ॥ तीलोकचंदजी सांभी
 ॥ ९४ ॥ मलुकचन्दजी सांभी ॥ ९५ ॥ जे चन्दजी सांभी ॥ ९६ ॥
 राय माणजी सांभी ॥ ९७ ॥ जगरूपजी सांभी ॥ ९८ ॥ अनोप-
 चन्द जी सांभी ॥ ९९ ॥ नवलमल जी सांभी ॥ १०० ॥ भिम-

राजजि सांमी ॥ १०१ ॥ जसरूप जी सांमी ॥ १०२ ॥ धिरज-
मलजी स्वांमी ॥ १०३ ॥ पेमचन्दजी सांमी ॥ १०४ ॥ चोथ-
मलजी सांमी ॥ १०५ ॥

उरजनजी सांमी पांच चेला हुवा तेहना नाम के है छे ॥ माइदास
जी सांमी ॥ ६ ॥ गंभीरमलजी सांमी ॥ ७ ॥ नथमलजी सांमी
॥ ८ ॥ संकरलाल जी सांमी ॥ ९ ॥ केसरचन्दजी सांमी ॥ १० ॥

श्री तिलोकचन्द जी सांमी रा चेला रा नाम कहे छे ॥ पनराज
जी सांमी ॥ ११ ॥ जसराजजी सांमी ॥ १२ ॥ नंदरामजी सांमी
॥ १३ ॥ हरषचन्दजी सांमी ॥ १४ ॥

पनराज जी स्वांमी रे चेला रा नाम कहे छे ॥ १५ ॥ मोती-
चन्द जी सांमी ॥ १६ ॥ दोलतराम जी सांमी ॥ १७ ॥ इंद्र-
माखजी सांमी ॥ १८ ॥

माइदासजी ने चेला नाम कहे छे ॥ केसरचन्द जी सांमी
॥ १९ ॥ जिवराज जी सांमी ॥ २० ॥ फतेचन्द जी सांमी
॥ २१ ॥ जुवारमल जी सांमी ॥ २२ ॥ कपुरचन्द जी सांमी
॥ २३ ॥

श्री सोभागमल जी माहाराज रे चेला रा नाम कहे छे ॥
अमरचन्द जी सांमी ॥ २४ ॥ चनखमल जी सांमी ॥ २५ ॥
कुनखमल जी सांमी ॥ २७ ॥ राजमल जी सांमी ॥ २८ ॥
लालचन्द जी सांमी ॥ २९ ॥ टोडरमल जी सांमी ॥ ३० ॥
मरुदासजी सांमी ॥ ३१ ॥ लिपमीचन्दजी सांमी ॥ ३२ ॥ फोज-
मलजी सांमी ॥ ३३ ॥ रामचन्दजी सांमी ॥ ३४ ॥ चोथमल
जी सांमी ॥ ३५ ॥ सांतोकचन्द जी सांमी ॥ ३६ ॥ चनखमल

जी सांमी ॥ ३७ ॥ धरजमल जी सांमी ॥ ३८ ॥ हंसराज जी
 सांमी ॥ ३९ ॥ जोदराज जी सांमी ॥ ४० ॥ बागतराम जी
 सांमी ॥ ४१ ॥ रोडजी सांमी ॥ ४२ ॥ हुकमचन्द जी सांमी
 ॥ ४३ ॥ छगनमल जी सांमी ॥ ४४ ॥ कीस्तुरचन्द जी सांमी
 ॥ ४५ ॥ हजारीमल जी सांमी बडा ॥ ४६ ॥ हाजारीमल जी
 छोटा ॥ ४७ ॥ धनराज जी सांमी ॥ ४८ ॥ छोगालाल जी
 सांमी ॥ ४९ ॥ तखतमल जी सांमी ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ भोपतराम जी ॥ ५२ ॥ गीरधरलाल जी ॥ ५३ ॥
 केसरचन्द जी सांमी ॥ ५४ ॥ वेणीदास जी सांमी ॥ ५५ ॥
 मानमल जी तपसी ॥ ५६ ॥ कनिराम जी सांमी ॥ ५७ ॥ जतसी-
 जी सांमी ॥ ५८ ॥ सिरदारमल जी ॥ ५९ ॥ उमेदमलजी सांमी
 ॥ ६० ॥ जियाजी सांमी ॥ ६१ ॥ देवीचन्दजी सांमी ॥ ६२ ॥
 फुसाजी सांमी ॥ ६३ ॥ दलिचन्दजी तपसी ॥ ६४ ॥ सूरतान-
 मलजी सांमी ॥ ६५ ॥ माइदासजी सांमी ॥ ६६ ॥ हिरालाल
 जी सांमी ॥ ६७ ॥ गुमांनीराम जी सांमी ॥ ६८ ॥ बडा मांन-
 मलजी सांमी ॥ ६९ ॥ बडा दोलतराम जी स्वांमी ॥ ७० ॥
 माणकचन्द जी सांमी ॥ ७१ ॥ विजेराज जी सांमी ॥ ७२ ॥
 रतनचन्द जी सांमी ॥ ७३ ॥ हंसराज जी सांमी ॥ ७४ ॥ नग-
 राजजी सांमी ॥ ७५ ॥

पुज्य धनराज जी नी संप्रदाय साधु मुनिराज धाज दीन मारवाड
 मे बीचरे छे ॥ जिण मांह सूं इतनी संप्रदाय न्यारी न्यारी हुइ छे ॥ १ ॥
 ए को पुज्य रुगनाथ जी री संप्रदाय ॥ २ ॥ एक पुज्य जमलजी
 महाराज नी संप्रदाय छे ॥ ३ ॥ एक रतनचंद जी नी संप्रदाय छे
 ॥ ४ ॥ एक चौथमलजी नी संप्रदाय छे ॥ ५ ॥ एक माहाचन्द

જી ની સંપ્રદાય છે । એ પાંચ સંપ્રદાય પુજ્ય ઘનરાજ જી મહારાજ
ના ટોલા માંહ સૂં ફંટી છે ॥ ૨ ॥ પુજ્ય શ્રી હરિદાસ જી ના ટોલા ના
સાધુ । આજ બીન પંજ્યાબ માં વિચરે છે । જર તમામમા અમરસીંગ જી
રા નાંમ રો સીંગરો કહવાવે છે ॥ ૩ ॥ પુજ્ય શ્રી જીવાજી ના
ટોલા સાધુ આજ મારવાડ માં વિચરે છે । વરતમાન મે નામ અમરસીંગજી
ની સંપ્રદાય છે ॥ ૧ ॥ નાનક જી ની સંપ્રદાય છે ॥ ૨ ॥ સાંમીવાસ જી
ની સંપ્રદાય ॥ એન સંપ્રદાય ની બીજી મહારાજ ની સંપ્રદાયની છે ॥



(८)

मेवाड़ पट्टावली

[इस पट्टावली में शुद्धर्मा स्वामी से लेकर देवर्द्धि तन्मा-
श्रमशा तक के २७ पाट का परिचय देते हुए आगम-लेखन
प्रसंग, लोकागच्छ उत्पत्ति तथा अन्य भव्यवर्ती घटनाओं का
उल्लेख किया गया है । तदनन्तर मेवाड़ सभ्यप्रदाय के आचार्यों-
स्वर्ग श्री पृथ्वीराज जी, दुर्गादास जी, नारायण जी, पूरुषामल
जी, रामचन्द्र जी, रोजोदास जी, वसिष्ठदास जी, भानभल जी,
शकलिंगदास जी तथा तत्कालीन आचार्य भोतीलाल जी तक-
का परिचय प्रस्तुत किया गया है । अन्त में पूज्य भानभल जी
भ० की परम्परा के शिष्य-प्रशिष्यों का नामोल्लेख करते हुए,
तपस्वी संत श्री बालकृष्ण जी के संबंध में प्रचलित अनुश्रुति
दी गई है]

॥ अथ श्री पाटावली लिख्यते ॥

श्री महावीर भगवान के मोक्ष पथारने के बाद । विक्रम संवत्
। १५३१ । में जैसलमेर का भंडार से श्री लोकाशाहजी ने ग्रन्थ निकाल कर
देखा । उस में यों लिखा हुआ था कि श्री महावीर स्वामी ने राजगृही नगरी
के गुणशिला उद्यान में विराज कर धर्मोपदेश दिया । तदन्तर भगवान गौतम
स्वामी हाथ जोड़ कर बबना कर पूछने लगे । हे विभो । आपके प्रवचन
(जैन धर्म) भारत वर्ष में कब तक रहेंगे ? । हे गौतम । २१ हजार ३
वर्ष ८॥ मास पर्यंत । अर्थात् पांचवें आरे के अंत तक । दुष्पसह नामा
साधु । फालुनी नामा साध्वी । नागल नामा आचक । सतश्री नामा

आविका होंगे । तावत् पर्यन्त यह विमल जैन धर्म रहेगा । उसी समय शक्रेन्द्र पूछते हैं । हे परमवयानिधे भगवन् । आपकी जन्म राशि पर जो भस्म ग्रह बैठा है, उसकी स्थिति कितनी है ? और इसका क्या फल होगा ? हे देवानुप्रिय देवेन्द्र ! भस्मग्रह की स्थिति २००० वर्ष की है । भस्मग्रह बैठने के बाद भ्रमण निर्ग्रन्थ चतुर्विध संघ का उदय सत्कार न होगा । धर्म में शिथिलता व्यापेगी । तब इन्द्र ने कहा-हे ज्ञान सागर । एक घड़ी आगे पीछे कीजिये, जिससे ऐसा अशुभ फल न हो सके । प्रभु ने कहा-भो इन्द्र । घड़ी को आगे पीछे करने की सामर्थ्यता किसी की नहीं है । भस्मग्रह उतरने के बाद धर्म का विकाश होगा । चतुर्विध संघ की कान्ति चमकेगी । तब देवेन्द्र खंडन करके इन्द्र भवन को गया और मुनीन्द्र भूमण्डल पर विचरने लगे ।

चौथा आरा पूर्ण होने में ३ वर्ष ८॥ महीने शेष रहे । तब भ्रमण भगवन्त पावापुरी में कातिक कृष्ण । ३० । बीपावली की अर्द्ध निशा में मोक्ष पधारे । भगवान् निर्वाण के बाद ३ पाट केवली के हुवे ॥ १ श्री गौतम स्वामी । (५० वर्ष गृहवास, ३० वर्ष छद्मस्थ, १२ वर्ष केवली । सर्व ९२ वर्ष आयु) ॥ २ श्री सुधर्मा स्वामी । (५० वर्ष गृहवास, ४२ वर्ष छद्मस्थ, ८ वर्ष केवली, सर्वायु १०० वर्ष) ३ श्री जंबू स्वामी (१६ वर्ष गृहवास, २० वर्ष छद्मस्थ, ४४ वर्ष केवली सर्वायु ८० वर्ष । भगवान् निर्वाण के बाद श्री सुधर्मा स्वामी पाट विराजे । ६ गणधर तो प्रभु की उपस्थिति में मोक्ष पधार चुके । गौतम स्वामी केवली होने से पाट न विराजे । भगवान् के बाद ६४ वर्ष केवल ज्ञान रहा । १२ वर्ष श्री गौतम स्वामी, ८ वर्ष श्री सुधर्मा, ४४ वर्ष श्री जंबू स्वामी । और प्रभु के पाट पर । २७ । आचार्य हुवे । इनके नाम और गुण नंदीसूत्र की प्रस्ताविक गाथा में हैं ।

२७ पाट के नाम । १ सुधर्मा स्वामी । २ जंबू स्वामी । ३ प्रमवा-स्वामी । ४ । सिजंभव स्वामी । ५ यशोभद्र स्वामी । ६ । संभूति स्वामी । ७ । भद्रबाहु स्वामी । ८ । स्थूलिनद्र स्वामी । ९ । महागिरि स्वामी । १० । बहुल स्वामी । ११ साहण स्वामी । १२ । श्यामाचार्य । १३ । संदिला-चार्य । १४ । आर्य समुद्र स्वामी । १५ । आर्य मंगु स्वामी । १६ । आर्य धर्म स्वामी । १७ । भद्र गुप्त स्वामी । १८ । बह्वर स्वामी । १९ । आर्य-नंदील स्वामी । २० । आर्य नागहस्ति स्वामी । २१ । रैवती आचार्य । २२ । बह्म वीरक स्वामी । २३ । संदिलाचार्य । २४ । नागार्जुनाचार्य । २५ । गोविन्द आचार्य । २६ । भूतबिन् आचार्य । २७ । देवड्डी लमात्मज ।

अब जिस आत्मा ने धर्म का मार्ग दर्शाया है उनका कथन लिखा जाता है। प्रथम आचार्य श्री सुधर्मा स्वामी हुवे। आप वीर निर्वाण के बाद २० वर्ष से मोक्ष पधारे। वीर सं० ६४ में जंबू स्वामी मोक्ष पधारे। १० बोल बिछेव हुवे। १ परम अवधि ज्ञान, २ मन पर्यव ज्ञान, ३ केवल ज्ञान, ४ पुलाक लब्धी ५ आहारिक शरीर, ६ क्षायिक समकित, ७ जिन कल्पी, ८ पडिहार विशुद्ध चारित्र, ९ सूक्ष्म संपराय चरित्र, १० यथाव्यात चारित्र। यहां जंबू स्वामी का अधिकार कहना। वीर सं० ६५ में श्री प्रभाव स्वामी हुवे। सारा वर्णन करना। वीर सं० ७६ में श्री शर्यं मव स्वामी हुवे। आपने माणिक नाम के पुत्र को छोड़ कर दीक्षा ली। विचरते हुवे सांसारिक क्षेत्र में पधारे। और माणिक को साधु बनाया। ज्ञान में उसका आयुष ६ महिने का देखा। तब १४ पूर्व में संसार ज्ञान के द्वारा वशवं कालिक सूत्र का निर्माण किया। माणिक का उद्धार किया। वीर सं० ९८ में श्री यशोमद्र स्वामी हुवे और सं० १४८ में श्री संभूति स्वामी हुवे। वीर सं० १५६ में श्री भद्रबाहु स्वामी हुवे।

पुरपड्ढाण में ब्राह्मण वंशीय वाराहमेह और भद्रबाहु दोनों माई थे। दोनों ही स्नान करने को गंगा नदी गये। वहां स्नान करते मरी मछली भद्र बाहु की जटा में उलझ गई। मन में विचार किया कि पवित्र होने के स्थान अपवित्र हुवे। उदासही नगर की ओर चले। रास्ते में देखा कि मेंढक मच्छरों को खाता है। और मेंढक को सांप पकड़ता है। सांप पर मोर। मोर पर बिल्ली। बिल्ली पर कुत्ता। यों मारामार देखकर बराग्य पाये। श्री संभूति स्वामी के शिष्य बने। बड़ा माई १४ पूर्व में कुछ कम ज्ञान पड़ा। भद्रबाहु ४ ज्ञान, १४ पूर्व पाठी हुवे। तब संघ ने भद्रबाहु स्वामी को योग्य देखकर आचार्य बनाये। इस पर वाराहमेह ईर्ष्या में धक्का ऊठा। और साधु बेष छोड़कर गृहस्थ बना। निमित्त कहता फिरे। एक दिन राजकुमार का जन्म हुवा। तब वाराहमेह ने राजपुत्र की १०० वर्ष की ऊमर कहो। और राजा से चुगली करी कि सर्व जनता जन्मोत्सव में आई, परन्तु जेनाचार्य नहीं आये। राजा ने मंत्री से कहा। मंत्री ने आचार्य से कहा। आपने राजपुत्र की ७ दिन की आय कही। आने में क्या है? मंत्री ने राजा से कहा और बंसा हो हुआ। एक दिन फिर निर्मती ने कहा—आज वर्षा होगी तो मांडले में

५२ पलका मच्छ गिरेगा आचार्य जी ने कहा ॥ ५१ ॥ पलका मच्छ मांडले के बाहिर गिरेगा । आचार्य का कथन सत्य निकला । आपने ही पांडिलपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को १६ स्वप्नों का अर्थ बताया था ।

वीर सं १७० में श्री ऋषिलि भद्र स्वामी हुवे । आपने वेश्या की चित्र शाला में चौमासा करके वेश्या को आचिका बनाई । आपका चरित्र जैन समाज भली भांति जानता है । वीर सं० २४५ में श्री आर्य महागिरि स्वामी हुवे । वीर सं० ३३५ में श्री श्यामाचार्य हुवे । आप शिष्य मंडली सहित उज्जयनी में विराजे । शिष्य प्रभादी हुवे । तब गुरु ने समझाया है परन्तु न समझे । तब संघ ने कहा—आप स्वर्णबालुका नगरी में बड़े शिष्य सागरचंद के पास पधारिये । आचार्य श्री चुपके से बिहार कर पधार गये । शिष्य ने पहचाना नहीं । व्याख्यान बांचने के बाद आचार्य से पूछा क्यों जी ! महाराज, मेने व्याख्यान कंसा अच्छा दिया । गुरु ने विचारा यह आरे का ही महत्व है । उज्जयनी से शिष्य दूँढते हुवे सागरचंद से पूछा—क्या यहां आचार्य पधारे हैं । उसने कहा मैं नहीं जानता । किन्तु एक बूढ़ अवश्य आया है । शिष्यों ने अपना अपराध छमाया तब आचार्य श्री ने पद्मवणा सूत्र की रचना करी ।

एकदा शकेन्द्र ने श्रीमंदर स्वामी से निगोदिया के भाव सुनकर पूछा कि हे दयानिधे—क्या कोई भरत क्षेत्र में ऐसा भाव कहने वाला है ? प्रभु ने श्यामाचार्य को दिखाया । शकेन्द्र विप्र रूप में आचार्य से मिला । वार्तालाप किया । गुरु को हाथ दिखाया । दो सागर की आगु रेखा देख कर कहा । आप तो इन्द्र है । निज रूप में प्रगट हो । शीश झुका कर जाने लगे तब गुरु ने कहा । शिष्य भोमका से आवे तब तक ठहरो । इन्द्र ने कहा गुरुदयाल ! मुझे देखकर नियाणा करते अतः नहीं ठहरता । सहनाणी के लिये इन्द्र ने उपाध्य का द्वार फेरा और इन्द्र लोक को गये ।

वीर सं० ४५३ में श्री कालिका आचार्य हुवे । धारा नगरी में बेरसिंह राजा, गुण सुरी राणी के काली कुमार और सरस्वती कन्या जन्मी । दोनों ही ने वैराग्य प्राप्त कर दीक्षा ली । कालीकुमार मुनि को आचार्य पद दिया । एकदा सरस्वती आर्या उज्जयनी पधारे । वहां का राजा गर्दभी

सती की कान्ति पर ललचाया । और महलों में रखली । किन्तु सती ने शील को नहीं छोड़ा । यह बात जब कालाचार्य ने सुनी तो उज्जयिनी पधारकर गर्वमी को बहुत समझाया । तब भी न समझा । तब आचार्य श्री ने गच्छ का भार योग्य शिष्य को भलाकर गृहस्थ बन सिंधु देश के साखी राजा की राजधानी में पहुंचे । वहां राजकुमार जड़ाव से जड़ा हुआ गेंद खेल रहे थे । अकस्मात् वह गेंद उछलकर कूप में जा गिरा । निकालने का यत्न किया पर न निकला । बड़े उदास हुये । तब आपने गेंद पर गोबर डालकर अग्नि से सुखाया । फिर तीर में तीर बंधकर गेंद निकाला । राजकुमार प्रसन्न हो बुद्धिमान जानकर राजमहल में ले गये । एकदा राजा साखी को चितांतुर देख, चिता का कारण पूछा । राजा ने-कहा महाभाग ! यह छुरी और कटोरा भेज कर बादशाह ने कहलाया है कि मेरी आज्ञा मानो या मस्तक काटकर भेज दो । आपने धैर्य बंधाया । और बादशाह से संग्राम कर साखी राजा को जिताया । बाद में आपने अपनी सारी हकीकत राजा साखी को सुनाई । साखी राजा ने उज्जयिनी पर चढ़ाई कर सती का उद्धार करा । साखी राजा का संवत् चला । दोनों ने फिर से मल दीक्षा ली और जैन धर्म का उद्योत किया ।

वीर सं० ४७० में राजा विक्रम हुये । इनको सिद्धसेन दिवाकर ने श्रावक बनाया । यह राजा पुरुषार्थी और परोपकारी हुवा । वीर सं० ५०० में श्री कपटाचार्य हुये । वीर सं० ५८४ में श्री बेहर स्वामी हुये । तुंबवन ग्राम में । धन ग्रही सेठ । सुनंदा सेठानी थी । सिंहगिरी गुरु पास में सेठ ने गर्मिणी नारी को त्याग दीक्षा ली । विचरता सांसारिक ग्राम में आया । सेठानी के पुत्र हुवा । वह अति रुदन करता । धनग्रही मुनि गोचरी पधारे । सुनंदा ने पुत्र बहरा दिया । मुनि ने श्रावक को सौंपा । बिहलकुमार नाम रक्खा । दीक्षा की तैयारी होने लगी । माता ने दंगल मचाया । राजा ने कुंवर के सामने साधु बेध और गृहस्थ के अलं-कार धर कर कहा-तुम्हारी इच्छा हो सो उठा लो । कुंवर ने साधु बेध ले लिया । गुरु विनयकर प्रसिद्ध आचार्य बने । एकदा पाडलीपुर में सेठ कुमारी रुक्मिणी ने बेहर स्वामी की महिमा सुन प्रतिज्ञा ली कि बेहर स्वामी सिवा किसे भी न ब्याहूंगी । आचार्य नगर के बाहिर

पषारे । रुक्मिणी शृंगारित हो पास पहुंच प्रार्थना करो । आचार्य ने उपवेश दे साध्वी बनाई । दोनों ने कल्याण किया ।

वीर सं० ६०६ में विगम्बर धर्म निकला राज । पुरोहित का लड़का सहश्रमल घर पं देरी से आ किवाड़ खटखटाये । माता ने कहा-सदैव ही यह पंपाल मुझ से नहीं होता । यहां से चला जा । अपमानित—हो गुरु के पास दीक्षा ले ली । प्रातःकाल राजा बंदन के लिये आया । प्रोहित कुमार को मुनि रूप में देख एक कंबल बहराई । सहश्रमल बुद्धि-शाली था । परन्तु कंबल को मोह जाव से बांधी रखे । गुरु ने बहुत समझाया, पर न समझा । एक दिन सहश्रमल वन में गया । पीछे से गुरु ने कंबल को तोड़ कर टुकड़ों को बांट दिये । इसने आकर कंबल न देखी तो क्रोध में झूला कर नग्न हो कर बोला—जो वस्त्र रखे, वह साधु नहीं है । गुरु ने कहा वशवर्कालिक के ॥६॥ अध्याय को देख-

गाथा

जं'पि वत्थं च पायं'वा, कंबलं पाय पुच्छं ।

तंपि संजम लज्जटा, धारंति परिहरं तिय ॥१॥

न सो परिगा हो बुत्तो. नायपुच्छेण ताइणा ।

मुच्छा परिगेहो बुत्तो, इइकुत्तं महेसियो ॥२॥

यद्यपि साधु वस्त्र, पात्र, कंबल, पाव पुंछना संजम की लज्जा के लिये ही धारण करते हैं परन्तु ज्ञातपुत्र ने इसे परिग्रह नहीं कहा है, मूर्च्छा परिग्रह है । अतः तू जिन वचन की उत्थापना मत कर । इसने—कहा शास्त्र तो विच्छेद गये । ये शास्त्र झूठे हैं । यों हठाग्रह कर निकल गया । ८४ वेश्याओं को समझाई । विगम्बर मत की स्थापना करो । इसकी बहिन जो साध्वी थी । वह भी वस्त्र रहित हो गई । एक आचक ने लज्जा से उस पर वस्त्र डाला । तब भाई ने कहा—बहिन, वस्त्र तुझे बिया है तो रहने दे । उसने ५वां गुणस्थान की स्थापना करी । स्त्री को मोक्ष नहीं, आदि कुप्ररूपणा करी ।

वीर सं० ८८२ में बारावर्षीय कुक्काल पड़ा । उस समय श्री पालिताचार्य भूद संयमी हुवे । आप दूर देशों में संयम गुण सहित

बिचरने लगे। पीछे से कई महापुरुषों ने संचारा कर लिया। कोई एका भबतारी हुये। जो कायर थे वे शिथिलाचारो हुये। भिक्षियारियों से पृथ्वी भर गई। खाने को पूरा भ्रन्न नहीं मिलता। तब श्रावक लोग किवाड़ जड़े हुये रखते थे। तब श्रावकों और शिथिलाचारियों ने यह नियम बांधा कि द्वार पर आकर धर्म लाभ कहना। इस संक्रेत से किवाड़ खोलकर आहार बहा देंगे। भ्रस्तु। ऐसा ही होने लगा। भिक्षारी लोग इन साधुओं से रास्ते में आहार, पानी छीन लेते थे। साधुओं ने सोचा कि मुहपत्ति की अपनी पहचान है सो इसे उतार कर हाथ में ले लो। बोलते समय मुँह के लगाकर बोलेंगे। इस रीति से उन्हें कुछ दिन आराम मिला। भिक्षारी इनकी चाल को समझकर फिर आहार लुटने लगे। तब इन्होंने भी हाथ में डण्डा पकड़ा। डण्डे को देख कर भिक्षारी डरने लगे। इस भांति इनने धर्म को कलंकित कर डाला। जीवन की उच्चता को नष्ट कर दी। बारा वर्ष का बुरकाल समाप्त होने वाला था कि एक घनाढ्य श्रावक के घर में भ्रन्न खूट गया। तब सकल परिवार ने विचारा कि अन्न मरना अच्छा है। सेठानी जहर को राबड़ी में मिलाने के लिये बांट रही थी। उस समय वहाँ एक साधु आया। सेठ ने सेठानी से कहा—जहर न मिलाया हो तो थोड़ीसी बहरा दे। साधु ने पूछकर पता चलाया कि अन्न धन से भी मंहगा है। अन्न के बिना यह मर रहे हैं। साधु ने सेठ से कहा—मैं तुम्हें बचाऊँ तो तुम मुझे क्या दोगे ? सेठ ने कहा—मेरे निकट जो वस्तु पदार्थ है उनमें से जो आपकी इच्छा हो वही। तब साधु ने कहा—मुझे तुम चार पुत्र दे दो। विद्यावर से ७ दिन में अन्न की जहाजें आने वाली हैं। ऐसा ही हुवा। चारों पुत्रों को साधु बनाये। नाम १—चन्द्रमान २—नागेन्द्र ३—निर्वतन ४—विद्याधर। वर्षा हुई। दुष्काल पूर्ण हुवा। मनुष्यों में शान्ति छा गई। श्री पालिताचार्य भी देश में पधारे। तब साधुओं का पतित आचार देख कर उन्हें समझाया। परन्तु मिथ्यात्व के उदय न समझे। और आचार्य श्री से द्वेष करने लगे। इन स्वयं की क्रिया में विशेष की कठिनाई न होने से समुदाय बहुत संख्या में बढ़ने लगा। श्रद्धा संयमी इने गिने रह गये। उस वक्त उन चारों भ्राताओं ने चार शाखाएं निकालीं। १—चंद २—नागेन्द्र ३—निर्वतन ४—विद्याधर। इन्होंने अपनी पूजा के लिये चोतरा, चंत्य, पगल्या, मन्बिर, देहरा बंधवाये।

अलग अलग गच्छ बंधी करी। धर्म के डोंगी बने। जगत का अधिक हिस्सा अज्ञान अंधकार में डूब चुका। आचार्य ऋषि, मुनि आदि शब्दों को तोड़कर विजय सूरि, पन्यास, यति आदि शब्दों को जोड़ने लगे।

वीर सं० ६८० में देवडूटी खमाश्रमण हुवे। आप एक बार औषधी के लिये सूँठ लाये। कान में रख कर भूल गये। सांयकाल का प्रतिक्रमण के सलिये बन्दना करते समय सूँठ नीचे गिरी। तब आपने दृढ़ विचार किया कि अब भूल होने लगी है। संभव है कि शास्त्र गाथाओं की भी भूल होगी। अतः शास्त्रों को लिख लेना चाहिये। वल्लभीपुर में चतुर्विध संघ को एकत्रित करके शास्त्र लिखे। आचारांग सूत्र का महा प्रज्ञा नाम का ७ बां अध्ययन। १६ उद्देशा वाला कोई कारण से न लिखा। वह बिच्छेद गया। उसमें जंत्र मंत्र तंत्र विद्या थी सो लुप्त हो गई। वीर सं० ६६३ में ४ की संवत्सरी करी। कालकाचार्य (यह दूसरे हैं) विहार कर पड़ठावपुर में पधारे। राजा के आग्रह से चतुर्मास किया। वहाँ भाववा सुवि ५ को नगर उत्सव परम्परा से मनाया जाता था। इसमें राजा का जाना परमावश्यक था। तब राजा ने कहा—गुरुदेव! लौकिक उत्सव में जाने के कारण ॥६॥ को पोषा मेरे से होगा। गुरु ने कहा—धर्म को पीछे न कर आगे को करना। अर्थात् ४ को पोषा कर लेना। यों १४ को चोमासा और ४ को संवत्सरी थापी।

वीर सं० १०१५ में श्रुद्ध संयमी अणगार इने गिने रह गये। मिथ्यात्वी लोग इन्हें अनेक प्रकार से उपसर्ग देने लगे। शास्त्रों को भण्डार में रख दिये। पढ़ने के लिये किसे भी दिये न जाते। ढाले, गौतम, पडद्या, स्तोत्र, शत्रुंजय, पगमंडा आदि अनेक मन कल्पित काव्य बना कर लोगों को भ्रम जाल में फँसाने लगे।

वीर सं० १४६४ में वेङ्गगच्छ निकला। वीर सं० १६२६ में पुन-मिया गच्छ निकला। वीर सं० १६५४ में आंचलिया गच्छ निकला। वीर सं० १६७० में खरतर गच्छ निकला। वीर सं० १७२० में आण-मिया गच्छ निकला। वीर सं० १७५५ में तप गच्छ हुवा। वीर सं० १८५० में ८४ गच्छ हुवे। यों जैन धर्म विभिन्न गच्छों में बंट गया। मन मानी प्रकृपणा करने लगे। तीर्थ यात्रा को संघ निकालने में, मन्दिर बनवाने में धर्म कहने लगे। अहिंसा धर्म में हिंसा को भी धर्म मानने लगे। यों पवित्र

जैन धर्म भारतवर्ष से बिदा होने की तय्यारी में ही था कि मध्य माघ से धर्म प्राण लोंकाशाह का जन्म सुसंस्कार हुआ। आपके पिता का नाम हेमा माई था। और माता का नाम गंगा बाई था। जब आप कारकुंड नगर के देश विवान थे। एक दिन द्रव्यलिंगियों के स्थान चर्चा खली। मण्डार में शास्त्रों के पन्ने उद्दृष्टों ने लाये हैं। अतः लिखने की पूर्ण आवश्यकता है। श्री लोंकाशाह के सुन्दर अक्षर आते थे। अतः यह भार आप ही के ऊपर डाला गया। सर्व प्रथम दशवैकालिक सूत्र लिखा। उसमें अहिंसा का प्रतिपादन देखकर आपको इन साधुओं से घृणा होने लगी। परन्तु कहने का अवसर न देखकर कुछ भी न कहा। क्योंकि ये उलटे बन कर शास्त्र लिखाना बन्द कर देंगे। जब कि प्रथम शास्त्र में ही इस प्रकार ज्ञान रत्न है तो आगे बहुत होंगे। यों एक प्रति दिन में और एक प्रति रात्रि में लिखते रहे।

एकदा आप तो राज मदन में थे और पीछे से एक साधु ने आपकी पत्नी से सूत्र मांगा। उसने कहा--दिन का दूँ या रात्रि का। इसने दोनों ले लिये और गुरु से कहा कि--प्रब सूत्र न लिखवाओ। लोंकाशाह घर आये। पत्नी ने सर्व वृत्तांत कह दिया। आपने संतोष दे कहा--जो शास्त्र रत्न हमारे पास हैं उनसे भी बहुत सुधार बनेगा। आप घर पर ही व्याख्यान द्वारा शास्त्र परूपने लगे। बागी में भीठापन था। साथ ही शास्त्र प्रमाण द्वारा साधु-आचार श्रवण कर बहुत प्राणी श्रुद्ध दया धर्म अंगीकार करने लगे।

एकदा अरहट्टबाडी के रहने वाले संघवीजी की मुख्यता में तीर्थ यात्रा के लिये संघ निकला। कारकुंड में आये। वहां वर्षा होगी। गाडियों का चलाना बंध हुआ। कुछ दिन वहां ठहरे। संघवीजी भी लोंकाशाह की बागी पर श्रद्धा करने लगे और व्याख्यान में हमेशा जाने लगे। संघवीजी से साधु ने कहा--यहां बहुत दिन हो गये हैं। यहां से प्रस्थान करो। तब संघवीजी ने कहा--मार्ग में वर्षा से अंकुर उग गये हैं। अजयणा बहुत होगी। कुछ समय बाव चलेंगे। साधुओं ने कहा--धर्म मार्ग में हिंसा है, वह भी धर्म है। संघवीजी ने सोचा कि लोंकाशाहजी कहते हैं कि भेषधारी अनुकंपा रहित होते हैं सो आब प्रत्यक्ष दिख रहे हैं। लोंकाशाहजी पर दृढ़ श्रद्धा हुई। साधुओं को बहुत सलकारा। वे चले गये। संघवीजी वहीं रहे। लोंकाशाह के उपदेश से

सं० २०२३ में ४५ आत्माओं ने स्वतः भगवती बीक्षा धारण करी । सरसध जी, मानुजी, लूणाजी आदि महापुरुषों में बेश-बेश में सत्य धर्म का बहुत प्रचार किया । चार संघ की स्थापना हुई । अधुष धर्म की भूलक संसार में पैदा हो गई । पाटण निवासी श्री रूप ऋषि जी सूरत के वासी श्री रूप ऋषि जी ये महा पुनर्वत थे । इनका नाम निशीथजी में पहले ही लिखा हुआ था । परन्तु इन उन्मागियों ने उस अलावे को पानी में नष्ट कर डाला ।

वीर सं० २१७६ में श्री लवजी ऋषि हुवे । सूरत निवासी कोड़ाधीश वीर जी बोहरा की पुत्री फूलाबाई के अंगजात थे । ये नानाजी के यहां रहते थे । इनकी अट्टा लोकाशाह जी की थी । नाना जी की अट्टा विपरीत थी । लवजी वैरागी हुवे । आज्ञा मांगी । नाना ने कहा—हमारे गुरु वजरंग जी का शिष्य बने तो आज्ञा दूँ । अबसर जान उन्होंने वै बीक्षा ली । पढ लिख चातुर हो वजरंग जी से कहा—आप प्रमाद अवस्था को छोड़ो । गृहस्थ के भाजन मत वापरो । अनाचार लगता है । गुरु ने कहा—इस ... संयम श्रुद्ध नहीं पलता । तब आप ने कहा—देखिये ! अमीपालजी आदि पालते हैं । यों कह—लवजी, थोमजी, सोमजी अमीपालजी की आज्ञा में श्रुद्ध चरित्र धारण कर जैन धर्म का खूब उद्योत किया ।

वीर सं० २१८६ में आसोज सुवि ११ सोमवार को पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज ने स्वतः बीक्षा धारण की । आप भावसार छोंपा थे । आपने जैन धर्म का खूब प्रचार किया । आपके एक शिष्य ने धार नगर में संथारा किया, तब आप वहां पहुंचे । चेला संथारे से विचलित हो गया और उस स्थान पर आप संथारा करके स्वर्गवासी बने । सिधपाहुडि में आपको एकामवतारी कहा है । आप श्री के ६६ शिष्य हुवे । जिनमें पूज्य श्री मूलचन्दजी । पूज्य श्री हरजीजी । पूज्य श्री गोदाजी । पूज्य श्री गांगोजी । पूज्य श्री फरसरामजी । पूज्य श्री श्रीपालजी । पूज्य श्री इन्दाजी । पूज्य श्री पृथ्वीराजजी । आप मेवाड़ देश में पधारे । पूज्य श्री दुर्गादासजी । पूज्य श्री नारायणजी । पूज्य श्री वरखमलजी । पूज्य श्री रामचन्द्रजी । पूज्य श्री रोडीदासजी ।

आप सदा काल बेले बेले पारण करते थे । एक महीने में दो अठाई और वर्ष में दो मासखमण करते । हाथी तथा सांड का अभिग्रह सफल हुआ था । महा उग्र तपस्वी थे । पूज्य श्री नृसिंहदासजी म० । आप महान् विद्वान् आचार्य हुवे । पूज्य श्री मानमलजी म० । आपकी प्रभा अधितीय थी । राजा राणा आपके चरणों की चरणा कर बनकर सेवा में लीन रहते । आपकी सेवा में दो भेरव और एक बैल सदा रहते । आपकी वचनसिद्धि प्राप्त थी । पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० । आप प्रकृति के बड़े सरल थे । आपके पाठ पर वर्तमान देश प्रख्यात, गुज निधान, शान्ति निकेतन, मार्तण्ड तेजस्वी, शशि सम शोतल, सागर वर गंभीर, माया मवहारक श्री जनाचार्य मेवाड़ पूज्य श्री श्री १००८ श्री मोतीलालजी म० विराजमान हैं ।

पूज्य श्री मानजी स्वामी की शिष्य परम्परा ॥

मेवाड़ के ज्योतिर्मयी पूज्य श्री मानजी स्वामी का देवोप्यमान स्थान है । उनकी शिष्य परंपरा में कई सुयोग्य विद्वान् तथा तेजस्वी संत रत्न हुए । श्री गिम्बदासजी महाराज बड़े विद्वान् व सिद्धहस्त योगी एवं महा कवि थे । उनकी कविताएं यद्यपि फुटकर प्राप्त हुईं, किन्तु वे सार पूर्ण अति उपयोगी हैं । श्री रिकबदासजी महाराज के शिष्य श्री वेणीचंदजी म० हुए बड़े तपस्वी व संयमनिष्ठ महात्मा थे । प्रसिद्ध पू० श्री एकलिंगदासजी म० सा० इन्हीं के शिष्य थे । एक शिष्य और थे जिनका नाम श्री शिवलालजी था । ये घोर तपस्वी थे । पूज्य श्री मानमलजी म० के पाठ पर चतुर्विध संघने श्री एकलिंगदासजी म० को आसीन किया । श्री श्री किस्तूरचंदजी म०, श्री मोतीलालजी म०, श्री कजोड़ी मलजी म० श्री छोगालालजी म०, श्री कालूरामजी म०, श्री चौधमलजी म०, श्री मांगीलालजी म० आपके शिष्य हुए । इनमें से श्री मोतीलालजी म०, पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० के बाद पाठ नायक बने । श्री मेरूलालजी म०, श्री मारमलजी म०, श्री गोकलचंदजी म०, श्री रतनलालजी म०, श्री जेवन्त रायजी म०, श्री वखातावर सिद्धजी

म०, श्री मोहनलालजी म०, श्री उत्तमचंदजी म०, श्री सोहन-
लालजी म०, श्री गुलाब जी म० आदि शिष्य हुए। श्री भारमलजी
म० के शिष्य श्री मुरारीलालजी म०, श्री अम्बालालजी म०, श्री
पद्मालालजी म०, श्री इन्द्रमलजी म०, आदि हुए। इसमें से श्री
अम्बालालजी म०, के शिष्य श्री मगन मुनिजी, श्री कुमुद
मुनिजी, श्री मदन मुनिजी, श्री हेम मुनिजी आदि हैं। श्री जैवन्त
राजजी के शिष्य श्री शान्ति मुनिजी हैं।

पूज्य श्री एर्कलिंगदासजी म० के शिष्य श्री किस्तूर चंदजी मध्ये।
उनके तीन शिष्य हुए—श्री जोधराजजी म०, श्री कन्हैयालालजी म०,
श्री रामलालजी म० ॥ पूज्य श्री एर्कलिंगदासजी म० के शिष्य श्री
मांगीलालजी म० के तीन शिष्य विद्यमान हैं। श्री हस्ती मलजी म०,
श्री पुस्कराजजी म०, श्री कन्हैयालालजी म०। श्री मानजी स्वामी की
शिष्य परम्परायें के अद्भुत रत्न ॥ पूज्य श्री मानजी स्वामी के शिष्य श्री
रिवदासजी म०। श्री पद्मालालजी म०। श्री हीरालालजी म०। श्री
केशरी मलजी म०। श्री बाल कृष्णजी म० आदि ॥ श्री रिवदासजी म०
विद्वान और महा कवि थे। आपकी कई रचनाएँ उपलब्ध हैं। जिनकी
गवेषणा चालू है ॥ बाल कृष्णजी म० तपस्वी तेजस्वी सन्त रत्न थे। इनके
विषय में कई अनुभूतियाँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक मुख्य नीचे उद्धृत की
जाती है।

विचरन करते हुए एक बार श्री बाल कृष्ण जी म० मोखी पधारे।
वहाँ की जनता तो धर्म प्रिय थी ही कि तु दरबार का धर्म प्रेम भी कम नहीं
था। बाल कृष्णजी म० सा० जैसे प्रतापी तेजस्वी सन्त रत्न की सेवा से
कैसे बंचित रह सकते थे। बड़े उत्साह के साथ व्याख्यान आदि में उपस्थित
होते और राजमहल पावन करने का आग्रह करते रहते थे। गुरुदेव की
आज्ञा से एक बार सन्त महलों में गोचरी के हेतु गये। जब आहार लेकर
लौट रहे थे उस समय द्वारपर एक सुबेदार खड़ा था जो जाति का मुस्लिम
था। साथ ही बड़ा धर्म विरोधी भी था। कुछ धर्म मंत्र का भी जानकार
था। उसने सन्त से पूछा—तुम राजमहल से क्या लाये ? सन्त ने कहा—

आहार । उसने कहा—नहीं, आपके पात्र में अमक्ष्य मांस है । मुनि यह सुनकर दंग रह गये । उन्होंने कहा—तुम झूठ बोल रहे हो । उसने कहा—महाराज । मैं नहीं, आप झूठ बोल रहे हैं । आप मांस को छिपाना चाह रहे हैं किन्तु अब वह छिप न सकेगा । आप सच्चे हैं तो पात्र खोलिये । मुनि ने पात्र निर्बन्धन किये तो उनके आश्चर्य का पार नहीं था । जब कि आहार के स्थान पर पात्र में मांस पाया गया । मुनि निस्तेज घबराये से रह गये । मांस पास खड़े व्यक्ति भी आश्चर्य में रह गये । किन्तु प्रत्यक्ष विरुध कौन बोल सकता है । विरोधी लोग खुश हुए और इस बात को खूब प्रचारित की । मुनि पात्र लेकर बाल कृष्ण जी म० सा के पास आये और सारा हाल बताया । बाल कृष्णजी म० सा० ने अपने तप के प्रभाव से म्लेच्छ की भाषा को हटाकर आहार को भूद्ध बनाया । किन्तु विघटित घटना से फेली हुई भ्रान्ति का निवारण करने के लिये मार्ग ढूँढ़ने लगे ।

एक दिन बाल कृष्णजी म० स्वयं महलों में गोचरी पधारे । जब लौटे तो मियांजी फिर अपने दल बल सहित खड़े थे । उसने अपनी आदत के अनुसार म० सा० को भी टोका और पूछा । बालकृष्णजीम० भी यही चाहते थे । उन्होंने कहा—मेरे पात्र में दाल बाटी है । मियांजी ने कहा—मांस है, आप छिपाइये नहीं । बाल कृष्णजी म० ने कहा—देख मुनि को क्या कलंकित मत कर, इसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं । किन्तु मियांजी अक्कड़ में थे । उन्होंने कहा—पात्र खोलिये और बताइये । मुनिजी ने पात्र खोला तो अंदर दाल वाटी ही थी । इस बार मियांजी के लिये तीर बेकार साबित हुआ । वह खिसीयाना होता हुआ खिसकने लगा । किन्तु इस तरह छूट भागना अब सहज कहाँ था ? मुनि जी का हाथ जो ऊपर था वह नीचे होते ही मियांजी गले तक धूमि में घस गये । गंद जंसा शिर मात्र बाहर था जो उनके जीवन को टिकाये रख रहा था । मुनिजी तत्काल चल पड़े । मियांजी की आँखों में आंसू थे । मियांजी की यह बुद्धशा देख हजारों व्यक्ति कम्पित हो गये । परिवार वाले चिल्लाने लगे । दरबार के पास फरियाद पहुँची । दरबार ने सुनकर कहा—सूबेदारजी को संतों को नहीं सताना चाहिये था । अब उनकी प्रसन्नता से ही यह संकट से उबर सकता है । भोरजी दरबार गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए और मियांजी के उद्धार के लिये प्रार्थना करने लगे । मुनिजी ने कहा—यह उसकी करणी का नतीजा था । वह जिन धर्म और मुनि महात्माओं को कलंकित करने पर तुला हुआ था । पाप का फल कहाँ छूट सकता है

और शासन की शान की सुरक्षा का प्रश्न भी खास था । दरबार के फिर आग्रह करने पर म० सा० ने कहा कि इस विघ्न के हटने पर क्या उपकार हो सकता है ? दरबार ने कहा—जो आपकी आज्ञा होगी । श्री गुलाबसिंह जी, दरबार के अपर पुत्र थे । म० सा० के उपदेशों से प्रभावित हो बीक्षा के लिये तैयार थे । किन्तु दरबार की आज्ञा का प्रश्न खास था । जब दरबार ने वचन दे दिया तो म० श्री ने पधार कर मंगलोक फरमाया और मियाँजी सही सलामत भू पर आ गये और चरण पकड़ कर किये पर पश्चाताप करने लगे । जनता में जिन शासन के प्रति जो भ्रम फैला था वह निर्मूल हो गया । और शासन की श्री वृद्धि हुई । दरबार कहने लगे—गुरु क्या हुक्म है ? अच्छा अवसर देखकर महाराज ने फरमाया कि गुलाबसिंह बीक्षेच्छुक है, उसे आज्ञा दीजिये । यह सुनकर दरबार ने सहर्ष आज्ञा दी । और बड़े समारोह के साथ बीक्षा दी । कहते हैं बीक्षोत्सव में एक लाख रुपये व्यय हुए ।

श्री गुलाबसिंहजी म० बड़े तपस्वी तेजस्वी संत सिद्ध हुए । किन्तु जीवन के आखिरी वर्षों में कुछ मर्यादा से हट से गये थे । अतः मेवाड़ मुनि मण्डल में उनका वह स्थान नहीं रहा जो कभी था । फिर भी मेवाड़ का जन-जन उनसे प्रभावित था । उनका स्वर्गवास कहाँ हुआ इस बात की खोज चल रही है । वे जीवन के आखिरी वर्षों में अज्ञात से हो गये । कई वर्षों से एकाकी तो थे ही । फिर बड़े रहस्यमय ढंग से छिप से गये । अभी यह पर्दा आया नहीं कि जीवन के अन्तिम वर्षों में वे कहाँ और कैसे रहे । वे बड़े कलाकार भी थे । उनकी कई कला कृतियाँ यत्र तत्र पड़ी पाई जाती हैं । जिनका संग्रह किया जा रहा है । उनके हस्त लिखित कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं । अक्षर मोती के दाने जैसे हैं ॥ इति ॥



(६)

दरियापुरी सम्प्रदाय पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली (पृष्ठ) भुद्रित नक्शे के रूप में प्राप्त होती है, जिसे भुनि श्री छगनलालजी ने तैयार किया । स्व० भावसार सामलदास की ओर से, अहमदाबाद से सं० १९९३ कार्तिक शुद्ध १५ को इसका प्रकाशन हुआ । यह पूज्य श्री धर्मसिंहजी के दरियापुरी सम्प्रदाय से सम्बन्धित है । इसमें भगवान महावीर के बाद होने वाले २७ वें पट्टधर देवद्वि सभाश्रमशा से लेकर ६३ वें पट्टधर धर्मसिंहजी तक के आचार्यों का नामोल्लेख है । अन्त में धर्मसिंहजी के बाद होने वाले दरियापुरी सम्प्रदाय के २६ पट्टधर आचार्यों—वर्तमान आचार्य चुनीलालजी तक—का नाम—निर्देश किया गया है ।]

आठकोटी दरियापुरी जैन सम्प्रदाय वृत्त

स्व. भावसार सामलदास तरफ थी प्रसिद्ध, सरसपुर बाजार सं. १९९३
कारतक सुदी १५ अहमदाबाद (तैयार करनार भुनि श्री छगनलालजी)

दरियापुरी सम्प्रदाय

श्री सुधर्मा स्वामीनी पाटानुपाट
वत्समीपुरमा वीर सं. ६८० मा
सुत्रो ललाया
वीर सं० ९९३ मां श्री कालिकाचार्य-
चोथनी संवत्सरी करी
,, १००० वर्षे सर्वे पूर्वो
बिच्छेद गया

२७ मो पाटे देवद्विगणी क्षमाश्रमण

२८ श्री आर्य ऋषिजी
२९ श्री धर्माचार्य स्वामी
३० श्री शिवभूति आचार्य
३१ श्री सोमाचार्य
३२ श्री प्रार्यमद्र स्वामी
३३ श्री विष्णुचन्द्र स्वामी

सत्यमित्र वि सं. ५३० मां थया	३४ श्री धर्मवर्धनाचार्य
हरिमद्र " ५८५ "	३५ श्री भूराचार्य
सिद्धसेन " ५८३ "	३६ श्री सुवत्ताचार्य
जिन मद्रमणि " ६४५ "	३७ श्री सुहृस्ती आचार्य
उमास्वामी वाचक युगप्रधान बी. सं.	३८ श्री वरवत्ताचार्य
११६०	
घनराजे पाटण बसायु की. सं १२७२	३९ श्री सुबुद्धि आचार्य
शीलंकाचार्य बोकम सं ६४५ मां थया	४० श्री शिववत्ताचार्य
अमृतचंद सूरि " ६६२ "	४१ श्री वीरवत्ताचार्य
सर्वदेव सूरि " ६६४ "	४२ श्री जयवत्ताचार्य
बहुगच्छ पाप्यो	४३ श्री जयवेवाचार्य
	४४ श्री जयघोषाचार्य
	४५ श्री वीरचक्रधराचार्य
	४६ श्री स्वातीसेनाचार्य
	४७ श्री प्रीवन्ताचार्य
	४८ श्री सुमति आचार्य
	४९ श्री लोकाशाह आचार्य

बिक्रम संवत्, १५३१ मां भस्म ग्रह उत्तयों,

बिक्रम संवत्, १५३१ मा साधु मार्ग चलाव्यो लोकागच्छ प्रारंभ

अरहटवाडा ग्राममी वणिक ओसवाल-पिता हेमचंद, माता गंगाबाई तेमरो ४५ जणाने साधुमार्गी दीक्षा अर्पावी । (२) केटलाक कहेछे के लोकाशाहे ये । संवत् १५०६ मी पाटणमा सुमति विजय पासे दीक्षा लीधी अने लक्ष्मीविजय नाम धारण करी ४५ जणने दीक्षा ग्रहण करावी । अने केटलाक कहेछे के दीक्षा ग्रहण करी नथी अने संसार मां रहीने ४५ जणाने दीक्षा अर्पावी ।

५० श्री माणजी स्वामी १५३१

५१ श्री भिबाजी स्वामी १५४०

५२ श्री नुनाजी स्वामी १५४६

५३ श्री भीमाजी स्वामी १५४८

५४ श्री जगमालजी स्वामी १५५०

५५ श्री सरवाजी स्वामी १५५४	१५६२ मां मांकड गच्छ थयो
५६ श्री रुपचंद्रजी स्वामी १५६६	१५७० मां श्री बीजगच्छ थयो
५७ श्री जीवाजी स्वामी १५७८	१५७२ मां श्री पायचंद गच्छ
गुजराती लोंकागच्छ	२ श्री विजय गच्छ
	३ श्री सागर गच्छ
५८ श्री कुंवरजी स्वामी १६१२	लोंकागच्छ नानी पक्ष
५९ श्रीमल्लजी स्वामी १६२९	
६० श्री रतनसिंहजी स्वामी १६५४	
६१ श्री केशवजी स्वामी १६८६ (१६८९)	
६२ श्री शिवजी स्वामी १६८८ (१६७७)	

दरियापुरी आठ कोटि सम्प्रदाय

६३ क्रिया उद्धारक श्री धर्मसिंहजी स्वामी (उदयपुर मां १६९२ मां शिवजी रास रच्यो) पाट २—सोमजी, ३—मेघजी, ४—द्वारका बा.जी, ५—मोरारजी, ६—नाथाजी, ७—जेचंदजी, ८—मोरारजी, ९—नाथाजी, १०—जीवणजी, ११—प्रागजी, १२—शंकरजी, १३—खुशालजी, १४—हर्षचंद्रजी, १५—मोरारजी, १६—भवेरजी, १७—पुंजाजी, १८—मगवानजी, १९—मसुकचंदजी, २०—हीराचंदजी, २१—रघुनाथजी, २२—हाथीजी, २३—उत्तमचंदजी, २४—ईश्वर-लालजी, २५—भायचन्दजी, २६—खुनोलालजी—वर्तमान ।
हरेक आचार्य बालब्रह्मचारी ।



(१०)

कोटा परम्परा की पट्टावली

[प्रस्तुत पट्टावली कोटा परम्परा से सम्बन्धित है । प्रारम्भ में भगवान् महावीर से लेकर देवद्वि समाश्रमशा तक २७ पाठों का उल्लेख किया गया है । तदनन्तर मध्यवर्ती विभिन्न घटनाओं के वर्णन के साथ लोकामण्ड-उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए श्री रूपजी, जीवोजी, लवजी, सोमजी आदि का परिचय देकर, कोटा परम्परा के श्री हरजी, गोधोजी, परसरामजी, लोकमशजी, भाडारामजी, दोतरामजी, लालचन्दजी, शिवलालजी, हुकमचन्दजी का उल्लेख किया गया है । अन्त में 'बाईस टोला' का नाम-निर्देश किया है । इस पट्टावली का प्रतिलेखन श्री हजारीलाल द्वारा स० १९५४ भगवत् सुद ९ को किया गया ।

पट्टावली के अन्त में कोटा-परम्परा का पूरक पत्र दिया गया है, जिसमें इस परम्परा से संबंधित विभिन्न आचार्यों और उनके शिष्यों-प्रशिष्यों का उल्लेख है ।]

अथ पाटावली लीखन्ते ॥ श्री जसलमेर का मण्डार मांही थी ॥ लूक मते पुस्तक कड़ाबीन जोया छ । तीण मांही इसी बीगती नीकली छ । भमण भगवन्त श्री महावीर देव प्रत बन्दी नमस्कार करी न, अहो प्रम कल्याण प्रम बयालः तरण तारण जीहाज समानः सकंदर देवः पहला देव लोक नो घणी, हात जोड़, मान मोड़, बनणां नीमसकार करी न श्री भगवंत देव जी प्रते पूछता हुवा, अहो भगवंत पूज तुमाहारी जनम रास्य

ऊपर भसम ग्रह बने छ, तेहनी तोषी २००० दोय हजार बरसनो भसम-
ग्रह बडा पछ समण निषंभ, चक्रुर बंड संभ, साध-साधवी श्रावक सराव-
बन्ध उदै पूजा नहीं होसी, त्वार सकंदर बोला—ग्रहो पूजयक छड़ी घापी
करी क पाछी करो : त्वारे भगवंत देवजी बोल्था—ग्रहो सकंदर घाउखो
घटाबन की बबल्था की हमारी समरथाई नही, ये दोय हजार बरस नोक-
लोया पोछ भसम नामा ग्रह उतर जासी पछ समण नीषंभ नी उदै पूजा
बन्धी होसी

चौथो आरौ थाकतो केतलोक रह्यो ८६ पखवाड़ा चौथा आरा ना
रह्यो जणका ३ बरस ८ (८॥) मास रह्यो त्वार श्री पाशापुरी नगर न
बोषे अनावतरी राते. श्री महावीर देव नोरवाण पोहोत्पां। तीबार श्री
गोतम स्थानी न. केवल जीनान उपनी. गोतम बरस ५० सुरो तो ग्रह
वास रह्यो, बरस बारा केवल पण रह्यो, सरब आउखो बरस बागम को
छ। बोजो पाट श्री सुधरमा स्वामी बरस ५० तो ग्रह वास पण रह्यो,
पाछ संजम लीनो; ४२ बरस छवमसत ते रह्यो, आठ वरस केवल रह्यो
सरब आउखो १०० बरसनो। तीजो पाट जंजू स्वामी नो बरस १६ ग्रह-
वास रह्यो, बरस २० छवमसतकपण रह्यो; बरस ४६ चनालेस केवल
पण रह्यो; सरब आउखो बरस ८० नो। अब तीजो पाट जुगत्र भूमिका
हुई। श्री भगवंत नोरवाण पोहोत्पा पीछ ६४ बरस ताई केवल गंनान
रह्यो। श्री जंजू स्वामी नोरवाण पोहोत्पा पछ १० बोल बछेव गया।
मनपरजब गोवान १, प्रम बबधो २, पुनायक्तबधो ३, आहारीक
सरीर ४, उप सम सेषी ५, लपक श्रेष्ठी ६, जीन कलपी ७, परीहार
बीसुबी चारतर ८, सुसम संपराय चारत्र ९, जया स्वात चारत्र १०।

होव श्री भगवंत देवजी पछ २७ सताबीस पाट हुवा। ते कहछ:।
पहलो पाट श्री सुधरमा स्वामी १, चुबो पाट जंजू स्वामी २, तीजो पाट
प्रसन्न स्वामी ३, चौथो पाट श्री जंमब स्वामी ४, पाँचवो पाट जस भद्र
स्वामी ५, छटो पाट संभुत बीजे स्वामी ६, सातमो पाट भद्र बाहु स्वामी
७, आठमो पाट धूल भद्र स्वामी ८, नवमो पाट माहागोरी स्वामी ९,
दसमो पाट सुमन (सुहृस्ति) सांमो १०, ग्यारमा पाट सुपडो बुध स्वामी
११, बारमो पाट इंद्रियोन स्वामी १२, तेरमो पाट आरज्योन स्वामी १३,
चवदसमो पाट बयर स्वामी १४, पनरवो पाट बहर स्वामी १५, सोलमो
पाट आरज्य रोह स्वामी १६, सतरमो पाट परत गोर (पूतगिर) स्वामी

१७, अठारमो पाट मूगत (मंगू) मित्र स्वामी १८, गुनीसमा पाट धरणी गिरी स्वामी १९, बीसमो पाट सीवभुत स्वामी २०, अकबीसमो पाट आरज भद्र स्वामी २१, बाबीसमो पाट आरजनल्ल (त्र) स्वामी २२, तेब्बे-समो पाट आरज रल्ल स्वामी २३, चौबीसमो पाट नाग स्वामी २४, पन्नी-समो पाट जेहिल स्वामी २५, छबीसमो पाट सल्ल (संडिल) अणगार स्वामी २६, सताइसमो पाट देवडी खमा समण स्वामी २७ ।

अब सताबीस पाटी नंदी सूत्र म चाला छ । तेतो भगवन्त री आग्य सहत चाला छ, पाछ बाकी राखा बरबलंगी भाग ले रह्या, पाछ केत लायक बरसा पछ चाल्या सू साइ । आत्मा अरथो सुध मारीग चला वसी : । तेहनी उव पूगी (पूजा) घणी होसी । तेहनो अधकार कह छ ।

सुध साद असुध साध ए दोय न्ह तो बोरो कह छ । श्री भगवती सूत्र सतक बीसम उवसो आठमो । श्री भगवंत प्रते । श्री गोतम स्वामी हात जोड़ मान मोड, बीनणा नोमसकार करीन पूछता हुवा—अहो गोतम बरतमान चौबीसी को बोरो कह छ । तीजो आरा का तीजा भाग न बीधे । श्री रल्लबदेव भगवान् को जनम हुवो । तीजा आरा का पल्लवाड़ा ८९ थाकता रहा । जदि श्री रल्लबदेव भगवान् नीरमाण पोहोत्या । जठा पोछ एक कोड़ा न कोड़ सागर को (चोथो आरो) लायो । जनम ४२००० हजार बरस घाट एक कोड़ा न कोड़ सागर को चौथा आरा माही २३ तीर्थंकर हुवा । चौथा आरा का बरस ७५ भास ८॥ बाकी थाकता रह्या, त्यार श्री बीरधमान स्वामी को जनम हुवो—कुनणपुर नामा, पिता सीधारथ, भाता तोसलावे राणी कूल थकी जनम्या, चंत सुबी १३ तेरस के दिन सुम नीलत्र जनम्या, स्वामी नो सरब आउल्लो बरस ७२, तेह म ए ३० बरस कुमरपद रह्या, ३० बरस छवमसतक पण रह्या, १२ बारा बरस केवल पण रह्या । एवं सरब आउल्लो ७२ बरस नो भोग बी न चौथा आरा का थाकता ३॥ बरस ८॥ भास बाकी रह्या । त्यार श्री प्रभू मोल्ल पधारथा छ । चौथा आराना बरस ३ भास ८॥ बढीत हुवा पाछ पांचमो आरो बढो । २१ हजार बरस नो पांच मो आरो बढो । पांचमा आरानो अकड्डीस हजार बरस नो सुधि सातण चालसी साद सादवी, आवक-आवका, च्यार तीरथ धरम अकबीस हजार बरस सुबी चालसी । भगवंत नीरवाण पोहोत्या । पछइ इतरा बरस हुवा ते कह छ ।

श्री बीर निरवाण पूगा पोछ बारा बरस सुबी तो गोतम स्वामी

रह्या पछ मोख पोहोत्या: श्रीबीर पछ २० बरस पाछ श्री मुधरमा स्वामी मोख पोहोत्या श्री बीर पछ चोसट ६४ बरस पछ श्री जम्बू स्वामी मोख पोहोत्या, पछ भरत खेत्रना जनम्यां न मोख ग्रह की भरत खेत्र का जनमान मोख न थी, जम्बू स्वामी यकी १० बोल बछेद गया श्री बीर पछ ६८ बरस पछ श्री प्रभव स्वामी देवलोक गया श्री बीर पछ १७० बरस पछ श्री भद्रबाहु स्वामी देवलोक पोहोत्या, श्री बीर पछ २१४ बरस पछ अवगतवादी तीजो नंदव हुवो ते कीम सरग अयवा नरग इहा हीज छ आग नगर कांड नहीं मानेते बीरग संसारी जाणवो ते सूत्र अरथ मान नहीं । श्री बीर मोख पोहोत्यां पछ २१५ बरस पछ धूल भद्र स्वामी मोटामुनी हुवा, देवलोक पोहोत्या श्री बीर पछ २२० बरस पछ सुन वादी चोथो नंदव हुवो ते पुन पाप नरग सुरग कांड मानता न थी । श्री बीर पछ २२८ बरस पछ पांचमो नंदव हुवो ते एके समय बोय करीया मानी, इत भगवंत इम कहो के एक समीया बोय नहीं, एक समय दो करीया मान नहीं, होव नहीं, आ परूप ते बात खोटी छे ।

श्री बीर पछ ३३५ बरस पछ कालका आचारज हुवो तेहन सरसती भैन छी, भनना भैननो लेण हार हुवो आपकी रूपवंती भान घणी छी ते माठे गंदरफसेन राजा बीखे घणो यको सुरमती आरजा न लेगयो, कालका आचारज को जोर कांड चलो नहीं तयार अनेरो दूजा देस मांही बीयार कीयो उ सात बरस मांही सात राजा न प्रतबोद वेई समझाया तयार राजा घणा राजी हुवा, अहो पूजं म्हे तुम्हारा सेवग छां हम लायक काई काम होव सो कहो, तयार कालका आचारज बोल्या-अहो राजा हमारी भैन भगनी गंदरफसेन राजा ले गयो ते आणी दो तयार साथ (त) राजा लड़बा न चढ़्या, काई बल चाल्यो नहीं, गढ़ घेरी लड़बा लागा पण जोर चल नहीं, तयार एक विद्याधर आइ नीकल्यो जीन अस्यो कहो—आज गंदरफसेन अमावस नी रातें पूरबदसी दरवाजे कोट ऊपर चढ़ी न गद्या को रूप करसी, गंदरफ नामा बीवा सादसी, नखत्र न जोग, तयार गंदरफ सेन भुंक्सी, तयार गढ़ कोट कांगरा तावाना होसी. बजरना होसी, तयार थारो बल चालसी नहीं, ते माटे पहला सावधान होज्यो, असो बचन सांभलनि सात राजा आठमो आचारज इचरज जाणी न बीधा सांसत्र करी न, सावदान थई उमा । होवें गंदरफसेन राजा बीधामंत्र सादी न भुक्वा लागो ।

त्यार झाठ न सबब बाँकलो न झाटे जर्णायक साथ बास मुका तेहनो मुंडो
बास मु भराणो, तेहनो बल घट गयो, अतर मुको, अचारज सुरसतो
मानन ले गया ।

श्री वीर पछ ४७० बरस पछ राजा वीरबिज्जमादीत हुबो, अन
धरमी हुबो, पर दुःखनो कटणहार हुबो, बरखा बरणी न्यांतीरो बंबोबसस
कीयो, मूरजाबा बाँदी ते त्यां घाटे साहूकार माहू मांही जाणो, समपण कीधो
हतो, पछ बेटा रो बाप धन करी हीणो होतो गांव बाहर जाय रहो, बेटी
मोटी घणी होइ पण बेटी रो बाप रांक जाणी परणाव नहीं, बेटी मोटी
जाणी न राजा न परणाव दी कीधो । राजा वीर बकरमदीत परणावा
आयो, तिण सम बेटा री मा रोबा लागी । त्यार राजा बोलो—महाराज
आप परणबा आया ते मांग म्हारा बेटा नी छ । ते माट रोउ छ । ते
पछ राजा बीचारी ये बात मुज जुगत नहीं । इम बीचारी न आपका
गहूणा घेसाक ल्हसकर सहत आपके ठकाण उनका बेटा कू उनकी मांग
परणावो । अन माल मोत दियो । सुखो कियो । पछ राजा बीचारी
हुतो न्याबी हुबो पण आग होसी नहीं ते माटे बरणाबरणी कांधी,
आपापकी न्यात म परणो परणावो, बीजी नात म परणाबा पाव नहीं ।

श्री वीर पछ ५५४ बरस पीछ छटो नन्दब हुबो । श्री वीर पछ
५८४ बरह पीछ बंर स्वामी हुवा । मोटा मुनीराज छ । ते सब बसतरा
त्यागो हुवा । पीण बक म्हारनी बिदा फेरी । त्यार बीदा गर परी फोड़ा,
वीर स्वामी न डड दियो, पछ आरादीक हुवा देवलोक पोहोता, वीर पछ
५८५ बरस पछ सातमो नन्दब हुबो, गोसाला मती हुबो, तथा जेमाली यती
आठबो नन्दब हुबो । वीर पछ ६०६ बरस पीछ गोसठा माल हुवा सो
डीगंमर मत नीकालों छे ।

ते डीगंमर मत कीम निकल्यो ते कह छ—क एक बुटक नामा साहु
होतो जीन न आचारज एक पखेबडी भारी मोल की बीनी, तीन ममता
करीन बांधी पण बोज नहीं, पुंउ नहीं, पलेवे नहीं, त्यार गर अजान जाणी
न परी फाड़ी, साबा न मुफती के बासते बेबी, जठा मु धीख भराखो साबा
मु धरेख करखा लागो, त्यार सुं उपाव कीनो, पोताना बसत्र सब अलग
नाहया पछ साबा री नछा करखा लागो, पाछ पोता नी भान होसी तेहन
पणे, नगन बुझा कीनी, पछ लोण नछा करवा लागो, असत्री नगन सौब नहीं,

त्यार तेहन लाल बसत्र पहराया, बाइजी नाम बोधो । पछ अस्तत्री न मोल नहीं इम परपणा कीधी । पछ पोतारा मत कलबला करी न सासत्रना मुलगा अरथ पाट भागीन पोतारी मत कलपणां सु घाली न नवा सासत्र बणाया, अग ला भगवन्त रा मारुषा सासत्र ना उंदा अरथ परध्या जे साध होव ते बसत्र राख नहीं साध न नगन रहणो, इम ब्रैल न मांग घणा बेल सुत्रा का उषापोन खोटा बोल की थापना का सासत्र बणतया हींस्या म धरम परुषो, गाड़री परवार जिम जाणबा ।

वीर पछ ६२० बरस पछ च्यार साखा हुई—चंद्र साखा १, नागंद्र साखा २, तीवरतर (निवृत्ति) साखा ३, बोधाधर साखा तेहनो विसतार कह छ-१२ बरस पछ काल लगतो पछ काल लगतो पड़ो, पच काली, सतकाली १२ बरसतो काल पड़ो, तीबार पछ घणा साध साधवी न सुजतो भात पाणी मिलो नही, असूजतो साधा न लेणो नहीं, ते अवसर ७८४ सात सौ चोरासी साध तो संथारो कीधी । संथारो करी न देब लोक म गया । आप आपणा कारीज सारधा । बली मोटा मुनीराज महा जोरा-वर होता सो तो दुकाल मांही डग्या नहीं, संथारो कबूल कीयो । अराधीक हुवा, आगम काल भुगतो प्रती होसी । कोइक भवन आतरे मोल जाती । केत लायक उत्तम मुनी राज प्रदेश उठ गया । कितलायक साधु सू परी सा खमारो नहीं । खुदा बेदनी खमाणी नहीं । बाकी रा साध रह्या सो जीण न आर पाणी पण मिल नहीं । कदाचीत् मील तो भीख्यारा आने खाबा म आव नहीं; केतलायक महा पुरुष आतमा अर बे सो तो परदेश उत्र गया । बीयार कर गया । पछ बाकी रा साब रया सो मोकला डीला पड्या, नी केवल मेखधारी थया । आवाकरमी आव देइ न न घणा बोध ना लगावणहार थया । असा न सूजतो अन पाणी भी मिल नहीं । साधु दुखीया थया । कायर साधु भागा; परीसो खमो नहीं । तेवारे मोकला थया । संजम थकी भीसट थया, भगवानरी आग्या बाहर हुवा । संसार मांही पेट भरा थया ।

ते वारे मेख धारी पेट भरा घना उठा; पथ असो उपाव उठावी । पोतारो मत काढ़्यो । एक भीकारी आग कोचवान जानी लोकारो भाव तो देने रा घणाई छ पीण भीस्की यारी आने धरम जा सके नहीं, त्यार हात म डंडो राखबा लागा, भीकातीन ठेली न आहार लेब धरम लाभ केवा लगा; धरम लाभ कहोन लोका न बुलावा लागा, असत्री नी बीध माथो

ढकबा लाग़ा, माथो ढाकी गोचरी जाव । उठा तथी अनेक गच्छ निकल्या लोणा । आग कहो हम साबु छां । पाटा न पाट चाला आव छ । द्रव राखबा लाग़ा । चेला-चेली मोल लेबा लाग़ा । अने जती नाम धराबा लाग़ा । जती तो पचेंद्री जीते सो जती, पचन्द्री मोकली मेली न जती नाम धरावे सो तो सुत्र वेद (विरुद्ध) छे । मोल का लीघा तो गहू न होवे । बेव, गहू, धर्म ये तीनु तो अमोल छ । ये तीन बात तो मोल मिले नहीं, मोल को तो कीरयानौ छः अथवा घी चोपड़ मीले । मोल का लीघा तो चाकर गोला होव पण मोल का लीघा बेव, गहू, धर्म न कह्यो । चत्रु होव सो तो विचारज्यो, जो साधु तो सासत्र मांही चाला छ । माहा बरत धारी, भेक धारी न साध नहीं कहीये । भेक तो मांड धारे छ । भेक सु तो मांग खाव छ । पण भेख सू काइ, गरज सर नही, गरज तो गुण सू सरसी चत्रु होव सो विचारज्यो ।

येक साहूकार के परवार घणो । बेन बेटी भाई बंधव घणा अने जीण घर धन तो पण घणो पण अने नहीं । द्रव देता अने मिल नहीं, रूपया बरोबर पण अने मिल नहीं छे, हल अवसर थोड़ो सो अने रही त्यार सेठाणी कहो—अने तो खूटो । त्यार सेठजी कहो—थोड़ा थोड़ा अने सू काम चलावो । त्यार सेठाणी थोड़ा थोड़ा अन्न की राबड़ी रांधी न सारा घर का न पाव । ते वारे बल करो न हीण थया । एक दिन सेठाणी बोली के सेठ जी अने तो सारो ही खूटो । ते वारे साहूकार बोल्या—कठ ई खूना खेचरा, कोठा कोठी, बुहारी न काम चलावो । ते बार सारा ही घर म कोठा कोठी में बुहारो न कण-कण भेलो कीयो । भेलो करो पीसी तेहनी पतली राबड़ी रांधी । सेठ कहो क सेठानी राबड़ी म नाखबा अरथ थोड़ो क बीष बांटो । बीष राबड़ी म नाखो न थोड़ी सारा ही पीर सो रहस्यां । तीबारे सेठाणी राबड़ी में बीष नाखबा अरथ बांटबा बंठी । इतारे मोटा मुनीराज बहुरा अरथ आया । जतीराज पधारा घर म लाभ बीधो । ते वारे साहूकार बोल्या—थोड़ी सीक राबड़ी जतीराज न बहरावो पछ बीष घाल जो । सेठाणी राबड़ी बहराई । तेबार जतीराज बोल्या—बाई तुम सु बांटो छो । जद सेठाणी बोली—जतीराज तुम्हार सु काम छे । जव ज ती सेठजी न बूझो । जव सेठजी बोल्या—स्वामी माहारा घर म धने तो घणोई छः पण अन्न नथी । जे मणी बीष बांटो राबड़ी म नाखो न राबड़ी पी सो रहस्या ।

त्यार गुरुदेव बोल्या—मन दया आव छ। सेठजी सामलो। म गुर देव कन जाइन पाछो आउ, जीत न जहर नाखो मती। इतरो कहोन चेलो गुर देव कन गयो। गुरां न मोडी न बात कही—पुजं साहूकार ना घर असो कारण छ। त्यार गुरुदेव बोल्या—तुम बठो म जास्यू। त्यार गुरु कहो—अहो सेठ जी तुम सारा मरो छो तुम न 'श्रवन' हूं बचाऊं तो म्हानं काई देवो। त्यार सेठ जो बोल्या—स्वामी जो तुम मांगो सो तुमन देउ। त्यार जती बोल्या—साहाजी सात दीन बोरा सोरा काढ़ो, पछ दीन सात मांही धान री जाहाज आवसी। जीसम देस मांही धान सूंगो होसी, बुकाल नीकल जासी, चींता मत करो। पछ सुकाल होसी। सेठ जो बचन सामलीन प्रमाण कीधो।

जद दीन सात नीकल्या। जद भाज धान री आई। देस म सुकाल हुबो। ते वारे पेठ जी ४ च्यार बेटा साधु जो न बीधा। लोक पण केत-लायक सुख पाभ्यां। च्यार पुत्रां नो नाम—यक को नाम तो बोगजी १, लेगावर जी २, बीजधर जी ३, भदमती ४, १। इन चार जणा भेक लीधो। सासत्र भणां। पंडीत 'गीतारथ' हुवा। पछ साध आतमा अरथ दोसावर गया होता, ते पाछा आया। साधा न च्यार जणां न कह्यो—तुम सुध कीरीया करो। आतमा को कल्याण करो। च्यार जणा मानो नहीं। सारा ही भेख धारी जती मेला हुइनि तीहां थकी मत नीकल्यो। च्यार ही भायां चार ही गच्छ नीकल्यां। चार साखा हुई। आप आपणो मत जुदा जुदा काइथा। सीतांमर डीगामर मत काइो, आप आपरा जुदा-जुदा मत चलाया। भगवत री परतेमा कराबी, भगवत करी न थापी। लोक आपण नहीं आबतो परतमा देखी न आवसी। ते मांठ लाम नो कारण घणो होसी। श्रीफल तथा पूंगीफल अने रो दूब घरणो अ वसी। ते वारे आवक भेक धारी ना उपवेस सुणी नै, धोपानो फल तथा आइमर करवा लागा। तीवारे सरावगां देहरा तथा चेताला तथा उपासरा ठाम-ठाम आरंभ सारभ कराबा लागा। आप आपणो गछ नीमत बाधना। आप आपणा सींघ काइवा को परूपणा कीधी। उठा थकी पूजा प्रतेस्टा चलाबी बीसेख भोकला पड़था। उठ थकी गोठलमाल डीगमर हुबो। ६०८ छह स आठ बरस पीछ उठ थकी गोठवमाल नीदव नीकल्यो। ४ च्यार साखा हुई।

श्री बीर पद्य ८८२ बरस पद्य चतरा बेसी हुवो । धरम खातर देहरा मंडाणा । हींसा मांही धरम पढ़्यो । लोकां आग कह । भगवंत री प्रतेष्ठा करता दोष नथी । भगवंतर हेत हिंसा करता दोष नहीं । हींसा करीन धरम पढ़प जीरान मेकधारी पेटभरा जाणवी । श्री भगवंत देवजी तो असो कहो छे । देवन अरथे धरमन अरथे गरन अरथे हींसा कर छ हींसा परप छ । जीवन बोध बीज समकतनी प्रापती थाय नहीं अप्रवा जावे पामसे नहीं । अनंता जनम मरण करस घणा जबर करम बांधसः हींसा करसी तो पाप लागसी, धरम नीमत हींसा करसी तेहन मांहा पाप लागसी, घणो संसार बेटार रलसी । असो जाणीन कोई जीव धरम जाणी हींसा कर जो मती ।

श्री परसण व्याकरण म प्रथम आसरब दुवार म भगवंत कहो छ पण समर दुवार म न थी भगवंत न तो इस कहो छ—के मांखी नी पाख दुखाय जठ ही पाप लाग छः अने पाखंडी लंगधारी पेट भरा हीण पुन्याई म कहे छ - धरम खोत्र हींसा करता दोष नहीं । देखो न अब चैन दया धरम ओर हींसा धरम मांही बेम भगवंतारी बचन कस्यो छ । तयार लोग बोल्या— दया म धरम छ पण हींसा में न थी, हींसा म पाप छ या बात बालक न पूछो तो जीव बचाया धरम केसे । जीव मारा पाप कसे तथा हीन्दू मुसलमान बीराम्ण भगत बेरागी संन्यासी खटवरसणो जीव बचाया में धरम कहसी । पीछ चत्रु होवे सो बीचार लीजो ।

श्री बीर पद्य ६८० बरस पाछ पुसतक रुडे लीखाणों, सासत्र बाचबा लागा ते कीम श्री बीर पद्य ६८० बरसा पीछ देवगणी आचारज पेक १ दीन परसतावे सुंठ नो गाढो कान प्रमेलो हो तो सो बीसर गया । काल अती करमो । सांज पड़्या पीछ समाल्यो । ते वारे देव गणधर बोल्या बीचार करी न कहो. काईक बुधी हीण बई छ । सूत्र मुड़ रह सी नहीं । ते मांठ सुत्र उपर चड़ाबा लीखा । आचारंगजी न सातमा अवीन मांही प्रगन्यापवो नाम ते काइक कारण जाणी न. देव डीलमा समाणो लीखो नहीं, तीण बिछेद गयो । इतिरी भगवानरो आगना । श्री बीर पद्य ६८० बरस पीछ बीर मंडाखां पुसतक मंडाणा पतल लगतो सुत्र मारग चाल्यो, तीवार पद्य दुकाल पड़्यो । पद्य लंगधारी, मेकधारी पेट भराई साधूर ह्या । सुत्र सीधांत सारा पाना भंडार म राखा । पोतार छाँव पोतारी मत कलपणां रा सासत्र बनाया । चोपाई तथा रास छंद ढाल तथा सीरलोक काव्य संस्कृत दीक गीरंथ तथा सतोत्र तथा सीतरंजो

माहात्म्य अनेक पोतारी मत कल्पणां रा सासत्र बनाया । करी ने हींस्यां धरम ना सासत्र बनाया । गरु नी पूजा तथा पोथी री पूजा तथा प्रतमारी पूजा तथा प्रतेस्टा । गोसम पडो गो खमासणां बेराग गरु न सामेलो करावो, गाजा बाजा सुं गाँव म लावो । पग माडण बीछाव, भगवंतरा मांख्या सासत्र थकी बीरुप परुपणा करी न आपणी मत कल्पणा रा सासत्र बनाया ।

श्री बीर पछ ६६३ बरस पछ कालका आचारज हुवो । छमछरी पाचवरी मेटी चोथ री थापी । ते तो खोटो थापी ते देखो रघो पचमी तो खट द्रसणी पण मान छ । छतीस पोण मान छ, अन चोथ पडोकम्म छ । चोथ न बीन छमछरी कर पाचव नो पारणो कर छ । ते तो येकंत मीथात-दीसटी जाणवा । छमछरी तो सावण बुवो १ सुं मांडी न भादवा सुदी बीन ४६ तथा ५० आबछ ते लेवा । भादवा सुदी थकी मोड़ी न काती सुदी १५ बीन ६६ तथा दिन ७० म दिन चोमासो उठ छ य अघकार श्री सामायंग कहो छ सोतरम ७० । श्री बीर पछ ६७० बरस होया बार पाछ बीपरीत कर छ क तो जैन धरम थकी बीरोध छ असो सांख सामायंग ७० सत्तर म छ । श्री बीर पछ ६६४ बरस पछ पखी उथापी न चवदस की थापी । आग पखी करता आवे चउदस की कर छ जे उपासंगबीसा मांही चाली छः ।

श्री बीर पछ १००० बरस पछ पुरबधारी रह्या । श्री बीर पछ येक हजार आठ बरस १००८ पोछ पुरबधारी बीछेद गया । पोसाल मंडाणी श्री बीर पछ १४६४ बरस पछ बड़गछ हुवो । ८४ गछ हुवा । श्री बीर पछ १६२६ बरस पछ पुनम्या गछ हुवो । अमावस नो पुनो कीधी । ते तो बेचनी सकतो थकीः ते तो अहंकार न मांग जाणवो । श्री बीर पछ १६५४ बरस पोछ आंबलया गछ हुवा । ते कीम सूत्रना बोल आंचलीया ए हेतु लगाया । ते भाटे श्री बीर पछ १६७० बरस पोछ खरतर गछ हुवो ते केम पहली कीरयान बीषः खत्र पण चाल्या ते भाठे श्री बीर पछ १७५५ बरस पछ तपगछ हुवो ते कीम पहली तप साधना कीधी, पछ पोसाल थापी ।

बीर पछ २०२३ बरस पोछ जीनमती सांची सरदना नो धनी लूहको मती हुवो ते कीमहु वो ते कह छ—के पुस्तक भंडार मांही होती तीणने उदेइ खावा । ते पाना जोबान बाहर काडया । स्यार पाना फाटा

देखा । तेवारे बीचारो ये सीधंत लीखाव ते बारो, तेवारे ल्हुको मतो सरावक हुतो । सीरकार को कारकुन होतो, वफतरी होतो । यकदा परसता व भेकधारी कन आयो होतो । तेवारे भेखधारी कयो येक जीण सासण नो काम छे । त्यार लू'को मतो बोलो—सु'काम छ, फुरमावो । तेवार जती बोल्या-सीधंत ना पाना उदइ खावा छ, ते नवा लीखीन आपो ते कील्याण नो कारण छ, घणोलाभ थासी । इम कता थका ल्हुकमत बचन प्रमाण कीधो । तेवारे भेखधारी १ यक दसमीकालकी पडत लीखनी आपो । तेवार ल्हुके मत इम बीचारो जे श्री तीर्थकरदेवजी रो मारीग इन दसमीकाल सुत्र मांही इम कह्यो छ जे सादारो मारग तो असो दीस छ । दया धरम असो आचार दीस छ, इबलंगी भेखधारी आचार छोडी न हींसया धरम की परपणा करबा लागा, ते कीम पोते डीला पड्या । ते माटे लोगान सुध दयाधरम बताव नहीं, ते हीवडा केसु' तो मानसी नही । सासत्र पोण ठावा करसी नही । त्यार मुते बीचारो जे जीम तीम जाणो ने सूत्र कडावी न उतार लेवा तो जाणनो अंग उपांग ना घणी होउ', घणा भवजीव प्रतबोध पामसी । ते माठ दसमीकालनो दोबडी पडत उतारी । एक पडत तो पोत राखी एक पडत उणन दीधो । ते पोतान पास ईण रीत पडत सरब उतारी लीधो, तेवार पछ लुकमते पोतानी घर णण सुत्र नो परपणा करबा लागा । तेवारे भवजीव सामलबा लागा । दया जीवार दया रुचो ।

तीण काल तीण सम अरठबाडी बाणीया नगजी १, मोतीचन्दजी २, बुलीचंदजी ३, संभूराम ना बेटानी बेटो महुबाई अने मोहुबाईनी माता ईतादीकपण संग काड्यो ते कीम, जावा लागा गाडा घोडी उ'ट बलध सेजावाला इतादीक पुरण लेई चाल्या । तेवारे पछ पाणीनी बीरखा हुई । जीण गांव म लुको मुहतो हुतो रहतो तहा संघवाला लोग मुहता पास सांभलवा आया । दसमीकालक नो बखान सुणो । तीम काइ अधिकार नीकलो प्रथवी न हण नही, हणाव नही, हणता प्रते भलो जाण नही, ईम अपकाय इम तेउकाय, इम छह कायनो आरंभ समारंभ नो अधिकार लुको मुहतो बाच । जेता संघना लोग तथा संघबीसांथ सामलबा आया । तीवार लुकमत दया धरम न हेत सासत्र बाचे पण प्रमाद कर नही । त्यारे मुहता पास दया धरम तथा साधनो मारग श्रावक नो मारग दया धरम नो मारग रूपी नो परपणा कर छ । ते गांव बार संघनो पडाव थयो । तीवार पछ संघना लोग मताजी री तारीफ करबा लागा । मतानी

बात सुणी खबर पाटी त्यार लुक मुहत मीन मीन करी न जीन मारग, साधरो आचार, आवग नो आचार सांभली न पासो मन मांही जीन मारग रुचो । कीतलायक दीन हुवा सोधंत सांभलता दया मारग नो आसता आइ । तीबार भेषधारी संघ न गुरु हुता तीण बीचारो जे संघना लोग दया धरम सांभलसे तो हमारो आव मीट बासी, सोधंत नो बात सांभलसी तो संघ चलावसी नहीं, अनो भय आणो न संघबो न पास द्रव-लगी आव्या, इम कहवा लागा-जे संघ ना लोग खरची प.एसी बीना दुखीया थासी । त्यार संघबो बोल्या-बाट म घणी अजणी दीस छ, बाट म हरी अंकुरा घणा हुवा छ, बाटमे पीए वस जीव की घणी उतपती छ, नीलफुल घणी हुई छ. ईतादीक घणी अजणा दीख छ ते माटे सुसता थौं ।

तीबार द्रवलगी गुरु बोल्या-साहाजी धरम न कारणे हीसा गणाय नहो, तीबार संघबो मनमांही बीचारयो जे लूका मुता पास ईम सांभलो भेषधारी जती रोसाणो करे न पाछा करगया ते संघवाला णो सोधत सुणीन बराग उपनो । त्यार संघवालाए सधंत सुणी न बराग उपनो त्यार पतालीस जणाय संजम लीधो, संजती थया साधना बरत अंगीकर कीधा, संवत १५३१ साके साल संजन लीधो । तेहना नाम-साध सरबाजी १, भाणोजी २, लुणोजी ३, जगमजी (जगमालजी) ४ ईतादीक आद देईन ४५ साधूजो नाम मारग परुषबा लागा, दया धरम परुष्यो । हीसा म पाप बतायो त्यारे घणा जीव दया धरम मारग आदरबा लागा ते दयाधरम आदर्यो । तीबार लुहकसा " कहो ते मोथकी सासत्र बाजसो । त्यार साधूजी बोल्या—मुहताजी हमतो श्री तीर्थकर माहाराज रो धरम तुम थकी पाभ्या छा हो हम तो लूका साधू बाजस्या । तीबार लुका साध बाजस्या, लुका साध नाम दीयो । तीबार पछ घणी करीया करतूत करीने अनेक कसट करबा लागा । तीबार घणा लोग आगता हुंता ते सुसता थया, जे जती आन आवक हा त सुसता थया ते दया मारग ना पालणहार हुबा । पछ देखी जीव हुआ, उपसरग दीधो ते माहारोख परिसा सहा. तीबार पछ रुपजी साहा, पाटण नो बासी संजम लेई नीकल्यो । मोटो पुरुष थयो । एह लुकानो पहलो पाट थयो ।

तीबार पछ सुरत नो बासी, जीवो ससार न बीधे पुन्य पबीत्र हुतो, तीहा रुपरख आया संजम लीधो । जीवारख थया, ते बीबहार सुध साध

जाणीय छ । तीवार पछ चानक ना बोध सेवा लाग्या । आहार की गबेवणा यकी मोकला पड्या, तेइया जाबा लाग्या, बसत्र पात्रनी मुरजादा लोपी, आचार थी डीला पड्या । तीवार पछ संवत १७०६ साले सुरत नो बासी बोरा बीरजी श्रीमाल, लोकामांही ओडोघज हुबो । तेहनो बेटी फुलाबाई तेहनो बेटी लवजी साहा सधंत घणो भणो । तीवार लवजी साहान बराग उपनो, तीवार बोराजी बीरजी पास संजम लेबानो आग्या मांगी । तीवार बोरो बीरजी कहबा लागो—के तुम लुकारा गछमाही दोखा लो तो आज्ञा आज्ञा (पूं) तीवार लवजी साहा बोचार्यो—हेवडा भवसर भ्रह्माइज छ, इसो जाणी न लुकागछ माहो बराग दोख्या लोधी, त्यार दोख्या लइन लवजी जत्या पासे घणा सूत्र सधंत भण्या, जीवादीक पदारथ भण्या, ए पंडीत थया ।

तीवार बरस दोय पछ पोताना गरुन एकंत पूछयो, गाथा-दस अठ्ठाइ ठाणाइ इती वचन त् ए अ गाथा दशमीकालक सूत्र नी छ, छटा अध्ययन में बोल १८ नो अधीकार नूछो, सामी साधुनो आचार ए हो दोस छ । तीम हीबडा पाल छ नही । तीवार गुरु बोल्या-अज तो पाचमो आरो छ, ते अहो आचार कीम पले, तीवार रीख लवजी बोल्या—स्वामी भगवंत रो मारीग तो २१००० बरस सुधी चालसी, ते माटे लुकामाही थी नीकलो तो ये माहारा गुरु हूं तुम्हारो खेलो, तीवार जंगजी सू बोल्या—हमसुं तो नीकलाय नही । तीवार रीख लवजी बोल्या-हूं तो सुध साधपणो पालस्यूं । तीवार रल लवजी गछ बोसराई न नोकल्या । रल लवजी साथ रल थोब-णजी, रल सोबोजी नोकल्या, जगाये फेर दोख्या लोधी । डूंडामांही उत्तर्या । घणा गाम उ (न) गर न बोखे लोका न समजाया, तीवार लोकोये डूंडोया नाम दोधो ।

अमदाबाद म कालूपुरानो बासी साहा सोमाजी, रल लवजी पास दोख्या लोधी । २७ बरस सुधी दोख्या पाली ते घणी सूरज साहामी घणी आतापना लोधी तथा घणी ताड खमो । तपसा कावसग कीना । घणा साध साधवी नो परवार हुबो, तेहना नाम-हरीदासजी, रल पेमजी, रल कालूजी, रल गीरधरजी प्रमुख घणा जणा हुवा बरजंगजीना गछ ना नोकल्या, लवजी प्रमुख बरजंगजी ना गछ यकी नोकल्या तेहना नाम-अमीपालजी, रल धरमदासजी, रल हरजीजी, रल जीबोजी, रल करमणजी, रल छोटा-हरजीजी, रल केसवजी, ईत्यादीक नामा महापुरुष गछ छाडी न दोख्या

लीधो । जीण धरम घणो बीपायो । घणो परवार धयो, रीख समरखणी
 श्री पूजजी श्री धरमदासजी, गोधाजी, घणो जीनधरम बीपायो अन तीन-
 माही हरजी न, गोधोजी, परसरामजी तस सीख लोकमणजी, तससीख
 माहारामजी, तससीख बोलतरामजी, तीस सीख लालचंदजी, गणेशरामजी,
 गोमबरामजी पुजै रीख लालचंदजी, तसै सीख स्योलालजी, तस्यै सीख
 तपसजी, हुकमचन्दजी अम्बदेई धया, ईम अनेक माहापुरख धया । रीख
 गजानंदजी पूज श्री गणेशरामजी का तस्यै सीख पूजै जीवणजी अमीचंदजी ।

पछ छेहला आरा पांचमा उत्तरताइ बरोपतनामा साध होसी,
 कागणी नामा आरज्या होसी, नांगलनाम भावक होसी, संघणी नाम
 भावका होसी, अ ध्यारही तीरथ संघारो करसी, तीन पोहोर को संघारो
 होसी, आउखो पूरो करीन देवलोका जासी । मत अथवा टोला घणा
 होसी पण संजम अराधीक बुरलंगछ, असै समाचारो नी हंडी छ, पछ तो
 केरली सीकार सो सहो ईती पाटावली समपूरण ।

अथ बाईस टोला का नाम लीख्य छ—पूजै लालचंदजी नो
 टोलो तीमसु टोला ३ नीस-या—एक तो अमरसंघजी नो १, बूजो स्वामी
 दासजी नो २, तीजो नगजी को ३ । बूजो टोलो पूज धनाजीको तीमसु
 टोला ३ नीस-या—स्वामी रघुनाथजी १, बूजो जमलजी २, तीजो कुसलाजी
 ३ । तीजो टोलो मनाजी को ३ ते नाथुरामजी का साथ । चौथो टोलो
 बड़ा प्रीयाजी को, तोमे नरसंगदासजी छ । पांचमो बालचंदजी को टोलो
 ते सोतलदासजी साथ छे । छठो टोलो लोहोडा पीयाजी को प्रतापगड
 का साथ । सात पुजे रामचंदजी सो गुजरात म अजरामलजी छ । आठमो
 टोलो मुलचंदजी को उजोण ना मणकचंदजी साथ । नवो ताराचंदजी नो
 टोलो ते कालारखजी का साथ छे । दसमो टोलो खेमजी को ते जावद
 कानी साथ रतनजी तपसी का साथ । ११ पंदास्थजी को टोलो, १२,
 खेमजी को टोलो, १३ तलोकजी को टोलो, १४ पदास्थजी को टोलो, १५
 माणदासजी को टोलो, १६ सोलमो पुज्य प्रसरामजी को टोलो हाडोतो
 म बचर छ । १७ मवानीदासजी रो टोलो । १८ अठारमो मुकटरामजी
 को टोलो । १९ मनोहरजी को टोलो । २० सांमीदासजी को टोलो ।

२१ बाजी की टोली । २२ बाइसमो समर्थजी की टोली । टोला का नाम पूरण । उतारी पुर्ज थी थी थी थी थी थी १००८ श्री गजानंदजी का पाना सुचोमासो करो जीद तनमुख पटवारी स्यामपुरा का न मी । आसोज सुबी १ संवत १६२३ का मंगलवार, और असल पटवारीजी का हात की पाठावली तो स्वामजी माहाराज थी थी थी १००८ श्री श्री केवलचंदजी वा सुखलालजी माहाराज ठाणा दोय २ सु सेखकाल पधारी जब बाकू बहरादीनी और नकल वा राखी मोती मांगसर सुद ६ संवत १६५४ का द हजारीलाल का ।

कोटा परम्परा का पूरक पत्र

पुज्य माहाराजाधिराज श्री श्री १००८ श्री दौलतरामजी तस्ये सीख लालचंद जी तस्ये सीख तपसीजी माहाराजाधिराज श्री हुकमीचंदजी बडा पुरस हुवा, तीणाक चेना का त्याग अर पुज्य श्री गोविंदरामजी तत् सीख पुज्य श्री दीयालजी पास्य गांव रतलाम मध्ये साहा मोलालजी न दीख्या लीधी । बडा दीपता मुनिराज हुवा । स्वत १८६१ का साल पछे मास ६ म पुज्य दीयालजी देवलोक पधार्या पछे तपसी हुकमीचंदजी न सोलालजी विचर्या । घणा नरनारी न समझाया । बडा सीख साही चत्र-भुजजी सीगोली का वासी दीख्या लीधी । पछे स्वत १६०७ के साल सोवलालजी म्हाराजे क चेला ५ एक दिन म हुवा अर च्यार तीरथां की साखे सु पुज्य पदवी आई । चेला कोठारी सादूलजी आदे ई घणा हुवा । पछे स्वत १६१७ के साल तपसीजी म्हाराजे हुकमीचंदजी देवलोक गांव जावद म पधार्या । अर स्वत १६२५ क साल गांव जावद मध्य पुज्य पदवी उदचंदजी कु हुई । स्वत १६३२ क साल पुज्य सोलालजी देवलोक पधार्या । यो टोली तपसी हुकमीचंदजी को कहाव छे ।

पुज्य सोलालजी के पास्ये दीक्षा लीधी तपसीजी माहाराजाधिराज श्री पन्नालालजी स्वत १६१२ पोस सुद ३ गुरुवार रामपुरा का श्री श्री माल माहातपसी हुवा अर चेला का त्याग कर्या इ आराम उदकसरी तपस्या कर छे । अर पुज्य श्री गोविंदरामजी तस्ये सीख फतेचंदजी तस्ये सीख ग्यानचंदजी तस्ये सीख बलदेवजी अर बूजा छानलालजी तीजा गंभीरमलजी बलीका जौहोरी हुवा । चित्त नमल सं० १६१६

राणीपुरा म पुज छगनलाल जी डकवा (डेकवा) का पोरवाड जा घोर संवत् १६२२ में दीक्षा लीधी। ज्याका पसी प्रेमचन्दजी लि में बिद्यमान दक्षिण बिहारी। अर बलदेवजी क चेला मगनमलजी हुवा। अर पुज्य गणेशराम जी तस्ये सीख जीवणजी, भरुजी अमीचन्दजी पंडत हुवा। जीवणजी क चेला माणिकचन्दजी तस्य सीख भतनचन्दजी मोखली का पोरवाड दीक्षा लीधा गांव स्यामपुरा मध्ये स्वत १६२६ म. अमीचंदजी का सीख मगनमलजी, भरुजी।

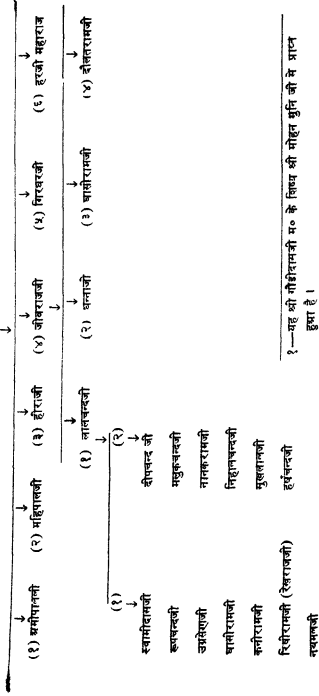
पुज्य दौलतरामजी म्हारज का चचार चेला गणेशरामजी १, गोविंदरामजी २, लालचन्दजी ३, गजारामजी ४। गणेशरामजी का पुज्य अमीचंदजी। पुज्य अमीचंदजी का ग्यारा चेला होया—छोट जीवणजी १, मानजी २, बाजी ३, माणिकचंदजी ४, भोलुजी ५, बडा भरुजी ६, कालुजी ७, धनजी बडा ८, छोटा धनजी ९, छोटा भरुजी १०, चुनीलालजी ११ ज्या मे से श्री कालुजी म्हारज बुंदी का बोंसवाल, गोत गुगल्या, दीक्षा माघोपुर सम्बत १६२० में लीधी। तत् शिष्य माघोपुर का पोरवाड, गोत ओरछला, दि० सं० १०५५ आगण बुध १२ में गाम अलोद में दीक्षा ली रामकुमार ज्याका चेला ४—ननुलालजी स्यामपुरा का, पोरवाड, मंडावरिया, सं० १६६ म्हा शु ५ दुधवार बड़े पीपलदे दीक्षा ली। वृद्धिचंदजी अलगढ़ रामपुरा के पोरवाड, गोत डंगरा, दीक्षा ली, सं० १६७२ म्हा० शु० ५ भागरोल मे। रामनिवामजी स्यामपुरा का पोरवाड, मंडावरकोट दीक्षा ली १६७६ आषाढसुद्ध २ को कोटा में। हजारीमलजी चोरु का सामरथा, चोरु दीक्षा ली सं० १६७६ जेठ सुद ५ को, बरतमान मया है।

पट्ट-बन्ध
लोकशाह १५६६ वर्ष

लौकाशाह १५६६ वर्ष

श्री कुंवरपालजी म०

नेजपालजी म०



(२) धन्नाजी

(३१५)

↓		↓		↓		↓	
(१) रामोजी		(२) मगनजी (मनजी)		(३) बालचन्दजी		(४) स्यामजी	
↓		↓		↓		↓	
(१) बजाजी (बीजाजी)		नाथूरामजी		शीतलजी		मुकटारायजी	
उदयभाणूजी	तुलसीदासजी	लक्ष्मीचन्दजी	देवीचन्दजी	हीरानन्दजी	हरकिशनजी	नेणुमुखजी	मनसारामजी
अनूपचन्दजी	ईशरदासजी	छोतरामजी	लक्ष्मीचन्दजी	भेहदासजी	दयारामजी		
विनेचन्दजी	कोकूरामजी	रत्नचन्दजी	उदयचन्दजी	पन्नालालजी			
बगनावरजी	सोनीरामजी	भज्जुलालजी	नेमीचन्दजी	बेणीचन्दजी तपकी			
लालचन्दजी	चनुरभुजजी						
	रोचमलजी						
	करमजी						
	छोटमलजी						
	विरथीचन्दजी						
	बगनावरजी						

(२)
मगनजो (मनजी)↓
मन्थनाम्नजी

↓

↓

(१)

↓

भोजगमजी

↓

(२)

↓

दयागमजी

↓

(३)

↓

गयचन्दजी

↓

(४)

↓

रामचन्दजी

कल्याणजी

मलुकचन्दजी

रुपानीरामजी

इन्दरमनजी

भामचन्दजी

कुशलचन्दजी

निवलाजी

रतिगमजी

रायचन्दजी

विजयलजी

नन्दनालजी

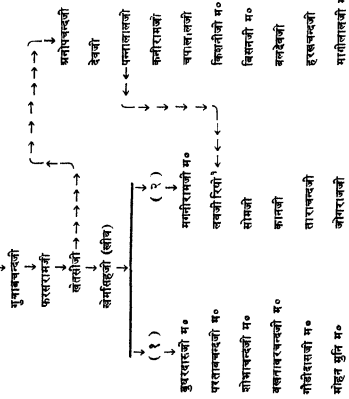
रामचकनजी

रूपचन्दजी

(૫)
ગિરધરજી મં

↓	↓
(૧)	(૨)
શ્રી પાલ્લી મં	ઘડે પ્રહરીગઝજી મં
↓	
ઘાઠજી મહારાગ	
છોટે પ્રહરીગઝજી મં	
દેવીચન્દજી મં	
મુલાનન્દજી	
હીરાનન્દજી મં	
રામકૃષ્ણજી	
નરસિંહદાસજી	← → → માનમજી
↑	↑
ગોહીદાસજી મં	રિપમદાસજી
↑	↑
મૂરજમજી મં →	મુલાચન્દજી

(६)
हरजी महाराज



१—प्रमाण की अपेक्षा है ।

(६) हरजी म०

↓

मुलाबचन्दजी

↓

फरस रामजी

↓

लोकमण्डी म०

महारा मजी म०

दोलतरामजी म०

गोविन्दरामजी म०

पलेचन्दजी म०

ज्ञानचन्दजी म०

छमनलालजी

वत्सावरमलजी

कजोडीमलजी म०

शकरलालजी म०

मण्डीलालजी म० (सादीवाला)

प्रमराजजी म०

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

लालचन्दजी म०

उदचन्दजी म०

चौधमलजी म०

श्रीलालजी म०

जवाहिरलालजी म०

मण्डीलालजी म०

नानालालजी म०

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

लालचन्दजी म०

उदचन्दजी म०

चौधमलजी म०

श्रीलालजी म०

जवाहिरलालजी म०

मण्डीलालजी म०

नानालालजी म०

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

लालचन्दजी म०

उदचन्दजी म०

चौधमलजी म०

श्रीलालजी म०

जवाहिरलालजी म०

मण्डीलालजी म०

नानालालजी म०

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

लालचन्दजी म०

उदचन्दजी म०

चौधमलजी म०

श्रीलालजी म०

जवाहिरलालजी म०

मण्डीलालजी म०

नानालालजी म०

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

↓

१—इसके सिवा जैन विवाकर चौधमल जी म० हुए ।

परिशिष्ट-२

भगवान महावीर के बाद की प्रमुख घटनाएँ

(मकलित पट्टावलियों के आधार पर प्रस्तुत तालिका)

वीर संवत्	घटना
६४	दम बोल का विच्छेद ।
२१४	तृतीय अश्वत्थवादी ।
२२०	चतुर्थ अश्वत्थवादी निहव ।
२२८	पञ्चम शिवावादी निहव ।
३३५	प्रथम कात्वाचार्य (श्य, माचार्य) ।
४५२	द्वितीय कालकावर्ग ।
४७०	विक्रमादित्य राजा, विंशम संवत् जन्म ।
५४४	छटा निहव रोह गुप्त ।
५८८	सातवा निहव गोष्ठमाहिल, वज्र स्वामी का समय, इस समय के बाद १० पूर्व ज्ञान, चतुर्थ महान तथा चतुर्थ संस्थान का विच्छेद हो गया ।
६०६	सहस्रमान से दिगम्बर मत निकला ।
६२०	वज्रनेत्र स्वामी का समय, बारह वर्ष का दुष्काल, चार शासक निकली—चन्द्र, नरेन्द्र, निवृत्त, विद्याधर ।
८८२	चंद्रवर्मा प्रकट हुए ।
९८०	देवडिह क्षमाश्रमण द्वारा वल्हमीपुर में सूत्र- लेखन ।
९९२	नक्षत्रों का विच्छेद ।
९९३	भाद्रपद शुक्ला पक्षी के स्थान पर सर्व प्रथम भाद्र- पद शुक्ला चतुर्थी की सम्बत्सरी प्रारम्भ हुई ।
९९४	सर्व प्रथम चतुर्थी को पक्षी पर्व का प्रारम्भ ।

१०००	एक पूर्व का ज्ञान रहा ।
१००८	पोसाव, उपासरो का निर्माण ।
१००९	समस्त पूर्वों के ज्ञान का विच्छेद ।
१४६४	बडगच्छ की स्थापना ।
१६२९	पूनमिया गच्छ की स्थापना ।
१६५४	आचलिया गच्छ की स्थापना ।
१६७०	खरतर गच्छ की स्थापना ।
१७२०	आगमिया गच्छ की स्थापना ।
१७५५	तपागच्छ की स्थापना ।
२००० के लगभग	लोकाशाह द्वारा सूत्र-प्रतिलेखन ।
२०९५	ऋषि मत की स्थापना ।

विक्रम संवत्

घटना

१५२१	लोकाशाह का धर्म प्रवर्तन, भानजी, नूनजी, सरबो- जी, जगमालजी आदि ४५ व्यक्तियों द्वारा प्रवज्या- ग्रहण ।
१५८२	तपागच्छ के आनन्दविमल सूरि द्वारा क्रियोद्धार ।
१६०२	आंचलिया-क्रियोद्धार ।
१६०५	खरतर-क्रियोद्धार ।
१७०९	लवजी द्वारा वरजंगजी के पास प्रवज्या-ग्रहण ।
१७१४	लवजी, धोभनजी व सखियाजी का गच्छ-त्याग ।
१७१५	संवेगी धर्म की स्थापना ।
१७१६	धर्मदासजी की स्वयंमेव दीक्षा ।
१८१५	भीखनजी का रुघनाथजी से मतभेद ।
१८५४	बडलू में इनकीस बोलो की मर्यादा ।

प्रति-परिचय

पट्टावली प्रबन्ध संग्रह में १७ पट्टावलियाँ—^१ पट्टावलिया लोकागच्छ परम्परा से संबंधित तथा १० पट्टावलियाँ स्थानकबासी परम्परा से सम्बन्धित-संगृहीत हैं। इनके वर्ण्य-विषय के संबंध में प्रत्येक पट्टावली के पूर्व संक्षिप्त परिचय दे दिया गया है। प्राप्ति-स्थान आदि से संबंधित बहिरंग परिचय इस प्रकार है—

(क) लोकागच्छ परम्परा से संबंधित पट्टावलियाँ :

(१) पट्टावली प्रबन्ध :—यह पट्टावली नागौरी लोकागच्छीय परम्परा से सम्बन्धित है। इसके रचयिता रघुनाथ ऋषि लक्ष्मराजजी के प्रपौत्र शिष्य थे। उन्होंने सं० १८६० में पटियाला के पास अवस्थित मुनाम नामक ग्राम में इसकी रचना की। संस्कृत भाषा में निबद्ध यह रचना रचनाकार के प्रौढ़ भाषा ज्ञान की परिचायिका है। हमें इसकी दो हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। पहली प्रति मुनि श्री हगामी लालजी म० के पास है जो अजमेर स्थानक (लाखन कोटड़ी) के भंडार से प्राप्त हुई है। इसे सं० १८६६ में प्रथम चैत्र शुक्ला चतुर्दशी शुक्रवार को मुनि सतोषचन्द्र ने अहिपुर (नागौर) में लिपिबद्ध किया। दूसरी प्रति श्री जैन रत्न पुस्तकालय, जोधपुर की है जिसे ऋषि शिवचन्द्र ने सं० १९०७ में मकसूदाबाद के बालचर नामक गाँव में लिपिबद्ध किया। हमारा मूल आधार अजमेर की प्रति रही है। संशोधन में जोधपुर की प्रति का सहारा लिखा गया है। लेखन प्रायः शुद्ध होने हुए भी कुछ स्थल संशोधन की अपेक्षा रखते हैं। लिपि स्पष्ट और सुन्दर है।

(२) गरिण तेजसी कृत पद्य-पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति बड़ोदा के मुनि श्री हेमचन्द्रजी के संग्रह में है। उसकी मूल आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जबपुर में सुरक्षित है। इसके रचयिता तेजसी (तेजसिंह) केशवजी के शिष्य थे। तेजसी अपने समय के संस्कृत के पंडित व अग्रेष्ठ कवि थे।

(३) संक्षिप्त पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति श्री हस्तीमलजी म० के पास है। इसका लिपिकाल सं० १८२७ ज्येष्ठ कृष्ण १३, बुधवार है। अक्षरों को देखने से लगता है कि इसे पूज्य गुमानचन्द्रजी म० ने लिखा हो। यह एक पन्ने में

लिखी हुई है। 'पट्टावली सूक्तानी' के नाम से इसकी एक ग्रन्थ प्रति भी मिली है जो लोंकागच्छीय किसी यति द्वारा लिखित अनुमानित होती है।

(४) बालापुर पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति बड़ौदा के यति श्री हेमचन्द्रजी के संग्रह में है। इसकी नकल आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर में सुरक्षित है। यह १६ वीं शती के किसी लेखक (ऋषि) द्वारा लिखित अनुमानित होती है। यह तीन पन्नों में लिखी हुई है।

(५) बड़ौदा पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति बड़ौदा के यति श्री हेमचन्द्रजी के संग्रह में है। लिपिकार का निर्देश नहीं है। इसे सं० १६३८ मगसर विद १ को बड़ौदा में लिपिबद्ध किया गया। अन्तिम दो आचार्यों का परिचय बाद में जोड़ा गया है। इसकी नकल आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर में सुरक्षित है।

(६) मोटा पक्ष की पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति उदयपुर में मुनि श्री कातिसागरजी के पास है। इसे ऋषि भूलचन्द ने लिपिबद्ध किया। भूल प्रति में पट्टावली का नाम दिया है 'अथ श्री सतावीस पाठनी पट्टावली।' हमने अपनी ओर से वर्ण्य विषय के आधार पर इसका नाम 'मोटा पक्ष की पट्टावली' रखा है। इसकी नकल आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान-भंडार में सुरक्षित है।

(७) लोंकागच्छीय पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति बड़ौदा के यति श्री हेमचन्द्रजी के संग्रह में है। उसकी नकल आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान-भंडार, जयपुर में सुरक्षित है।

(ख) स्थानकवासी परम्परा से सम्बन्धित पट्टावलियाँ :

(१) विनयचन्द्रजी कृत पट्टावली :—इसकी हस्तलिखित प्रति श्री हस्ती मलजी म० के पास है। अक्षरों को देखने से लगता है कि पूज्य श्री हमीरमलजी ने इसे लिपिबद्ध किया हो। यह पाँच पन्नों में लिखी गई है। इसके रचयिता कवि विनयचन्द्रजी इन्हीं पूज्य हमीरमलजी से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म की शुद्ध श्रद्धा के उपासक बने थे। अनुमान है स० १६०२ (पू० रत्नचन्द्रजी का स्वर्णरोहण-काल) के पूर्व ही इस पट्टावली की रचना की गई होगी क्योंकि रचनाकार ने अपने अन्तिम पक्ष में 'रखो पूज्य रतनश चिरकाले तन चगा' लिखा है जो पूज्य श्री की विद्यमानता में ही संभव हो सकता है। 'चौबीसी' तथा 'आत्मनिष्ठा' नामक इनकी अन्य रचनाएँ हैं। काव्य निर्माण की इनमें अनुपम क्षमता थी। इनका छन्द सम्बन्धी ज्ञान भी विस्तृत था। पट्टावली में कई विभिन्न छन्द का प्रयोग किया गया है।

(२) **प्राचीन पट्टावली** :—इसकी हस्तलिखित प्रति मुनि श्री हगामीलालजी म० के पास है जो अजमेर से पूज्य नानकरामजी म० के संग्रह (लाखन कोटडी) से प्राप्त हुई है । इसे श्री हीराचंदजी म० ने सं० १९३१ में आधिवन शुक्ला १० मंगलवार को अजमेर में लिपिबद्ध किया । यह ग्यारह पन्नों में लिखी गई है । प्रति के अन्त में 'लाल रौ आहार निषेधो तिरु साधा रौ नाम' तथा पूज्य जीवराजजी से लेकर पूज्य नानकरामजी म० की परम्परा के वर्तमान श्री हरकचंदजी म० तक का उल्लेख किया गया है जो इस प्रकार है—

'इति समंत पूजजि श्री जीवराजजी तत सिषं पुज श्री लालचंदजि तत सिष पुज श्री दीपचंदजी तत सिष पुज श्री मलूकचन्दजी तत सिष पुजजि श्री श्री नानन रामजी तत सिष पुज श्री निहालचन्दजी तत सिष पुज श्री सुषलालजी तत सिष सामीजी श्री हरकचन्दजी माहाराज तत सिष लिपिकृतं हीराचद सहर अजमेर मध्ये समत १९ से ३१ रा आसोज सुकल पक्ष १० भोमेवार मंगलवार ।'

(३) **पूज्य जीवराजजी की पट्टावली** :— इसकी हस्तलिखित प्रति श्री हस्तीमलजी म० के पास है । इसे ऋषि ब्रजलाल ने सं० १८८९ में पोष वद ७ को लिपिबद्ध किया । यह एक पन्ने में लिखी गई है । पन्ना प्राचीन होने से कुछ खडित है । मुनि श्री ने 'लवजी वरयंगजी रे गछ थी नीकल्या' इस वाक्य से लेखन आरंभ किया है ।

(४) **खंभात पट्टावली** :—इसकी हस्तलिखित प्रति सधवी पोल, खंभात में है । इसे सं० १८३४ में लिपिबद्ध किया गया । यह पाच पन्नों में लिखी गई है । इसका मूल नाम 'पट्टावली पत्र है' । हमने अपनी सुविधा के लिए इसे 'खंभात पट्टावली' कहा है । प० बालाराम ने म० २०२३ में प्रथम आवरण कृष्णा अष्टमी को इसकी नकल की जो आचार्य श्री विनयचंद्र ज्ञान भंडार, जयपुर में सुरक्षित है ।

(५) **गुजरात पट्टावली** :—इसकी हस्तलिखित प्रति सदानंदी मुनि श्री छोटलालजी म० के पास है जो लीबडी भंडार से प्राप्त हुई है । यह एक प्राचीन पन्ने पर लिखी हुई है । इसकी नकल आचार्य श्री विनयचंद्र ज्ञान भंडार, जयपुर में सुरक्षित है ।

(६) **भूषरजी की पट्टावली** :— इसकी हस्तलिखित प्रति श्री हस्तीमलजी म० के पास है । भूषरो को देखते हुए लगता है यह पूज्य गुमानचंदजी म० की लिपि हो । लिपिकार ने इसका नाम 'पट्टावली घुर थी' रखा है । हमने अपनी सुविधा से इसका नाम 'भूषरजी की पट्टावली' रख दिया है । लिपिकार ने लिखते-लिखते इसे

अधूरा छोड़ दिया है, ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि अन्त में किसी प्रकार का विराम चिन्ह नहीं है। यह एक पन्ने में लिखी हुई है।

(७) मरुधर पट्टाबली :—इसकी हस्तलिखित प्रति जंतराण के स्थानक-वासी सध के भटार की है। इसे श्री सोभाग्यचंदजी म० के शिष्य श्री अमरचन्दजी ने लिपिबद्ध किया। यह २१ पन्नों में लिखी गई है। लिपिकार ने पट्टाबली के अन्त में मुनि-नामावली और संप्रदायों के नाम-निर्देश किये हैं। कई बातें, बहुश्रुत होने के कारण, लिपिकार ने परम्परा की अनुश्रुति पर से लिख दी प्रतीत होती हैं। विशेषकर पूज्य धर्मदासजी म० के सम्बन्ध में लिपिकार की मान्यता अन्य लेखकों से भ्रम लग जाती है। प्रस्तुत लिपिकार ने श्री जीवराजजी म० के पास धर्मदासजी का दीक्षित होना माना है जिसका अन्य विविध लेखकों के लेख समर्थन नहीं करते।

(८) मेवाड़ पट्टाबली :—इसकी हस्तलिखित प्रति प० मुनि श्री लक्ष्मी चंदजी के पास है जिसे प० बालारामजी ने स० २०२३ में मुनि श्री अम्बालालजी म० के द्वारा लिखाये जाने पर लिखी।

(९) दरियापुरी सम्प्रदाय पट्टाबली :—यह मुद्रित नक्शे (वृक्ष) के रूप में प्राप्त होती है। इसे मुनि श्री छगनलालजी ने तैयार किया और इसका प्रकाशन स० १९९३ कार्तिक सुदी १५ को भावसार सामलदास ने अहमदाबाद से कराया।

(१०) कोटा परम्परा पट्टाबली :—यह हजारीलालजी पटवारी की प्रतिलिपि से प्रतिलिपित है। स० १९९५ में सूरजमल ने हजारीलाल की प्रति से इसे उतारा था। उसी प्रति से स० २०२४ माघ कृष्ण १३ को मास्टर राजूलाल और मोतीलाल गांधी ने इसकी नकल की। सूरवाल में इसका संशोधन किया गया।

परिविष्ट-४

अन्यार्थ, दुग्धि, राज्ञा, आचक्षदि

अ	अमरचन्द स्वामी—१६६, १७०,
अकपित—५, २२३	२२०, २७४,
अकम्बर—८६	२७५, २७६,
अलजी सेठ—१५७	२७८
अलयराज स्वामी—१६१	अमरप्रभ सूरि—१७, १८
अमरचन्द स्वामी—२६३	अमरसिंह, अमरसोम स्वामी—८३,
अग्निभूति—५	१६८, २६२
अचल आलु—५	अमरेश मुनि—१६६
अलक्षकन्द स्वामी—२७६	अमीचन्दजी स्वामी—६५, ७४,
अजयराज स्वामी—२०८, २०९,	१६६, २७०,
३११	२७६, ३११,
अजयराज स्वामी—२६३, २६४	३१३
अजयराजी सेठ—२७०	अमीपल आदि—१४८, १४९,
अजितनाथ—४	१७४, १८७,
अजितदेव सूरि—१०१	१६१, १६२,
अजीतसिंह (राजा)—६४	१६४, १६६,
अदलबेग खान—७१	१६८, १६९,
अनन्तनाथ—४	२०७, २१७,
अनोपचन्द स्वामी—२६६, २७७	२५३, २५४,
अनोपसिंह (राजा)—५५, ५६	२५६, २६०,
अमयराज आदि—७४	३१०
अमिनन्दन—४	अमृतचन्द सूरि—२६६
अमोचन्द स्वामी—२११	अम्बालालजी म०—२६२
अमकीबाई—२५६	अरनाथ—४
	अवचलजी—२०८, २११

अ

आखन्द शाह—८१, १६१
 आखन्दबिमल सूरि—६२, ६७,
 १००, १०२,
 १४२, २१६,
 २५६
 आनन्दराम (श्रीपूज्य)—६४, ६५,
 ७४
 आरजदीन, अरजदीन—६२६, २२७
 २६६
 आरज रिषि—१७६
 आर्जगीरी—१७५
 आर्जविन—१७६
 आर्ज नवम—१७६, ३००
 आर्ज रचित—१७६
 आर्जरोह सांमी—१७६
 आर्ज ऋषि—२००, २६५
 आर्य कालक—८५
 आर्य जेहल—८५
 आर्य दिन—८५, ११६, ११८
 आर्यधर्म स्वामी—८५, २८२
 आर्यनदीन—२८२
 आर्य नक्षत्र—६, ८५, ११६
 आर्यनाग—८५, ११६
 आर्यनागहस्ति—२८२
 आर्यभट्ट—६, ८५, ११६, २६५,
 ३००
 आर्यसंगु—२८२
 आर्य महागिरी—६१, १००,
 १६६, २२६,
 २८४
 आर्य रचित—६, ८५, ११६
 आर्य रथ—८५, ३००

आर्यरोह—८, ६, ११६, २६६
 आर्य विष्णु—८५
 आर्यशक्ति—८५
 आर्यसमुद्र—६१, १६७, २२७,
 २८२
 आर्य सिद्धल—११६
 आर्य सोह—८५
 आर्य हस्ती—८५
 आर्षाङ्गाचार्य—१२०
 आसकरण आचार्य—५२
 आसोजी सांमी—२७६

इ

इच्छाजी सांमी—२०८, २०६,
 २६०
 इदेजी सांमी—२७७
 इन्द्रदिन, इन्द्रविष्णुसूरि—८, ८५,
 इन्द्रविष्णु सांमी—१००,
 ११६, ११८,
 १७६, २२६,
 २६६
 इन्द्रभाण सांमी—२७७
 इन्द्रजति—५, १११, २२२
 इन्द्रमल मुनि—२६२
 इन्दी, ईश्वरी—१२५, २२६

ई

ईश्वरलाल स्वामी—२६७

उ

उज्जरजी स्वामी—२६३
 उज्जरमल शाह—२७२
 उषित सूरि—६३, १४

लब्धादेव सांमी—२७७
 उत्तमचन्द श्रावक—५४
 उत्तमचन्द स्वामी—२६२, २६२,
 २६७

उदयचन्द श्रावक—५६
 उदयचन्द महाराज—७४, ३१२
 उदयसिंह श्रावक—६५
 उदयसिंह मुनि—६६, ६७
 उदसीय स्वामी—२६३
 उद्योतन सूरि—१०१
 उमरा श्राविक—१६७, २४५
 उमा स्वामी—२६६
 उमेदमल स्वामी—२७६
 उरजनजी स्वामी—२६६, २७७,
 २७८

श्रु

श्रुषभ भगवान्—४
 श्रुषभदत्त ब्राह्मण—४
 श्रुषभदत्त सेठ—११३

ए

एकनिगदास आचार्य—२८१, २६१,
 २६२

क

कंकुबाई साध्वी—२०६
 कचरदास स्वामी—२७७
 कजोडीमल म०—२६१
 कन्हैयालाल म०—२६२
 कनीराम स्वामी—२६३, २७६
 कपटाचार्य—२८५
 कपूरचन्द स्वामी—२७७

कपूरदे बाई }—८५, ८६
 कपूरा }
 बाई कमादेबी—२२
 कम्मो, कम्मोजी (श्रावक)—२०,
 २२, २६
 करणीदान स्वामी—२६३
 करमराजी रिख—३१०
 करमसी म०—६४
 कर्मसी रोष—१६७, २१०
 कर्मचंद, म०—२०८, २११
 करमचन्द बोरा—२७२
 कर्मचन्द बच्छावत—६२
 कर्मसिंह, कर्मसिंह }—७६, ८०, ८०,
 कर्मसोह आचार्य }—६५, ६६, १०४
 कलश प्रभू—२४६
 कल्याणचंद आचार्य—६०, ६४,
 ६५, १०५
 कल्याणजी सेठ—२५६
 कल्याण सूरि—१८, ५०
 कायलजी बाबा—२३
 कानजी श्राविक—१४८, १४६, १५०
 २०४, २१७, २५८
 २५६, २६४
 कानजी स्वामी—२७६, २७७
 कानु माता—१५५
 कान्होजी, आचार्य }—६०, ६४, ६५,
 काहानजी, }—६५, १०४
 कामोजी सेठ—२५
 कालकाचार्य—६१, ६६, १२१,
 कालिकाचार्य १२२, १७७, १६५,
 २०४, २०६, २०७,
 २३६, २४०, २८४,
 २८८, २६५, ३०१,
 ३०७

कालारखजी—३११	२६३, २६६,
कालीकुमार (पुत्र) २८४,	२७६, २७७
कालिदास स्वामी—२१३	
कलुजी म०—३१०, ३१३	
कालुराम स्वामी—२६१, २६१	
काहानजीकाहनजी—१७४, १६४,	
कान्होजी ऋषि—१६६, २०३, २०७	
काहनजी स्वामी—२०८, २०६	
किसनचंदजी स्वामी—२६३	
किसन रीखजी स्वामी—२४४	
कीसनजी सांमी—२७७	
किसनेस स्वामी—१६६	
किस्तूरचंदजी स्वामी—२७६, २६१	
२६२	
कील्याणजी स्वामी—२६२	
कुं धुनाथ—४	
कुंदकुंद नेमचंद—२३७	
(प्राचार्य)	
कुं यरजी ऋषि—८२, ८६, ८७,	
१८७, १६२, २०३	
कुं यरी (माता) ८२	
कुं वरजी—८१, ८४, ६८, १०३	
२०८, २१७, २६७	
कुनरामलजी स्वामी—२७४, २७८	
कुमुद मुनि—२६२	
कुशलचन्द यति—६१	
कुशलजी, कुशलसी—१५५, १५६	
कुशल माता—५०, ७३	
कुशलाजी, }—१०७, १५२,	
कुशलेष्ट, } १५३, १५५,	
कुसलोजी, } १५७, १५८,	
कुसलजी प्राचार्य } १५६, १६०,	
१६१, २१८,	
कुण मन्त्री—३५	
कुण्ठाचार्य—१२४, २३५	
केवलचंदजी स्वामी—२६३	
केशरीमलजी म०—२६२	
केशवजी प्राचार्य—७६, ८७, ८४,	
केशवजी सांमी—८७, ६४, ६४,	
६५, ६६, १०४,	
२०३, २०८,	
२१०, २६७,	
३१०	
केष्टलीर मुनि—२३७	
केसरचन्दजी सांमी—२७८, २७६	
केसरजी स्वामी—२६२, २७६	
केसु मुनि—१४८, १४६, २५६	
कोडिन्य मुनि—२३७	
कोट्या वेष्ट्या—१२०	
क्षेमचंद मुनि—७३	
ख	
खंडिल, खंडिल, खंडिल—६१, ६६,	
१७६, २००,	
२८२	
खोमसीजी प्राचार्य—१६८	
खोमासागर सूरि—१०२	
खमरा ऋषि—२००	
खुसलजी प्राचार्य—२६७	
खूबचन्दजी प्राचार्य—१००, १०५	
खूबचन्दजी स्वामी—२६३	
खेतसी (पुत्र)—२२, २६	
खेतसी (पिता)—४४	
खेतसीजी प्राचार्य—१६८	

खेताजी स्वामी—२६२
 खेमकन्हा आचार्य—२२०, २५०,
 २५६
 खेमोजी आचक—२०
 ग
 गंगाबाई—२८६, २६६
 गंगारामजी शाह—१६१
 गंधर्पसेन, {—१२१, १२२, १७७,
 गंधर्पसेन, { २३६, २४०, २८४,
 गंधर्पसेन,) २८५,
 गर्दभी (राजा) ३०१
 गंभीरमलजी म०—२६६, २७८,
 ३१२
 गजमेख, गजसेन (आचार्य)—१६७,
 २१६, २४७
 गजानन्दजी स्वामी—३११, ३१२
 गढामलजी सामी—२६३
 गणेशरामजी पूज्य—३१३
 गर्दभ भील—२०६
 गांगोजी पूज्य—२६०
 गिरधर, गरुड ऋषि—१४८, १४९,
 १७४, १८४,
 १८६, १८८,
 १८९, २०७,
 २१७, २५६,
 २७६, ३१०
 गुरुपान मुनि—६५
 गुरुसुरी रानी—२८४
 गुमान, गुमानचन्दजी आचार्य—१०७,
 १५७, १५९,
 १६१, १६२,
 १६४, १६६,
 १६८, २६८,

गुमानोरामजी सामी—२७६
 गोवर्धन स्वामी—२११
 गुरुसायजी सामी—२६२
 गुलजी म०—१६६
 गुलाबजी आचार्य—१६८
 गुलाबचन्दजी म०—१७०
 गुलाबचन्दजी सामी—२७६
 गुलाबजी म०—२६२
 गुलाबचन्दजी यति—७४
 गुलाबबाई—१६१
 गेहोजी आचक—२०
 गोकलचन्दजी म०—२६१
 गोकलजी सामी—२७७
 गोदाजी पूज्य—२६०
 गोदाजी मुनि—२५६
 गोधाजी ऋषि—१४६, १७४, १८४,
 २६८, ३११
 गोपालजी तपस्वी—६४
 गोपालजी आचार्य—२०८, २१२
 गोयन्दजी मुनि—१६१
 गोयन्दमलजी म०—१६६
 गोयन्दरामजी स्वामी—३११
 गोरधनजी मुनि—२६२, २६६,
 २७६
 गोवर्धन सेठ—४०
 गोवर्धन स्वामी—२०८
 गोविन्द आचार्य—१६७, २०६,
 २३३, २८२
 गोविन्द स्वामी—६१, ६६
 पूज्य गोविन्दरामजी—३१२, ३१३
 गोष्टा महिल—१२३, १७७, १८५,
 गोष्टमहिल ३०४, २०६,

गोष्ट मालि	२१४, २३५,	२७७, २७८,
गोष्ट बाइल	३०२, ३०५,	२६१,
गोठलमाल)		

छ

गीतम स्वामी—६, १११, ११२,	छगनमलजी सांमी—२७६
११६, १७५, १७७,	छगनमलजी म०—२६५, ३१२,
१६४, १६६, २००,	३१३
२०४, २०५, २१३,	छोगालालजी सांमी—२७६, २६१
२१४, २२२, २२३,	छोटा घमीचदजी—२७७
२३४, २५५, २८१,	छोटा जीबराजी—३१३
२८२, २६६, ३००,	छोटा जेठमलजी—२७७

ग्यानचन्दजी म०—३१२
ग्यानरिल—२१६, २४८, २५५
ग्यानसागर—२५६

च

चन्दमलजी स्वामी—२७४
चन्दोजी छोट सांमी—२७७
चनभुजजी म०—३१२
चन्द्रगुप्त (राजा)—२५५, २८४
चन्द्रदीन सुरी—१०१
चन्द्रप्रभ—४, ३६, १३४
चन्द्रभाराजी सांमी—२६२, २७७, २८७
चन्द्रसूरि—१०, ११
चनरादे कमी—२७२
चतुर्भुज—५६
चनराजमलजी सांमी—२७८
चादोजी स्वामी—२७७
बितामलजी सांमी—२२०, २५०
बिलत मुनि—२१७
बुन्नीलालजी म०—२६५, २६७, ३१३
बैना स्त्री—१५७
बोधमलजी सांमी—२६३, २६८, २७०,

ज

जगजी—३१०
जभवन्सामी, जंमसाव—१००, १६६, २०४, २६६,
जखीरा स्वामी—२४६
जखेरा (जयसेरा)—१६७
जगचन्द्र सूरी—१०१, १३४
जगजी सांमी—१४५
जगजीवनदास सूरी—६५, ६६, ७३,
जगजीवनजी घाचार्य—८७, ८८, ९०, ९४, ९५, ९६, १०४
जगदेव पमार—११, २०
जगभाराजी सांमी—२६२
जगमालजी ऋषि—८१, ८२, ८४,

८६, ६२, ६५, ६७, १०३, १४१, १८२, १८३, १६७, २०२, २१६, २१६, २४४, २५५, २५६, २६६, ३०६,	जगन्नाथ सूरि—१०१ जयमल—१५२, १५३, १५५, (जमलजी आचार्य) १६७, २१८, २६६, २६८, २७६, जयरंगदेवी स्त्री—७५ जयराज मुनि—७३, ७४ जयवंतदे स्त्री—८२ जयसिंह मुनि—७३ जयसेन आचार्य—४, २१६, २४३, २४४
जगरूपजी आचार्य—६०, ६४, ६५, ६६, १०४	जयानन्द सूरि—१३ जराज आचार्य—१६७ जबोणी आचार्य—१६२ जसभद्र आचार्य—१६७, २६६ जसराजजी सांमी—२७१, ३७८ जसरूपजी सामी—२६३, २६६, २७८
जगरूपजी स्वामी—२६६, २७६, २७७	जसवंतजी आचार्य—७६, ८०, ६०, ६३, ६५, ६८, १०३
जयचन्दजी स्वामी—२६६	जसवंतजी स्वामी—२१६, २४६
जतसीजी सांमी—२६६, २७६, २७६	जससेण आचार्य—१६७ जसाजी मुनि—२५७ जसीरजी स्वामी—२६३ जसेण आचार्य—१६७ जसोदेव सूरि—१०१
जताजी स्वामी—२६३	जसोभद्र स्वामी—६१, १००, १०१, ११५, १७५, १६६, १६६, २०५, २३६, २३६, २४४, २४४, २४४, २८२, २८३, २६६, ३०१
जमाली, जामाली—१२३, २३५, २३५, ३०२	जयकर लहू मुनि—८६ जयशोभाचार्य—२६६ जयचम्पजी सूरी—६०, ६४, ६५, ६६, १०५
जम्बू स्वामी—६, ८४, ६०, ६६, १००, ११३, ११४, ११५, ११६, १७५, १७७, १६६, १६६, २०४, २०५, २१३, २२३, २२४, २७४, २८२, २८३, २६६, ३०१	जयवत्साचार्य—१६६ जयदेव सूरि—११, १०१ जयदेव आचार्य—२६६
जयकर लहू मुनि—८६	जानजी सांमी—२५६
जयशोभाचार्य—२६६	
जयचम्पजी सूरी—६०, ६४, ६५, ६६, १०५	
जयवत्साचार्य—१६६	
जयदेव सूरि—११, १०१	
जयदेव आचार्य—२६६	

जातधरम स्वामी—६१
जितसुनु राणा—२२६
जिनवल आचक—१२५, २२१,
२२६

जिनधर्म सूरि—१६७
जिनमद्रमणि—२६६
जिनसेन आचार्य—२३७
जियाजी सामी—२७६
जीतधर स्वामी—६६, १६६, २२६,
२२७

जीवन्मृषि—८१, ८२, ८६, ६०,
६३, १०३, १८३,
१६७, २०३

जीवणबन्ध आचार्य—२२० २६८,
२६६, २७०,
२७१, २७३,
२७५, २७७,

जीवणजी पूज्य—२६७, ३११

जीवणभार्इ—२६०

जीवणरामजी म०—३१३

जीवनदासजी आचार्य—६५, ६७

जीवन पटेल—२०६

जीवराजजी (लोकान्छीय)—७६

जीवराजजी स्वामी—१६७, १६८,
२१६, २२०,

जीवराज संभवो—२०६

जीवराज (पिता)—७३, ७५

जीवराजजी—२४७, २४६, २५८,
२५६, २६०, २६१,
२७६, २७८

जीवाजी—८५, ८६, ६५, ६८,
जीवाजी—१४३, १४६, १७४,
१८२, १६२, १६६,

२०७, २१६, २१७,
२५६, २५६, २६२,
२६७, २६८, ३०६,
३१०

जीवी-शंकर मुनि—१४८

जुगमालजी आचार्य—२५४

जुबारमलजी सामी—२७८

जेचन्दजी स्वामी—२७७, २६७

जेठमलजी स्वामी—२३६, २६३,
२७६

जेठाजी स्वामी—२०८, २११

जेतसी मुनि—१५३, २७७

जेवन्तरामजी म०—२६१, २६२

जेहिल स्वामी—३००

जोगराजजी स्वामी—१६६, २७६

जोतोजी छोटा—२७७

जोहराज—२७६, २६२

जोहराजजी सामी—२७६, २६२

ज्ञानचन्द्र सूरि—१८

ज्ञानजी (वैद्य वशीय)—६५

ज्ञानजी मुनि—१६७

ट

टोकमजी स्वामी—१६१

टोडरमलजी सामी—२७८

टोमुजी स्वामी—२१७

ठ

ठाकुर बेद—६२

ठाकुरसीजी स्वामी—२७६, २७७

ड

डलीचन्दजी स्वामी—३०८

डेडेजी, डेडेजी सेठ—२०, २२

ल

लखतमलजी स्वामी—२७७, २७६
 लनमुख षटवारी—३१२
 लपसीजी म०—३११
 लपाजी स्वामी—२५६
 ललकसीजी स्वामी—२०८, २०६
 लाराचन्द्र (पुत्र)—४६, ४७
 लाराचन्द्र (लोकगच्छीय)—८०
 लाराचन्द्रजी तपस्वी—१६५
 लाराचन्द्रजी म०—१७०
 लाराचन्द्र ऋषि—२०४
 लाराचन्द्रजी स्वामी—२६२
 लिरसियो—१६५
 लिलोकचन्द्रजी ऋषि—२०४, २२०,
 २६०, २७३
 लिलोकचन्द्रजी महाराज—२७०, २०१,
 लिलोकचन्द्रजी स्वामी—२६६, २७६,
 २७७
 लिलोकसी—८२
 लीजाजी स्त्री—२७३
 लुलसीदासजी स्वामी—१६८, २७७
 लुलसीदास सामी (लोकगच्छीय)—
 ६०, ६४, ६५, ६६, १०४
 लोजपाल आचार्य—२०८, २१०
 लोजपाल शाह—८०, ८६
 लोजबाई—८३, ८८
 लोजमाल—८२
 लोजराज आचार्य—१८६, १६७,
 १६८
 लोजसिंह—६०, ६४, ६५, ६६, १०४,
 (लोजसिंह आचार्य)
 लोजसी गण्—७६, ८०
 लोजसीजी (सुरवंशज)—५०

लोजसीजी स्वामी—२७६
 लोजसी छोट सामी—२७७
 लोजजी मुनि—१६१
 लोडोजी मुनि—१४६
 लोला सधवी—८१, ६२, ६५, ६७,
 लिसगुप्त निहलव—२, ५
 लिशला रानी—२२०, ३००
 (लीसलादे)
 ली राशिक निहलव—१२२

श

शु डिला आचारज—२३२
 शवर (साह)—८२
 शिरपालजी स्वामी—२७६
 शोभजी—१४७, १८५, २०३, २०७,
 (शोभणजी ऋषि) २६०, ३१०

ब

दमाजी—२०८, २११, २१२
 (दामाजी आचार्य)
 दयालजी स्वामी—१६८, २५४, २५५
 दनि आचार्य—१६४
 दलीचन्दी म०—१६६, १७०
 दलीचन्द्रजी सेठ—२५४
 दलीचन्द्रजी स्वामी—२७६, २७६
 दामोजी आचार्य—१६१
 दामोदरजी (लोकगच्छीय)—७६, ८०,
 ६०, ६३, ६५,
 ६८, १०४
 दामोदरजी स्वामी—२१६, २५०
 दीनसुरी—१००
 दीपचन्द्रजी स्वामी—१६८, २६२,
 २७७
 दीवग आचार्य—१७६

पूज्य दीयालजी—३१२

दुष्पसह साधु—२८१

दुर्गादासजी म०—६५, १०७, १५७,

१६०, १६१, १६३,

१६४, १६६, १६८,

१७०, १७१, २८१,

२८०

दुष्पगणि—६१, ६६, १६७, २००,

(दूससेनगणि) २०६, २३३, २३४

दूदाजी यति—७३

देपागर मुनि—४०, ४२, ४३, ४४,

४७, ४८

देवगणि—२००, २०६

देवचन्द्राह—१६, २०, २३, १०१

देवचंद सूरि—१०१

देवचन्द्र स्वामी—१६७, १६८

देवजी (मोटा)—२०८

देवजी स्वामी—२१२, २६३

देवदत्त शाह—२०, २२

देवराजजी स्वामी—२१०, २११,

२१२

देवरिख—१६७, २१६, २४४, २४६

(देवरिष स्वामी)

देवर्द्धि क्षमाश्रमण—६, १० ८४, ८५,

(देवढी गणि) ६०, ६१, ६६, १०१,

१०७, ११६, १३०,

१३१, १७४, १७७,

१६७, १६६, २००,

२१३, २१४, २१६,

२३४, २४२, २८१,

२८२, २८८, २६५,

२६८, ३००, ३०६

देव्हजी स्त्री—२२

देवसिंह आचार्य—२३७

देवसुन्दर सूरि—१०२

देवसेण आचार्य—१६७

देवागर सूरि—४८

देवादेजी स्त्री—२७२

देवानन्द सूरि—१२, १०१

देवानन्दा बाह्याणी—४, २२०

देवीचन्द्राजी स्वामी—२६२, २७६,

२७६

देवीलालजी स्वामी—२७७

देवेन्द्र सूरि—१७

दीलतमलजी स्वामी—१६६

दीलतरामजी स्वामी—६४, १६६,

१७०, १६८,

२२०, २७२,

२७३, २७५,

२७६, ३११,

३१२, ३१३;

छुदानंदजी स्वामी—२५६

द्वारकादासजी स्वामी—२६७

घ

घनगिरि आचार्य—८५, ११६

घनगृही सेठ—२२७, २८५

घनजी स्वामी—१६६, १६८

घनराजजी स्वामी—१६७, २१६,

२२०, २५०,

२५७, २६२,

२६५, २६६,

२७८, २७६,

२८०

घनवती माता—४४

घन्नाजी तपस्वी—६५

घन्नाजी आचार्य—१०७, १४६, १५०,

१५२, २१३, २१७,	न
२६५, २६६	नंदगुप्त आचार्य—१७६
धरणागिरि स्वामी—६, १७६, ३००	नन्दन राजा—४
धर्मधोष—११, १३, १४, १०१	नंदरामजी स्वामी—२७१, २७८
धर्मचन्द मुनि (लोकगण्डीय)—६५	नंदवेश आचार्य—१७६
धर्मचन्द स्वामी—२६२	नंदिल स्वामी—६१, ६६, १७६,
धर्मदासजी म०—१०७, १४६, १५०,	१६७, २००, २०६,
२०८, २०९, २१३,	२२७
२१७, २१८, २२०,	नंदीबरधन—३४२
२६०, २६१, २६२,	नंदीसेन आचार्य—२३७
२६३, २६४, २६५,	नवोष्ठी (पुत्र)—२०
२७६, २८०, ३१०,	नगजी स्वामी—२३१, २३८, २७६,
३११	२७७, ३०८
धर्मनाथ—४	नगराजजी स्वामी—२२०, २५६,
धर्मरिष—१६१	२७७, २७८
धर्मवर्धन—२६६	नगोजी (पुत्र)—२२, २४, २६, २७,
धर्मसागर—१३४	नथमलजी स्वामी—२६६, २७८
धर्मसाह—२१७	नदमति मुनि—२३१
धर्मसिंह, धर्मसिंह म०—१४८, १५०,	नन्दलालजी म०—३१३
२२०, २५६,	नेमिनाथ—४
२६०, २६४,	नयनराम (शंखवाक्य)—५६
२६५, २६५,	नरदास गांधी—२०, २२
२६७	नरसंघदास स्वामी—३११
धर्मसी—१४६, १७४, १८६,	नरसिंह सूरि—१२, १०१
१८७, १८०, १८१,	नरसीजी—२०८, २१०
१८२, १८३, २०३,	नरीयामसेन—१६७
२०८, २११	नल्हो (पुत्र)—२२
धर्मसूरि—१७	नवरंगदे माता—८०, ६४, ६६
धर्माचार्य—२६५	नवलमलजी स्वामी—२६६, २७७
धारिणी स्त्री—११३, २२३	नांनगजी स्वामी—२१६, २४८,
धिरजमलजी स्वामी—२६६, २७८	२७७
२७६	नागजन आचार्य—१७७
धीरोजी स्वामी—२७७	नागजी आचार्य—२०८, २१०,
धीराजी स्वामी—८३, ८८	२५४

नागकुण्ड स्वामी—१६७
 नागवत्त मुनि—१६
 नागल आचक—२८१, ३११
 नाग सांमी—१७६, ३००
 नागहस्ति आचार्य—६१, ६६, १७६,
 १६७, २००,
 २०६, २०८
 नागजिण स्वामी—२३३
 नागाकुंन स्वामी—६१, २००,
 २०६, ३८२
 नागार्यन—६६
 नागेन्द्र सूरि—६
 नागोदरली मुनि—२३१
 नाथू—(पुत्र)—२२
 नाथूरामजी (बड़े बाप)—१६२
 नाथूरामजी स्वामी—२७६
 नाथाजी स्वामी—२६७
 नाथोजी (पुत्र)—२०
 नाथोजी स्वामी—१६१, २७६
 नान्हा साहब—७१
 नाथो (पुत्र)—२२
 नाराणजी स्वामी—१५३, २७६
 नारायण स्वामी—१५२, १५४, २६६,
 २८१, २६०
 नाहनजी सांमी—२७७
 नृणभि, नृणु, नृणो,—८१, ८४, ८६,
 (सूनाजी) ६०, ६५,
 १०३, १४१,
 १४३, १८२,
 १८३, २०३,
 २१६, २५४,
 २५५, २५६,
 २६३

नृसिंहासजी स्वामी—२८१, २६०
 नेणचन्दजी स्वामी—२६३
 नेणकुण्डजी स्वामी—१६८, २७७
 नेतसी आचक—८०
 नेतो आचक—६४
 नेमचन्द्र स्वामी—१६, १७, २३
 नेमनाथ—८७
 नेमिचंदजी स्वामी—२७६
 नेमिनाथ—४
 नैरासी यति—७४
 नैनजी (शंखबादक)—६०
 नोजी बाई—६४
 न्यालचन्दजी स्वामी—२६२

प

पंचायण (पुत्र)—२२, ३४, ३६, ३७,
 ३८
 पंनराजजी स्वामी—२२०, २७१,
 २७३, २७६,
 २७८
 पदमलाम स्वामी—२४५
 पदारथजी स्वामी—२६२
 पद्योतन सूरि—१०१
 पदम ऋषि—१६७
 पद्यनन्दी—२३७
 पद्यप्रभु—४
 पन्नालालजी तपसी—२६२, ३१२
 परमानन्द सूरि—१२, १३
 परसरामजी स्वामी—२६८, ३११
 पांनोषी स्वामी—१६१
 पालिताचार्य—२८६, २८७
 पावर्नाथ—४
 पीत्यार्ह रावण—१०३

पीथोजी स्वामी—१६८
 पुंजाजी स्वामी—२६७
 पुस्ताराजजी स्वामी—२६२
 पुनमचन्दजी स्वामी—२६३
 पुरसोत्तम स्वामी—२६२
 पुष्पदन्त—२३७
 पुष्पगिरि—६
 पुसगिरि—८५, ११६, १७६, २६६
 पुसमित्र—१७६
 पुसालालजी स्वामी—२७६
 पूरणमलजी स्वामी—२८१, २६०
 पूर्यामन्न देव—४३
 पृथ्वी (माता)—५
 पृथ्वीराजजी स्वामी—२८१, २६०
 पृथ्वीसेना—२२२
 पेम, पेमचन्दजी स्वामी—१४८, १४९,
 १६६, २१७,
 २६०, २६५,
 २७८, ३१०
 पेमजी लोहडो—१६२
 पेमराजजी स्वामी—६१, २६६, २७७
 पेम समण—२००
 प्रौढ़ सूरि—१४
 प्रतापचन्दजी म०—१७०
 प्रबोतन सूरि—१०१
 प्रभब स्वामी—६, ७, ८४, ६०, ६६,
 १००, ११५, ११६,
 ११७, १२०, १७५,
 १७७, २६४, २१३,
 २२३, २२४, २८२,
 २६६, ३०१
 प्रभास गणेश्वर—५
 प्रभयो, प्रभूयो—१६६, २०५

प्रदनचन्द स्वामी—२६३
 प्राणजी स्वामी—२६७
 प्राणनाथजी शिष्या—७०
 प्रीवन्ताचार्य—२६६
 प्रेमजी स्वामी—१७४, २५६
 प्रेमचन्द मुनि—१६६, १७०, ३१३
 प्रेमराजजी—६५

फ

फगुमित्र—८५, ११६, १७६
 फतेचन्दजी म०—२६३, २६६, २७६,
 २७८, ३१२
 फरमरामजी स्वामी—१७४, १६४,
 १६६, १६८,
 २६०

फगुमित्र—६
 फागजी शिष्या—३११
 फालुनी साध्वी—२८१
 फूलचन्दजी स्वामी—२६३
 फूलबाई—१४४, १८३, २०२, २१७
 (फूलबाई) २५७, २६०, ३१०
 फूलमामजी स्वामी—१६६, २०७
 फुलाजी स्वामी—२७६
 फोजमलजी स्वामी—२७८
 फीरोजखान (राजा)—२२

ब

बलतावरसिंहजी म०—२६१
 बगतमलजी डाया—२७१
 बगतरामजी स्वामी—२७६
 बगसीरामजी स्वामी—२६२
 बज्जांगजी स्वामी—१८३
 बड़ बरसिंहजी—६०
 बड़ा जैठमलजी सांमी—२७७

बड़ा दीलतरावजी सांमी—२७६

बड़ा घनजी—३१३

बड़ा पोरणीरावजी—२६२

बड़ा भरुजी—३१३

बड़ा मानमलजी—२७६

बड़ा बीरजी—२१६, २४६

बलदेवजी सांमी—२६२, ३१२, ३१३

बलसिंह स्वामी—६६

बलासीह स्वामी—२५६

बलिहसीह—२०५

बहुलसांमी—१७६

बालकृष्ण महाराज—२८१, २६२, २६३

बालचंदजी स्वामी—१६८

बालुजी स्वामी—२६३

बाहूजी स्वामी—२०८, २०६

बिबुष प्रभु—१२

बीजोजी (प्रमुख)—२०

बीरधमान स्वामी—३००

बुटक साधु—३०२

बुदमलजी स्वामी—२७३

बेचरदासजी पंडित—१३०

बोगजी स्वामी—३०५

ब्रह्मदीपक स्वामी—२८२

भ

भगवानजी स्वामी—२६७

भदाजी स्वामी—८१, १८३

भद्रगुप्त स्वामी—१६६, २८२

भद्रबाहु स्वामी—७, ८४, ६१, ६६,

११५, ११६, ११७, ११६,

१२०, १७५, १७७,

१६४, १६६, १६६,

२०४, २०६, २२५,

२३६, २७५, २८२,

२८३, २६६, ३०१,

भद्र सांमी—१७६

भयपाल आचार्य—१६६

भरुजी म०—३१३

भरुदासजी स्वामी—२७८

भल्लराज श्रीमाल—४६

भवानीदासजी स्वामी—२६२

भागचन्द सेठ—५२

भागचन्दजी आचार्य—८१, ८३, ८४,

८८, ८९

भागुरजी तपस्वी—६४

भाडराज (गुप्त) — २२

भाडेजी—२४

भांडोजी—२६

भाणजी—२५४

भाणजजी—१६६, २०७

भाणजी ऋषि—२५८, २६६

भाणजी ऋषि—८१, ८४, ८५, ८६,

६२, ६५, ६७, १४३

भाणु—१८२, २१६

भाणुजी—१०३, २१७, ३०६

भानजी—१४१, २०८, २१०

भानमलजी स्वामी—२८१

भानुजी स्वामी—२५५, २६०

भानो—२०२

भामा सेठ—४४; ४६

भामाशाह—४५, ४६, ४७

भायचन्द स्वामी—२६७

भारजी मुनि—६५

भारमल्ल सेठ—४४, ४५, ४६

भारमल्लजी आचार्य—२०८, २१२,

२६३, २६१,
 २६२
 मिदाजी (भीदाजी)—८१, ८४, ८६,
 ६०, ६२; ६५,
 ६७. १४३,
 २६६
 भिखन (भीखनजी स्वामी)—२३८,
 २३६, २५६,
 २६२
 भीनाजी—६०, ६२, ६५, ६७
 भीमजी (लोका)—६५
 भीमजी स्वामी—१४३, १८३, १६७,
 २४४, २५६, २७७
 भीमराजजी स्वामी—२६६, २७८
 भीमा ऋषि—८१, ८२, ८४, ८६,
 ६७, १०३, २६६
 भीबा ऋषि—१०३
 भीष्म पितामह—१६०
 भुतनन्दी—१६७
 भुतिषल—२३७
 भूईदिन—२०६
 भूतदिन स्वामी—६१, ६६, २३३,
 २८२
 भूधरजी आचार्य — १०७, १५०,
 (बुधरजी) १५१, १५३,
 १५४, १५५,
 २१३, २२०,
 २६७, २६८,
 २७६
 भूना स्वामी—१६७
 भूराचार्य—२६६
 भैरवाचार्य—५०
 भैरुनाथजी स्वामी—२६१

भोजराजजी स्वामी—७३
 भोपतजी नवलखा—७३
 भोपतजी स्वामी—२७६
 भोलूजी म०—३१३
 म
 मंगलचन्दजी स्वामी—२६३
 मंगू आचार्य—१७६, १६६
 मणूमित्र स्वामी—३००
 मडलीक महा मडलीक राजा—२२५
 मडीपुत्र गणधर—२२२
 मंथसेन आचार्य—२१६, २४७, २४८
 मनजी स्वामी—१६७
 मगनमनजी म०—३१३
 मगन मुनि—२६०, ३१३
 मण्डित पुत्र—५
 मणिलालजी मुनि—१३४, २६३
 मदन मुनि—२६२
 मनक मुनि—११७
 मनदिला कुंवर—२२७
 मनदेव सूरि—१०१
 मनरूपजी स्वामी—२६२
 मनसारामजी यती—७४
 मनोरजी स्वामी—२६२
 मयपाल स्वामी—१६८
 मयाचन्द ऋषि—६७
 मलूकचन्दजी स्वामी—२६२, २६४,
 २७७
 मलूकचन्द लाहोरीया—२६४
 मल्लिनाथ—४
 मसूकचन्द स्वामी—२६७
 महम्मद हुसैन—६६
 महसेण आचार्य—१६७, २१६, २४७

महात्मान—५६

१६६, २०७, २०८.

महाकिरि—७, ८, ८४, ८६, ११६,

२६६, २६८, २७६,

११८, २०५, २८२, २८६

३११, ३१३

महादेव (गुजराती)—६२, ६७

महाराम स्वामी—१६८

महावीर भगवान—३, ४, ५, ६, ८४,

६०, ६५, १००,

१०८, १०९,

११०, १११,

११४, ११५,

११७, ११८,

१२०, १२२,

१२३, १३२, १३३,

१५०, १७४,

१८०, १८१,

१८४, १८६,

२००, २०४,

२०५, २०६,

२१३, २१६,

२२०, २२१,

२२२, २२३,

२३४, २३५,

२३७, २५१,

२८१, २८५,

२८८, २८९

महासिंह, (महासिंह स्वामी)—१६७,

२७७

महुबाई—३, ८

महेमुदी—२५२

महेषजी स्वामी—६४

माडलचन्द्र मुनि—१६

माइदासजी स्वामी—२६६, २७८

माणकचंदजी (माणकचंदजी म०)—१८,

२०, १७४, १८४,

माणिक—२८३

माणिकयदेवी—२१

मानचन्द्र सूरि—१०१

मानजी स्वामी—२६१, २६२

मानतु ग सूरि—१०१

मानमलजी स्वामी—२६३, २७६,

२८०

मानविमल सूरि—१०१

माया ऋषि—६२

मालचन्द्र स्वामी—२६२

मालजी स्वामी—२७७

मालोजी (पिता)—२१

माहाचन्द्रजी स्वामी—२६८, २७६

माहारामजी स्वामी—२६८, ३११

माहा मूरसेण—२१६

मित्रसेण—१६७

मीणजी ऋषि—२०४

मुकनदास सुराणा—७०

मुकटरामजी स्वामी—१६८

मुगटर.यजी स्वामी—२६२

मुगदरायजी स्वामी—२६४

मुनिचन्द्र—१०१

मुनिसुन्दर—१०२

मुनिसुव्रत—४

मुरारीलालजी स्वामी—२२२

मू गजी प्रमुख—७४

मूलचन्द्रजी (लौकागच्छीय)—६५

मूलचन्द्रजी स्वामी—२०८, २०९, २६२,

२६०

मूलजी स्वामी—२०८, २११

मेवजी स्वामी—२६७

मेवराजजी (प्रमुल) — ७४

मेवराजजी (लोकगच्छीय) — ६०, ६४,
६५, ६६,
१०४

मेवराजजी स्वामी — २६३

मेतारज — २२२

मेतार्य — ५

मोटरमलजी म० — १६६

मोटोजी म — १७०

मोतीचन्दजी म० — १७०, २५४, २७२,
२७८, २८१, ३०८

मोतीलालजी स्वामी — २६१

मोनसी स्वामी — २०८, २१०, २११

मोरसीगंजी स्वामी — ३६२

मोराजजी स्वामी — २६७

मोरीपुत्र गणधर — २२२

मोला (सूरवंशीय) — १३

मोहणजी स्वामी — २१७, २६२

मोहनजी स्वामी — १४६, २५६

मोहनलालजी स्वामी — २६२

मौर्यपुत्र गणधर — ५

य

यशवंत सूरि — १८

यशोदा माता — ५०, २२१

यशोभद्र — ७, ८४, ६६, ११६, ११७,
२८२, २८३

योगिन्द्र देव — २३७

योमनजी ऋषि — १६६

र

रंगलालजी स्वामी — २६२

रत्नदेव भगवान — ३००

रघुनाथ ऋषि — ३, ७७, ७८

रघुनाथजी म० — १५२, १५३

रघुनाथजी म० — २६७

रघुपति म० — १५२, १५३

रणछोड़ ऋषि — २०४, २६२

रणजीतसींग स्वामी — २६३

रतन गुरु — २३१

रतनचन्दजी आचार्य — १०७, १६२,

१६३, १६४,

१६५, १६६,

१७०, १७१,

१७२, १७३,

रतनचन्द सेठ — २५२, २६६

रतनचन्दजी स्वामी — २६३, २७६

रत्नचन्दजी म० — ३१३

रतनजी तपसी — १६२, २५३, ३११

रतनलालजी म० — २६१

रत्नसीजी — ८१, ८२, ६८, ६४, ६६

रतनदेवी — ६६

रत्नादे माता — ६४, ६६

रतनेश मुनि — १६१, १६५

रत्नचूड़देव — १७

रत्नपुत्र सूरि — १७

रत्नवती माता — ४६

रत्नसिंह सूरि — १७

रत्नासिंह ऋषि — ८२, ८३, ८४, ८७,

रत्नासिंह राजा — ७६

रतनसिंह शाह — २५४

रतन सूरि — २५२

रतनसिंहजी स्वामी — २६७

रयलुजी — २०, २१, २२, २३, २४,

२५, २६, ३१, ३४, ३८

रवजी स्वामी—२०६
 रविग्रज सूरि—१३, १०१
 राज रीच—१६७, २४४, २४५
 राजशाल नक्षत्रा—२३
 राजमलजी स्वामी—२६२, २७४, २७८
 राजसिंह मुनि—७८
 राजारामजी म०—३१३
 राम ऋषि—१६७, २४५
 रामकुमारजी म०—३१३
 रामचन्द्र सामी—७३, २७६, २७८,
 २८१, २८०
 रामजी स्वामी—१६८
 रामनाथजी स्वामी—२६३
 रामनिवासजी म०—३१३
 रामलालजी म०—२६२
 रामसिंहजी यति—६१
 रामसिंहजी—६५
 रायचन्द (पिता)—५१
 रायचन्दजी म०—१६६, १७०, २०८,
 २११, २१२, २७६
 रायभाराजी स्वामी—२६३, २६६, २७७
 रायमलजी आचार्य—२०८, २११
 रायसिंह राजा—६२
 रायसिंहजी—६५
 रत्नदासजी म०—२६१, २६२
 रत्नमदल सेठ—२२३
 रत्नमणी साध्वी—२८६
 रत्नलालजी स्वामी—२६३
 रत्ननाथ, रत्नमणी—२०८, २१०, २१३,
 (आचार्य) २१८, २२०, २३८,
 २३९, २६६, २६७,
 २६८, २६९, २७०,
 २७५, २७६

कडाई माता—८२
 रूप ऋषि—८६, ६३, १०३, १८२,
 १८३, १६७, २६०
 रूपचन्द(पुत्र)—२१, २२, २४, २५-३४,
 ३६, ३७, ४० ४३
 रूपचन्द ऋषि—६२, ६७
 रूपचन्दजी स्वामी—१६८, २३६, २६६,
 २७६, २८७
 रूपचन्द सूरि—३८, ३९, ४०
 रूपजी (लोकान्गच्छीय)—७६-८२, ८४,
 ८०, १४३, २०२,
 रूपजी स्वामी—२१६, २४८, २४९,
 २५६, २६८
 रूपजी साहा—३०६
 रूपसिंहजी (लोकान्गच्छीय)—७६, ८०,
 ८३, ८५,
 ८८
 रूपसिंहजी स्वामी—२१६, २४९
 रूपसिंह सूरि—१०३
 रूपा ऋषि—८६, ६५, ६८
 रूपो—२०
 रूपो माहः—१८२, २१६
 रेवत स्वामी—६१, ६६, २०६, २३२,
 (रेवत गिरी) २८२
 रेवति नक्षत्र—१७६, १६७, २००
 रोडजी स्वामी—१६८, २७७, २७९
 रोडोदासजी स्वामी—२८१, २८०
 रोहणुप्त नित्तव—१२२, २३५
 ल
 लक्ष्माजी मुनि—६५
 लक्ष्मण (पुत्र)—१२८
 लक्ष्मी स्त्री—५०

लक्ष्मीचन्द्रजी पूज्य—३७५	१६८, १६९,
लक्ष्मीचन्द्रजी म०—१६२, १६६, १७०	२०७, २६२,
लक्ष्मीधर सेठ—१२५	२९४, २७४,
लक्ष्मीलालजी म०—१६७	२७८, २६८,
लक्ष्मीवल्लभ स्वामी—२४५	३११, ३१२,
लक्ष्मी विजय म०—२६६	३११
लक्ष्मीसाह—८१	लालजी स्वामी—१६७, २१६, २४८
लक्ष्मसाई—२५३	लालजी मुनि—७३
लक्ष्मसाह सेठ—१३६	लिखमी साहा—२५४, २५५
लक्ष्मी साहा—२५२	लिखमीचन्द्रजी स्वामी—२७६, २७८
लघु रतनसी—२०८	लिखमेश—१६६
लघु वरसिध—७६, ६०, ६३, ६५, ६८,	लिखमण स्वामी—२६२
१०४, २१६, २४६	लीलावती—८८
लघु हरजी—२०३, २०८, २११	लूणकरण राजा—२४, २५
लघु हरिदासजी—१४६	लूणजी ऋषि २६०, ३०६
लङ्कराज ऋषि—३, ७३, ७४, ७७	लुका, लूका—२७, २८, २९,
लघ्मल पिता—५२	(लुंकाशाह, लका, ३६, ८१, ८३, ८५,
ललुजी स्व.मी—२६२	लोकाशाह ८६, ६२, १००,
लवजी ऋषि—१०४, १०७, १४४-४७,	लुहको मेतो) १०२, १२६, १३५,
१७४, १६६, १६६, २०३,	१३६, १३७, १३८,
२०७, २१२, २१७, २५७,	१३६, १४१, १४२,
२५८, २५९, २६०, २६२,	१८१, १८३, १८७,
२६३, २६०, २६८	१८५, २०१, २०२,
लहूजी साह—१८३, १८४, १८५, १८७,	२१५, २१६, २१७,
१६०, २०२, २०३, २०४,	२३१, २५२, २५३,
३१०	२५४, २५५, २५६,
लहूया ऋषि—८२	२६०, २६१, २६६,
लाङ्गमदेजी माता—५३	२६७, २६६, २६८,
लाघुजी पिता—१५५	३०७, ३०८, ३०९
लाघुरामजी स्वामी—२६७	लेनादरजी—३०५
लाघोजी ब्राचार्य—२०८, २११	लोकमणजी स्वामी—१६८, २६८, ३११
लालचन्द्रजी स्वामी—१७४, १६२,	लोकपनजी स्वामी—२६२

लोहगण आचार्य—२३३

लोहित्य गरिण—६१, ६६, १६७, २०६

व

वखतमलजी स्वामी—६४

वजनी स्वामी—८३

वज्रग—२५७, २६०

वजा साह—८२

वज्रलाल ऋषि—१६६, १६८

वज्रसेन—८, १०१, ११६, ११६,
२२८, २३१

वज्र स्वामी—१००, ११६, ११८,
१२२, १७६, २३०

वज्रांग—१८४, २५८

वड वरसिधजी—७६, ६३, ६५, ६८,
१०३

वनेचंदजी स्वामी—२६३

वयर स्वामी, (वहर)—८, ८५, १७६,
२८२

वरजग—१४८

वरजाग—२०३, २१७

वरयगजी—१६६

वरसीग—२१७

वर्द्धमान (वरधमान)—२६, ३५, ५३,
१७०, २२०,
२२१

वनसीहाचार्य—१६६

वलि साह—६१

वसु आचार्य—१२३

वसुनन्दी—२३७

वसुभूति—५, २२२

वस्तुपाल, (वसतपाल)—४६, ६५,
२६६

वहुल स्वामी—२८२

वागजी म०—२६२, ३१३

वागाजी म०—२६५

वाधा शाह—६७

वामदेव संघपति—१३

वायुभूति—५, २२२

वाराहमेह—२८३

वालकिस्नजी स्वामी—२६३

वालमबाई—२०६

वासा सधवी—८३

वासु पूज्य—४

वाहलचन्दजी स्वामी—८४, ८६

वाहालाजी—२०४

विक्रम सूरि—१२

विक्रमादित्य	}	८, ६१, ६६,
वीरमादित्य		१२१, १२२,
वीरमादीत राजा		१७७, १८०,
		१६५, २००,
		२०४, २०६,
		२१४, ३०२,

विक्रमानन्द सूरि—१०१

विकट स्वामी—२२२

विक्रम राजा—२३१, २४१, २४२,
२४१, २८५

विजयचन्द्र सूरि—१८

विजयसिंहजी महाराज—१६३

विजयसिंहजी मुनि—१६७, २१६,
२३७, २४८

विजयसिंह सूरि—१०१

विजयादे माता—२७०

विजेधर (पुत्र)—१२८

विजेराजजी स्वामी—२७६

विजेरीष—२४६

विधिचन्दजी स्वामी—६५

विद्या प्रभु—१२

विनयचन्द जी श्रावक—१०७, १०८,
१७३

विमलचन्द सूरि—१४, १६, १७,
१०१

विमलदास साह—५७

विमलनाथ—४

विमल सूरि—१०३, १८२

विरजस आचार्य—२४३

विरवे माता—८७

विरवसीह—२२६

विष्णु स्वामी—२६५

विषनाजी स्वामी—१७

बिहर कुमार—२८५

बौकाजी राव—२३, ६२

बीजा ऋषि—१६७

बीरचन्द्र सूरि—१०१

बीरजस आचार्य—२१६

बीरजी, बिरजी बोहरा—१४४, १४५,
१८३, १८४,
१८५, १८७,
२०२, २१७,
२५७, २६०,
३१०

बीरपालजी चोरडिया—६६

बीर प्रभु—२४१, २४२

बीरभद्र, बिरभद्र स्वामी—१६७, २१६,
२४२

बीरभाणु स्वामी—२६३

बीरमजी—२०

बीरभद्र साह—२३

बीरमदे—८३

बीरसेणु आचार्य—१६७, २१६, २४३,

बीबुध सूरि—१०१

बुधरजी स्वामी—२१८, २६६

बृहदेव सूरि—१०१

बृद्धिचन्दजी म०—३१३

बुधोजी स्वामी—२७७

बेणीचन्दजी सामी—२६१

बेणीदासजी सामी—२७६

बेणीजी सामी—२७०

बेदाजी मुनि—२१७

बेरासिंह राजा—२८४

बेरागर सामी—४६

बेर स्वामी, बेरसामी } — २२, १७७,
बेहर स्वामी } १६६, २०४,
२०६, २२७,
२१८, २८५,
२६६, ३०२

बेहर कुंवर—२२८

व्यक्त गणधर—५

श

शंकरजी स्वामी—१४६, २६७

शखदेव—४५

शम्भूजी सेठ—२५४

शकडाल—११७, २२५

शटील मुनिन्द्र—२३३

शम्यंभव स्वामी—७, ११६, ११७,
१६६, २०५, २८२

शांताचार्य—१६६

शांतिनाथ—४

शांतिमुनि—२६२

शांति स्वामी—६६

शाङ्खलराजा—५७

शालिभद्र—५४

शिवचन्द्र ऋषि—३

शिवचन्द सूरि—१८

शिवजी ऋषि—८१, ८३, ८५, ८७,
८८,

शिवजी स्वामी—२६७

शिवदत्त सेठ—२०, ३४

शिवदास सुराणा—५०

शिवभूति स्वामी—६, ८५, ११६,
१२४, १७६, २३७,
२६५, ३००

शिवराज स्वामी—१६७, २१६,
२४८

शिवलालजी म.—२६३, २६१, २६८,
३१२

शिवादे माता—२१

शीतलदास मन्त्री—५६

शीतलनाथ—४

शीलकाचार्य—२६६

शेखर सूरि—१६, १०२

श्यामाचार्य—६१, ६६, १२१, १६८,
१६६, २०६, २२६,
२८२, २८४

श्रीकरण सेठ—२०, २२, ३४

श्रीचन्द्र सेठ—३६, ४७, ४८

श्रीपत साहू—८६

श्रीपालजी स्वामी—१४८, १४६,
१७४, १६२,
२०३, २१७,
२५५, २५६,
२६०

श्रीमंदर स्वामी—२८४

श्रीमल्ल ऋषि—८१, ८२, ८४, ८७

श्रीमल्लजी स्वामी—२६७

श्रीलालजी स्वामी—२७६

श्रेयासनाथ—४

स

सकर भद्र मुनि—१६७

सकरलालजी स्वामी—२७८

सकरसेण—१६७, २१६, २४२, २४३,
२४५

सखजी स्वामी—२५६

सघाणी श्राविक—३११

सघजी आचार्य—२०८, २१, २१७

सघराजजी ऋषि—८१, ८३, ८४, ८७,
८८

सडिलाचार्य—२८२, ३००

संडिल—१७६

सप्रति राजा—८

सभवनार्थ—४

सभव स्वामी—६६

सभूति वजय—७, ८४, ६१, ६६,
१००, ११५, ११६,
११७, ११८, १७५,
१६६, १६६, २०५,
२२५, २८२, २८३,
२६६

सभूरामजी म.—३०८

समिल—८५

सलियाजी ऋषि—१४७, १८५,
२०३, २१७

सजना माता—५१

सडल सामी—१७७

सतदास संघपति—१३	२३६, २४०,
सदलाचार्य—२६६	८८४, २६०,
सतश्री आशिका—२८१	३०१, ३०२
सतीदासजी स्वामी—२७७	सर्वदेव सूरि—१०१, २६६
सत्यमित्र स्वामी—२६६	सवाईमल छाजेड—२७१
सदानन्दजी स्वामी—१४६, २१७	सवाईमलजी स्वामी—२७७
सदारग सेठ—२०, २७, ५२, ५४, ५५, ५८, ६०	ससारणी कुलदेवी—१३
साहोजी सेठ—२०	सहकरग सेठ—२०
सन्तोषचन्द्र मुनि—७८	सहस्रमल सेठ—२२, ३४, ६६
समन्तभद्र—११	साखल मुनि—११
समर्थजी साह—६६	साडलाचार्य—१६६
समर्थजी } —१४६, २१७,	सांडिल—६१, ६६, २०६
समर्थजी (मुनि) } —२५६, २६२, ३११,	सांडेजी सेठ—२२
समरवीर राजा—२२१	सांडोजी सेठ—२०, २२
समाचार्य—१८६	सातोकचन्द स्वामी—२७८
समुद्र सूरि—१२	सामरा मुरो—१०१
समुद्र स्वामी—६६	सामीदासजी स्वामी—१६८, २८०
सयलित आचार्य—८५	माइण स्वामी—२८२
सरबाजी, सरवोजी ऋषि—८१, ८२, ८४, ८६, ६०, ६२, ६५, ६७, ६८, १०३, १४१, १४२, १४३, १४६, १८२, १८३, २०२, २१६, २५४, २५५, २५६	साखी राजा—२८५
सरबाजी स्वामी—२६७, ३०६	सागरचन्द स्वामी—२८४
सरस्वती बहन—१२१, १७७, १६५, २०६,	सादूलजी कोठारी—३१२
	सानेनोजी सेठ—६६
	सामन्द्र सूरि—१०१
	सामघ आचार्य—१७६
	सामलदास आचार्य—२६५
	सायर साह—३६
	सालिवाहन राजा—६१, ६६
	साहगीण आचार्य—२०६
	साहमल साधु—१२३, १२४, १७८, २७७
	साह वीरम सेठ—२२
	साहश्रमल सेठ—२८६
	साहिबरायजी स्वामी—१७०

साहिलाचार्य — २२६	१७४, १७५,
सीवोजी सेठ — २७, २६	१७७, १६४,
सिज्जंभव स्वामी — ८४, ६०,	१६६, २०४,
११५, १७५,	२०५, २१३,
२२४, २८२	२२२, २२३,
सीतलजी स्वामी — १६८	२८१, २८२,
सिद्धसेन दिवाकर — २८५, २६६	२६७, २६६,
सिद्धार्थ राजा — ३५, १०८, २२०,	३०१
२२१, ३००	सुनन्दा सेठानी — २२७, २८५,
सिंघराजजी स्वामी — ८३, ८८	२८८
सिमत स्वामी — १६७	सुन्दरदास मुराणा — ६०
सिभूनाथ कवि — १७२	सुपरिवुध स्वामी — ११६, ११८,
सिंहगिरि स्वामी — ८, ८५, ६१,	२६६
६६, १००,	मुपाश्वनाथ — ४
१६७, २०६,	मुप्रतिबद्ध आचार्य — ८५
२३२, २८५,	सुमत साध सूरि — १०२
सिरेमलजी स्वामी — २७७	सुमतिनाथ — १, ५३, २६६
सिरदारमलजी स्वामी — २६३, २७६	सुमति सेन स्वामी — २५५
सीतलदास स्वामी — ३११	सुमिरमलजी स्वामी — २६३
मीमल ऋषि — ६३	सुमुद्र — १७६, १६६, २०६
सीवोजी सेठ — २०	सुयडि बुधि — १७६
सु डील आचार्य — १६३	सुविधिनाथ — ४
सुखमल्लजी ऋषि — ८१, ८३, ८४,	सुस्ती प्रतिबोध — १००
८८	सुस्थित सूरि — ८
सुखानन्द तपसी — ६५	सुहृस्ति आचार्य — ८, ८४, १००,
सुजाणदे माता — ८६	११६, ११८,
सुजानसिंह राजा — ५६, ७०	१७६, १६६,
सुधर्स गणधर — ५	२२६, २६६,
सुधर्मा स्वामी — ६, ८४, ६०,	२६६
६५, १००,	सूजोजी स्वामी — १६१
१०७, १११,	सूरजमलजी स्वामी — १६६, २६३,
११२, ११३,	२७६
११५, ११६,	

सूरतानमलजी स्वामी—२७६,
 सूरदेव (सूरवशी)—१२
 सूरमल्ल सेठ—५३
 सूरसिंह राजा—६२
 सूरसेण स्वामी—१६७, २१६,
 २४६, २४७
 सूहवदे माता—८२
 सेतूजी यति—७४
 सेमल ऋषि—६८
 सेर महमद खां—२७४
 सेवादे माता—१६०
 सेवाराम सेठ—१६०
 सेसमल मुनि—२३५
 सेहकरणमलजी स्वामी—२५६
 सोनो वैद्य—२६, २७
 सोमचन्दजी आचार्य—६०, ६४, ६५,
 ६६, १०४
 सोभागमल, सोभाग्यमल म०—२१६,
 २२०, २७३, २७४,
 २७५, २७६, २७८
 सोमजी ऋषि—१४८, १४९, १७४,
 १६०, १६१, १६२,
 १६३, १६६, १६६,
 २०३, २०४, २०७,
 २१३, २१७, २५८,
 २५९, २६३, २६०,
 २६७, २६८, ३१०
 सोमतिलक सूरि—१०२
 सोमप्रभ सूरि—१०१
 सोमसुन्दर सूरि—१०२
 सोमाचार्य—२६५
 पूज्य सोलालजी म०—३१२

सोवन स्वामी—२२६
 सोबोजी रिल्ल—३१०
 सोहिलजी सेठ—२०, २२, २६, ३१
 सोधर्म सामी—१६६
 स्थूतभद्र, मूलिभद्र आचार्य—७, ८४,
 ६१, ६६, १००, ११५,
 ११६, ११७, ११८,
 १२०, १७५, १७७,
 १६४, १६६, १६६,
 २०४, २०५, २२५,
 २८२, २८४, २६६,
 ३०१
 स्वाति आचार्य—६१, २०६, २६६
 स्वामजी महाराज—३१२
 स्वामिदासजी पूज्यश्री—६१
 स्वामिदासजी म०—१७०
 स्योलालजी म०—३११

ह

हसराजजी आचार्य—२०८, २११
 हसराजजी स्वामी—२७७, २७८
 हजारीमलजी म०—२७६, ३१३
 हजारीलालजी म०—२६८
 हजारीलाल आचक—३१२
 हमीरमलजी आचार्य—१७३
 हर किन्ह स्वामी—१६८
 हरचन्द मुनि—७४
 हरचन्द सेठ—२२
 हरचन्दजी आचार्य—२०८, २११
 हरजी ऋषि—७४, १७४, १६९,
 १६६, १६८, १६६,
 २०३, २०७, २०८,
 २१०, २१७, २६०,

२६८, ३१०, ३११,
 हरणगमेषी देवता—२२०
 हरषसेण आचार्य—१६७
 हरसहाय यति—७४
 हरिदास, हरदास स्वामी—१४८,
 १४६, १७४, १६३,
 १६६, २०७, २१७,
 २५६, २६२, २८०,
 ३१०
 हरिभद्र आचार्य—६६
 हरिरिख स्वामी—२०८, २११
 हरीशरम आचार्य—२४५, २४६
 हरिषेण आचार्य—२१६, २४३
 हरिसम स्वामी—१६७
 हरोजी आचार्य—१६६, १६८
 हर्षचन्द्र सूरि—७३, ७४, ६०, ६४,
 ६५, ६६, १०५
 हर्षचन्दजी स्वामी—२७१, २७८,
 २६७
 हसनखा—६६
 हस्तिपाल राजा—११०
 हस्तीमलजी म०—१६६
 हस्तीमलजी स्वामी—२६३, २७७,
 २६२
 हाथीजी स्वामी—२६७

हिलविसनू सांमी—१७६
 हीरचन्द आचार्य—१६८
 हीरजी म०—१७०
 हीरजी स्वामी—२७६
 हीरागर सूरि—२१, २२, ३०, ३४,
 ३६, ३७, ३८, ३९
 हीराचन्दजी स्वामी—२७६, २६७
 हीराजी तपस्वी—६५
 हीरोजी आचार्य—२०८, २०९, २१२
 हीरानन्द श्रावक—५१
 हीरानन्दजी यति—७४
 हीरानन्द ऋषि—६२, ६७
 हीरालालजी स्वामी—२६३, २६२
 हुकमचन्दजी म०—२७६, २६८,
 ३११
 तपसी हुकमीचन्दजी—३१२
 हेमचन्दजी स्वामी—२६६
 हेमजी पुत्र—१५६
 हेमजी स्वामी—२७६, २६२
 हेमन्त आचार्य—२०६
 हेमवंत स्वामी—६१, ६६
 हेमवंत आचार्य—२३२, २३३
 हेम विमल सूरि—१०२
 हेमा भाई—२८६

परिशिष्ट—५

ग्राम, नगरादि

अ
अंवाला—७५, ७८
अर्गवापुर—५६
अबमेर—६२, ६४, ६८, ६९,

१०४

अटक नदी—६६
अटक महादुर्ग—६४
अणहट्टवाडा—८२
अणहलपुर पाटन—८५
अमरावती—१५५
अमृतसर—७६

अरहट्ट	}	८१, ८५, ६२,
अरठगाम		१०३, १३६,
अहरठवाडा		१८१, २०१,
अरहट्टवाडी		२१४, २५४,
		२८६, २६६,
		३०८

अरहटवाल—६७
अहमदनगर—१५५

अहमदाबाद	}	८१, ८२, ८५,
अमदाबाद		८८, ६२, ६७,
अहमदाबाद		६८, १०३,
अमदाबाद		१३५, १४६,
		१५०, १८४,
		१८६, १८७,
		१६०, २०३,
		२०६, २११,
		२१७, २५२,

२५४, २५५,
२५८, २६०,
२६१, २७४,
२६५, ३१०

अलीगढ़-रामपुरा—३१३
अहिपुर—६६, ७५, ७८

आ

आगरा—८६, १८४, १६४
आबू—१८०
आलणपुर—८३
आलीमिया नगरी—१६१
आसंमोया—२११
आसणी कोट—८८

इ

इन्दरीगढ़—१०३
इन्दौर—७१
इन्द्रपुर—२५६

ई

ईडर—१०३

उ

उज्जयिनी, उज्जैन, उज्जैनी, उजेणी,
उज्जयिनी—११, १६, १७, ३६,
४०, १२२, २३६,
२४०, २४१, २८४,
२८५
उनाथ—१०३

उदयपुर—५१, ६५, २६७

उसमापुर—६३

ऊ

ऊंटाला—१६०

ऋ

ऋषभपुर—१२३

ए

एमदपुर—६३

क

कंडोरडे—२११

कनाडो—८७

कपासि—१८५

करणाटक—२३७, २४०

कलोदरोड—१८६

काढागरा, कोदागगा—२१०

कारकुड—२८६

कालू, कलूपुर, कालूपुरा—४३,

८१, १४८, १५१,

२०३, २१७, २३८,

२५८, ३१०

काशी—७६

कीटीयावार—२५७

कुंडलपुर—२२०, २२१

कुलीयाणा—२०६

कुडगाव—१६१

कुडलाडा मंडी—६७

कुतरापुर—३००

कुनडीयां—२१२

कुमार पाडा—२६१

कृष्णगढ़—४३, १०४

कृष्णपुरा—७५

कोटा—७६, ३१३

कोडमदेसर—२६

कौरडा—४४

कोलक—२२३

कोलदा—६४

कोलादे—६६

ख

खंभान, खंभाएत, खंभायत—६३,

६४, ६८, १८४,

१८५, १८६,

१८७

खाखर—२११

खोडू—२१०

ग

गंगानदी—१५८, २८३

गगापुर—२७३

गिरनार—१७६, १८०, २५१

गीरीग्राम—६७२

गुदवच—६३

गुदेच—६८

गुजरात—६८

गुड्वर ग्राम—५

गोडल—२०६

गोद मंडी—७६

घ

वधराणा—२७०

च

चपेटीया—१०४

चाणोद—६६

चित्रकूट—४४

चोरु—३१३

छ

छनीयारा—१०४

ज

जयपुर, जेपुर—७४, ६६, २१२
जतारण, जैनारण—६४, ६६,
१६३, १६४,
२७०, २७१,
२७२, २७३,

जम्बू द्वीप—२२१, २२७
जासासर—५३
जालंधर—६८
जालोर—६७, २६, ४३, ७६
जाबद—३११, ३१२
जीरण—६४, ६६

जेजो—७५
जेतपुर—२१०, २१२
जमलमेर—४३, ७६, ८८, १७४,
१६५, २२०, २८१,
२६८

जोवावर—७५
जोषपुर, जोषागो—२३, १५३,
१५७, १६२,
१६३, १७०,
२६७, २६६

झ

झकरी—८२

ट

टोहरा—६७

ड

डकवा—३१३

डाडीली—८२

डुनावा—८२

त

ताणडीया—२६६

तुंगिया नगरी—१६१

तुंबवन ग्राम—२८५

तोल्यासर—६४

थ

थानगढ़—२१०

द

दिल्ली, दली—५०, ७६, १०३,
१८४, २५६

दीव—१०४, १०५

देवनिया—७१

देसलपुर—२१०, २११

ध

धरोल—२०६

धार—१५०, २६४, २६०

धोराजो—२०६, २१०, २११,

न

नगरकोट—३८

नरुलई—१०३

नरुली—१०४

नवनरड ग्राम—८६

नवहर—७७

नवानगर—८२, ८३, ८७

नागपुर—२१८

नागौर—१६, २१, २२, २४,

२६, ३८, ३६, ४४,

४६, ५०, ५१, ५२,

५३, ५४, ६६, ६७,

७२, ७३, ७६, १६१,

१६२, १६५, १७०,

२६६

नारसर तलाब—१८५

नालागढ़—७८

नूववन गाय—२२७

नोहर—७५

नौलाई—२१

प

पइठावपुर—२८८

पटना—७६

पटियाला—२, ७५, ७८

पकिहारा मंडी—६६

पदाना—२०६

पाटण—१६, ८२, ८६, ६२,

६३, ६८, १०२, १०३,

१३६, १८२, १८४,

२०२, २१६, २६२,

३०६

पाटलिपुत्र, पाडलीपुत्र—११७, १२०,
२८४, २८५,

पाडलीपुर—२२५

पातसाही बाडी—२६१

पानीपत—५६

पालनपुर—१०३, २७४, २७५

पाली—८१, ८६, ६२, ६४, ६७,

६६, १०३, १०५, १६४,

२१२

पाबापुरी—१०६, ११०, १७४,

२२२, २८२, २६६

पीपाड़—१५५, १६४, १६६,

१६८, २२०, २७५

पुर पइठाण—२८३

प्रागराज्य—८८

प्रतापगढ़—३११

फ

फतेपुर—७३

फलोधी—८६

ब

बड़ा पीपलदा—३१३

बड़लू—१६७

बडौदा—६०

बनूड—६४

बरखु—२७०

बलहिपुर—१७७

बलुदा—२७२

बादशाह बाड़ी—१५०

बालूचर—६

बीकानेर, बाकानेर, बीकानेर....२३,

२६, ३६, ५०,

५१, ५३, ५५,

५६, ६६, ६७,

७०, ७२, ७५,

७६, ७७, ६८,

२१२

बीलरवा—२११

बुड़लाडा—७७

बूँदी—३१३

बूहनिपुर—१६०

भ

भट्ट नगर—४३

भट्टनेर—७०

भट्टनेर कोट—६७

भरतपुर—७६

भागपर—२१०

भिडर—४७

भिनमाल—८१

भीमपाली—२५५

भुजनगर—८८, २०६

म

मंडावरकोट—३१३
 मंडोर—२३, १६२
 मंदसोर—७२
 मकसूदाबाद—३, ७६
 महिमनगर—४०
 महिमपुर—४२
 मांगरोल—३१३
 माघोपुर—३१३
 मुद्राबदर—२१०
 मेहटा—४६, ५०, ५२, ५३, ६६,
 , ७३, १५३, १५४,
 १५५, १५८, १६६,
 १६२, २१८, २६७

मेधाणा—२११
 मोरछाणा—१३
 मोरवी—२११, २६२

य

योगिनीपुर—५६

र

रतनाम—२११, ३१२
 रताडिया—६१२
 रथवीपुर—१२४, २३५
 रहासर—७३
 राजकोट—२५७
 राजगृही—११३, २२३, २२४,
 २८१
 राजनगर—२३८, २४१
 राजपुरा—७७
 राजलदेसर—५०
 राणीपुरा—३१२
 रापर—२१०, २११, २१२

रामोद—२१०

रामपुरा—३१२

राबलपिंडी—६८

राहो—६७

रोही—७७

रोपड—६७, ६६, ७५, ७८,

ल

लखनऊ—७६

लवपुर, लवपुरी, लाहोर—१६, ५०,
 ५६, ६८, ७६,
 १८४, १६४

लीबी—६२, ६८

लीबडी—२०६, २१०, २११,
 २१२, २७४

लुधियाना—४७, ४८, ७८

व

वगडी—२३६, २६७,

वटगड नगर—६४, ६६

वडोदा, वडोदरा—६४, ६६, १०५

वढवाण—२०६, २१०

वनूड—७८

वल्लभोपुर—१०, १३०, २३४,
 २८८, २६५

ब्राह्मपुर—१८४

विरानपुर—२५६

वीकेवाडा—१०४

वीदासर—६५

वैजवाडा—६७

श

श्यालकोट—७६

श्रावस्ती नगरी—१२३

स	१८६, २०२, २०६,
सढीरा—७८	२१०, २११, २१६,
सधर—८१	२५६, २५७, २६०,
समाणा—६७	३०६, ३१०
सरखेज—१४६, २०६, २६०	सेठो की रोया—१५५
सरस्वती पत्तन—६७, ६६	सेत्रूजा—१७६
साबोर—८७, ८६, १५०, २१७	सैदपुर—८८
सादही—६३, ६८, १०४	सोजन—५०, ७३, ६६, ६८,
सोगोली—३१२	१०३, १६०, १६४,
सोनई—१५५	२१८, २६६, २६७,
सायला—२११	२६८
सालरिया—१६०	सोपारक—१२५
सावत्थि—१६१	सोरठ—१८४
सिद्धपुर—८३, ८७, २०६	स्तम्भपुर—३८
सिद्धाचल—२५४	स्यामपुरा—३१२, ३१३
सिरोही—८१, ८५, ८६, ६२,	ह
६७, १०३	हलबद—२०६
सीराना कुबरा—६२, ६७	हिगणवाट—१५५
मुनाम—३, ६७, ७५, ७७	हिदराबाद सिध—२५५
सुरपुरा—१५३	हिसार कोट—५४, ६७
सूरत—८२, ८६, ६३, ६८,	हुबाला—६५
१०३, १०४, १४४,	होशियारपुर—७५
१८२, १८३, १८५,	

परिशिष्ट—६

गण, गच्छ, शाखादि

अ	क
अचल, आचलिया, आचलियो, आचल्या गच्छ—६२, ६७, १०२, १३४, १२, १६५, २०७, २१४, २५०, २५६, २८८, ३०७	कटुयामती—२०७ कमल गच्छी—३६ कमलगण—६१ <u>क.ष्टा संघ</u> —२३७ क्रियावादी—१७७, २३५, ३०१ कुंवरजी ना गच्छ—२०४ कुंवरजी नो गच्छ—६३ कुसलाजीनो टोलो—३११ कोयलामती गच्छ—१०१
अजीवका, मत—१०२, २३१ अमरसिंगजी रा नाम रो सिंगारो—२८०, ३११ अव्यक्तवादी, अवगतवादी निह्व— ११६, १२०, १७७, १८४, २०४, २०५, २३५, ३०१	ख
आ	खरतर गच्छ, खडतरगच्छ—६१, ६१, ६२, ६७, १०२, १०४, १८२, १६५, २०६, २१४, २१६, २५०, २५६, २८८, ३०७
आगमिया, आगमीया, आगमियो, गच्छ—६२, ६७, २०७, २१४, २५१, २८८ आलोको गच्छ—१०२	खेताजी नो सिबांढो—२६४ खेमजी को टोलो—३११
इ	ग
इकीस समुदाय—२६४ इन्द्र शाला—२०४, २०६	गुमान पंथी—२३८ गुरु साहजी नो सिबांढो—२६४ गोप्य संघ—२३७
उ	
उकेश गच्छी—२०	
ऋ	
ऋषि सम्प्रदाय—१४७	

मोसाला मती—३०२

ख

चन्द, चन्द्र, चान्द्र शाखा—१०, ११,
१२६, २०४,
२०६, २३१,
२८७, ३०३,

चित्रगच्छ—६२, ६७

चैत्यवासी—१३०

चौथमलजी नौ संप्रदाय—२७६

चौरासी गच्छ—१३४, ३०७

छ

छोटा पीरधीराजजी नौ सिंघाडो—२६४,
३११

ज

जमलजी महाराज नौ संप्रदाय—२७६,
३११

जीवाजी ना टोला—२८३

जीवजी नौ संधाडो—२६४

ड

डुंडिया मत—१४७, १४८, १६६,
२०३, २१७, २५८;
३१०

ट

तपा, तपिया गच्छ—६२, ६७, १०३,
१४२, १८२, १६५,
२०२, २०७, २१४,
२१६, २५१, २५८,
२८८

तलोकजी को टोला—३११

ताराचन्दजी नौ सिंघाडो—२६४, ३११

तेरहपंथी, तेरापंथी संप्रदाय—२३८,
२३६, २७४,

थ

थरियापुरी सम्प्रदाय—२६०, २६५,
२६७

थिंगम्बर, डीगम्बर, डीगनर—४७, १००

पंथ

१२३, १२४,

१२६, १७८,

१६५, २०४,

२०६, २२८,

२३१, २३५,

२३७, २८६,

३०२

ध

धनराजजी नौ सिंघाडो—२६४

धनाजी को टोला—३११

धर्मदासजी नौ सिंघाडो—२६४

न

नंगीइ शाखा—२३१

नगजी नौ टोला—३११

नरवद शाखा—१६५

नाइगंवी, नागंदर, नागेन्द्र —१८, ११,

शाखा

१२६, १६५,

२०४, २०६,

२८७, ३०३,

३०५

नागोरी महात्मा—६२

नागोरी लोंकामच्छ—३, १६, १७,

२०, २६, ३६,

३८, ३९, ४३,

४६, ५८, ६२,

६५, ६७, १६२,
१६३, १६४
नाथूरामजी का साथ—३११
नानकजी नी संप्रदाय—२८०
निवर्तन, निवृत्त शाखा—११, १२६,
२३१, २८७,
३०३

प

पदारथजी नो सिंघाडो—२६४, ३११
पायचन्द गच्छ—६२, ६७, २६७
पुनमिया गच्छ, पुनीमीड—६२, ६७,
गच्छ ६८, १०२,
१३३, १३४,
१६५, २०७,
२१४, २५०,
२८८, ३०७

पुरुषोत्तम नो सिंघाडो—२६४
पूडवाल शाखा—१४
पोतिया बध—१४६, २५६, २५७,
२६०, २६२, २६८
प्रसरामजी को टोलो—३११
प्रेमराजजी नो सिंघाडो—२६४

ब

बरजगजी नो गच्छ—३१०
बडा पीम्थीराजजी नो सिंघाडो—२६४,
३११
बागजी को टोलो—३११
बालचन्द्रजी को टोलो—३११
बावीस संगारा—२६४, २६५
बावीस सम्प्रदाय—२५८, २६४
बाईस टोलो—२६८

बीज गच्छ—२६७

बीसपंथी—२३८

म

भवानीदासजी नो सिंघाडो—२६४, ३११.

म

मडेचवाल शाखा—१७
मनाजी को टोलो—३११
मनोरजी नो सिंघाडो—२६४, ३११
मलकचन्दजी नो सिंघाडो—२६४
माकड गच्छ—२६७
मारादासजी को टोलो—३११
माथुर संघ—२३७
मीया गच्छ—१६५
मुकटरामजी को टोलो—३११
मूलचन्दजी नो सिंघाडो—२६४, ३११
मूल मध—२३७
मूलधार गच्छ—११

र

रतनचन्दजी नी सम्प्रदाय—२७६
रामचन्दजी को टोलो—३११
रगनाथजी री सम्प्रदाय—२७६, ३११

ल

लालचन्दजी नो टोलो—३११
लांकागच्छ, लुंकागच्छ—३, ८०, ८१,
८४-८६, ६०,
६५, ६७, १०२,
१०७, १४२,
१४३, १७४,
१८४, १८५,
१६२, १६६,
२०३, २११,

२५६,	२५७,	२३१, २३७, २८७,
२५८,	२५९,	३०३, ३०५
२८१,	२९६,	बेडगच्छ—२८८
२९८,	३१०	श
लोकागच्छ नानी पक्ष—२९७		शून्यवादी निह्नुव—१७७, २०४, २३५,
लोकपनजी नो सिधाडो—२६४		३०१
ख		स
वडगच्छ, बडगच्छ—६२, ६७, १३३,		संवेगी, समेगी—२६०, २७४
१३४, २५०, २९६,		समरथजी नो सिधाडो—२६४, ३११
३०७		सागर गच्छ—२९७
बयरी शाखा—८		सामीदामजी को टोलो—३११
वरदत्ता शाखा—१९५		स्थानकवासी सम्प्रदाय—१०७, २२०
बागजी नो सिधाडो—२६४		रवामीदासजी नो टोलो—३११
विजय गच्छ—२९७		हु
विद्याधर शाखा—११, १२९, २०४,		हरिदासजी नो सिधाडो—२६४

परिशिष्ट—७

सूत्र-ग्रन्थादि

अ	त
अंतगङ्ग सूत्र—१६०	तपागच्छ पट्टावली—१२५, १२८, १३४
आ	विवेच पोष्ठी—१८
आचारंग सूत्र—१०, २८८, ३०६	इ
इ	दशवैकालिक, वसमीकालिक—११७,
हर्यार अंग—८८	सूत्र १३५, १३६,
उ	१४५, १८१,
उपसर्गहर स्तोत्र—१८	१८५, २०१,
उपाग—८८	२१५, २५३,
उपाशगदसांग—१०	२८३, २८६,
क	२८६, ३०८,
कोटा परम्परा का पूरक पत्र—	३१०,
२६८, ३१२	ख
कोटा परम्परा की पट्टावली—२६८	खवल—२३७
ख	न
खंभात पट्टावली—१६	नंदी सूत्र—२८२, ३००
ग	निशीथजी—२६०
गुजरात पट्टावली—२०८	निरयावलिका सूत्र—२०६
ज	प
जम्बूपन्नधी—२२०	पट्टावली प्रबंध—३४
जयधवल—२३७	पन्नवणा—१०२, १०३, १६०, २८४
जिनंद व्याकरण—२६६	परसरण व्याकरण—३०६
जिनरील ने जिनपाल को बीड़ालियो	ब
—२३८	बालापुर पट्टावली—८४
जीवराजजी पट्टावली—१६६	

अ
अयवती सूत्र—११६, १७७, १८६,
१९०, १९१, २००,
२१४, २३४, २५४,
३००,

शूषर पट्टावली—२१३

अ
मेवाङ्ग पट्टावली—२८१

अ
लोकगच्छीय पट्टावली—१००

ब
विवाह पञ्चति—११६
बृहत्कल्प सूत्र—२३६
व्यवहार सूत्र ती ब्रूलिका—२२५

श
शत्रुजय माहात्म्य—१३२, २५१

स
संग्रहणी प्रकरण—१०, ११
समवायांग, सामायांग सूत्र—१६०,
३०७,
स।रस्वत व्याकरण—१६०

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	८	बिमलान्त	बिमलानन्त
४	२१	चतुर्विंशतितम	चतुर्विंशतितम
६	२२	नामके और तीन चारित्र	नामके तीन चारित्र
२३	१८	६१५२	१५६२
२४	२२	साहने भांडेजी से विचार	साहने भाडेजी व कमेजी से विचार
४६	२६	और चारित्र पद	और चारित्र एवं पद
६५	२८	यह ६६ वा पाठ	यह ६१ वां पाठ
६६	२६	सद्गुरु५	सद्गुरु—
८१	१५	साधुरीया	साधरिया,
८५	११	सपलित—	सपलित—
८५	१४	संमिल—	सडिल
८५	२०	अन्य दर्शनीय,	अन्य दर्शनीइं
८५	२४	माटे मंडाणे	मोटे मंडाणे
६१	७	जात घरम स्वामी	जीतघर स्वामी
६१	१०	खेत	रेवत
६१	१४	लोहितरूपगणि	लोहितगणि
६१	१५	दुष्पगणि	दूष्पगणि
६१	१६	क्षमा श्रवण	क्षमाश्रमण
६४	१६	निरदाण	निरवाण
६५	१८	३०	२०
६७	१५	मदावेद	महावेद
६७	२०	दीकरा लीषी	दीख्यालीषी

१	२	३	४
६८	२६	सर्वाय	सर्वायु
१०४	११	पदठवा	पदठवा
११२	२	भूर	भूर
११४	२६	पाछे वीर,	पाछे, वीर
११५	२	पुलाक लब्धि	पुलाक, लब्धि
११७	२३	५६ वर्ष	१५६
११७	२७	गृहवास	गृहवास
११८	२८	५८४	५१२
१२१	७	वर्ष	वर्ष
१२१	१५	बाली	बाली
१२१	१६	गर्दभिल्ल	गर्दभिल्ल
१२६	२१	पीकर मे	पीकर
१३१	६	लिखाताऽदल	लिखा ताडदल
१३१	८	बुद्धि	बुद्धि
१३४	२	और चौरासी	चौरासी
१३६	१२	से ज्वाला	सेजवाला
१४०	१४	सम्भल	साम्भल
१४१	१६	दीपाये	दीपाये
१४२	११	खूब	खूब
१४४	१०	तिन छोले	तिन छोले
१४७	२	तिन न दीक्षा लीष	तिन दीक्षा लीष
१४७	१०	यक्ति	युक्ति
१६३	१८	फासो	कासो
१६३	२५	फांसे	कासे
१७७	२४	माति	मावी
१७८	५	छोडो उष	छोडीउ
१७८	२६	चिता क्रिय	चिता क्रिम
१७६	१३	भठा	भठा,
१७६	१४	बीर्यं छति	बीर्यं गच्छति
१८०	४	बुलिजा	बुष्णिज्जा

१	२	३	४
१८०	५	एल बिड जू यो लवि पुलाउमूणि यवो	ए, लडिइ जूयो लडि पुलाओ मुणियवो ।
१८०	१४	संतोष	संतोष
१८०	१५	करवि उई ।	करवि ।
१८१	६	उपधरि	उपधारी
१८१	९	वांचि म	वांचि न
१८१	१०	कहेए	कह्यो
१८१	१३	कहए	कह्या
१८१	३१	कहेए	कह्यो
१८२	०	गिणचा	गिणवा
१८३	१४	वेइराथ	वेइराग
१८३	१७	कहए	कह्यो
१८३	१९	कहए	कह्यो
१८४	२२	पुछेए	पुछ्यो
१८४	२४	कहए	कह्यो
१८५	२	एत्रतिन	एतिन
१८५	३०	पूदाहि	खुदाहि
१८६	९	हाकम वे हाकम बे हाथ	हाकम वे हात-
१८६	२४	पाड्या	पाम्या
१८७	६	गूणवंत फांणी	गूणवंत प्राणी
१८७	९	बाधवा	बाधवानो
१८७	२०	जाउघर	जाउं बर
१८७	२६	प्रमूष	प्रमुख
१८८	२५	कहेए	कह्यो
१८९	२	धरम समजबतां	धरम समजाबतां
१९०	३	बाइ भामा	बाइ भाया
१९२	१०	ते मित्याउ	तेडित्याउ
१९३	२०	सरगनि	सरगान
१९४	१३	केटिबंध	फेटिबंध

१	२	३	४
१६४	१३	यात्रिया मांघि	पात्रयामां घी
२००	४	घनागार्जण	घेनागार्जण
२००	५	घर्मण	घमणा
२००	१६	८६०	६८०
२००	२८	छीती	स्थिती
२०१	३	माहि राधणं	माहि राख्या
२०१	६	जोवामें	जोवाने
२०१	१०	बीचार रा	विचार ए
२०१	१३	छनो काम छे	नो काम छे
२०१	१६	मार्ग कतो	मार्ग तो
२०१	१५	बीचारुं	बीचारुं
२०१	२५	माव वुथे युं	मावठुं वुथुं
२०१	२८	घरणा	घणा
२०२	१७	तिवारे पुछे	तिवारे पुठे
२०२	२४	कोडिघभ हुते	कोडिघभ हुतो
२०३	१८	वाठनी	ताठनी
२०३	२३	ऋषिमें	ऋषि
२०४	१२	४ नीव	चौथा निनव ८
२०४	१६	छो निनव	छठो निनव
२०५	२	मोघ पोहोता	मोख पोहोता
२०५	६	१०० सर्व	८० सर्व
२०५	१०	पुलांगनिड	पुलांगनियंठा
२०६	११	५६ वसें	५६२ वर्षे
२०७	१	पंडुसणा पर्व	पंडुसणा पर्व
२०७	५	८४ छ गच्छ	६४ गच्छ
२०७	६	ने हवै जटोरो	ते हवैज टांरो
२०७	२०	फूसमामजी	फूसरामजी
२०७	२१	लहुमाईये	लहुडाईये
२१४	२४	हेहरानी	वेहरानी
२१६	८	हिंसा नही	हिंसा गिराय नहीं

१	२	३	३
२१८	३	वृत्तपुरी उवरांत	वृत्तपुरी उपरांत
२८	१५	उद्यो जिएण मार्ग	उद्योत-जिएण मार्ग
२१८	२२	समज्या	समज्या
२१६	३	यया	यया
२२०	१८	रात्री हरणगमेची	रात्री ए हरणगमेची
२२०	२०	बरा बरस वा नव मास	बरा बरस सवा नव मास
२२०	२४	तेथी	तेथी ते
२२२	२	पषण्णो	पषण्णो
२२२	४	चरम ...सो	चरम चौमासो
२२२	६	कहेवाग्या	कहेवा लाग्या
२२३	४	त्रण से शिष्य	त्रण त्रण से शिष्य
२२३	५	प्रभवा मामे	प्रभास नांमे
२२३	१४	गोतम आउषो	गोतम स्वामीनो आउषो
२२३	२१	काषाप	काष्याप
२२४	८	गृहस्था मां	गृहस्थाश्रम मां
२२५	८	एह पली काली पडी	एह पली दुकाली पडी
२२५	१४	उदेसीदीक	उदेसादीक
२२५	२२	वडीत	वतीत
२२५	२४	साहबी	साषबी
२२६	१६	इन्द्रन स्वामी	इन्द्रदिन स्वांमी
२२७	११	नूबन	तुं बवन
२२७	१६	लीषंतो	लीषंते
२२७	१७	नूबन	तुं बवन
२२७	१८	घन गृही	घन गिरी
२२७	२६	घनगोरी	घनगिरी
२२७	२७	आपनी कल्या हता	आप निकल्या हता
२२७	३०	वशते	वशे ते
२२८	२०	कोसीस	कोसीसय

१	२	३	४
२२६	१६	लागधारी	लिंगधारी
२२६	३०	मरम हूँ जसो	सरम रहे जसो
२३०	२१	दोर	दोरा
२३२	३	नदीस-वत	तदी संवत
२३२	१५	ए-अगरमा	ए-अठारमा
२३२	१७	परज्या लीने	परज्या पालीने
२३३	१०	८७	८७५
२३३	२२	आश्रव	आश्रम
२३५	१०	माथे	मा
२३६	७	समाइसंजय	समाइय संजय
२३६	८	छे उवगणिय	छे उवठाणिय
२३६	१३	जिन कल्पयी मुनि	जिनकल्पी मुनि
२३६	१६	सुषमं	सुषम
२३६	२४	परिगाहो	परिठगहो
२३७	२	तिनकं	तिनके
२३८	४	तरे पथनी	तरे पंथना
२३८	२८	उदराजेवावी कल	उदर जेवा वीकल
२३९	१३	तेमाकलो	तेमा कहो
२४०	१	छाडावा	छोडावा
२४०	१३	पचमी छमछरी छे	पचमीनी छमछरी छे
२४१	५	राजा यो तानो	राजा पोतानो
२४१	२२	बुलासा	बुलासा
२४४	११	पद रह्या	पद रह्या सरव दीर्या छमालीस वरस पालो
२४५	२४	पदम नाम स्वामी	पदम नाम स्वामी
२४५	२४	पदम नाम आचारज	पदम नाम आचारज
२५१	११	नाख्या	नाख्या
२५१	१७	मोलण तेलो	डोलण तेलो
२५२	१४	सवेग भात घ्राणी	सवेग भाव घ्राणी

१	२	३	४
२५२	२२	धयोल देवी लगी रहुवा	धयेलो देवी दीलगीर हुवा
२५३	११	लूकाजी भापी	लूकाजी ने भापी
२५४	२०	सफा थया चालसू	सफा थया थी चालसू
२५५	१५	घरणाज वाटसू	घरणाज ठाट सू
२५६	१६	भोषद रे बदले नांम	भोषद रे बदले जेर नी
		थापन हुबो	पुछी दीधी
२५७	२६	लेरने	लेने
२५८	२	जीमम छे	जीम छे
२५८	२८	धमदा मा	धमदाबाद मा
२६०	१६	सूत्र भगवा	सूत्र भगवा
२६१	६	कहीयो तानो	कही पोतानो
२६१	१६	सीना	सीना
२६१	१८	सीध्या	सीध्या
२६५	३	बाबीस	छाबीस
२६७	२६	माहाराज गंणे	महाराज ठाणे
२६८	१	सांघी	त्यांघी
२६९	८	गृहस्था श्रवमां	गृहस्थाश्रवमां
२७०	२०	महाराज जी	महाराज नी
२७२	२२	उगणीस ने बाबीस	उगणीस ने छाबीस
२७३	२	बढता	छढता
२७४	६	लेता रह्या। हजारा	लेता त्या हजारा
२७४	२६	दाब्या है भ.	दाब्या है सु-
२७५	५	बार है	छार है
२७५	७	बेइ	देइ
२७५	८	नरनारी स्वाभूण	नर नारी रयाभूण
२७५	२१	पूज्य श्री	पूज्यजी
२७६	२६	गणां	ठाणां
२७६	४	छयनमक	छयनमकाल

१	७	३	४
२८०	३	वरतमांममा	वरतमान मां
२८०	७	संप्रदाय नी बीजी	संप्रदाय जीवाजी
२८१	२०	फालुनी	फाल्गुजी
२८५	१६	मूल दीक्षा	मूल दीक्षा
२८५	२०	कपटाचार्य	खपुटाचार्य
२८५	२५	विहर कुमार	वयर कुमार
२८५	२६	वेहर स्वामी	वयर स्वामी
२८६	१२	—कालिक के ॥६॥	—कालिक के छट्टे
२८७	२७	इन स्वयं की	इन सब की
२८८	६	के सलिये	के लिये
२८८	२४	वेड़ गच्छ	वड़ गच्छ
२९०	२	सरसघजी	सरबाजी
२९१	४	अक्षितीयधी	अक्षितीय धी
२९२	८	किस्तूरचंदजी मय्ये	किस्तूरचंदजी म० ये
२९७	१६	मसुकचंदजी	मलुकचंदजी
२९९	१	तीथी	पिति
३०१	८	आग नगर	आगे नरग
३०१	१८	अनेरो	अनेरा
३०२	१०	राजा बोला—	राजा बोला—हे बाई रोबो किम छो । त्पारे डोकरी बोली—
३०३	८	पछ ६२०	पछ ६२०
३०३	१०	पछ काल लगतो पछ काल लगतो पढो—	पछ काल खगतो पढो,
३०६	९	कैटार हलसी	कंतार हलसी
३०६	१४	पाछा करगया	पाछा फरगया
३०६	१६	साधूजी नाम मारग	साधु जिन मारग—
३०६	२१	सासन	सासन
३११	१३	केरली सीकार	केवली सीकारे

१	२	३	४
३१२	२६	उदकसरी तपस्या	उदकसरी तपस्या
३१३	१५	सं० १०५५	सं० १६५५

नोट :—पृ० २५६ में १५ से २४ की पश्तियो का लेख 'तेषी तपा घणा वध्या । तेषी तपाजी' से लेकर—समत १६६७ व०' तक मूल प्रति में उलट-पलट है, अतः प्रतिलिपि में भी वैसा होना सहज है । पर संशोधन की दृष्टि से उसको निम्न रूप में बदल कर पढ़ना चाहिये ।

तेषी तपा नाम हुवो । लूकाजी ना आठ पाट मूघ आचारी हुवा : तेना नाम—१ जानजी स्वामी, २ भीखमदासजी स्वामी, ३ नूनजी स्वामी, ४ भीमजी स्वामी, ५ जगमालजी स्वामी, ६ सरवोजी स्वामी, ७ रूपेजी स्वामी, ८ जीवाजी स्वामी । ए आठ पाट उत्तम आचारी हुवा । ए आठ-मा पाट उवाला । जीवाजी स्वामी ने सरीर रोगादिक नी उतपती हुई । ओषध रे बास्ते आनन्द विमल जती रे पासे गया, तर जाणीने ओषध रे बदले भरजी पुडो धीधी, ते ओषध ने भरमे ते पुडी जीवाजी स्वामीए खाधी । तिवारे शरीर मां भर प्रगम्यांन भरु जरिणियो तरे संधारों कीधो ने देवगत हुवा । तीवारे लारे चेला हुता ते वगत सं० १६६७ व० ।

बोर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

203 हस्तोक्त

काल नं०

लेखक श्री हासि मल्लिकार्जुन

शीर्षक पहावली प्रबन्ध संग्रह

सं० 823-6

सं०